महाभारत भाषा

अश्वमेध पर्व

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्रके उपदेशसे अर्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेवको
चारों दिशाओंमें जाकर सम्पूर्ण राजाओंको युद्धमें पराजयकरना
और अश्वमेध करनेकेलिये द्रव्यलाना और कृष्णचन्द्र व
भीमसेन व अर्जुनको जरासन्धके स्थानपर जाकर उससे
युद्धदान मांगना और भीमसेनसेनाशहोना पश्चात्
राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना
इत्यादि कथायें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी
(सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि
चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से
संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा
जनवरी सन् १८८९ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्बपुराण और वेदकासारहै बरन बहुधालोग इस बिचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेख़ाने में छपी थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२)थे जैसा कारख़ानेकादस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व ॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व्व(५)उद्योगपर्व्व(६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व्व(९)शल्यपर्व्व(१०)सौप्तिकपर्व्व (११) योषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में(१४)शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व(१५) आश्रमबासिकपर्व्व(१६) मुसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व॥

अथ महाभारत भाषा अश्वमेधका सूचीपत्र प्रारम्भः॥

इतिमहाभारत भाषा अश्वमेध का सूचीपत्र समाप्तम् ॥

महाभारतभाषा अश्वमेधपर्व्व॥

—–※–—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराध्यमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्धेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमव्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलअश्वमेध भाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ अश्वमेधपर्वप्रारम्भ: ॥

नारायणको अर्थात् पुरीरूपशरीरोंमें निवास करनेवाले चिदात्माकोनरोंमें उत्तमनरको औरसरस्वतीदेवीको अर्थात् तीनोंस्वरूप जीव ईश्वर और ब्रह्मको प्रकट करने वाली देवीको नमस्कारकरके उसके जयनाम महाभारतको अर्थात् वेद और स्मृतियों के सारको कीर्तनकरे १ अश्विनीकुमारोंकी प्रशंसाकेपीछे अष्टावक्रकेआख्यानमें वेदान्त विद्याको संक्षेपसे वर्णन किया सनत सुजातिमें उसकी टीकाकरी और गीतामें उसको पूरापूरा वर्णन किया मोक्ष धर्म में नानाप्रकारके इतिहासोंसे आत्म तत्त्वको वर्णन किया फिर जिज्ञा-

सूके चित्तकी पवित्रता के लिये उसपर कृपाकरके जप दानादिक बर्णन किये जहांपर बड़े भारी लाभ और बैराग्य उदय होनेके निमित्त कौरवोंका नाशबर्णन कियाहै अब इस पर्व में तीन आख्यानों सेवेदान्त बिद्याका बर्णन करतेहैं वह आख्यानयहहैं प्रथम सम्बर्त स्मृति दूसरे श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरकीबार्त्तालाप तीसरे श्रीकृष्ण अर्जुनका प्रश्नोत्तर इनमें से प्रथम में काशीजी के मध्यमें मरनेकी मुक्ति प्रकट करेंगे कि ईश्वरके पूजनादि धर्मोंसे धनको पाकर चित्तकी पवित्रताके अर्थ यज्ञकरना चाहिये दूसरे आख्यानमें शास्त्रार्थबर्णन करेंगे और तीसरे में उसकी टीका करेंगे इसके पीछे उञ्छवृत्ती उत्तंक आदिक आख्यानों से ज्ञानकी उपकारी गुरुसेवाके माहात्म्य और हिन्सात्मक यज्ञादिकी निन्दा आदिक को बर्णन करेंगे बैशंपायन बोले कि व्याकुल चित्त महाबाहु युधिष्ठिर उस जलदानादिक्रियासे निवृत्तहो राजाधृतराष्ट्रको आगे करके जल से बाहर निकले २ अश्रुपातों से व्याकुलनेत्रवाला बीर युधिष्ठिर निकलकर गंगाके किनारे पर ऐसेगिरपड़ा जैसेकि बधिक के हाथसे घायल होकर हाथी गिरपड़ताहै ३ श्रीकृष्णजी की प्रेरणा से भीमसेन ने उस पीड़ामान युधिष्ठिर को पकड़ लिया और शत्रुओंकी सेनाके पीड़ादेने वाले श्रीकृष्णजी ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम इसप्रकार पीड़ा न करो ४ हेराजा सबराजाओंने उस धर्म पुत्र युधिष्ठिर को पीड़ित पृथ्वीपर गिराहुआ बारंबार श्वासोंका लेनेवाला देखा ५ फिर पुत्रोंके शोकसे पीड़ामान बड़े ज्ञानी बुद्धि रूपनेत्र रखने वाले राजाधृतराष्ट्र नेयुधिष्ठिर से यह बचनकहा ६ कि हेकौरव्य कुन्तीके पुत्र उठो और करनेके योग्य कर्मोंको निस्सन्देह होकर करो तुम ने इसपृथ्वीको क्षत्रीधर्मसे बिजय किया है ७ हे धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर तुमभाइयों और सुहृदों समेत इस पृथ्वीकोभोगो मैं तेरेशोचके योग्य किसीबातको नहीं देखताहूं ८ हेमहीपति मुझको और गान्धारीको शोचकरना उचितहै क्योंकि जिनके सौ पुत्र ऐसे नाश होगये जैसे कि स्वप्न का पायाहुआ धननाश होजाता है मैं

दुर्बुद्धी उसवृद्धिचाहनेवाले महात्मा बिदुरजीके उनबचनोंको जिनके अर्थ और आशय बहुत बड़ेथे न सुनकर इनदुःखोंकोपारहाहूं ६।१० दिव्यदर्शन धर्मात्मा बिदुरने जो मुझसे कहाथा कि तेरा सबकुल दुर्योधनके अपराधसे नाशको प्राप्तहोगा ११ हे सूक्ष्म दर्शी राजा जो तू अपनेकुलकी कुशल चाहताहै तो मेरे बचनको कर कि इस दुर्बुद्धी अभागे राजादुर्य्योधनको त्यागकरना योग्यहै १२ कर्ण और शकुनीको तुमकभीभी मतदेखो और इन दुराचारियोंके अत्यन्त द्यूत कोउनके अप्राबादों समेतरोको १३धर्मात्मा राजायुधिष्ठिरको राज्या भिषेक कराओ वह जितेन्द्री होकर इस पृथ्वीको पालन करेगा१४ और जो तुम इस कुन्तीके पुत्र राजायुधिष्ठिरको नहीं चाहतेहो तो मेधीभूत होकर तुम आपही राज्यकोलो १५ हे राजा भाइयोंसमेत सब बिरादरीके लोग तुझ सबजीवमात्रों में समान कर्म करनेवाले के पीछे अपनी अपनी जीविका पूर्व्वक निर्वाहकरेंगे १६ हे कुन्तीके पुत्र उस दूरदर्शी बिदुरके बचनोंको तिरस्कार करके मैं पापी दु-र्य्योधनकी बुद्धिके अनुसार कर्म करनेवाला हुआ १७ मैंने उस बड़े बिद्वान् दूरदर्शीके बचनोंको न सुनकर और बड़े दुःख रूप तुझको पाकर शोक समुद्रमें डूबाहूं १८ हे राजा युधिष्ठिर अब तेरे दोनों पिता माता वृद्धहैं हम दोनों दुखियाओंको देखो और तुमको इस स्थानपर शोचकरना न चाहिये १९ ॥

इति श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बैशंपायनबोले कि राजाधृतराष्ट्र से इसप्रकार बैराग्य प्राप्तहोने के सिद्ध करनेकी बातोंको सुनकर वह बुद्धिमान् युधिष्ठिर मौन होगया इसके पीछे केशवजीने उससे कहा १ कि हे राजामनसे किया अत्यन्त शोक उसके पूर्व्व मरेहुये पितामहादिकों को दुःख देताहै २ इस हेतुसे पूर्ण दक्षिणावाले नाना प्रकारके अनेक यज्ञोंसे पूजनकरो और अमृतसे देवताओंको तृप्त करके स्वधासे

पितरों को तृप्त करो ३ खानपान की वस्तुवों से अतिथियों को अकिंचन महात्माओं को और अन्य लोगों को अभीष्टदानों से तृप्त करो तुमने जाननेके योग्यकोजाना और करनेके योग्यको भी किया ४ और श्री गंगाजी के पुत्र भीष्मपितामह, व्यास, नारद और बिदुरजीसे सब राजधर्मोंको भी सुना ५ तुम अज्ञानोंकी इस रीति पर कर्म करनेको योग्य नहींहो अपने बाप दादोंके चलन रीतिपर नियत होकर राजधर्मके भारको अपने ऊपर धारणकरो ६ उत्तम कीर्त्तिसे युक्त क्षत्रियोंके समूह निस्सन्देह स्वर्गको गये और शूर बीरोंमेंसेभी यहांयुद्धमें कोईपराङ्मुखनहींहुये ७ इससे हे महाराज आप शोकको दूरकरो यह ऐसाही होनेवालाथा जो इस युद्धमें मारे गये उनको तुम फिर किसी प्रकारसे भी नहीं देख सक्ते ८ महातेजस्वी गोविन्दजी युधिष्ठिर से इतना कहकर मौन हुये तब उस युधिष्ठिर ने उनसे कहा ६ कि हे गोबिन्दजी मुझ में आपकी जो प्रीति है वह मुझ को ज्ञात है आप प्रीति और शुभचिन्तकता से सदैव मुझपर करुणा पूर्व्वक दया करतेहो १० हे श्रीमान् चक्र गदाधारी यादव नन्दन मेरा सब प्रकार का उत्तम कल्याण आपहीके करनेसे हुआहै और होगा ११ आप अपनी प्रसन्नतासेमुझ को तपोबन में जानेको आज्ञा दो क्योंकि मैं पितामह को मारकर शांतीको नहींपाताहूं १२ युद्धोंमें पराङ्मुख न होनेवाले पुरुषोत्तम कर्णको मारकर शान्ती कोनहीं देखताहूं हे जनार्द्दनजी जिसकर्मके द्वारा इन सब पापोंसे मैं छूटजाऊं १३ उसकोकर्मसेहीकरो जिससे कि मेराचित्त पवित्रहोजाय तब महाधर्मज्ञतेजस्वी बिश्वासदेनेवाले व्यासजीने उस इसप्रकार कहनेवाले १४ राजायुधिष्ठिरसे यह सार्थक और कल्याणकारी बचन कहा कि हेतात तेरी बुद्धि ठीकनहीं है फिर तू अपनी बालकपनेकी बुद्धिसे मोहको पाताहै १५ कैसी२ मूर्त्ति और चेष्ठावाले हमलोग तुझको बारंबार समझाते हैं वह क्षत्रीधर्म्म भी तुम जानते हो जिन्होंकी जीविका युद्ध से है १६ इसप्रकार के कर्म करनेवाले राजामानसी शोकों में नहीं फंसते हैं

और जैसेप्रकार के सब मोक्षधर्म हैं उन सबप्रकारों को भी तुमने सुनाहै १७ मैंने तेरी इच्छासे उत्पन्न होनेवाले अनेक सन्देह भी बारंबार निवृत्त किये निश्चय करके तू श्रद्धासे रहित दुर्बुद्धी और स्मरण शक्ती से बिहीनहै १८ हे निष्पाप तू ऐसामतहो ऐसाअज्ञानी होना तुमको उचित नहीं है सबप्रकार के प्रायश्चित्तों को भी तुम जानतेहो १९ तुमने सब राजधर्म और दानधर्म सुने हे भरतवंशी सबधर्मोंके ज्ञाता और शास्त्रोंमें कुशल होकर भी तुम अज्ञानसे कैसे मोहित होरहे हो २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हे युधिष्ठिर मैं जानताहूं कि तेरी बुद्धि पूर्ण नहीं है कोई मनुष्य स्वतन्त्र होकर कर्म को नहीं करताहै १ ईश्वर की प्रेरणासे यह मनुका पुत्र मनुष्य शुभाशुभकर्मों को करता है इसमें क्या बातहै २ हे भरतवंशी जो तुम अपनेको पाप करनेवाला मानते हो इसस्थान में वह रीति सुनो जिससे कि पापसे छूटो ३ हे युधिष्ठिर जो मनुष्य पापोंको करतेहैं वह तप यज्ञ और दानोंकेद्वारा सदैव उससे छूटतेहैं ४ हे नरोत्तम राजा युधिष्ठिर पाप करनेवाले लोग यज्ञ तप और दानसे पवित्र होतेहैं महात्मा देवता और असुर पुण्यके अर्थ यज्ञकर्मोंमें उपाय करतेहैं इसीहेतुसे यज्ञहीरक्षा का स्थानहै ५। ६ महात्मा देवता लोग यज्ञोंसेही बिजयीहुये इस हेतुसे यज्ञादिक करनेवाले देवताओंने दानवोंको पराजयकिया ७ हे भरतवंशी तुम राजसूय, अश्वमेध, सर्वमेध और नरमेध यज्ञको करो ८ नानाप्रकारकी दक्षिणा रखनेवाले बहुतसी भोजन की वस्तु और प्रयोजनके धनसे संयुक्त अश्वमेध यज्ञसे ऐसे पूजनकरो जैसे कि दशरथके पुत्र श्री रामचन्द्रजीने कियाथा९ और जैसे कि शकुन्तलाके पुत्र संपूर्ण पृथ्वी के राजा महापराक्रमी तेरे पितामह राजा भरतने कियाथा १० युधिष्ठिरनेकहा कि निस्सन्देह अश्वमेध

यज्ञ राजाओंको पवित्र करताहै परन्तु जो मेरे चित्तका प्रयोजन है उसको आप सुननेको योग्यहो ११ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ज्ञातिवालों के इस बड़े भारी बिनाशको करके थोड़ेदानके भी करनेको समर्थ नहींहूं क्योंकि मेरे पास धन नहींहै १२ और मैं इन अन्त ज्वरवाले ताड़ित दुःखोंमें बर्त्तमान अनाथ और बालक राजाओंसे धनमांगने में उत्साह नहीं करताहूं १३ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मैं आप इस संपूर्ण पृथ्वीके लोगोंकानाश करके शोकसे पूर्ण होकर यज्ञके अर्थ किस प्रकारसे राज्यके अंशको प्राप्त करसक्ताहूं १४ हे श्रेष्ठ मुनि यह पृथ्वी और पृथ्वीभर के सब राजालोग दुर्य्योधन के अपराधोंसे हमको अपकीर्त्ति में डालकर नाश होगये १५ दुर्य्योधनने राज्यके करोंके लेनेसे सब पृथ्वीको धनसे रहित करदिया और उस दुर्बुद्धी धृतराष्ट्रके पुत्रका भी धनागार खाली होगया १६ इस यज्ञमें पृथ्वी का दक्षिणामें देना यह प्रथम बिधिहै यह बुद्धमानोंसे देखीहुईहै शेषरीति बनाई हुईहै १७ हे तपोधन मैं उस बनाई रीतिको नहीं करना चाहताहूं हे भगवान् आप इस स्थानपर मेरे सलाहकार होनेको योग्यहो राजा युधिष्ठिरके इनबचनोंको सुनकर ब्यासजीने एकमुहूर्त्त बिचारकर यह बचन कहा १८।१६ हे राजा यह खाली धनागारभी धनसे पूर्ण होगा हिमालयपर्व्वत में नियत धन बर्त्तमानहै २० महात्मा मरुत्के यज्ञमें ब्राह्मणोंसे त्याग कियाहुआहै हे कुन्तीके पुत्र उसको लावो वही बहुतहोगा २१ युधिष्ठिर ने कहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठ वह धन राजा मरुत्के यज्ञमें कैसे इकट्ठा हुआ था और वहराजा किससमय में हुआ था २२ ब्यासजी बोले कि हे राजा जो तुमको सुननेकी इच्छा है तो उस मरुत्का वह वृत्तान्त सुनो कि जिससमय में वह बड़ा पराक्रमी और अति धनाढ्य राजा हुआथा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअश्वमेधिकेपर्व्वणिसंवर्त्तमरुत्तीयेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

—*—

चौथा अध्याय॥

युधिष्ठिरबोले कि हे निष्पाप व्यासजी उस धर्मज्ञ राजर्षिमरुत् की कथाको मैं सुनाचाहताहूं उसको आप कृपाकरके वर्णनकीजिये१ व्यासजी बोले हे तात सतयुग में दण्डधारी प्रभुमनुजी हुये उनका पुत्र महाबाहु प्रसन्धी नामसे बिख्यात हुआ २ प्रसन्धी का पुत्र क्षुप हुआ क्षुपका पुत्र इक्ष्वाकु हुआ ३ हे राजा उसके बड़े धर्मात्मा सौ पुत्र हुये प्रभु इक्ष्वाकुने उन सबको देशोंका राजा किया ४ उन सबमें बड़ा पुत्र विंशनाम बड़े धनुषधारियोंका रूपथा हे भरतबंशी उस विन्शकापुत्र कल्याणरूप विविंश हुआ ५ हे राजा विविंशके पन्द्रह पुत्रहुये वह सब धनुषविद्यामें पराक्रमी वेद ब्राह्मणोंकेरक्षक सत्यबक्ता ६ दान धर्ममें प्रवृत्त शान्तरूप और सदैव प्रिय मधुर-भाषीथे उनका बड़ाभाई खनीनेत्रनामथा उसनेउनसबको पीड़ामान किया ७ पराक्रमी खनीनेत्र अकंटक राज्यको बिजय करके उसकी रक्षामें समर्थनहींहुआ और प्रजानेउससे सुख चैन नहीं पाया ८ हे राजेन्द्र राज्यके अधिकारी नौकरोंने उसको अधिकार से रहितकरके उसके पुत्र सुवर्चसनामको उस राज्यपर नियतकरनेकोअभिषेक क-राया तब सब बहुत प्रसन्न हुये ९ उसने अपने पिताकेविपरीत कर्म औरराज्यसे पृथक्होनेको देखकर बड़ी सावधानीसेसबप्रजाके वृद्धि की इच्छासे राज्यकर्म किया १० वह वेदब्राह्मणोंका रक्षक सत्य-बक्ताबाहरभीतरसेपवित्र औरबाह्याभ्यन्तरसे जितेन्द्रीथा उस सदैव धर्मकेकरनेवाले बुद्धिमान् राजासे अत्यंतप्रसन्न हुई ११ उस धर्मा-भ्यासी राजाकाधनागार धनसेरहितहुआ सवारीनहींरहीं और जिन राजाओंकादेश उसके राज्यकी सीमासे मिलाहुआथा उन्होंने उस धनसेरहित धनागारवालेराजाको चारोंओरसे पीड़ामानकिया १२ धन घोड़े और सवारियोंसेरहित और बहुतस शत्रुओंसेपीड़ित उस राजाने राज्यके अधिकारी सेवकों समेत बड़ी पीड़ाको पाया १३ हे युधिष्ठिर वह शत्रुसेनाकेमरनेपर भी उसके मारनेको समर्थनहींहुये

क्योंकि वह राजा नेकचलन और सदैव धर्मका करनेवालाथा जब इस राजाने अपने पुरके लोगों समेत बड़ीपीड़ाकोपाया तब उसने अपनी प्रजासे कर मांगा उससे सेना प्रकट हुई १४।१५ और उस सेनाके द्वारा सब शत्रुओंको बिजयकिया हे राजा इसीहेतुसे वह करंधमनामसे प्रसिद्धहुआ १६ उस करंधमकापुत्र त्रेतायुगकेप्रारंभ मेंहुआ जो इन्द्रकेसमानधनी और देवताओंसे भी कठिनतासे बिजय करनेकेयोग्यथा १७ तब सब राजा उसके आधीन होगये वह अपने पराक्रम और नेकचलन से उन सबका महाराजा होगया १८ वह अविक्षन्नामधर्मात्मा शूरतामेंइन्द्रके समानहुआ धर्ममेंप्रवृत्त यज्ञोंका अभ्यासी धैर्य्यवान् जितेन्द्री १६ तेजसे सूर्यकेसमान क्षमामें पृथ्वीके समान बुद्धिमें बृहस्पतिजीकेसमान औरमनकी स्थिरतामें हिमालय पर्ब्बतके समानथा २० उस संपूर्ण पृथ्वीके राजाने मन बाणी कर्म्म बाह्याभ्यन्तरकी जितेन्द्रियतासे प्रजाकेमनको प्रसन्नकिया २१ जिस प्रभुने बुद्धिके अनुसार सौअश्वमेध यज्ञोंसेपूजनकिया और आपमहा-ज्ञानी अंगिरा ऋषिने जिसको यज्ञकराया २२ उसकापुत्र मरुत्नाम धर्मज्ञ कीर्त्तिमान जो चक्रवर्त्तीराजाथा उसनेभी अपनेगुणोंसेपिताको उल्लंघनकिया अर्थात् पितासे भी अधिकहुआ २३ दशहजार हाथीके समान पराक्रमी साक्षात् दूसरे बिष्णुके समानथा उस पूजनकरनेके अभिलाषी धर्म्मात्मा ने स्वर्णमयी २४ और रजतमयी हजारों पात्र बनवाये और हिमालय पर्बतके उत्तरीयपक्षमें मेरुपर्वतकोपाकर २५ जिसस्थानपर कि बहुत बड़ा सुवर्णका वृक्षहै वहां यज्ञकर्म करनेका प्रारंभ किया इसके अनन्तर कुंड, पात्र, पिठर और आसनोंको २६ जितनेसुबर्ण कर्त्ताओंनेबनाया उनकीसंख्या असंख्यहै उसीकेसन्मुख यज्ञका बाढ़हुआ २७ वहां उस संपूर्ण संसारकेस्वामी धर्मात्माराजा मरुत्ने सब राजाओं समेत बिधिपूर्व्वक यज्ञकिया २८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

—✻—

पांचवां अध्याय॥

युधिष्ठिरनेकहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठ व्यासजी वह राजा कैसा पराक्रमीहुआ और किसप्रकार बड़ा धनवान्हुआ १ हेभगवन् वह धन अब कहां वर्त्तमानहै और हे तपोधन वह हमको किसप्रकारसे मिलसक्ताहै २व्यासजीबोले हेतात दक्षिणप्रजापतिकीसन्तानमेंबहुत से देवता और असुरहुये उन्होंने परस्परमें ईर्षाकरी ३ उसीप्रकार अंगिराऋषिकेदोपुत्रहुये जो ब्रतोंमेंसमानथे उनमेंएकतो बड़े तेजस्वी बृहस्पतिजी और दूसरेबड़ेतपोधन संबर्त्त थे ४ हे राजापरस्पर ईर्षा करनेवाले वह दोनों पृथक् २ होगये उन बृहस्पतिजीने सम्बर्त्त को बारंबार कष्टदिया ५ हे भरतबंशी बड़े भाईसे बारंबार कष्टपानेवाले सम्बर्त्त नेसंसारी पदार्थोंको छोड़ मनसे उदासहो दिगम्बरहोके बन में बासकरनाअंगीकार किया ६ इन्द्रने भी सबअसुरोंको बिजयकर लोकोंमें इन्द्रकीपदवीको पाकर फिर ७ अंगिराऋषिके बड़े पुत्र वेद पाठियोंमें श्रेष्ठ बृहस्पतिजीको अपना पुरोहित किया पूर्वसमय में राजा करन्धम अंगिराऋषिका यजमानथा ८ वह राजा लोकमें चा-लचलन और पराक्रमसे अनुपम इन्द्रके समान तेजस्वी धर्मात्मा और तेजब्रत रखनेवालाथा ९ हे राजा जिसकी सवारी बड़े २ योधा और नानाप्रकारके उत्तम मित्र औरबहुमूल्यवालेपलंग यह सब १० ध्यान और सुख वायु से उत्पन्न हुये उस राजाने अपने गुणों से सब राजाओंको अपने स्वाधीन किया ११ और यथेच्छ समयतक जीवता रहकर इसी शरीर समेत स्वर्गको गया उसका पुत्र ययाति के समान महाधर्मज्ञ १२ उदक्षिण नाम हुआ उस शत्रुबिजयीने पृथ्वीको अपने आधीनकिया वह राजा पराक्रम और गुणोंसे पिता केही समान हुआ १३ उसका पुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी मरुत् नामहुआ चतुस्समुद्रान्त पृथ्वी उसकी आज्ञावर्त्तीहुई १४ हे पांडु-नन्दन वह राजा सदैव देवराजसे ईर्षाकिया करतेहैं और इन्द्रभी मरुत्के साथ ईर्षा करताथा १५ वह पृथ्वीभरका राजा मरुत् बड़ा

पवित्र और गुणवान् था उपाय करनेवाला इन्द्र भी जिसको न मारसका १६ मारनेमें असमर्थ होकर उस इन्द्रने देवताओं समेत बृहस्पतिजीकोबुलाकर यहबचनकहा१७ हेबृहस्पति जो मेरा प्रिय चाहतेहो तो तुम किसीदशामें भी राजामरुत्को श्राद्ध और यज्ञमत करावो १८ हे बृहस्पतिजी मुझअकेलेनेही तीनोंलोकमें देवताओंके इन्द्र पदको पाया और मरुत् केवल पृथ्वीका ही राजा है १६ हे ब्राह्मण तुम देवता के राजा असृत्य अमरनाम इन्द्रको यज्ञ कराके निश्शंक होकर मरण धर्म्मवाले मरुत्को कैसे यज्ञ कराते हो २० आपकाकल्याणहोय आपकेतो मुझीकोयजमानबनावो अथवा राजा मरुतहीको बनावो-अथवा मरुत्कोत्यागकर मुझीको सुखसेसेवन करो २१ हे कौरव्य इन्द्रके इस बचनको सुनकर बृहस्पतिजीने एक मुहूर्त्त भर विचारांश करके इन्द्रसेकहा २२ कि तुम जीवधारियोंके स्वामीहो और सब सृष्टि तुममें नियतहै तुम नमुचि बिश्वरूप और बलिको मारनेवालेहो२३तुम अकेले बीरने देवताओंकी श्रेष्ठ लक्ष्मी को प्राप्त किया हे बलिके मारनेवाले तुम सदैवपृथ्वीकी सब सृष्टि और स्वर्गका पालन करतेहो २४ हे देवताओंके ईश्वर इन्द्र मैं आपका पुरोहितहोकर किसरीतिसे मनुष्य मरुत्को यज्ञ कराऊं२५ हे देवेन्द्र तुम निश्चय रक्खो मैं कभी भी मनुष्यके यज्ञ सम्बन्धी स्रुवापात्रको नहीं पकडूंगा २६ चाहें अग्नि शीतल होजाय पृथ्वी चलायमान होकर सूर्य्यसे रहित होजाय परन्तु मैं सत्यतासे नहीं हटसक्ता २७ वैशंपायन बोले कि मत्सरता रहित बृहस्पति जी के इस बचन को सुनकर और उनकी बहुत प्रशंसा करके इन्द्र अपने भवनमें गया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअश्वमेधिकेपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय॥

व्यासजीबोले कि इस स्थानपर मैं उसप्राचीन इतिहासको भी कहताहूं जिसमें कि बुद्धिमान् मरुत् और बृहस्पतिजीका प्रश्नोत्तर

है १ राजा मरुत्ने उस नियमको जोकि देवराजने बृहस्पतिजीके साथ कियाथा सुनकर श्रेष्ठ यज्ञकी तैयारीकरी २ उस वार्त्तालाप में सावधान करन्धम के पौत्र मरुत्ने चित्तसे यज्ञका संकल्पकर बृहस्पतिजीके पासजाकर यह बचन कहा हे तपोधन भगवान् बृहस्पतिजी मैंने पूर्व्वसमय में जो आपसे मिलकर आपहीके बचन से यज्ञ करने की इच्छाकरीथी ३ । ४ मैं उसको करना चाहताहूं मैंने यज्ञकी सब सामग्री इकट्ठी करलीहै और हे साधु मैं आपका यजमानहूं इसहेतु से आप मेरी यज्ञशाला में चलो और यज्ञकरावो ५ बृहस्पतिजी बोले हे पृथ्वीपति मैं तुमको यज्ञ कराना नहीं चाहताहूं क्योंकि देवराज इन्द्रने मुझको पुरोहित बनाथाहै और मैंने उससे प्रतिज्ञा करलीहै ६ मरुत्ने कहा कि मैं आपके पिताका क्षेत्रहूं आपकी बड़ी प्रतिष्ठा करताहूं और आपका यजमान हूं जैसा कि मैं आपको चाहताहूं उसीप्रकार आप भी मुझ को चाहो ७ बृहस्पतिजी बोले कि मैं देवताको यज्ञकराके मनुष्य को कैसे यज्ञकरा सक्ताहूं हे मरुत् तुमजावो अथवा बैठो मैं यज्ञ नहीं कराऊंगा ८ मैंतो आपको यज्ञनहीं कराऊंगा हे महाबाहो आप [illegible] है उसको अपना उपाध्याय बनालो वही तेरे यज्ञको करेगा ९ व्यासजी बोले कि बृहस्पतिजीके ऐसे २ बचनोंको सुनकर वह राजा मरुत् बड़ालज्जायुक्त हुआ और व्याकुलचित्त होकर वहां से लौटा दैवयोग से मार्गमें उसने नारदजीको देखा १० उनके दर्शनकर उनसे बिधिपूर्व्वक मिल हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ाहुआ तब नारदजीने उससे कहा कि ११ हे राजर्षि तू अधिक प्रसन्न नहींहै हे निष्पाप तेरा कल्याण पूर्व्वक कुशल मंगलहै तू कहां गयाथा और किसकारण से तुझको यह अप्रसन्नता प्राप्तहुई १२ हे राजा तू मेरे कहने को योग्य अपने बृत्तान्तको कह हे श्रेष्ठ मैं सबप्रकारकी रीतिसे तेरे दुःखको दूरकरूंगा १३ नारदजीके इसप्रकारके वचन को सुनकर राजा मरुत्ने उपाध्यायकी ओरसे सबप्रकारकी निराशाको वर्णन किया १४ मरुत्ने कहा कि मैं यज्ञके अर्थ ऋत्विज

देखने के लिये अंगिराबंशी देवगुरु बृहस्पतिजी के पास गया था उसने मुझ को अप्रसन्न करदिया १५ अब उत्तर पाने से मैं अपना जीवननहीं चाहताहूं हे नारदजी मुझ को गुरूने त्यागकर दोषी ठहराया है १६ व्यासजी बोले कि हे महाराज राजा मरुत् के इसप्रकारबचनों को सुनकर अपने बचनोंही से सजीव करते हुये नारदजीने उस राजा मरुत् को उत्तरदिया १७ हे राजा अंगिराका पुत्र धर्म्मात्मादिगम्बरधारी संवर्त्त नाम सृष्टिको मोहित करता सब दिशाओं में घूमताहै १८ जो बृहस्पतिजी तुझ यजमान को नहीं चाहताहै तो तू उसके पासजा वह बड़ातेजस्वी प्रसन्नचित्त संवर्त्त तुझ को यज्ञ अच्छेप्रकार से करावेगा १९ मरुत् ने कहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठनारदजी मैं आपके इसबचनसे सजीव होगया अब आप यह बताइये कि मैं संबर्त्त को कहांजाकर खोजकरूं २० और उनकोमिलकर उनसे किसरीतिसे बार्त्तालापकरूं ऐसीयुक्ति बतला-इये कि जिससे वहभी मुझको नहींत्यागदे कदाचित् वहभीमुझको निषेध करदेंगे तोभी मेरा जीवना नहीं होसका २१ नारदजी बोले [illegible] जाके दर्शनोंकी अभिलाषा उन्मत्त रूपधारी वह सम्बर्त्त काशीपुरीमें सुखपूर्बक घूमताहै हे राजा उस काशीके द्वार को पाकर कहीं किसी मृतक शरीरकोरखदो उसको देखकर जोलौट जाय वही सम्बर्त्त है फिर जहां वह पराक्रमी संवर्त्त जाय वहां तुम भी उसके पीछे २ चलेजाना जब तुम उसकोकिसी एकान्तस्थानमें देखोतबहाथ जोड़कर उसकीशरणलो २२।२३।२४ जोकदाचित् वह तुझसे पूछे कि किसने तुमको मुझे बतायाहै तब तुम कहना कि हे सम्बर्त्त मुझकोनारदजीने तुमको बताया है २५ कदाचित् वह मेरे पीछे चलनेकी इच्छासे तुझको बार्त्तालापमें प्रवृत्तकरे तो तुम नि-स्सन्देह कहदेना कि नारदजी अग्निमें प्रवेशकरगये व्यासजीबोले कि वह राजऋषि ऐसाही करूंगा यह कहता नारदजीका पूजनकर बिदाहोकर बाराणसीपुरीकोगया २६।२७वहांपहुंचकर नारदजी के बचनोंको स्मरण करतेहुये उस बड़ेबुद्धिमान् राजाने ऋषिकी आज्ञा-

नुसार पुरीकेद्वारपरएकमृतक शरीरको स्थापित किया २८ सम्बर्त्त ब्राह्मण भी उसी समय उस द्वारपर आया और उसमृतक शरीरको देखकर अकस्मात् लौटा २९ वह राजा मरुत् उस लौटानेवाले को देखकर हाथजोड़ेहुये प्रार्थनाकरनेकी इच्छासे उस सम्वर्त्त केपीछे २ चला ३० उस ब्राह्मणने उस राजाको एकान्त स्थानमें देखकर धूल कीचरेत और थूकसे लिप्तकरदिया ३१ सम्बर्त्त के इसप्रकारअवज्ञासे दुःखित राजा हाथजोड़कर उसऋषिको प्रसन्न करताहुआ पीछे २ चला ३२ फिर वह थकाहुआ संवर्त्त लौटकर एक बड़े सघन वृक्षकी छाया को आश्रयलेकर उसके नीचे बैठगया ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

संबर्त्त ने कहा कि मुझको तैंनेकैसेजाना और मेरेपतेकोतुझेकिस ने बतायाहै जो तू मेरा प्रिय चाहताहै तो इस मुख्य वृत्तान्त को तुम मुझसेकहो १ तुझसत्यवक्ता के सर्बचित्तके मनोरथ प्राप्तहोंगे और मिथ्या बोलनेवालेका शिर बिदीर्ण होजायगा २ मरुत् बोला कि मार्गमें जातेहुये नारदजीने आपको मुझेबतायाहै आप मेरे गुरू के पुत्रहो इसीहेतुसेतुममें मेरीबड़ीप्रीतिहै ३ संबर्त्त नेकहाकितुमने यह सत्य कहाहै वह नारदही मुझ कपटरूप धारीको जानते हैं सोतुम उनकोबतलाओ कि वह नारदजी अबकहांहैं ४ राजाने कहा किवह देवऋषियोंमें श्रेष्ठ नारदजी आपको मुझे बताकर और मुझे बिदा-करके अग्निमें प्रवेश करगये ५ व्यासजी बोले कि संबर्त्त ने राजाके इस बचनकोसुनकर बड़ेआनन्दको पाया और कहाकि मैंभीइसीप्र-कार इसके करनेको समर्थहूं ६ हेराजा इसकेपीछे बचनोंसे घुड़क कर उस उन्मत्त ब्राह्मणने दुखी होकर बारंवार यहबचन कहा ७ किमुझ उन्मत्त अपने चित्तके अनुसार कर्मकरने वाले और ऐसे रूप वालेसे कैसेयज्ञ कराना उचितहै ८ मेराभाई बड़ासमर्थहोकर इन्द्र सेमिला हुआहै और यज्ञ करानेमें बड़ाकर्म कर्ताहै तुम उससे अप-

नां यज्ञ कराओ ९ जोकिगृहस्थियोंके होमादिक कर्मऔर सबग्रह देवता आदिक स्थापननामकर्महैं उनकाज्ञाताहै और मेरायहशरीर बड़े भाईसे निन्दित होकर पुरोहिताईसे जुदाकिया गयाहै १० हे अविक्षतके पुत्रमैं उसअपने भाईकी आज्ञाकेबिना कभी किसीदशा मेंभी तुझको यज्ञनहीं करासक्ता वही बृहस्पति मेरा बड़ापूज्यहै ११ सोतुम बृहस्पतिजीके पासजाओ औरउससे पूछकरआओ इसकेपीछेजो तूयज्ञकराना चाहताहै तोमैं तुझको यज्ञकराऊंगा १२ मरुत् नेकहा कि हे सम्बर्त्त मैं प्रथम बृहस्पतिजीके पासगयाथा उसकावृत्तान्त आपसुनिये कि वह इन्द्रकीप्रसन्नताके निमित्तमुझको यजमान नहीं बनाया चाहते १३ वह कहते हैं कि मैं देवताको यजमान बनाकर फिर मनुष्यको यज्ञनहीं कराऊंगा क्योंकि मुझको इन्द्रने निषेध करदियाहै कि मनुष्यको यज्ञमत कराओ १४ हे वेदपाठी वह देवराज सदैव मुझसे ईर्षाकिया करताहै इसीसे आपके भाई ने भी उससेप्रतिज्ञाकरलीहै किमैं मनुष्य को यज्ञ नहीं कराऊंगा १५ हे मुनियोंमें श्रेष्ठवह बृहस्पतिजीदेवराजकेपास स्थितहोकर मुझ प्रेम पूर्व्वक पास जानेवालेको यजमान करनानहीं चाहतेहैं १६ सोमैं आपके द्वारा अपने संपूर्ण धनसेभी यज्ञकरना चाहताहूं आपहीके गुणोंके द्वारामैं इन्द्रसेभीअधिकहुआ चाहताहूं १७ बिनाअपमान करनेकेबृहस्पतिजीने मुझ को यही उत्तरदियाहै हेब्रह्मन्इसीहेतुसे उनकेपास जानेको मैं इच्छा पूर्व्वक उत्साह नहींकरता हूं १८ संबर्त्त ऋषिने कहाकि हे राजाजो तुममेरे सबमनकी इच्छाको करोगे तो तुमजैसा करना चाहतेहो वहसब निर्विघ्नतासे होगा १९ अब मैं केवल इसएकबात कोही शोचताहूं कि अत्यन्त क्रोधयुक्त बृहस्पति और इन्द्र मुझयाचकके द्वारा यज्ञ करानेवाले तुमको मुझसेबिरुद्ध करावेंगे २० इसीमें मेरेचित्तकी दृढ़तान्यूनहोतीहै इससे निश्चय करके मेरे चित्तकी दृढ़ताको तुमकरो नहींतो मैं क्रोधयुक्त होकर बांधवोंसमेत तुझको भस्म करदूंगा २१ मरुत्नेकहा कि जबतक कि सूर्य्य प्रकाशको करताहै और पर्व्वतभी नियत हैं तबतकमैं लोकों

को न पाऊं जो मैं अपने प्यारे मित्रको त्यागकरूं २२ किसी समयमें भी श्रेष्ठ शुभबुद्धिको न पाऊं और बिषयोंमें प्रबृत्तहोजाऊं जो अपने प्रियमित्रको त्यागकरूं २३ संवर्त्त ने कहा हे राजा मरुत् सब कर्मोंमें तेरी शुभ बुद्धिहोय इस प्रकारसे यज्ञ कराना मेरे हृदयमें भी वर्त्तमानहै २४ हे राजा मैं तेरे उत्तम धनको अबिनाशी करूंगा जिसके द्वारा तू देवता गन्धर्वों समेत इन्द्रको तिरस्कारकरेगा २५ मेरी बुद्धि और धन अन्य यजमानोंमेंनहीं प्रवृत्तहै परन्तु अपनेभाई बृहस्पति और इन्द्र इन दोनोंकाअप्रिय करूंगा २६ निश्चय करके इन्द्रकेसाथमें तेरे समानता प्राप्तकराऊंगा और तेराअभीष्ट करूंगा यह तुझसे मैं सत्य २ ही कहताहूं २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय॥

इस अध्यायमें प्रथमश्लोकसे तेंतीसश्लोकतकसुबर्णके इच्छावान् पुरुषका जपके योग्य स्तोत्रहै उसका ऋषि सम्वर्त्त है हिरण्यबाहु रुद्रदेवताहै अनुष्टुप छन्दहै और सोनामहै—

स्तोत्र

संवर्त्तउवाच ॥ गिरेर्हिमवतःपृष्ठे मुंजवान्नामपर्वतः । तप्यतेयत्र भगवांस्तपोनित्यमुमापतिः १ वनस्पतीनांमूलेषुशृंगेषुविषमेषुच । गुहासुशैलराजस्यरमतेस्मयथासुखम् २ उमासहायोभगवान् यत्रनित्यंमहेश्वरः । आस्तेशूलीमहातेजानानाभूतगणावृतः ३ तत्ररुद्राश्च साध्याश्चविश्वेथवसवस्तथा । यमश्चवरुणश्चैवकुबेरश्चसहानुगः ४ भूतानिचपिशाचाश्चनासत्यावश्विनौतथा । गन्धर्वाप्सरसश्चैवयक्षा देवर्षयस्तथा५ आदित्यामरुतश्चैवयातुधानाश्चसर्वशः । उपासन्तेमहात्मानंबहुरूपमुमापतिम्६ रमतेभगवांस्तत्रकुबेरानुचरैस्सह । विकृतैर्विकृताकारैः क्रीड़द्भिःपृथिवीपते ७ श्रियाज्वलन्दृश्यतेवैबालादित्यसमद्युतिः । नरूपंशक्यतेतस्य संस्थानंवाकदाचन ८ निर्देष्टुंप्राणिभिःकैश्चित्प्राकृतैर्मांसलोचनैः । नोष्णंनशिशिरंतत्रनवायुर्नचभा

स्करः६ नजराक्षुत्पिपासेवानमृत्युर्नभयंनृप । तस्यशैलस्यपार्श्वेषुसर्वेषुजयतांवर १० धातवोजातरूपस्यरश्मयःसवितुर्यथा। रक्ष्यन्तेतेकुबेरस्यसहायैरुद्यतायुधैः ११ चिकीर्षद्भिःप्रियंराजन् कुबेरस्यमहात्मनः। तस्मैभगवतेकृत्वानमःशर्वायवेधसे १२ रुद्रायशशिकंठायपुरुषायसुवर्चसे। कपर्दिनेकरालायहर्यक्ष्णेवरदायच १३ त्र्यक्षायपूष्णोदंतभिदेवामनायशिवायच। याम्यायाव्यक्तरूपायसद्वृत्तेशंकरायच१४ क्षेम्यायहरिकेशायस्थाणवेपुरुषायच। हरिकेशायमुंडायकृशायोत्तारणायच१५ भास्करायसुतीर्थायदेवदेवायरंहसे। उष्णीषिणेसुवक्त्राय सहस्राक्षायमीढुषे१६ गिरिशायप्रशांताययतयेचीरवाससे। विल्वदंडायसिद्धायसर्वदंडधरायच १७ मृगव्याधायमहतेधन्विनेथभवायच। वरायसौमवक्त्रायसिद्धमंत्रायचक्षुषे १८ हिरण्यबाहवेराजन्नुग्रायपतयेदिशाम्। लेलिहानायगोष्ठायसिद्धमंत्रायवृष्णये १६ पशूनांपतयेचैवभूतानांपतयेनमः। वृषायमातृभक्तायसेनान्येमध्यमायच२० स्रुवहस्तायपतयेधन्विनेभार्गवायच। अजायकृष्णनेत्रायविरूपाक्षायचैवहि २१तीक्ष्णदंष्ट्रायतीक्ष्णायवैश्वानरमुखायच। महाद्युतयेनंगायशर्वायपतयेदिशाम् २२ विलोहितायदीप्ताय दीप्ताक्षायमहौजसे। वसुरेतःसुवपुषे पृथवेकृत्तिवाससे २३ कपालमालिनेचैव सुवर्णमुकुटायच। महादेवायकृष्णाय त्र्यंवकायानघायच २४ क्रोधनायानृशंसाय मृदवेबाहुशालिने। दंडिनेतप्ततपसे तथैवाक्रूरकर्मणे २५ सहस्रशिरसेचैव सहस्रचरणायच। नमःस्वधास्वरूपायबहुरूपायदंष्ट्रिणे २६ पिनाकिनंमहादेवं महायोगिनमव्ययम्। त्रिशूलहस्तंवरदं त्र्यंवकंभुवनेश्वरं २७ त्रिपुरघ्नंत्रिनयनंत्रिलोकेशंमहौजसम् । प्रभवंसर्वभूतानां धारणंधरणीधरम् २८ ईशानंशंकरंसर्वं शिवंविश्वेश्वरंभवम्। उमापतिंपशुपतिं विश्वरूपंमहेश्वरम् २६ विरूपाक्षंदशभुजं दिव्यगोवृषभध्वजं। उग्रंस्थाणुंशिवंरौद्रंशर्वंगौरीशमीश्वरम् ३० शितिकंठमजंशुक्रंपृथुंपृथुहरंवरम्। विश्वरूपंविरूपाक्षंबहुरूपमुमापतिम्३१ प्रणम्यशिरसादेव मनंगांगहरंहरम्। शरण्यंशरणंपाहिमहादेवंचतुर्मुखम् ३२ एवंकृत्वानमस्तस्मै महादेवायरंहसे । महात्मनेक्षि

तिपते तत्सुवर्णमवाप्स्यसि ॥ इति सुवर्णपुरुष स्तोत्रं समाप्तम् ॥
अब इसका अर्थ लिखतेहैं ॥

सम्बर्त्त ने कहा कि हिमालय पर्व्वतकी पृष्ठपर मुंजमान नाम पर्व्वतहै जिसपर भगवान् शिवजी सदैव तपस्या किया करतेहैं १ वृक्षोंके मूल गिरिराजके शिखर गुफा और दुर्गम्य स्थानों में सुख पूर्व्वक रहतेहैं २ जहां अनेक प्रकारके भूतगणोंसे युक्त शूल धारी महातपस्वी भगवान् महेश्वरजी उमादेवी समेत सदैव निवास करतेहैं ३ वहां ग्यारह रुद्र साध्य गण बिश्वेदेवा अष्टवसु यमराज बरुण कुवेर अपने साथियों समेत ४ भूत पिशाच अश्विनी कुमार गन्धर्व अप्सरा यक्ष देवऋषि ५ द्वादश सूर्य्य उनचास मरुत और सब प्रकारके यातुधान उस भवरूप महात्मा शिवजीकी उपासना करतेहैं ६ वहां बिकृतबिकृताकारभूतगणभीक्रीड़ाकरतेहैं उनकेसाथ में वह सूर्य्यके समान तेजस्वी शिवजी अपनी शोभासेही प्रकाश मान दृष्टि गोचर होतेहैं ७ जिनकारूप और आकार कभी मांस चर्म दृष्टी प्राकृत पुरुषोंसे दृष्टि आना असंभवहै वहां न गरमीहै न सर्दी है न हवाहै न सूर्य्यहै ८ नवृद्धावस्थाहै न क्षुधाहै न तृषाहै न मृत्युहै और न भयहै हे बिजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ राजामरुत उस शैलके सबपार्श्वोंमें अर्थात् ओरोंमें ९।१० जातरूप सुवर्णकी ऐसी धातुहैं जैसे कि सूर्य्यकी किरणें होतीहैं उनधातुओंके रक्षाकरनेवाले कुबेर के वह शस्त्रधारी लोगहैं ११ जोकि महात्मा कुबेरजीके प्रियकरने के अभिलाषीहैं हेराजा उसषड़ैश्वर्य्यके स्वामीसृष्टिके पालनऔर संहारकरनेवाले शिवजीको नमस्कार करकेरुद्र, नीलकंठ, पुरुष, सुबर्चस, कपर्द्दिन, कराल, पिंगल नेत्र, बरदाता १२। १३ अक्षण, पूषा दन्तबिदारण, बामन, शिव, याम्य, अव्यक्तरूप, सद्वृत्त, शङ्कर १४ क्षेम्य हरिकेश, स्थाणु, पुरुष, हरिकेश, मुंड, कृश, उत्तारण १५ भास्कर, सुतीर्थ, देवदेव, अंहस, उष्णीषिण, सुवक्र, सहस्राक्ष, मीढुष, गिरिश, शान्तरूप, सन्यासी, चारबस्त्रधारी, बिल्वदंडधारी, सिद्ध, सर्बदंडधारी १६। १७ यज्ञरूप मृगव्याध, महत, धन्वी, भव, बर,

चन्द्रमुख, सिद्धमन्त्र, चक्षुष १८ हिरण्यबाहु, उग्र, दिशापति, लेलिहान, गोष्ट, सिद्धमन्त्र, बृष्णी, १६ पशुपति और भूतपतिको नमस्कार वृष, मातृभक्त सेनानी, मध्यम, २० स्तुवहस्त पति, धनुषधारी, भार्गव, अज, कृष्णनेत्र, बिरूपाक्ष २१ तीक्ष्णदंष्ट्र, तीक्ष्ण, वैश्वा, नरमुख, महाद्युति, अनंग, शर्ब, विशाम्पति २२ बिलोहित, दीप्त, दीप्ताक्ष, महौजस, बसुरेत, सुबपुष, पृथु, कृत्तिबास २३ कपालमाली, सुबर्ण मुकुट, महादेव, कृष्ण, त्र्यंबक, अनघ २४ क्रोधन, अन्नृशंस, मृदु, बाहुशाली, दंडी तपस्वी, अक्रूरकर्मा २५ सहस्त्रशीर्ष, सहस्त्रपाद, स्वधास्वरूप, बहुरूप नृसिंहरूप, २६ के अर्थनमस्कारकरके उस पिनाकधनुषधारी महादेवयोगी, न्यूनतासे रहित त्रिशूलधारी बरदाता त्र्यंबक भुवनेश्वर २७ प्रलयकर्त्तात्रिपुर त्रिनेत्र सब सृष्टिका ईश्वर महातपस्वी सबमात्रका उत्पत्तिस्थान, आश्रयस्थान, पृथ्वीको धारण करनेवाले २८ ईशान, शंकर, सर्व, शिव, बिश्वेश्वर, भव, उमापति, पशुपति, बिश्वरूप, महेश्वर २६ बिरूपाक्ष, दशभुजाधारी, दिब्यनन्दीश्वरकी ध्वजारखनेवाले, उग्र, स्थाणु, शिव, रौद्र, शर्व्व, गौरीश, ईश्वर ३० नीलकंठ, अज, शुक्र, पृथु, पृथुहर, बर, बिश्वरूप, बिरूपाक्ष, भवरूप, उमापति, अनङ्गांगहर अर्थात् कामदेवके शरीरके नाशक ३१ रक्षाश्रय, शरण्यरूप, महादेव और चतुर्म्मुख देवताको शिरसेदण्डवत्करके शरणागतहोजाय ३२ इसप्रकार उस महादेव रहस, महात्मा, पृथ्वीपतिके अर्थ नमस्कार करके उस सुबर्णको पावेगा ३३ सुबर्ण लानेवाले तेरे मनुष्य वहां जायँ और सुबर्णलावें उसका रंधभ के पुत्रने उसके कहेहुये बचनको उसीप्रकार से किया ३४ उसीसे यज्ञकी सब विधि देवताओंके समानकरी वहां उत्तम २ कारीगरोंने सबसुबर्णके पात्र बनाये ३५ बृहस्पति ने राजामरुतके उस बड़ेभारी धन को जोकि देवताओं सेभी अधिकथा देखं सुनकर बड़ा दुःख किया ३६ और महादुःखित होकर उनके मुखकी चेष्टा बिगड़कर बड़ी कृशता को पाया यहशोचकर कि मेराशत्रु सम्बर्त्त बड़ाधनाढ्यहोगा ३७ तब

देवराजइन्द्रने बृहस्पतिजीकी उसदशाकोदेखकर अत्यंत दुःखमाना उससमय देवताओं समेत इन्द्रने मिलकर यह बचनकहा ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणि अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

इन्द्र बोलेकि हे बृहस्पतिजी तुम सुखपूर्व्वक सोतेहो और आप की सेवाकरनेवाला चित्तके अनुसार आज्ञाकारीहै तुम देवताओंका सुखचाहने वालेहो हे वेदपाठी देवता तुम्हारा पालन करते हैं १ बृहस्पतिजीने कहा कि हे देवराज मैं शयनपर सुखसे सोताहूं मेरे सेवाकरनेवाले भी मेरी इच्छाके अनुसार कामकरते हैं देवताओंके सुखका चाहने वालाहूं और देवताभी मेरा सदैव पालनकरतेहैं २ इन्द्रनेकहा कि जब सबसुखवर्त्तमानहैं तो यह चित्तमेंखेद और शरीरकीवेदनाकैसेहै काहेसे आपकापांडुवर्ण और स्वरूपमें रूपांतरहै हेब्राह्मण आप अवश्यमुझसेकहो मैं आपके दुःखदेनेवाले सब शत्रुओंकोमारूंगा ३ बृहस्पतिजीबोले हेइंद्रराजामरुत उत्तमदक्षिणावाले बड़ेभारीयज्ञसेपूजनकरेगा और सम्बर्त्त पूजनकरावेगा यहमैंनेसुना है सो मेरीइच्छाहै अर्थात् मैंचाहताहूं कि वह सम्बर्त्त उसको पूजन न करावे ४ इंद्रबोले हे वेदपाठी तुमसबअभीष्ट मनोरथोंकेप्राप्तकरने वालेहो काहेसे कि आप देवताओं के मंत्री और पुरोहित होगयेहो आपकेजरामरण दोनों नाशहुये अब सम्बर्त्त आपका क्या करसकेगा ५ बृहस्पतिजी ने कहा कि तुम जहां जहां जिस२ शत्रुकोवृद्धि युक्त होतादेखतेहो वहांअपनेदेवताओं समेततुमउन२असुरोंकोपराजयकरके उनकेसाथियोंकोभी मारना चाहतेहो क्योंकि शत्रुकीवृद्धि काहोनादुःखरूपहै ६ हेदेवेन्द्र मेराशत्रु वृद्धिकोपाताहै उसीके सुनने से मेरीयह रूपान्तर दशाहै हेइन्द्रसब उपायोंसे राजामरुतअथवा संबर्त्तको बिजयकरो ७ इन्द्रबोलेकि हेअग्नि यहांआओ आपराजा मरुतसे कहदो कि आप अपना ऋत्विज बृहस्पति जीको बनाओ यही बृहस्पतिजी तुमको यज्ञकरावेंगे और अमर करदेंगे ८ अग्नि

ने कहाकि हे इन्द्र बहुत अच्छा अबमें दूतबनकर बृहस्पति जीको राजा मरुतका ऋत्विज बनानेको और आप के बचन के सत्यकरने को जाताहूं क्योंकि मैंभी बृहस्पतिजीसेही पूजनकराना चाहताहूं ९ व्यासजीबोलेकि ऐसाकहकर वहअग्नि देवता बन,बेलि,लताआदि-कोंका मर्द्दनकर बड़ीइच्छासे हिमालय के समीप घूमतेहुये बायुके समान गर्जनाकरते लड़कियोंको उल्लंघनकरते जलतेहुये महात्मा अग्नि चलदिये १० मरुतने कहा कि हे संबर्त्त जी अबमैंअपूर्व्वरूप के शरीरधारी आतेहुये अग्नि देवताको देखताहूं हे मुनिआपआसन जलपाद्य और गौको सन्मुख लाओ ११ यहबात सुनकर अग्निने राजा मरुत से कहा कि हे निष्पाप मैं तेरे इस जलपाद्यादिक को अंगीकार करूंगा परन्तु अभीमैं इन्द्रकी आज्ञासे दूतहोकर तेरेपास आयाहूं १२ मरुतने कहाकि हे अग्नि देवता वह श्रीमान् देवराज प्रसन्नहै हमसेप्रीति करताहै उसके आधीनदेवता अच्छीरीतिसे हैं आप इस सबवृत्तान्तको मुझसेकहो १३ अग्निबोले हेमहाराजइन्द्र बहुत सुखीहै वह तुझसे अजर अमर प्रीतिको चाहताहै सब देवता उसके आधीन होकर आज्ञावर्त्तीहैं हे राजा अबतुम देवराजकेसन्देश को मुझसे सुनो १४ हे राजा वृहस्पतिजी के ऋत्विज करनेके अर्थ मुझको तेरेपासभेजाहै औरवहीवृहस्पतिजीतुमकोयज्ञ करावेंगे और तुझ मरण धर्मवालेको अमरकरेंगे १५ मरुतने कहा कि यह संबर्त्त ब्राह्मण मुझको यज्ञ करावेंगे उसकाभी नमस्कार बृहस्पति जीकोहै यह वृहस्पतिजी महाइन्द्रको यज्ञ कराकर मनुष्य को यज्ञ कराने से शोभानहींपावेंगे१६अग्निने कहाकिनिश्चयकरकेदेवलोकमें जो बड़े लोकहैं तुमउनलोकोंको देवराजकी कृपासे पावोगेजो वृहस्पतिजी तुमको यज्ञ करावेंगे तो अवश्य तुम शुभकीर्त्ति से संयुक्त होकरस्वर्ग को बिजय करोगे १७ इसीप्रकार जो मनुष्य दिव्यलोक प्रजापति के बड़ेलोकहैं वहसब और इनके सिवाय देवताओंका सब राज्यभी तुमबिजय करोगे हेराजा जोवृहस्पतिजी तुमको यज्ञकरावें १८ फिरसंवर्त्त ने कहा हे अग्नि इसरीतिसे फिरआप कभीकभी बृहस्पति

जीको मरुतके ऋत्विज करानेके निमित्त न आना नहींतो मैंक्रोधरूप होकर तुमको अपने भयानक नेत्रोंसेही भस्म करदूंगा तुम इसको निश्चयही जानना १९ व्यासजी बोलेकि सम्बर्त्तकेइसबचनके सुन-तेही पीपलके बृक्षके समान पीड़ित और कंपायमान और भस्महोने से भयभीत होकर अग्निसब देवताओंकेपास गये महात्मा इन्द्रने उसअग्निको देखकर बृहस्पतिजीके सन्मुख यह बचनकहा २० कि हेअग्नि जो आप हमारेभेजेहुये यज्ञकरनेके इच्छावान् राजामरुत के पास बृहस्पति जीके ऋत्विज होनेके निमित्त गयेथे उस राजाने क्या कहा क्या वह उसबचनको अंगीकार करताहै २१ अग्निनेकहा कि राजा मरुत तेरे उस बचन को अंगीकार नहीं करता है उसने बृहस्पतिजीकेलिये अंजली भेजीहै अर्थात् नमस्कार कियाहै और मुझसमेत उसराजानेबारंबार यहबचनकहा कि मुझकोयज्ञसम्बर्त्त करावेगा २२ और उस प्रसन्नचित्त ने कहाहै कि जो वह बृहस्पति जी मुझको मिलकर उन मानसदिव्य और प्रजापतिजी के भी बड़े लोक दिलानेको कहैं तौ भी मैं नहीं चाहता २३ इन्द्रने कहा कि तुम फिर जाकर उसराजासे मेरे सार्थक बचनोंको कहो जो आपके समझानेपर भी वह राजामरुत मेरे वचनको नहीं करेगा तो फिर उसपर मैं अपनेबज्रका प्रहार करूंगा २४ अग्निनेकहा कि हे इन्द्र इन गंधर्वराजको दूतबनाकर आपभेजिये मैं वहां जानेसे भयभीत होताहूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य्य में प्रवृत्त क्रोधयुक्त तीव्रक्रोधी सम्बर्त्त ने मुझसे यहबचन कहाहै २५ किजो तुम इसप्रकार से किसी दशामें भी राजामरुतके ऋत्विज बनानेको बृहस्पतिके कहनेको आओगे तो मैं अत्यन्त क्रोधित होकर अपने भयानक नेत्रसे तुमको भस्म करदूंगा यह उनकाकथनहै २६ इन्द्रनेकहा कि हे अग्नितुमहीं तो सबको भस्म करनेवाले हो तुम्हारे सिवाय और कौन दूसरा भस्म करनेवालाहै सबसंसार तेरेस्पर्शमात्रसेही डरतेहैं हेअग्नि तुम्हारा कहना श्रद्धाके योग्यनहींहै २७ अग्निने कहा हे देवेन्द्र तुम अपने बल पराक्रमसे स्वर्ग और पृथ्वीको लपेटो पूर्वसमयमें इसबृत्रासुर

नेतुझसरीके इन्द्रके स्वर्गको कैसे विजय करलियाथा २८ इन्द्रने कहा हे अग्नि मैं पर्व्वतादि कोभी मक्षिका आदिकके समान छोटा करसक्ताहूं परंतु शत्रुके अमृतकापान नहीं करूंगा मैंनिर्बल परबज् का प्रहार नहीं करूंगा कौनसा मनुष्य अपने सुखके लिये मुझपर प्रहार करसक्ता है २९ पृथ्वीपर कालिकेय नाम असुरों को पृथक् करदूं दानव लोगोंको अन्तरिक्षसे दूरकरदूं आकाशके शब्दकानाश करदूं मेरेऊपर प्रहार करनेकी किसमनुष्यकी सामर्थ्यहै ३० अग्नि नेकहा जिस स्थानपर कि राजा सर्य्यातको यज्ञ करातेहुये अकेले च्यवन ऋषिने अश्वनीकुमारों के निमित्त अमृत को हाथमें लिया उस समय क्रोधयुक्त ऋषिने प्रथमही तुमको रोकाथा हे महाइन्द्र सर्य्यात के उसयज्ञका स्मरणकरो ३१ उससमय हे इन्द्रतुमनेअपने भयानक और भयकारीरूप बज्रको लेकर च्यवन ऋषिके ऊपर प्रहारकरना चाहाथा तबक्रोधयुक्त वेदपाठी उसच्यवन ऋषिने अपने तपके प्रभावसे बज्रसमेततेरी भुजाको रोक दियाथा ३२ फिर उस ऋषिने क्रोधसे तेरेशत्रु मदनाम असुर जो कि सबओरसे भयानक रूपथा उसको उत्पन्नकिया तुमने जिसबिश्वरूप असुरको देखकर दोनोंनेत्र बन्दकरलियेथे ३३ उसबड़े दानवका नीचेका ओष्ठपृथ्वी पर नियत और ऊपर का ओष्ठस्वर्ग में वर्त्तमान था उसके हजार दांत सौ योजन लंबे अत्यन्त तीक्ष्ण महा भयानकरूपथे ३४ और उसकी चार डाढ़ें दोसौ योजन लंबी गोलमोटी चांदी के स्तंभकी सूरतथीं वहअपने भयानक दांतोंको कटकटाकर अपने शूलकोउठाकर मारनेकी इच्छासे तेरेसन्मुखदौड़ा ३५ तबतुमने उस घोररूप दानवको देखा और सब लोगोंनेभी तुझ देखनेके योग्य को देखा हेदानवोंके नाशकरनेवाले इसीहेतुसे तुम भयभीतता पूर्ब्बक हाथ जोड़कर महर्षीकोशरणमेंगये ३६ ब्राह्मणकाबलक्षत्रीके बलसेबड़ाहै ब्राह्मणसेउत्तम और बड़ादूसराकोईनहीं है सोहेइन्द्रमैंब्रह्मतेजको निश्चयऔरठीकजानंकरसम्बर्त्त कोबिजयकरनानहींचाहताहूं ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसम्बर्त्तमरुत्तीयेनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय ॥

इन्द्रने कहा कि तुम्हारा कहना यथार्थहीहै ब्राह्मणका बलबड़ाहै ब्राह्मणसे वृद्धतम कोईनहींहै परन्तुमैं राजामरुतके बलपराक्रमको नहीं सहसक्ताहूं मैं इसपर घोर बज्रका प्रहार करूंगा हेधृतराष्ट्र गन्धर्व तुमहमारे भेजेहुये जाकर सम्बर्त्त समेत राजामरुत से कहो कि हेराजा तुम बृहस्पतिको ऋत्विजकरो नहींतो इन्द्र तुम्हारेऊपर घोरबज्रको छोड़ेगा १ । २ ब्यासजी बोलेकि इसके पीछे धृतराष्ट्र नेजाकर राजामरुतसे यहइन्द्रका बचन कहा ३ कि हेमहाराजमैं धृतराष्ट्रनाम गन्धर्व आपसे बार्त्तालाप करनेको आयाहूं हेराजाओं में श्रेष्ठ उसलोकेश्वर महात्मा इन्द्रने जो बचनकहाहै उसको मुझसे सुनों ४ अर्थात् इन्द्रनेकहा है कि कैतोतुम बृहस्पतिजी को अपना ऋत्विज बनाओ औरजोमेरेइसकहनेको नमानेगा तोमैं तुझपर घोर बज्रकाप्रहार करूंगा उसध्यानसेपरे कर्मकरनेवालेदेवराज इन्द्रका यह कहा हुआ बचनहै ५ मरुतने कहा कि इसबातकोतुमइन्द्रबिश्वे-देवा और अश्विनीकुमार भी जानतेहो कि इसलोक में मित्रकेसाथ शत्रुता करने में ब्रह्महत्या के समान ऐसाबड़ा पापहै कि जिसका प्रायश्चित्तभी नहीं होसक्ता ६ बृहस्पतिजी उस देवताओं में और बज्रधारियों में श्रेष्ठ महाइन्द्रको यज्ञकरावें और मुझको सम्बर्त्त ही यज्ञकरावेंगे हेगन्धर्वराज मैं तेरे अथवा उसइन्द्रके बचनको अच्छा नहींमानताहूं ७ गन्धर्व बोला हेराजाओं में श्रेष्ठ इससमयआकाश में गर्जना करने वाले इन्द्रके भयकारी शब्दोंको सुनों वह महा-इन्द्र अवश्य तुझपर अपने बज्र का प्रहार करेगा हे राजा अपनी कुशलको बिचारो अबयही समयहै ८ ब्यासजीबोले हेराजाधृतराष्ट्र के इसप्रकारके बचनोंके पीछे मरुतने गर्जते हुये इन्द्रके शब्दको सुनकर उसधर्मज्ञोंमें श्रेष्ठ सदैव तपस्वी सम्बर्त्त से इन्द्रके इस बचनको जाकरकहा ९ अर्थात् मरुतनेसम्बर्त्त से कहा कि अब ब-हुत शीघ्रही मैं अपने इस शरीर को डूबा हुआही मानताहूं उस

इन्द्रकोइतना मार्गदूरनहींहै इससेहेऋषि मैं आपसेअपनाकल्याण चाहताहूं हे वेदपाठियों में श्रेष्ठ इस हेतुसे आप मुझको निर्भयता दो १० क्योंकि यह बज्रधारी इन्द्र घोर और दिव्य रूपसे दशों दिशाओंको प्रकाशित करता हुआ आताहै इसशब्दसे ब्राह्मण भयभीतहैं ११ सम्बर्त्त ने कहा हेराजाओं में श्रेष्ठ इन्द्रसे तेरा भयदूर होजाय में अभी इस घोर भयको नाश करदूंगा अर्थात् बहुत शीघ्र स्तंभनी बिद्यासे उसको रोकूंगा तुम बिश्वास युक्तहोकर इसकेतिरस्कार सेमत डरो १२ हेराजा मैं इसको रोकताहूं तुम इन्द्रसेकभी मतडरो मैंने सब देवताओंके शस्त्रों को निरर्थक अर्थात् बेकाम कर दिया १३ बज्रदिशाओंको सेवनकरेगा बायु चलेगी और मेघ अन्न होकर बनोंमें बर्षाकरेगा और अन्तरिक्ष में जोजलहोगा वह निरर्थक होजायगा जोतुमको बिजली दिखाई पड़े उससे तुमकभी मत भयकरो १४ अग्निदेवता सबओरसे तेरी रक्षाकरेंगे और इन्द्रतेरी सबअभिलाषाओंको बर्षावेगा इसीप्रकारजलोंसे ढकाहुआमहाघोर बज्रमारने के निमित्त नियत बना रहैगा १५ मरुतने कहा कि यह बड़ा भयकारी बड़ा शब्द सुनाजाताहै यह बायुसे मिलेहुये बज्र का शब्दहै मेरा चित्त बारंबार पीड़ापाताहै हेवेदपाठी अभी मेरे चित्तमें बिश्वास और दृढ़तानहीं होती है १६ सम्बर्त्त ने कहा हे महाराज अबबड़े भयानक बज्रसे तेराभयदूर होय मैं बायु रूप होकर उस बज्रको दूरकरताहूं अबतुम अपनेभयको त्यागकर दूसरे बरकोमांगो औरजोतूचाहैगा मैं उसी तेरे अभीष्टकोचित्तसे पराकरूंगा १७ मरुतने कहा हेवेदपाठी यहइन्द्र शीघ्रतासे साक्षात्मेरे सन्मुखआवे और यज्ञमें हव्यको अंगीकारकरे देवता लोगभी अपने२ स्थानोंपर नियत होकर होमे हुये हव्यको अंगीकार करें १८ सम्बर्त्त नेकहा हेराजामेरे मन्त्रसे बुलाया हुआ तीक्ष्ण वक्ता देवताओंसे स्तूयमान यह इन्द्र हरिजातवाले घोड़ों की सवारी से इस यज्ञमें आताहै अबतुम इसको मन्त्रोंकरके सुस्त शरीर देखोगे १६ इसकेपीछे उस अतुल पराक्रमी राजा मरुतके अमृतके पानकरने का अभिलाषी

देवराज घोड़ोंमें उत्तम हरिनाम घोड़ोंको रथमें जोतकर देवताओं समेत यज्ञमें आया २० तब प्रीतिमान राजा मरुतने पुरोहित और देवताओंके समूहों समेत आयेहुये इन्द्रको अभ्युत्थान पूर्व्वक प्रतिष्ठाकरी और शास्त्रकी बिधिके अनुसार देवराजका उत्तम पूजन किया २१ और सबप्रकार से पूजन करके मरुतने कहा कि हेइन्द्र आपका आना कल्याणकारीहो हेज्ञानी आपकी वर्त्तमानतामें यह यज्ञ शोभापावेगा हेबलि और बृत्रासुरके मारनेवाले मेरे दियेहुये अमृतको आप पानकरो २२ और यहभी कहा कि हेदेवराज आप मुझको अपने कल्याण रूपनेत्रोंसे देखो तुमको नमस्कारहै मैंनेयज्ञ प्राप्तकिया अब मेराजीवन सफलहै बृहस्पतिजी का छोटाभाई वेद पाठियोंमें श्रेष्ठ सम्बर्त्त इस मेरे यज्ञको करताहै २३ इन्द्रने कहा हेमहाराज मैं तेरे इस गुरूको जोकि तपका धन रखनेवाला बड़ा तेजस्वी और बृहस्पतिजी का छोटाभाईहै अच्छी रीतिसे जानताहूं मैं उसीके बुलानेसे आयाहूं अब तुझमें मेरोप्रीतिहै क्रोध दूरहोगया २४ सम्बर्त्तने कहा हेदेवराज जोतुम प्रसन्नहो तो आपयज्ञमें तैयारी कराओ और देवताओ तुमसब मिलकर भागोंका बिचार करो और यह सब संसार इसबिषयके प्रयोजनको जानो २५ ब्यासजी कहते हैं कि अंगिरा बंशी सम्बर्त्त के इस प्रकारके बचनोंको सुनकर इन्द्रने आपही सब देवताओंको आज्ञाकरी कि अपूर्व्वरूप और धनसे वृद्धियुक्त सभा और हजारों उत्तम २ स्थानादिक तैयारकरो २६ और शीघ्रही गन्धर्व और अप्सराओंके चढ़नेके योग्य स्तंभ वाले ऐसे स्थान बनाओ जिनमें सब अप्सरा नृत्यकरें और यज्ञके बाड़ेको स्वर्गके समान करदो २७ हेमहाराज इन्द्रके इस बचनको सुनतेही बड़े प्रसन्न चित्त देवताओंने उनके कहतेहीशीघ्र उनकी आज्ञाको पूराकिया तदनन्तर बड़े प्रसन्न और पूजित इन्द्रने राजा मरुतसे यह बचन कहा २८ कि हे महाराज मैं यहां तुझसे मिलकर और जो दूसरे तीसरे वृद्धलोग हैं उन समेत सब प्रीतिमान देवतातेरे हव्यको स्वीकार करें २९ हेराजा लाल और नीला

भूरूप अग्नि और बिश्वेदेवासे संबंध रखने वाला यज्ञके निमित्त चलायमान लिङ्गेन्द्री वाला ब्राह्मणोंसे आज्ञादियाहुआबैल बलिदानकरो ३० इसके पीछे हेराजा वह यज्ञ बृद्धियुक्त हुआ जिसमें कि आप देवता लोगोंने भोजनको बस्तुओंको लिया और जिसमें ब्राह्मणोंसे पूजित हरि बाहन देवराज इन्द्र सदस्य हुआ ३१ तदनन्तर यज्ञ शालामें बर्त्तमान दूसरी प्रज्वलित अग्निके समान अत्यन्त प्रसन्न मन महात्मा सम्बर्त्त ने देवताओंके समूहोंको बुलाया और मन्त्रसे हव्यको अग्निमें होमा ३२ इसके पीछे इन्द्र और अन्य २ देवताओं के समूह उत्तम अमृतको खानपान करके राजा से बिदा पूर्व्वक वह सबतृप्त और प्रीतिमान होकर सुखसे चलेगये ३३ इसके पीछे प्रसन्न मन राजामरुतने प्रत्येक स्थानपर सुबर्णकेढेरकरवाये फिरवह शत्रुहन्ता राजामरुत ब्राह्मणोंकेनिमित्त बहुतसे धनको देताहुआ कुबेरजी के समान शोभायमानहुआ ३४ फिर नानाप्रकारके धनोंको रक्षाके स्थानोंमें रखवाकर उत्साहके अनुसार अपने धनागारको पूर्ण करके अपने गुरूकी आज्ञा लेकर अर्थात् गुरूसंबर्त्तकी आज्ञानुसार राजामरुतने वहांसे लौटकर इस सब सागराम्बरा पृथ्वीपर राज्यकिया ३५ वह राजाऐसा गुणवान् हुआ जिसके यज्ञमें वह सुबर्ण प्रकटहुआ हे महाराज उस धनको लेकर तुम बुद्धि से देवताओं को तृप्त करतेहुये पूजनकरो ३६ बैशंपायन बोले कि इसके पीछे प्रसन्न मूर्त्ति राजायुधिष्ठिरने व्यास जीके बचनोंको सुनकर उस धनसे यज्ञ करनेका बिचारकिया और मन्त्रियोंसे भी सलाहकरी ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसंबर्त्तमरुत्तीयेदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

बैशंपायनबोलेकि अपूर्व्वकर्मी व्यासजी करके इसप्रकारसे राजा के समझानेपर महातपस्वी व्यासजीने यह बचन कहनाचाहा १ श्री कृष्णजीने उस राजायुधिष्ठिरको जिसके कि बांधव और जात

वाले मरगयेथे दुखीमन राहुसेग्रसेहुये सूर्य्यके स्वरूपअथवाधूम अग्निके समान व्याकुल चित्त जानकर उस धर्म पुत्रको बिश्वास पूर्वक यह बचन कहना प्रारम्भकिया २ किवृद्धोंके हजारोंउपदेश और हजारों यज्ञोंसेभी शोकनहीं निवृत्त होसक्ता केवल ब्रह्मज्ञानसे दूरहोसक्ताहै इस बातके प्रकट करनेको बासुदेवजी बोले कि सब प्रकारके कामादिक मृत्युकेस्थानहैं अर्थात् संसारमेंही प्रवृत्तकरने अथवा फंसानेवालेहैं और शमदमादिक सत्यबोलना ब्रह्मपदहै अर्थात् मुक्तिका देनेवालाहै इतनाही ज्ञानका विषयहै बहुतसी अन्य बार्त्तावृथाहैं ३।४ तुमने कर्मका अनुष्ठाननहींकियातुमने शत्रुबिजय नहीं किये तुम अपने शरीरके बसनेवाले शत्रुरूप अज्ञानको कैसे नहीं जानतेहो ५ यहांधर्मऔरज्ञानके अनुसार मैं तुझसे उसप्रकार को कहताहूं जिसप्रकारसेकि काम क्रोधादिक धर्मवाले जड़चैतन्य के समूहरूप अहंकार से और अन्तर्वर्त्ती चिदात्मासे युद्ध वर्त्तमान हुआ ६ हे राजा निश्चय करके पूर्व्व समयमें स्थूल शरीर रूप वृत्रासुरसे व्याप्तहुये सूक्ष्म शरीरको आत्मारूपसे अंगीकृत देखकर और गंध विषय में शरीरके नियत करनेपर ७ अनात्मरूप बिषय अर्थात् ब्रह्माण्ड उत्पन्नहुआ जो कि स्थूल शरीरको आत्मारूपमानने से अनात्मारूप दुर्गन्धथा गन्ध बिषयके प्राप्त करनेपर भीतर के चिदात्माने क्रोधकिया ८ इसके अनन्तर महाक्रोधीने वृत्रासुरके ऊपर आगेके अध्याय के लिखेहुये बिवेकरूप बज्रको छोड़ा बड़ेउग्र और तेजस्वी बज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् जलरूप दूसरे दिव्यभोगवाले सूक्ष्म शरीरमें प्रवेश करगया अर्थात् उस शरीरको आत्मारूपजाना और उसीसे बिषयको प्राप्तकिया फिर अभिमानी दिव्यशरीरहोने और रसबिषयकदिव्यलोकमेंममताकरनेपर ९।१० अत्यन्तक्रोधयुक्त इन्द्रने उसके ऊपर बज्रको छोड़ा उस समय बड़े तेजस्वी बज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् तेजसरूप ज्योतिमें प्रवेशकरगया अर्थात् उस शरीरका अभिमानीहुआ और उसीसे विषयको प्राप्तकिया अर्थात् अपने पहले सूक्ष्म शरीरको प्राप्तकिया

वृत्रासुर से तैजस शरीर के व्याप्तहोनेऔर रूप बिषयमें ममताहोने पर ११।१२ अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्रने उसपरबज्रको छोड़ाउससमय उस बड़े उग्र बज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् समष्टि लिंग शरीर रूप बायुमें प्रवेश करगया अर्थात् शरीर का अभिमानीहुआ और उससे बिषय प्राप्तकिया उस समष्टिनाम सूक्ष्मशरीरको आत्मा रूपमानने और मानसी रूपस्पर्श बिषयमें ममताहोने पर १३।१४ अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रने उसपर बज्र का प्रहार किया तब उस बड़े तेजस्वी बज्रसे पीड़ित वह वृत्रासुर १५ आकाश अर्थात् अव्याकृत सुषुप्ती नाम अज्ञान की ओर दौड़ा और उससे भी बिषय को प्राप्त किया फिर आकाश के वृत्रासुर रूपहोने और शब्द बिषय में ममता होने पर १६ अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रने उसपर बज्रछोड़ा उस समय बड़ा तेजस्वी बज्र से घायल वह वृत्रासुर १७ अकस्मात् इन्द्र में प्रवेश करगया अर्थात् चिदात्मा के ऐश्वर्य्यका अभिमानी हुआ उस वृत्रासुरके व्याप्त होनेसे इन्द्र को बड़ामोह उत्पन्न हुआ १८ हेतात बशिष्ठ अर्थात् गुरूने रथान्तर अर्थात् माया रूप रथसे जुदाकरनेवाला अहं ब्रह्म इस महावाक्यसे उसको जगाया अर्थात् द्वैततादूर करने से उसको निर्भय किया अर्थात् निराकार ब्रह्मकिया १९ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे इन्द्र अर्थात् चिदात्माने बज्रके द्वारा शरीरमें गुप्त होनेवाले वृत्रासुर रूप अहंकारको मारा यह हमने सुनाहै २० इन्द्रने इस धर्मको गुप्त वार्त्ताको महर्षियों के मध्यमें बर्णान करी और ऋषियों ने मुझसे कहीं इसको तुमजानो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिकृष्णधर्मसंवादेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

बज्रनाम बिवेक प्रकट करने को बासुदेवजी बोले कि दोप्रकार का रोग उत्पन्न होताहै प्रथम शरीर सम्बन्धी दूसरा मानसी उन दोनोंकी उत्पत्ति परस्परमेंहै इसीसे उनकी एकताहोना सिद्धनहीं

होता अर्थात् सतोगुणादिसे उत्पन्न लिंगशरीरहै उसके बिनास्थूल शरीर नहींहै और इस शरीरकेबिना उन गुणोंकी प्राप्तिनहींहै १ शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताहै वह शरीरक रोग कहाताहै और जो चित्तमें रोग उत्पन्न होताहै वह मानसीरोग कहाताहै २ हेराजा बात पित्त कफ नाम गुण शरीरसे उत्पन्नहैं जिसके शरीर में उन तीनों गुणोंकी समताहै उसकोही नीरोगता कहतेहैं ३ शीतता ऊष्णतासे दूरहोतीहै और उष्णता शीततासे निबृत्तहोतीहै सत्व,रज, तम, नाम तीनों कारण शरीर के धर्मकहेजातेहैं ४ जो उनगुणों की समताहै तब तो उसको सुखचिह्नवाला कहतेहैं उन्होंमें एकके भी न्यूनाधिकहोनेमें उपाय बतायाजाताहै ५ शोक प्रसन्नतासे दूर होताहै और प्रसन्नता शोकसे निबृत्तहो जातीहै ६ कोई तो दुःखमें पड़ाहुआ मनुष्य पिछले सुखको और कोई सुखमें पड़ाहुआ पिछले दुःखोंको स्मरण करताहै अर्थात् एकके स्मरण करनेसे दूसरे का नाश होताहै ७ हे कुन्तीनन्दन सो तुम दुःखी नहींहो दुःखका स्मरणनकरो न सुखी होकर सुखका स्मरणकरो किन्तु दुःखकी भ्रान्ती से दूसरा जो ब्रह्महै उसीका ध्यानकरो ८ हे राजेन्द्र अथवा तेरी ऐसीही प्रकृतिहै जिससे आकर्षण किया जाताहै तोभी तुम शोक युक्त होनेके योग्य नहीं हो क्योंकि वह शोक निबृत्तहोगया पांडवों के देखते हुये ९ एक बस्त्रारजस्वला द्रौपदीको सभामें बर्त्तमान देखकर उसके देखने को योग्यनहीं हो। नगरसे बनको भेजना मृग चर्म्मादिक धारण करना और जो महाबनोंमें निवास हुआ उस के स्मरण करने को योग्य नहीं हो १० जटासुरसे महापीड़ा चित्रसेन गन्धर्वसे युद्ध और राजा जयद्रथसे जोदुःखहुये उसके स्मरण करने को योग्यनहींहो ११ हे राजा उसीप्रकार अग्निपात चर्य्यामें अर्थात् अज्ञात लाक्षागृहादि निवासमें कीचकने द्रौपदीकोचरणों से घायल किया उसको भी स्मरण करने के योग्य नहीं हो १२ हे शत्रुबिजयी भीष्म और द्रोणाचार्य्य के साथ तेरा युद्ध हुआ परंतु जिस युद्धमें अहंकार पूर्व्वक लड़ावही युद्ध तेरे सन्मुख वर्त्तमान

नियतहुआ १३ हेभरतबंशी इसीकारणसे युद्धके अर्थसन्मुखहोना चाहिये मायारूप चित्तसे परे ब्रह्मको योग और पबित्र कर्मोंसे प्राप्तकरो १४ जिस युद्धमें बाह्य शूरबीर औरबान्धवों से कुछकाम नहींहै केवलअकेले मनहीसे लड़ताहै वह तेरायुद्ध सन्मुख बर्त्तमान हुआ१५उसयुद्धके बिजय न करनेपर किसदशाको पावेगा मायारूप चित्तको जानकर कार्योंसे निवृत्त होगा अर्थात् कृतकृत्य होगा १६ जीवों की उत्पत्ति और नाशको मायासे जानकर और इस बुद्धीको निश्चय करके बापदादों के राज्यपर जैसा योग्य है वैसा राज्य शासनकरो १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिकृष्णधर्मसंवादेद्वादशोऽध्याय:१२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

बासुदेवजी बोले कि हे भरतबंशी बाहरी धन अर्थात् राज्यादि को त्यागकर सिद्धी अर्थात् मोक्ष नहीं होतीहै कामादिक धनको त्यागकर सिद्धी प्राप्त होतीहै अथवा बिवेक रहित केवल बैराग्य-वान् होनेसे नहीं होतीहै १ बाहरके धनसे पृथक् शरीर सम्बन्धी धनमें प्रवृत्तचित्त मनुष्यका जो धर्म और सुख होय वह शत्रुओंका होय अर्थात् वह धर्म और वह सुख अधर्म और दुःखके मूलरूपहैं २ दो अक्षर मृत्युके होयं और तीन अक्षर सनातन ब्रह्मकेहों मम, अर्थात् मायाके धनादि बस्तुको अपना मानना मृत्यु होतीहै नमम अर्थात् यह मेरा नहींहै यह सनातन ब्रह्म होताहै ३ हेराजा इसी हेतुसे संग असंग नाममृत्यु और ब्रह्मचित्तमेंही नियतहै वह दोनों दृष्टिसे गुप्त होकर निस्सन्देह जीवोंको लड़वातेहैं ४ हे भरतबंशी जगतकी इस सत्ताका नाश नहींहै यह निश्चयहैतो धर्मयुद्धमें जीव धारियोंके शरीरोंको भी मारकर अहिंसा कोही पाताहै ५ स्थावर जंगम सृष्टी समेत इस संपूर्ण पृथ्वीको पाकर जिसकी ममता नहीं होय वह पृथ्वीको क्या करेगा ६ हे राजा अथवा बनमें निवास और मूलफलसे निर्बाह करनेवाले जिस मनुष्यकी ममता द्रव्योंमेंहै

वह मृत्युके मुखमें वर्त्तमानहै हेभरतवंशीबाह्याभ्यन्तरके शत्रुओंका आत्मा मायारूपदेखो७अर्थात् ध्यानसे साक्षात्कार करो जो पुरुष उस मायाको नहीं देखता है अर्थात् चिन्मात्र रूपसे नियत होता है वह संसारके बड़े भयसे निवृत्त होताहै ८ लोक में इच्छावान् पुरुष की प्रशंसा नहीं करते हैं यहां कोई काम इच्छा से रहित नहींहै सब अंगोंकी इच्छा मनरूपहैं अर्थात्मनसे इच्छा इच्छासे काम और काम से दुःख उत्पन्न होता है जिनको कि बिचारकर पंडित त्यागता है अर्थात् अपने मनको रोकता है ९ बहुत जन्मों के अभ्यास से शुद्ध चित्त योगी मोक्षमार्ग को बिचारकर इच्छा-दिकोंकोत्यागकरे १० दान, वेदपाठ,तप,सफल कर्म, वैदिक कर्म्म, व्रत, नियम और यज्ञादिक कर्मों को ध्यान योग तक जानकर इच्छा से प्रारंभ करता है और यह जिस २ को चाहता है वह धर्म नहीं है जो इच्छादिकों को रोकता है वही धर्म्म है और उस मोक्षका बीज है ११ प्राचीन वृत्तान्तोंके जाननेवाले मनुष्य इस स्थान पर कामदेव के गायेहुये इन श्लोकों को कहते हैं उनश्लोकोंको मैं तुझसे कहताहूं हे युधिष्ठिर उनको संपूर्णता से सुनो १२ निर्ममता और योगाभ्यासके बिना किसी उपाय करके भी मुझको कोई जीव नहीं मारसक्ता जो मनुष्य जपरूपी शस्त्रमें बल जानकर मेरे मारनेमें उपाय करताहै १३ मैं उसके उस जपरूप शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् उससे कहलाताहूं कि मैं सबसे उत्तम जप करनेवालाहूं उसबातसे उसके जपको निष्फल करताहूं जो मनुष्य नाना प्रकारकी उत्तम दक्षिणावाले यज्ञोंकेद्वारा मेरे मारनेमें उपाय करताहै १४ मैं फिर उसके मनरूपी शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् वह शोचताहै कि मैं चेष्टा करनेवाले जीवोंमें धर्मात्माहूं जो मनुष्य वेद वेदांत और सदैव साधुओंकेद्वारा मेरे मारनेमें उपाय करताहै १५ मैं उसके चित्तरूपी शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् वह मनुष्य कहताहै कि मैं स्थावर जीवोंमें जीवात्माहूं जो सत्य पराक्रमी युद्ध और पराक्रम में धैर्य्ययुक्त होनेसे मेरे मारनेमें उपाय करताहै १६

मैं उसका चित्त होताहूं अर्थात् धैर्य के द्वारा सब प्रकारके लोगों के बिजय करने को अभिमान करता हूं वह मुझको नहीं जानताहै जो ब्रतमें स्तुतिमान् मनुष्य तपकेद्वारा अर्थात् योगबलसे मेरे मारने में उपाय करताहै १७ तब मैं उसके तपमें प्रकट होताहूं अर्थात् आत्मा आदिक ऐश्वर्य्योंमें उसकी इच्छा उत्पन्न होतीहै जो पंडित मनुष्य आत्माको न जानकर मोक्षमार्ग में नियत होकर मेरे मारनेमें उपाय करताहै १८ उस मोक्षमें प्रवृत्त चित मनुष्यको देखकर नाचताहूं और हंसताहूं मैं अकेला सनातन सब जीवमात्रोंसे अबध्य हूं १९ हेमहाराज इसी हेतुसे तुमभी नाना प्रकारकी दक्षिणावालेयज्ञोंसे उस कामको धर्म नियत करो वहांपर वहतेरा होगा अर्थात् यज्ञसे चित्तशुद्धी और चित्तशुद्धी के द्वारा ममतासे रहितयोगाभ्यास और योगाभ्याससे काम बिजय होगा फिर मोक्ष प्राप्त होगा २० दक्षिणा रखनेवाले अश्वमेध और पूर्ण दक्षिणावाले वृद्धियुक्तनाना प्रकारके अन्यश्यज्ञोंसे बिधिके अनुसार पूजनकरो २१ मृतकबांधवोंको देखकर बारंबार तुझको दुःख नहोय जो इस युद्धभूमिमें मारे गयेहैं वह फिर देखने को असंभव हैं २२ सो तुम वृद्धि युक्त पूर्ण दक्षिणावाले महायज्ञों में पूजनकर लोक में उत्तम कीर्त्ति को प्राप्त करके श्रेष्ठ गतिको पाओगे २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिकृष्णधर्मसंबादेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि जिसके बांधव मारेगये वह राजा युधिष्ठिर इस प्रकार उन तपोधन मुनियोंके बहुत प्रकार के वचनोंसे बिश्वास युक्तहुआ १ आप भगवान् बिष्टरश्रव ब्यास प्रभु देवस्थान २ नारद, भीमसेन, नकुल, द्रौपदी, सहदेव, बुद्धिमान अर्जुन ३ और अन्य २ शास्त्रज्ञ पुरुषोत्तम ब्राह्मणों से समझाये हुये राजायुधिष्ठिर ने शोकजन्य दुःख और चित्तके बिषादको त्याग किया ४ उसराजा युधिष्ठिरने बांधवोंके प्रीतिकर्म्मों को करके फिर देवता और ब्राह्मणों

को पूजन किया और फिर उस धर्मात्माने सागररूप सागराम्बरा पृथ्वीपर राज्यकिया ५ फिर शान्त होकर उस शान्तचित्त राजायुधिष्ठिरने अपने शुद्ध राज्यको पाकर ब्यास नारद और अन्य ऋषियोंसे कहा ६ कि पूर्व्वमें मुझको आप वृद्ध और श्रेष्ठ मुनि लोगोंने बिश्वास कराया है अब मुझको थोड़ीभी शोकजनित पीड़ा नहींहै मैंने बड़ाधन पायाहै उसी से मैं देवताओंका पूजन करूंगा अब आपको अग्रगामी अर्थात् सन्मुखस्थ करके यज्ञको प्राप्तकरूंगा ७।८ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पितामह आपकी रक्षामें होकर हम हिमालय पर्व्वतको जायंगे वह देश बड़े२ अद्भुत पदार्थोंका रखने वाला सुनाजाताहै ६ इसप्रकार भगवान् देवऋषि नारद और देव स्थान से अपूर्व्व कल्याण रूप बहुतसे बचन कहे १० कि बिना प्रारब्धके कोई मनुष्यभी दुःखको पाकर इसप्रकार के शुभ चिन्तक साधुओंके अंगीकृत गुरुओंको नहीं पाताहै ११ राजासे इसप्रकार कहे हुये वह सबदेवर्षि राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण और अर्जुन से कहकर सबके देखते हुये उसीस्थानपर गुप्त होगये इसकेपीछेवह धर्मपुत्र प्रभुराजा युधिष्ठिर उसी स्थानपर बैठगया १२।१३ हेकौरवोंमें श्रेष्ठ तब भीष्मजीके मरनेपर इसप्रकार शौचकर्म करके और भीष्म कर्ण आदिक कौरवों के कर्मसे सम्बन्ध रखनेवाले दानब्राह्मणोंके निमित्तदेते उन पांडवोंका वह बड़ा समय समाप्तनहींहुआ अर्थात् थोड़ा समय ब्यतीत हुआ १४।१५ उस राजा युधिष्ठिरने धृतराष्ट्र समेत श्राद्धादिसे संबन्ध रखने वाला दानदिया इसकेपीछे बहुतसाधन वेदपाठी ब्राह्मणों को देकर धृतराष्ट्र को आगे करके हस्तिनापुरमें प्रवेश किया १६ उस धर्मात्मा युधिष्ठिर ने भाइयों समेत ज्ञानचक्षु रखनेवाले ताऊ राजा धृतराष्ट्र को विश्वास देकर पृथ्वीपर राज्य किया १७।१८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिचतुर्द्दशोऽध्यायः १४॥

—❋—

पन्द्रहवां अध्याय॥

राजाजनमेजयनेपूछा कि हेब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ पांडवोंकेबिजयी और शान्त चित्त होनेपर बीर बासुदेव और अर्जुनने देशमें क्याकिया १ वैशंपायन बोले हेराजा पांडव के बिजयी और शान्तचित्त होनेपर देशमें अर्जुन और बासुदेवजी प्रसन्न हुये २ उन आह्लाद युक्तोंने ऐसे बिहारकिया जैसे कि स्वर्गमें दोदेवराज नन्दनबनमें अश्विनी-कुमार और विचित्र बनमें शिखरधारी पर्बत होतेहैं ३ पवित्र तीर्थ पल्वल और नदियोंपर घूमते अत्यन्त प्रसन्न ४ महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन इन्द्रप्रस्थमें रहनेलगे उस सुन्दर सभामें प्रवेश करके देवताओंके समान बिहार किया ५ हे राजा वहां बिहार करतेहुये सदैव प्रत्येक कथा में अपूर्व्व युद्धके बृत्तान्त और कष्टोंको बर्णन किया ६ प्रसन्न मन महात्मा पुराण ऋषियोंमें श्रेष्ठ उन दोनों श्री कृष्ण और अर्जुनने ऋषि और देवताओंके वंशोंका बर्णन किया ७ उस निश्चय चाहनेवाले केशवजीने अपूर्व अर्थ पद निश्चयात्मक और अपूर्व्व चित्तरोचक कथाओंको अर्जुनके सन्मुख बर्णनकिया ८ शूरवंशी श्रीकृष्णने हजारों बिरादरीवाले और पुत्रोंके शोकसे दुःखी रूप उस अर्जुनको कथाओंके द्वारा शान्तकिया ९ बिज्ञानके ज्ञाता महातपस्वी उस श्रीकृष्णने बुद्धिके अनुसार उस अर्जुनको बिश्वास देकर अपनेबोझ कोनिवृत्तकरके बिश्रामलिया १० इसकेपीछे शुद्ध और मधुरभाषण से बिश्वास कराते गोबिन्दजीने कथाके समाप्त होनेपर अर्जुनसे यह सहेतुक बचन कहा ११ हे परम तप अर्जुन धर्म पुत्र राजायुधिष्ठिरने तेरे भुजबलमें आश्रित होकर यह सब पृथ्वी बिजयकी १२ हे नरोत्तम वह धर्मराजयुधिष्ठिर इनभीमसेन नकुल और सहदेवके प्रभावसे इस शत्रुसे रहित पृथ्वीको भोगता है १३ हे धर्मज्ञ राजाने धर्म पूर्व्वक इस अकंटक राज्यको प्राप्त किया और वह राजासुयोधन युद्धमें धर्मसे मारागया १४ अधर्ममें प्रवृत्त लोभी सदैव अप्रिय कहनेवाले दुर्बुद्धी धृतराष्ट्र के पुत्र अपने

सहायकों समेत गिरायेगये १५ हे कौरव अर्जुन धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिर तुमसेरक्षित होकरइनउपद्रवादिकोंसे रहित संपूर्ण पृथ्वीको भोगताहै १६ हे पांडव मैं तेरे साथ बनों में भी रमताहूं और हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले जहांपर यह सब इष्टमित्र नातेदार आदिक समेतकुन्तीहै वहां मैं कैसे निवासनकरूं १७ जहांपर कि धर्मसुत राजा युधिष्ठिरहै बड़ापराक्रमी भीमसेनहै और नकुलसहदेवभी बर्त्तमानहैं वहां मेरी बड़ी प्रीतिहै १८ हे निष्पाप कौरव उसीप्रकार स्वर्गके समान सुन्दर और पवित्र स्थानवाली सभा में मुझ तेरे साथी का बड़ा समय व्यतीत हुआ जो कि मैं बसुदेवजी बलदेवजी और अन्य२ श्रेष्ठ वृष्णियोंके दर्शनसे रहितहूं १९ । २० सो मैं द्वारकापुरीमें जायाचाहताहूं हेपुरुषोत्तम तुमको भी मेराजाना स्वीकार होय २१ राजायुधिष्ठिरको मैंने जहां तहां अनेक प्रकारसे समझायाहै और भीष्मजीके शोकस्थानपर भी हमने समझाया२२ सब पर प्रतापी और पंडितहोना भी हमने राजाको सिखाया और उसमहात्माने हमारा वह वचन अच्छीरीतिसे स्वीकार किया २३ धर्म्मज्ञ कृतज्ञ और सत्यवक्ता धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरके चित्तमें धर्म्मकी सत्यता उत्तम बुद्धि और मर्यादा सदैव नियतहै २४ हे अर्ज्जुन जो तुमको स्वीकारहै तो उस महात्मा राजासे वह वचन कहो जो कि हमारे प्रस्थान करने से सम्बन्ध रखताहै २५ हे महाबाहु प्राण त्याग दशामें भी उसका अप्रिय नहीं करूंगा फिर द्वारकापुरीजाने में कैसे करूंगा २६ हे कौरव अर्ज्जुन मैं यह सब तेरी प्रीति के अर्थ कहताहूं यह सत्य२ है किसीप्रकारसे भी मिथ्या नहीं है २७ हे अर्ज्जुन यहां मेरे निवास करनेसे बड़ा प्रयोजन प्राप्तहुआ राजा दुर्य्योधन अपनी सब सेना और साथी सहायकों समेत मारा गया २८ हेतात सागराम्बरा पृथ्वी पर्व्वत बन और काननों समेत धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर के आधीन होकर आज्ञावर्त्ती है २९ हे पाण्डव अर्जुन कौरवराजकी वहपृथ्वी बहुत प्रकारके रत्नोंसेसंयुक्तहै उसकी धर्म्मज्ञ राजालोग सब प्रकार से रक्षा करें ३० हे भरतबंशी जो

कि श्रेष्ठ महात्मा सिद्ध और मुनियों के साथ बैठनेवाला और सदैव बंदीजनोंसे स्तूयमानहै उससे ३१ हेश्रेष्ठ अब तुम मेरेसाथ चलने के बिषयमें राजायुधिष्ठिरसे जाकर पूछो ३२ हे अर्जुन यह शरीर और जोधन मेरे घरमेंहै वह मैंने राजायुधिष्ठिरको भेंटकिया यह कौरवोंका स्वामी बड़ा बुद्धिमान् युधिष्ठिर सदैव मेरा प्यारा होकर पूजन के योग्य है ३३ हे राजकुमार मेरे निवास करने में तेरे सिवाय दूसरा कोई और हेतु नहींहै हेअर्जुन तेरे बड़ेभाई श्रेष्ठ चलन युधिष्ठिर के आज्ञावर्त्ती होकर यह पृथ्वी नियतहै ३४ इस प्रकारके महापराक्रमी प्रतापी श्रीकृष्णजीके इनसब बचनोंको सुन कर उस अर्जुनने श्रीकृष्णजीका पूजन करके बड़े दुःखसे यह बचन कहा कि ऐसाही होय ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिके पर्व्वणिपंचदशो ऽध्याय: १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

अथ ब्राह्मण गीता ॥

जनमेजयने पूछा कि हे ब्राह्मण शत्रुओंकोमारकर उससभामें नियत उन महात्मा केशवजी और अर्जुनकी कौनरसी कथा हुई १ वैशंपायन बोले कि उस अर्जुनने निष्कंटक राज्यको पाकर बड़ी प्रसन्न चित्ततासे श्रीकृष्णजीकेसाथ उसदिब्यसभामें बिहारकिया२ हे अर्ज्जुन वह दोनों प्रसन्न चित्त अपने इष्टमित्र भाई बन्धु आदि से युक्त दैवयोगसे उस स्वर्ग्गके मुख्य स्थान के समान सभा में पहुंचे ३ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी समेत पांडव अर्जुननेउस सभा को देखकर यह बचन कहा ४ कि हे महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्धके वर्त्तमान होनेपर जो आपने अपना माहात्म्य और ईश्वररूप मुझ- से कहाथा ५ अर्थात् हे पुरुषोत्तम केशवजी पूर्व्व समयमें भगवान् ने जो वह परमार्थबिद्या वर्णन करीथी वह सब मुझ चित्तसे उदा- सीनको विस्मरण होगईहै ६ हे लक्ष्मीपति उन प्रयोजनोंमेंही मेरी बारंबार प्रीति उत्पन्न होती है और आप बहुत थोड़ेही काल पीछे

द्वारकाको जावोगे ७ वैशंपायन कहतेहैं इसप्रकार अर्जुन के बचन को सुनकर महातेजस्वी बक्ताओंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीने उस अर्जुनको स्नेहपूर्व्वक यह उत्तर दिया ८ अर्थात् बासुदेवजीने कहा कि हे अर्जुन मैंने तुमको गुप्तरहस्य सुनाया सनातन पुरुष जतलाया सुंदररूपधर्म और सब सनातन लोकोंकाभी बर्णन किया ६ तुमने अपनी निर्बुद्धिता से जो उस को अपने चित्त में धारण नहीं किया वह मुझको बहुत बुरा मालूमहुआ अब वह मेरी स्मृति फिर प्रकट नहीं होगी १० हे पांडव अर्जुन निश्चय करके तू श्रद्धासे रहित और दुर्बुद्धीहै वह परमार्थ विद्या संपूर्णता पूर्व्वक फिर कहना असंभव है ११।१२ मुझ योगसे संयुक्तने वह परब्रह्म बर्णनकियाथा अबउसी प्रयोजनमें मैं उस प्राचीन इतिहासको बर्णन करूंगा १३ जिससे कि तुम बुद्धिमें नियतहोकर श्रेष्ठगतिकोपावोगे हेधर्मधारियोंमें श्रेष्ठ मेरे सब बर्णनको सुनो १४ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले एक अजेय ब्राह्मणस्वर्गलोक और ब्रह्मलोकसेआया उसकाहमनेपूजनकिया १५ हे भरतर्षभ हमसे मिलकर हमलोगों से जो उस ब्राह्मणने अपनी दिव्यबुद्धिसे जो कहाहै उसको तुम किसीप्रकार के संकल्प बिकल्प कियेबिनासुनो १६ हेपरमात्मा श्रीकृष्णआपने मोक्षधर्ममें आश्रित होकर जीवोंपर करुणा करनेके प्रयोजनसे जो पूछाहै वह मोहका दूर करनेवालाहै १७ हे मधुसूदन उसको मैं ठीक २ तुमसे कहता हूं हे लक्ष्मीपति तुम सावधान होकर उस कहे हुये को श्रवण करो १८ कि तपसे पूर्ण किसी धर्मज्ञ कश्यपगोत्री ब्राह्मणने दूसरे किसीऐसे अन्यगोत्री ब्राह्मणको पाया जो कि शास्त्रों के गुप्तरहस्यों का जाननेवालाथा १६ जन्म मरणके बिषयमें शास्त्रके अनुमानसे उत्पन्न ज्ञान और योगजन्य बिज्ञान इनदोनोंमें कुशललोकके सिद्धांत में सावधान सुख दुःखादिका जाननेवाला २० जन्ममरण,के मूल सिद्धांतोंका ज्ञाता पापपुण्य, के जाननेमें पंडित कर्मजन्य, जीवोंकी छोटी बड़ी गतियोंका देखनेवाला २१ जीवन, मुक्तके समान घूमने वाला सिद्ध, शान्तरूप, श्रेष्ठजितेन्द्री, शम दमादिब्राह्मणोंकी लक्ष्मी

से प्रकाशमानसबकाउद्धार करनेवाला २२ अन्तर्द्धान गतिका ज्ञाता इसीप्रकार चक्रधारी सिद्धोंके साथमें जानेवालाथा काश्यपने उस को मूल समेत सुनकर २३ उन सिद्धों समेत एकान्तबासी बार्त्ता करनेवाले बायुके समान असंग ऋषिको दैवयोगसे पाया २४ तब उस बुद्धिमान् बड़े साधुब्राह्मण तपस्वी सावधान बड़ी भक्तिसे युक्त धर्मके इच्छावान् काश्यपने उसको पाकर न्यायके अनुसार उसके चरणोंकोपकड़ा २५ काश्यप उस उत्तम ब्राह्मणकोदेखकर आश्चर्य्य युक्त हुआ और उस गुरुरूपको बड़ी सेवासे प्रसन्नकिया २६ हे परंतप शास्त्र और अनुष्ठानसे संयुक्त वह सब उसका किया हुआ कर्म उसने अंगीकार किया तब उसने उसकोभी प्रीतिपूर्व्वक गुरु-वृत्तीसे प्रसन्नकिया २७ उस प्रसन्न और तृप्त ऋषिने उस शिष्यके अर्थ जो बचन कहा हेश्रीकृष्ण तुम उसउत्तमसिद्धोकोदेखकर मुझसे सुनो २८ सिद्धने कहा कि हे तात इसलोकमें मनुष्य नानाप्रकारके कर्म और पवित्र पुण्योंसे गतिको और देवलोकमें निवासको पाते हैं २९ परन्तु कहींभी अत्यन्त सुख नहींहै और नकहीं सदैवकेलिये स्थितिहै इच्छा और क्रोधसे पूर्णलोभसे मोहित होकर पापसेवनसे मैंने बारंबार उत्तम स्थानसे पतनहो महादुःखोंकोपाकर शुभाशुभ दुःखरूपी गतियोंको प्राप्त किया बारम्बार जन्म और बारम्बारही मरण हुआ नानाप्रकार के आहारों का भोजन किया नानादेह धारियोंके स्तनों का पान किया ३० । ३१ । ३२ अनेक प्रकारके माता पिता देखे और हे निष्पाप मैंने बिचत्र सुख दुःखभी देखे ३३ बहुधा अपने प्यारे लोगों से पृथक्ता और अप्रिय लोगों के साथ निवास किया दुःख से धनको पाकर भी उस धनका नाश प्राप्त किया ३४ राजासे और ज्ञातिबंधु आदिक से कठिन अपमान और महाअसह्यचित्तऔर देहकी पीड़ाओं को भी प्राप्तकिया ३५ कठिन अपमान असह्य दूसरे का पकड़ना मारा जाना नरक में गिरना और यमलोकमें अत्यन्त कठिन पीड़ाओंको प्राप्तकिया ३६ मैंने इसलोकमें सदैव जरावस्थारोग और शर्दी गर्मी आदिकयोगों

से उत्पन्न अनेक दुःखों को भी देखा ३७ फिर कभी दुःखसे कठिन पीड़ित और असंप्रज्ञात समाधीको पाकर ब्रह्मभाव में आश्रितहोकर मैंने बैराग्यसे इसद्वैततासे उत्पन्न लोक तन्त्रको चारोंओर से त्यागकिया ३८ फिर मैं लोकमें इस योगमार्ग को जानकर उसमें सदैव अभ्यास करनेवाला हुआ उस अनुष्ठान और चित्तकी शुद्धी से मैंने यह सिद्धीप्राप्तकी ३९ मैं अब फिरयहांमोक्षतक नहीं आऊंगा अपनी शुभगतियोंको और सृष्टिकी उत्पत्तितक सब संसार के जीवोंको देखताहूं अर्थात् ब्रह्मज्ञान के फलसे शुद्धमोक्ष और सर्वज्ञता मुझको प्राप्तहै हे ब्राह्मणोत्तम इसप्रकार से यह उत्तमसिद्धी मैंने प्राप्तकी अब यहांसे सत्यलोकको जाऊंगा तब वहां जाकर कैवल्य मोक्षकोपाऊंगा जोकि दृष्टिसे गुप्त ब्रह्मलोकहै उसमेंतुमको सन्देह न करना चाहिये हे परंतप फिरमैं इसनरलोक में न आऊंगा ४०।४१। ४२ हे स्थानसे रहित महाज्ञानी मैं तुझपर प्रसन्नहूं अबजो तू मांगे उसको मैं करूंगा अर्थात् जो तेरी इच्छा है उसकोकहो अब उसका यह समय वर्त्तमान हुआहै ४३ मैं उस प्रयोजन को अच्छीरीतिसे जानताहूं जिसके निमित्त तू मेरे पास आयाहै मैं शीघ्रही जाऊंगा इसीहेतुसे तुझको प्रेरणा करताहूं ४४ हे पंडितमैं आपके चलनसे अत्यन्त प्रसन्नहूं तुम ब्रह्मज्ञानको पूछोवह तेरेमनका प्रिय हैउसको मैं कहूं ४५ मैं तेरीउस बुद्धिको बड़ी मानताहूं और अत्यन्त प्रशंसा करताहूं जिसके द्वारा तुमने मुझको जाना हे काश्यप तुम बड़े बुद्धिमान्हो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

बासुदेवजी बोले कि इसके पीछे काश्यपने उसकेचरणोंको स्पर्श करके बड़े कठिन२प्रश्नोंकोपूछा और उसधर्म धारियों में श्रेष्ठसिद्धने उनधर्मोंको वर्णन किया १ काश्यपने कहा कि शरीरकैसे गिरताहै१ कैसे प्राप्तहोताहै २ और किसप्रकार ३ दुःखरूप संसार से पृथक्

होकर चारों ओरसे मुक्तहोताहै २ जीवात्मा ४ प्रकृति अर्थात् मूल अज्ञानको त्यागकरके उससे उत्पन्न स्थूल शरीर को किसरीतिसे छोड़ताहै और शरीर से पृथक् ५ होकर किसप्रकारसे ब्रह्मको प्राप्त करताहै ३ यह जीवात्मा ६ अपने किये हुये शुभाशुभ कर्मको कैसे भोगताहै और उस शरीरसे जुदेका कर्म अर्थात् बीजरूप संसार कहां नियत होताहै ४ ब्राह्मणनेकहा कि हे श्रीकृष्णजी इसप्रकार से कर्ममें प्रवृत्त उस सिद्धने उन प्रश्नोंको क्रमपूर्व्वक बर्णन किया उनको मुझसे सुनो ५ सिद्ध बोला कि इसलोकमें जिसजन्मकेमध्य में आयुर्द्दा और शुभकीर्त्ति उत्पन्न करनेवाला जिन कर्मोंको करता है उन सब कर्मोंका फल समाप्त होनेपर आयुर्द्दासे नाशयुक्त शरीर वालामनुष्य बिपरीत कर्मको करताहै और नाशके वर्त्तमान होनेपर उसकी बुद्धि बिपरीत होजातीहै ६।७ वह ब्रह्मज्ञानसे रहित अपनी अवस्था शरीर बल और समयको जानकरभी बहुतकालतक अपने स्वभाव से बिपरीत बिषयोंको भोगताहै ८ जबयह अत्यन्तदुःखकारी कर्मों को करताहै तब बहुत खाताहै अथवा कभीनहींभी खाताहै ९ दूषित भोजन मांस और पीनेकी बस्तुपरस्पर बिरुद्ध भोजनशरीरका भारी करनेवाला भोजन और नियत परिमाण से अधिक खाताहै और फिर अच्छे परिपाक होनेपर नहींखाताहै १० कठिन परिश्रम करताहै अपने बित्तसे अधिक संभोग करताहै और मूत्र बिष्टाके वेग को लोभकरके सदैव रोकताहै ११ रस से संयुक्त भोजनकी बस्तु को खाताहुआ प्रतिदिन शयन करताहै फिर कुसमयपर भोजनादि को करनेसे वह भोजन परिपाक अवस्थामें दोषरूप होकर अर्थात् बात पित्त कफ इनतीनोंके दोषोंको करताहै १२ अपने बात पित्तादि के दोषोंसे मरणान्तक रोगोंको प्राप्तकरताहै और यहभी होता है बिरुद्ध रीतिसे ग्रीवाआदिमें फांसीलगाकरमरजानेको निश्चयकरता है १३ तब उन सब कारणोंसे जीवात्माका शरीर और ऊपर लिखे हुये जीवन का नाश होताहै उसको तुम बुद्धि के अनुसार सुनो १४ कठिनबायुसे चलायमान अत्यन्त वृद्धियुक्त ऊष्मा शरीरको व्याप्त

करके सबइन्द्रियोंको रोकतीहै १५ अत्यन्त बलिष्ठ और शरीर में चारों ओरसे बढ़ीहुई ऊष्मा जीवात्माके मर्मस्थलोंको पीड़ित करके तोड़तीहै उसको तुममूल समेत समझो १६ इसके पीछे मर्मस्थलोंके टूटने पर वह पीड़ामान जीवात्मा शीघ्रही शरीर से जुदा होताहै अर्थात् शरीरको त्यागकरताहै १७ क्योंकि वह पीड़ाओं से पूर्णशरीर होताहै हे श्रेष्ठब्राह्मण इसकोजानों और हेद्विजोत्तम सदैव जन्म मरणसे व्याकुलचित्त सबजीवधारी १८ शरीरोंको त्याग करते देखनेमें आतेहैं फिर गर्भ संक्रमण और पूर्वजन्म के कर्म से संयुक्त होनेमें मनुष्य १९ उसीप्रकारकी पीड़ाको पाताहै टूटेजोड़ और हड्डीवाला वह मनुष्य जलोंसे वृद्धिको पाताहै २० शरीर में शीतसे क्रोध मिश्रित और कठिन बायुसे प्रेरित ऊष्मा जैसे जैसे कि पांचोंतत्त्वोंमें प्रवेशकरती है उसकोसुनों २१ जो बायु कि ऊपर की ओर अपनीगति रखनेवाली पांचोंतत्त्व और प्राण अपान में नियतहै वहबड़ी कठिनतासे जीवात्माको त्याग करके जातीहै २२ इसप्रकार से जब वह शरीर को त्याग करता है और वह शरीर निर्जीव होकर विश्वास दृष्टि पड़ता है ऊष्मा और श्वासाओं से रहित अशोभित जड़रूप २३ ब्रह्म से बहिष्कृत वह मनुष्य मृतक कहाताहै यह जीवात्मा जिन शरीरके छिद्रोंसे इन्द्रियों के बिषयों को जानता है उन्हींसे उन भोजनसे प्रकट होनेवाले प्राणों कोभी जानताहै जो जीव उस शरीरमें कर्मकरता हैवह सनातनहै २४।२५ इसीप्रकार किसी २ स्थानपर दोनाड़ीकेमिलनेमेंजो २ जोड़होगये उसीउसी को मर्मस्थल जानो इसप्रकार से हमने शास्त्र में देखाहै फिरमर्मस्थलोंको टूटनेपर वहप्राण शब्दकरताहुआजीवके हृदयमें प्रवेशकरके शीघ्रही चित्तको रोकताहै इसी हेतुसे वह चैतन्य जीव कुछनहींजानताहै२६।२७मर्मोंके रुकजानेपर मोहसे गुप्तहुआ ज्ञान और निवास स्थान न रखनेवाला वह जीव बायुसे प्रेरित चलायमान किया जाताहै २८ इसके पीछे वह बायु उस लंबीश्वासा लेनेवाले जीव को कठिनता से सहनेके योग्य बहुत श्वासोंकोदि-

लाकर शरीरसे निकालता शीघ्रही इस अचेत शरीरको कंपायमान करताहै २९ शरीरसे जुदा और अपने कर्मोंसे युक्त वह जीवचारों ओरको अपने पाप और पुण्यसे संयुक्त होताहै ३० बुद्धिके अनुसार शास्त्र को निश्चय करने वाले ज्ञानी ब्राह्मण अर्थात् अन्य शुभकर्मी मनुष्य लक्षणोंसे उस जीवको जानते हैं ३१ जैसेकि नेत्रयुक्त मनुष्य अंधेरे में वर्त्तमान खद्योत अर्थात् पटबीजनो को जहां तहां देखतेहैं उसी प्रकार ज्ञान रूपी नेत्र रखने वाले ३२ सिद्ध लोग अपने दिव्यनेत्रसे उस शरीरसे पृथक् गर्भमें आये हुये जन्मलेने वाले जीवको देखते हैं ३३ यहां शास्त्रके द्वारा उसके स्थान तीन प्रकारके देखे गयेहैं यह पृथ्वी कर्म भूमिहै जिसमें कि जीवनियत होतेहैं ३४ सब शरीर धारी शुभाशुभ कर्मों को करके उसके फल कोपातेहैं और यहांही अपने कर्मोंके अनुसार छोटे बड़े भोगोंको प्राप्त करके भोगतेहैं ३५ यहांही बुरेकर्म करनेवाले मनुष्य अपने ही कर्म के द्वारा नर्क को गये यह वह रूप पिछली गतिहै जिसमें कि मनुष्य पकतेहैं ३६ इसी हेतुसे मोक्ष अत्यन्त दुर्लभहै औरउस नर्कसे आत्माकी रक्षाकाकरना अवश्ययोग्यहै ३७ जीवधारी ऊपर की ओर जाकर जिन स्थानोंपर नियतहैं उन स्थानोंको मैं मूलसमेत तुमसे कहताहूं ३८ इसकेसुननेसे नैष्ठिक बुद्धि और कर्मकी निश्चलता को जानोगे जहांपर चन्द्रमंडल है और जिस लोक में सूर्य्य मंडल अपने तेजसे प्रकाशमान है उसस्थान में जोसब नक्षत्र रूप स्थानहैं उनसबको पवित्र कर्मी मनुष्योंके स्थानजानो ३९।४० वहसब अपने २ कर्म फलके समाप्त होनेपर बारंबार गिरते हैं वहांस्वर्ग में भी उत्तम मध्यम और निकृष्ट पदहैं ४१ वहांभी दूसरे की बड़ी प्रकाशमान लक्ष्मी को देखकर सन्तोष नहीं होताहै यह सबगति मैंने तुझसे पृथक् २ वर्णनकी ४२ हेब्राह्मण इसकेपीछे मैं गर्भकी उत्पत्ति का वर्णन करताहूं उसकोभी तुमबड़ी सावधानी से सुनो ४३॥

इतिश्रीमन्महाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

दूसरेप्रश्नके उत्तर में ब्राह्मणने कहा कि यहां इसलोक में शुभाशुभकर्मोंका नाश नहींहै सबजीव शरीरोंको बारंबार पाकर फलको पातेहैं १ जैसेकि अच्छा सींचा हुआ वृक्ष बहुत से फलोंको देताहै उसीप्रकारपवित्रमनसे कियाहुआकर्म बड़ेफलवाला होताहै २ इसी प्रकार पाप चित्तसे किये हुये कर्मकाभी फलपापों से युक्त होताहै आत्माइसमनको अग्रवर्त्तीकरकेकर्म में प्रवृत्त होताहै तात्पर्य्य यहहै कि मनही प्रधानहै कर्मकी प्रधानता नहीं है क्योंकि जैसी चित्तकी शुद्धी औरमलिनता होगी उसीप्रकारथोड़े पुण्य और पापसेभीबड़ा फलहोगा३इच्छा और अज्ञानसे घिराहुआ जीवताहुआ कर्ममेंफंसा हुआ जीवात्माजैसी रीतिसे गर्भमें प्रवेशकरताहै उसप्रश्नकेभी उत्तर कोश्रवणकरो४ रुधिरसे संयुक्त औरस्त्रीकेगर्भाधानमेंवर्त्तमान वीर्य्य कर्मजन्यशरीरको उत्पन्नकरताहै वहकर्मशुभ औरअशुभजैसाहोय५ अब शरीर प्राप्तकरनेवाले जीवात्माके मुख्यरूपको कहतेहैं—ब्रह्मज्ञानी अपनीसूक्ष्मता और अव्यक्त भावसे कहीं और का और नहीं होताहै उससनातन ब्रह्म को जानकर मनोभीष्टको पाकर असंग होताहैवह ब्रह्म सबजीवों के प्रगट होने का कारणहै उसीसे जीवधारीसजीव रहतेहैं ब्रह्मरूप होता हुआ वह जीव उसगर्भ के सब अंगोंमें बिभागीपनेसे प्रवेश करके ६। ७ उपाधिरूप चित्तसेइन्द्रीरूपी गोलकमें नियत होकर अभिमान को धारण करताहै उस धारणसे वह सबउसके अंगबहुत शीघ्र चलायमान होतेहैं अर्थात् वह गर्भ चैतन्य होताहै ८ सूक्ष्मरूप कैसे शरीरयुक्त होताहै दृष्टिसे गुप्त कैसे प्रत्यक्षताको पाताहै और असंग कैसे संगी होजाताहै इन तीनों संदेहोंकोतीनश्लोकोंसेदूरकरतेहैं—जैसेकि थोड़ासाभीसुवर्ण का जल तामेकी मूर्त्ति को स्वर्णमयी कर देताहै उसी प्रकार उस सूक्ष्मजीव का गर्भमें जानाजानो ६ जिसप्रकार दृष्टिसे गुप्त अग्नि लोहमयी पिण्डमें प्रवेश करके उसको अच्छे प्रकारसे तपाता है

उसीप्रकार तुमभी उस दृष्टिसे गुप्तजीवात्मासे गर्भका चैतन्यहोना जानो १० जिसप्रकार स्थानमें प्रकाशितदीपक देदीप्यमान होताहै उसीप्रकार सबसे पृथक् जीवात्मा स्थूलादि शरीरोंको प्रकाशित करताहै ११ अब दीपकके समान असंग जीवात्माके दुःखादि का कारण कहतेहैं कि वहजो २ शुभाशुभ कर्म करताहै उस पूर्व्व शरीर के किये हुये कर्म फलोंको अवश्य भोगताहै आश्चर्य यह है कि जैसे नियत शरीर न रखने वाली दीपक की ज्योति अंगुष्ठादि उपाधियों के कारण टेढ़ी सीधी मालूम होतीहै उसीप्रकार कर्मजन्य दुखके प्रकट करने वाले चित्तमें दुःख का अंग प्रकट होताहै वास्तव में नहीं है १२ जोउस उपभोगसे खाली होताहै तो फिर दूसरे उप-कर्म को तबतक इकट्ठा करता है जब तक कि उस मोक्षयोग में नियत धर्मको नहींजानताहै १३ तीसरे प्रश्न काउत्तर इसस्थानपर उसकर्मको कहताहूंजिसकर्मसे बिपरीतयोनियोंमें भ्रमणकरनेवाला वह जीव सुखी होताहै १४ दान, व्रत, ब्रह्मचर्य्य, वेदपाठअथवा उपदेशके समानजप, जितेन्द्री, शान्ती, जीवोंपर दयाकरना १५ चित्तकी एकाग्रता, दया, दूसरेके धनलेनेमें निषेध, पृथ्वी पर चित्तसेभी कभीजीवों के अप्रिय का न करना १६ माता पिता की सेवा, देवता अतिथियोंकापूजन, गुरु पूजन, करुणा, बाह्याभ्यन्तर की पवित्ता, सदैव इन्द्रियोंको आधीनरखना १७ शुभकर्मोंमें प्रवृत्ति यहसब सत्पुरुषों के व्रत कहाते हैं इससे वह धर्म प्रकट होता है जोकिप्राचीन सृष्टियोंको रक्षाकरताहै १८ इसप्रकार के गुणसदैव सत्पुरुषोंमें देखेहैं वहांभी यह मर्य्याद प्राचीन है कि आचार उस धर्मकोही कहताहै जिस में कि शान्त पुरुष नियतहैं १९ उन्हों-में वहीकर्म नियत कियाहै जोकि सनातन धर्महै जो उसकोअच्छी रीतिसे प्राप्तकरताहै वह दुर्गति को नहीं पाताहै २० धर्ममार्ग में क्षीणता पानेवाली सृष्टिइसी आचारसे सुमार्ग मेंलायीजाती है जो योगीहै वही मुक्तहै क्योंकि वहकर्म कर्त्ताओं से अधिकहै २१ धर्मसे कर्मकर्त्ता लोगोंका जहां जिसप्रकार से कल्याणहोताहै उसीप्रकार

संसारसेभी उसका उद्धार बहुत कालमें होगा अर्थात् कर्मकर्त्ता लोगोंकी मुक्ति बड़ी बिलम्ब से होती है २२ इसीप्रकार जीवात्मा पूर्व जन्मके कियेहुये कर्मको सदैव प्राप्त करताहै सब हेतु वहहै जिस के कारणसे ब्रह्मरूप होनेवाले जीवात्माने यहां आकर जीवरूपको पाया २३ इसके शरीरका होना प्रथम किससे कल्पना कियागया है ऐसा सन्देहजो संसार में है उसकोभी मैं अब वर्णन करताहूं २४ सब लोक का पितामह माया सबलब्रह्म है उस का पिता शुद्धब्रह्महै उसने अपने शरीर अर्थात् अव्याकृत आकाशको उत्पन्न करके सूत्र आत्मारूप फिर तीनोंलोकों को और स्थावर जंगम जीवोंको उत्पन्न किया २५ इसकेपीछे सब सृष्टिमें व्याप्त होनेवाले जीवों के शरीर प्रकट करनेके कारणरूप अग्नि जल और अन्नादिकों को प्रकटकिया उसी शरीररूप प्रकृतिसे यह सब व्याप्तहै उसीको लोकमें उत्तमजानो २६ इसशरीरको जड़कहते हैं दूसरा जीव ईश्वर रूप धारण करनेवाला है उसकोही अबिनाशी कहते हैं क्षर अक्षर शुद्ध अर्थात् शरीर प्राण और ब्रह्म के मध्य में क्षर अक्षर नामयोग सब जीवों में पृथक् २ है जोकि मोक्षदशा में रस्सीमें कल्पित सर्पकी समान नाशको पाताहै २७ वेदमेंदृष्टिआने वाले अद्वितीय अद्वैतने सब स्थानपर जंगम जीवोंको उत्पन्नकिया है अर्थात् वह एक अकेलाही अधिक रूपों से उत्पन्न हुआ २८ इस प्रकारसे एकताको सिद्ध करके ब्रह्मको रूपान्तर दशा जीव नामकी अल्पकालीनता सिद्धकरतेहैं उस शुद्धब्रह्मने उस शरीर धारणकरने का समय नियतकिया जोकि देवता मनुष्य पशु पक्षी आदिजीवोंके शरीरों में घूमताहुआ बारंबार जन्मलेताहै २९ जिसप्रकार इस संसारकी अबिनाशतामें कोईबुद्धिमान् पूर्वजन्मका दृष्टात्माहुआहै उसकोमैं वर्णन करताहूं ३० जैसे कि सुख दुःखादिक नाशमान हैं जो उनको अच्छीरीति से देखताहै अथवा अपवित्र वस्तुओं को संग्रहरूपशरीरको और कर्मजन्य नाशको जानताहै ३१ और जो कुछ सुखआदिकहैं वहसब दुःखरूपहैं ऐसाजानकरबिचारकरताहुआ ज्ञानी

होताहै तौभी यह भयकारी संसारसागर बड़ा दुर्गम होगा ३२ प्रधान पुरुष को जाननेवाला और जरा मरण और रोगों से पूर्ण मनुष्य सब चैतन्यवान् शरीरों में एक चैतन्य को देखताहै ३३ उस एकत्व दृष्टिसे सबके लयस्थान रूप ज्योति स्वरूपको निश्चयकरता हुआ बैराग्यवान् होताहै हे बड़ेसाधू उसके उपदेशको मैं बड़ी सत्यतासे बर्णन करूंगा ३४ हे वेदपाठी इस सदैव बर्त्तमान न्यूनता से रहित का जो उत्तम ज्ञानहै उस मेरे कहेहुयेको संपूर्णता पूर्व्वक समझो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणनेकहा कि जो ज्ञानी एकब्रह्ममेंलय और मौन अर्थात् यह सब मैं हूं यह अभिमान न करनेवाला अथवा इससे प्रकटहूं यह कुछ न बिचारता तीनों शरीरोंको क्रम पूर्व्वक परस्पर लय करके ब्रह्मरूप नियत होजाय वह संसारके बंधनसे छूटजाताहै १ सबका मित्र सहनशील इन्द्रियों को आधीन रखनेवाला जितेन्द्री प्रत्यक्ष भयको अर्थात् योगसिद्धी और कर्मसे च्युत और इतने कालपर्य्यन्त भी योग सिद्ध नहीं हुआ इस दुःखका त्याग करनेवाला मनका जीतनेवाला मनुष्य मुक्त होताहै २ जोनियममानपवित्रअहंकारादि से रहित मनुष्य सब जीवधारियों में आत्माके समान बिचरे वह सबओर से मुक्त है ३ जीवन मरण और सुख दुःखादि हानि लाभ और प्रिय अप्रियमें जोसमानहै वह मुक्तहोताहै ४ जोकिसी बस्तुकी इच्छा नहीं करताहै किसीका अपमान नहींकरताहै सुख दुःखादि योगोंसे रहित और संसारकी प्रीतिसे पवित्र चित्तहै वह मुक्त होता है ५ जो शत्रु न रखनेवाला भाई बेटोंसे जुदा धर्म्म अर्त्थ कामको त्याग करनेवाला अर्त्थात् केवल मोक्षमार्ग्ग में नियत और अनिच्छावानहै वह मुक्त होताहै ६ अब ज्ञानफलको कहतेहैं जो धर्माधर्मसे, रहित पूर्वोपचित कर्मका त्यागनेवाला शरीरों का स्वामी,

तत्वोंके नाशमें शान्तचित्त और अद्वैतहै अर्थात् सबका आत्मारूपहै वह मुक्तहोता है ७ जो अनिच्छावान् संन्यासी सदैव इसजगत्को विनाशमान और पीपलके वृक्षकी समान जन्म मृत्यु और जरावस्था से संयुक्त देखे ८ बैराग्यरूप बुद्धि रखनेवाला सदैव आत्म दोषों का त्यागनेवाला है वह पुरुष थोड़ेही काल में आत्म बंधनसे छूटनेवालाहै ९ अर्थात् गन्ध रस स्पर्श शब्द और परिग्रहसे पृथक् अरूप बुद्धिसे परे चिदात्मा को देखकर संसारसे छूटताहै १० जो पुरुष पंचतत्वोंके गुणोंसे रहित अर्थात् स्थूल शरीरसेपृथक् अमूर्त्ति अर्थात् सूक्ष्म शरीरसेरहित कारणनामशरीर न रखनेवाला निर्गुण गुणभोक्ता परमात्मा को देखताहै वह मुक्त होता है ११ अर्थात् शरीर और बुद्धिके द्वारा चित्तके सब संकल्पोंको त्याग करके बड़ी सुगमता से ऐसे निर्वाण मोक्षको पाताहै जैसे कि इंधन से रहित अग्नि होय १२ सब संस्कारोंसे पृथक् सुखदुःखादि योगोंसे जुदा स्त्री आदिक परिग्रह न रखनेवाला जो पुरुष तपस्याकेद्वारा इन्द्रियों के समुदाय को आत्मामें लयकरे वह मुक्तहीहै १३ तदनन्तर सब संस्कारों से रहित वह पुरुष उस सनातन ब्रह्मको पाताहै जोकि सब से परे शान्त अचल सदैव रहनेवाला और अबिनाशीहै १४ इसके अनन्तर अब उस योगशास्त्रको बर्णन करताहूं जिससे उत्तम कोई नहींहै उसीकेद्वारा योगीजन ध्यानसे शुद्ध आनन्दरूप ब्रह्मकोदेखते हैं १५ मैं उसके उपदेशको ठीक२ कहूंगा उसको तुम चित्तसेसुनो जिन उपायोंसे चित्तको शरीरमें अन्तर्मुख करता हुआ उस आदि अन्तरहित परमात्माको देखताहै १६ प्रथम इन्द्रियोंको अपने २ बिषयोंसे हटाकर चित्तको आत्मारूप क्षेत्रज्ञमें धारण करे अर्थात् प्रथम अपने धर्मका अभ्यासरूप तपको तपकर फिर मोक्षयोगको अभ्यास करे १७ तपस्वी सदैव आत्मामें तन्मय बुद्धिमान् ब्राह्मण आत्माको आत्मामें देखता चित्तसे योगशास्त्रका अभ्यास करे १८ जो यह साधूआत्माको आत्मामें प्रवेश करनेवाला होताहै तब वह एकान्त अभ्यासी मनुष्य अपनी आत्मामेंही देखताहै १९ नियम-

वान् सदैव योगमें प्रवृत्तचित्त बुद्धिमान् जितेन्द्री होकर जो पुरुष इसरीतिसे परमात्मामें तदाकार है वह आत्मा ब्रह्माकार बुद्धिसे आत्माको देखताहै २० जिसप्रकार कि स्वप्नमें स्थूलशरीरसे पृथक् यह मनुष्य देखकर फिर जाग्रत अवस्थामें भी देखताहै जैसे कि ऊषाने स्वप्नमें अनरुद्धको देखाथा उसीप्रकार अच्छायोगी समाधी में अपने आत्माको विश्वरूप देखकर व्युत्थान दशामें भी विश्वको आत्मारूप देखताहै २१ जैसे कि कोई मनुष्य सींकको मूजसे खेंच कर देखे उसीप्रकार योगीभी शरीरसे आत्माको जुदाकरके देखता है २२ मूजको शरीरकहा सींकको आत्मारूपकहा यह श्रेष्ठ दृष्टांत बड़े उत्तम योगीलोगों से जानागया है २३ जब जीवात्मा अपने आत्माको परमात्मामें अच्छीरीतिसे संयुक्त देखताहै तब एकत्वता से इससंसारमें उसका कोई ईश्वर नहींहै जोकि तीनोंलोकोंकाभी स्वामीहै वहभी नहीं २४ वह योगीअपनी इच्छाके अनुसार देवता गन्धर्व और मनुष्योंके शरीरोंको प्राप्तकरताहै और जरा मरणादशा ओंसे पृथक् होकर न शोचताहै न प्रसन्न होताहै २५ वह इन्द्रियों को स्वाधीन रखनेवाला योगी देवताओं के देवभाव को भी प्राप्त करताहै और इस बिनाशवान् शरीरको त्यागकरके अविनाशी ब्रह्म कोपाताहै अर्थात् विदेहकैवल्य तकही ऐश्वर्यहै २६ जीवों के नाश- वान् होनेमें उस विदेह मुक्तयोगी को भयनहीं उत्पन्न होताहै दुःखी जीवोंके मध्यमें वह किसीसे कष्ट नहीं पाताहै २७ अनिच्छावान् शान्तचित्त योगी उन दुःख शोक और भयसे कुमार्गी नहीं होताहै जो कि संसारके स्नेह और प्रीतिसे प्रकट और भयकारीहैं २८ न शस्त्रसे वहमरसक्ताहै और न उसकी मृत्युहोतीहै यहांलोकमें इससे अधिक सुख कहींदेखनेमें नहींआताहै २९ वह आत्माको अच्छीरीति से मिलकर आत्मामें तन्मय होकर नियत होताहै जरा मरण आदि दुःखोंसे रहित वह योगी बड़े आनन्दपूर्वक सोताहै ३० वह योगी इस मनुष्य शरीरको त्यागकरके इच्छाके अनुसार देवता और म- नुष्यादिकोंके शरीरोंको प्राप्तकरताहै परन्तु किसी दशामें भी योगके

ऐश्वर्यभोगनेवाले योगीको योगसे अप्रीति करना योग्य नहींहै ३१
जब आत्माको परमात्मा में अच्छीरीतिसे तन्मय करके अपने को
देखताहै तब साक्षात् इन्द्र और इन्द्रके पदकी भी इच्छानहीं करतेहैं
अर्थात् अपूर्णयोगमेंही भोगोंकीइच्छा होतीहै पूर्णयोगमेंनहीं होती
है ३२ ब्रह्मप्राप्ती करनेवाला ध्यानका अभ्यासी पुरुष जिसप्रकार
योगको पाताहै और वेदान्त श्रवणकेसाथ उपदेशकी युक्तिसेबिचार
कर जिस पुर अर्थात् शरीरमें नियत करे उसकोभी सुनो ३३ उस
पुरके भीतरही चित्तको नियत करनाचाहिये बाहर न करनाचाहिये
पुरके मध्यमें नियत होता हुआ जिस स्थानपर निवासकरे उस
स्थानके बाहर और भीतर चितका धारण करना योग्यहै ३४उसका
वह चित्त जिससमय चक्र स्थानपर पूर्णब्रह्मको ध्यान करके नियत
होताहै उस समय पर पूर्णब्रह्मके सिवाय कुछनहीं है ३५ मनुष्यों
से रहित निश्शब्द बनमें इन्द्री समूहों को आधीन करके एकाग्र-
चित्त करके शरीर के बाहर और भीतर पूर्णब्रह्म को ध्यान करे३६
अब इस योगके साधनोंको कहतेहैं दांतोंसे भोजनको बिचारे अ-
र्थात् शुद्ध आहारकरे क्योंकि आहार शुद्धी से चित्तशुद्धी चित्तशुद्धी
से स्मरण और स्मरण से सब सन्देहों की निवृत्ती होतीहै तालु
और जिह्वाको ध्यान करे क्योंकि तालू आधार और जिह्वाधारण
होनेके योग्यहै जैसे कि ईश्वरका बचनहै कि मुखमें जो ऊंचागर्त है
उसमें उलटी जिहवाको बिचारपूर्वक संयुक्त करे वह खेचरीमुद्राहै
और तैत्रेयजीका भी बचनहै कि कपालके छिद्रमें उलटी जिहवाको
लगावे और दोनों भृकुटियोंके मध्यमें अपनी दृष्टि नियत करे इस
को खेचरीमुद्रा कहतेहैं जिह्वाके मूलसे नीचेका जो भागहै उसको
ग्रीवा कहते हैं और उससे नीचे कण्ठ तालुहै उन दोनों से नीचे
कण्ठ कूपहै उससे नीचेपुष्पहै उसको भी ध्यानकरे वहांपर धारणा
योगमें निश्चय करातीहै और कण्ठ कूप पर धारणा होनेसे क्षुधा
तृषा दूर होजातीहै हृदयके आश्रय स्थान ब्रह्मको और उसीप्रकार
हृदयी बंधन रूप उन एकसौ एक नाड़ियोंको जो कि ऊपरके लोकों

केजाने के मार्गहैं ध्यानकरे ३७ हे मधुसूदनजी मेरे इसप्रकार के वचनों को सुनकर उस शिष्यरूप ब्राह्मणने के विद्या में निश्चय रखनेवालेसम्बन्धसे प्रयोजनको वर्णनकिया अर्थात् फिरइसीकठिन मोक्ष धर्मको पूछा ३८ कि श्लोक सैंतीस में पांचप्रयोजन हैं उनमें सेश्लोककी आदिकेतीन प्रयोजनोंको पूछताहै कि यहबारंबारखाने की बस्तु उदरके पक्वाशयमें कैसे पकतीहै कैसे रसरूपता को पाती है कैसे रुधिर रूपको प्राप्त करती है ३९ और इसीप्रकार मांस मज्जा नस और हाड़रूपको कैसे पाती है जीवोंके यह सब शरीर स्त्रीके उदर में किसरीतिसे ४० वृद्धिको पातेहैं और बड़े होनेवाले को बल कैसे बढ़ताहै और रुकेहुये मल मूत्रका पृथक् २ निकलना कैसे होताहै ४१ मनुष्य किसप्रकारसे श्वासको छोड़ताहै अथवा फिर किसरीतिसे श्वासको आकर्षण करताहै तीसरेबातको प्रागमें निष्प्रयोजन जानकर उसको न पूछकर चौथेको पूछताहै—यह आत्मा शरीरके भीतर किस स्थानमें प्रवेश करके नियत होताहै— अब पांचवें को पूछताहै किजो चेष्टावान् जीवशरीरको धारण करता है वह नाड़ीके मार्गोंके द्वारा किसप्रकार से सूक्ष्म शरीरको प्राप्त करताहै वह नाड़ी मार्ग कैसेरंगवालेहैं और उनमार्गोंसे कैसे शरीर में प्रवेश करताहै (आशय) इन सब प्रश्नोंमें से दोप्रश्नोंके निश्चय करने के अर्थ ब्राह्मणगीताहै दूसरे दोको कहनेवाला गुरु शिष्य का प्रश्नोत्तरहै पांचवां जहां तहां सिद्धकिया ४२ । ४३ हे निष्पाप भगवन् इसको यथार्थ कहने को आप योग्य हो हे लक्ष्मीपति शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबाहु श्रीकृष्ण जी इसप्रकार उस ब्राह्मण से संयुक्त होकर मैंने ४४ शास्त्रके अनुसार उत्तर दिया कि जैसे घरका स्वामी अपने धनागार में वर्त्तन भांड़ोंको रखकर फिर उसमें जाकर उन सब अपने पात्रादिकोंका जाननेवाला होताहै ४५ उसीप्रकार योगी अचलेन्द्रियों के द्वारा मनको शरीर में रोककर वहां आत्मा को खोजकरे और चारों ओर से मोह अर्थात् भूलको त्यागकरे ४६ इसरीति से सदैव योगका अभ्यास करनेवाला शुद्ध

चित्त मनुष्य थोड़ेही समयमें उस ब्रह्मको पाताहै जिसको कि देख कर प्रधानका जाननेवाला होताहै ४७ यह ब्रह्म नेत्रोंसे देखने में नहीं आता किसी इन्द्रीसेभीनहीं जानाजाता यह बड़ा श्रेष्ठ आत्मा केवल चित्तरूपी दीपकही से देखने में आताहै वह निराकार होकर भी सब ओरको हाथ पैर नेत्र शिर और मुखरखनेवालाहै ४८ सब ओरको कान रखनेवालाहै लोकमें सबको व्याप्त करके नियत है यह जीव संप्रज्ञातदशा में शरीर से पृथक् होनेवाले आत्माको देखताहै ४६ तब वह जीवात्मा उस सगुणब्रह्मको लयकरके शरीर में चित्तको रोकता और चित्तसेही हँसताहुआ निर्गुण ब्रह्मको देखताहै इसरीति से उस ब्रह्मको आश्रय स्थान करके फिर अहं ब्रह्मास्मि नाम महावाक्यार्थमें मोक्षको पाताहै ५० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण यह सब मैंने गुप्तरहस्य तुझसे कहा अब मैं तुझसे पूछकर बिदाहुआ चाहताहूं मैं धारण करूंगा हे ब्राह्मण तुम सुख पूर्व्वक जावो ५१ हे श्रीकृष्ण जबमैंने इसप्रकारके बचन कहे तब वह महातपस्वी तेजव्रत शिष्यरूप ब्राह्मण अपनी इच्छाके अनुसार चलागया ५२ बासुदेवजी बोले कि हे राजा तब वह मोक्षधर्म में अच्छीरीति से आश्रित उत्तम ब्राह्मण मुझसे इसबचन को कहकर उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगया ५३ हे अर्ज्जुन क्या तुमने चित्तकी एकाग्रतासे इसकोसुना और तब उससमय रथपर नियत होकरभी तुमने इसी ज्ञानकोसुनाथा ५४ हेअर्जुन एकाग्रचित्तकिये बिना यह ज्ञान ऐसे मनुष्यको अच्छीरीतिसे नहींआसक्ता जो कि अन्तःकरणसे म्लानहै और जिसने बिद्याकी संप्रदायको नहीं जानाहै ५५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ यह देवताओंका गुप्तसेगुप्त ज्ञान मैंने तुझसे कहा हे अर्जुन यह ज्ञान कभी किसी मनुष्यने नहीं सुना है ५६ हे निष्पाप तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य इसकेसुननेको योग्य नहीं है अब यह ज्ञान बिना एकाग्रचित्त किये जाननेके योग्य नहींहै ५७ हे कुन्तीके पुत्र यज्ञादिक कर्म्म करनेवाले मनुष्यों से देवलोक पूर्ण होरहा है यह मनुष्य शरीर से छूटना देवताओंको प्रिय नहींहै ५८ हेअर्जुन वह

गति सबसेपरेहै जिसको कि सनातनब्रह्म कहतेहैं शरीर त्यागनेके पीछे जिसमें प्रवेशकरके अबिनाशीपनेकोपाताहै और सदैवआनन्द रूपरहताहै ५६ जो स्त्री वैश्य और शूद्र पापयोनी होते हैं वह भी इसआत्मदर्शननाम धर्ममें नियत होकर मोक्षकोपातेहैं ६० हे अर्जुन फिर बहुत शास्त्र जाननेवाले अपने धर्ममें तत्पर सदैव ब्रह्मलोकको चाहनेवाले ब्राह्मण और क्षत्रीलोग क्योंनहींपावेंगे ६१ यह सहेतुक ज्ञानका उपदेश किया और उसके साधन में जो उपाय हैं और जो सिद्धी फल मोक्ष और दुःखका निर्णयहै वह भी बर्णन किया ६२ हे भरतर्षभ इससे बढ़कर और परे कोई सुख नहीं है हे पाण्डव जो बुद्धिमान् श्रद्धामान समर्थ मनुष्य इसलोक के धनादिक सुखोंको असार रूप तृणकी समान त्यागकर देताहै वह इन शम दमादि उपायोंसे परमगतिको पाताहै ६३ । ६४ इतनाही कहना उचितहै इससे अधिक कुछनहींहै हे अर्ज्जुन सदैव योगमें प्रवृत्तचित्त मनुष्य का योग छः महीने में सिद्ध होता है ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतायांएकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

बीसवां अध्याय ॥

बासुदेवजी बोले कि मैं बैश्वानर रूप होकर प्राण अपान को साथलेकर चारप्रकारके भोजनोंको पचाताहूं इसबिषय से संबंध रखनेवाले उस प्राचीन इतिहासको भी कहताहूं हे भरतर्षभ अर्जुन जिसमें कि स्त्री और पुरुषका प्रश्नोत्तरहै १ किसीब्राह्मणीस्त्रीने ज्ञान विज्ञान में पूर्ण एकान्त में बैठेहुये अपने पति ब्राह्मण को देखकर यह बचन कहा २ कि अग्निहोत्रादिक त्याग करनेवाले निर्दयी मेरी अल्पमतिसे अज्ञान तुझ पतिके पास शरणागत होनेवाली मैं किसलोकको जाऊंगी ३ भार्य्या अपने पतिके कर्मसे प्राप्तहोनेवाले लोकोंको पातीहैं यह हमने सुनाहै मैं वहां तुझ पतिको पाकर कौ-नसी गतिको पाऊंगी ४ इसप्रकारके भार्य्याके बचनोंको सुनकर

उस शान्तात्मा हंसते हुये ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि हे निष्पाप सुभगे मैं इस तेरेबचनकी निन्दा नहींकरताहूं ५ जो यह सत्य कर्म प्रत्यक्ष दृष्टिके आगे नियत दीक्षा ब्रतादिक वर्त्तमानहै उसकोकर्म कर्त्ता लोग कर्म्म अकर्म्म निश्चय करतेहैं ६ ज्ञानसे रहित मनुष्य कर्मके द्वारा मोहको पाते हैं इसलोक में एक घड़ी भर भी कर्म्मके बिना मोक्ष आश्रम संन्यास प्राप्त नहीं होते हैं ७ जीवधारियों में शुभाशुभकर्म मन और वाणीसे जन्मस्थिति नाश और योनियोंके बहुतसे प्रकार वर्त्तमान होते हैं ८ सामान रखनेवाले सोमयज्ञादिक कर्म मार्ग राक्षसोंसे भ्रष्ट और नाशहोनेपर उनसे प्रीतिको हटाकर मैंने दोनों भृकुटियों के मध्य में नियत अव्यक्तनाम स्थान कोदेखा ९ जहांपर वह अद्वैत ब्रह्महै और जहांपर इड़ापिंगलानाम नाड़ीहैं बुद्धिको प्रेरणा करनेवाला वायुजीवोंको धारण करताहुआ सदैवजिसस्थानपर चेष्टा करताहै १० ब्रह्माआदिक योगीजिसस्थान पर जिसअबिनाशी ब्रह्मकी उपासनाकरतेहैं ११ वह अबिनाशीब्रह्म घ्राणेन्द्रीसे सूंघनेके योग्यनहीं जिह्वासे स्वादुलेनेके योग्यनहींस्पर्श इन्द्रीसे छूने में नहीं आता केवल मनसेही जानाजाताहै१२जोनेत्रोंसे दृष्टिमें नहींआता बुद्धिसेभी परेहै रूपरसगन्ध स्पर्श और शब्दनाम लक्षणोंसे रहितहै १३ यहसृष्टि जिससे प्रकटहोतीहै औरजिसमेंनिबासकरतीहै प्राण अपान समान ब्यान उदान१४यहपांचों जिससे प्रकटहोतेहैं और उसीमें प्रवेश करजातेहैं अर्थात् उनका प्रकटहोना और कर्ममें प्रवृत्तहोना यहतो उत्पत्तिहै और उसमें प्रवेश होजाना ही प्रलयहै प्राण और अपान यहदोनों समान और ब्यानकेमध्य में चेष्टा करनेवाले हैं समान नाभिमंडलमें नियतहैब्यान सबशरीर में ब्यापकहै १५ दोनोंभृकुटियोंमें अपान और प्राणके रुकजानेपर समान और ब्यानभी रुकजातेहैं परन्तुसब जोड़ों में नियत उदान उनप्राण और अपानके मध्यमेंब्याप्त होकर नियतहै इसीहेतुसेयह प्राण और अपान सोनेवाले मनुष्यको त्यागनहीं करतेहैं १६प्राणों के चलायमान होने को उदान कहते हैं अर्थात् जीवात्माओंको

उपाधीसब प्राणएकही उदानमें नियतहैं इसीहेतुसे ब्रह्मबादीपुरुष प्राणोंके बिजयी तपको अथवा तप के बिचारने को मुझमेंही निष्ठा पानेवाला निश्चय करतेहैं १७ मुझशब्दके अर्थरूप बैश्वानर नाम अग्निकोदिखातेहैं परस्पर भोजनरूप और शरीरमें भ्रमण करने-वालेउन सब प्राणोंके मध्यमें अर्थात् नाभिमंडल में वैश्वानर नाम अग्नि सातरूपसे क्रीड़ा करताहै १८ घ्राण जिह्वा चक्षुत्वक् श्रोत्र यहपांचों इन्द्रियां और मनबुद्धि उसवैश्वानर नाम अग्निकीजिह्वा हैं १९ शब्दस्पर्श रूपरस गन्ध और मानने जाननेकेयोग्यप्रत्येक दोदोस्पर्शवाले समेतमुझ बैश्वानररूप अग्नि की समिध हैं २० शब्दस्पर्श रूपरस गन्ध मानना जानना नाम सातोंबिषयकेस्वादु लेनेवाले यहसातो श्रेष्ठऋत्विज होतेहैं २१ हेसुभगे तुमसदैव इन सातोंको शब्दस्पर्श रस रूप गन्धको मानने और जाननेमेंदेखो२२ घ्राणेन्द्री आदिके अभिमानी देवतारूप सातअग्नियोंमें गन्धादिक सातोंबिषयोंके होमनेवाले पुरुष अभिमानी होतेहैं और ज्ञानी उन अभिमानोंको अपनेसे जुदामानकर उनब्रह्म से उत्पन्न होनेवाली अग्नियोंमें आगेके श्लोकमें लिखेहुये पृथ्वी आदिकको उत्पन्नकरते हैं २३ पृथ्वी आकाश जल अग्नि मनबुद्धि यह सातों संघात रूप प्रत्यक्ष स्थान रूप चैतन्य कहेजातेहैं २४ हव्यरूपसेसब बिषयउस गन्धादिककाज्ञान रखवाले उसीवृत्ती में प्रवेश करतेहैं अर्थात् जो स्वप्नावस्थामें रूपादिक बासना रूपसे नियत होतेहैं वह जाग्रत अवस्थामें फिरप्रकट होतेहैं २५ वहसब उस सृष्टि के स्वामी सब के आवागमन के आश्रय रूपमेंही लयहोतेहैं इसीसे गन्ध उत्पन्न होताहै उसीसे रसरूप स्पर्श और शब्द प्रकट होताहैउसीमें संश-यात्मक चित्तभी उत्पन्नहोताहै २६।२७ उसीसे निश्चयत्मिका बुद्धि उत्पन्न होतीहैइसउत्पत्तिको सातप्रकारकाजानो २८ इसीमार्ग से प्राचीन ऋषियोंने घ्राणादिक इन्द्रियोंका रूपवेदसे जानाहैमान अर्थात् परिमाणमेह अर्थात् परिमाणके योग्य माता अर्थात् संख्या करनेवाला इनतीनोंसेपूर्णजो ब्रह्महै उसके आह्वानोंसे पूर्णतोनों

लोक अपने ज्योतिरूप आत्मासेपूर्ण होतेहैं अर्थात् यह सब सृष्टि ब्रह्मदृष्टिसेही प्रकटहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांबिंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ऊपरकहाहै कि मैंद्रष्टा आदिक हूं यहअभिमान रखनेवाला उन इन्द्रियोंको कल्पना करके फिर उनको तृप्तकरताहै अब कहतेहैं कि प्राणोंसेदेवता और देवताओंसे लोक प्रकटहुये अर्थात् इन्द्रियांही अपने कल्पित देवताओंकेद्वारा कल्पित लोकोंको तृप्त करतीहैं इस बचनसे भूतात्मामें कल्पना नहींहै किन्तु जड़मेंहै इसके निश्चय करनेको ब्राह्मणने कहा कि ईश्वरकी दृष्टिसे संबन्ध रखनेवाली इस उत्पत्तिके बिषयमें इसप्राचीन इतिहासकोभी कहताहूं अबदश होताओंका जैसा विधान होताहै उसकोसमझो १ हेतेजस्विनी श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, नाक, दोनोंचरण, दोनोंहाथ, लिंग, गुदा, यहदशों इन्द्रियां दशहोताहैं २ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, बचन, कर्म गति, बीर्य मूत्र और बिष्ठाका त्यागना यही दशद्रव्यहैं ३ दिशा, बायु, सूर्य्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, अग्नि, बिष्णु, इन्द्र, प्रजापति, मित्र यह दश अग्निहैं ४ हे तेजस्विनी दशोंइन्द्रियां होताहैं दशहव्यहैं औरबिषयनाम समिध दशों अग्नियोंमें होमीजातीहैं ५ चित्तनाम श्रव और अग्नि दक्षिणारूपधन जिनको कि हवन करनेके पीछे त्यागकरते हैं इसीप्रकार इन्द्रियोंकोभी उनके बिषयों समेत आत्मामें लयकरके मनकी उत्पत्तिके कारणरूप पाप पुण्य कोभी त्यागकरे इसकेपीछेजो शेषरहताहै अबउसको कहतेहैं वहज्ञान स्वरूपहै जोकिअसंग और अन्तवालाहै ज्ञानसेपृथक् यह चित्तादिक सब समानहीजगत नामसे प्रसिद्धहुआ यहीज्ञानहै ६ सबजाननेके योग्य चित्तही है उसका प्रकाशक ज्ञान केवल साक्षीहै क्योंकि बीर्य्यसे उत्पन्न होनेवाले स्थूल शरीरका अभिमानी जीवात्मा सूक्ष्म शरीरोंकाभी अभिमानी होताहै अभिमान जुदानहींहै ७ शरीरका अभिमानीजो-

वात्माहै और उसगृहपतिका निवाश स्थान हृदयहै उस हृदयसेही दूसरामन प्रकट होताहै और वही मन मुखहै जिसमें हव्य अर्थात् अग्नि जल अग्नि डालाजाताहै आशययहहै कि चित्त अन्नरूपहैप्राणजलरूपहै बचन अग्निरूपहै क्योंकि हव्यका तेज जठराग्निको पाकर शीघ्रही बचन रूपसे विपरीत दशा करताहै ८ उस्से वेदप्रकट हुआ उसके पीछे पृथ्वी संबंधी चित्त उत्पन्न हुआ इसीहेतुसे चित्तरूप सूत्रात्मा वेदके वचनोंकोबिचारताहै तबप्राण नाम बायु जो कि पीत नीलादिबर्णसे पृथक् प्रकटहोताहै वहचित्तकाकर्त्ता अथवा चित्त प्राणका आगेपीछे होताहै अर्थात् मनके रुकनेपर प्राण और प्राणके रुकनेपर मनभी रुकजाताहै ६ ब्राह्मणो किस कारण प्रथम बचन प्रकटहुआ और किसहेतुसे मन उत्पन्नहुआ जब कि मनसे बिचाराहुआ बचन प्रकट होताहै १० किस प्रमाणसे प्राण मनके आश्रयहै सुषुप्तिअवस्थामें वृद्धप्राणने विषयों को क्यों नहीं प्राप्त किया और उसदशामें इसकीज्ञान शक्तिको कौन दूरकरता है ११ ब्राह्मणबोला कि सुषुप्तिअवस्था में अपान प्राणका स्वामी होकर उसको अपने आधीन करताहै इसीहेतुसे प्राण सुषुप्ति अवस्था में चित्तके लय होनेपर आप लय नहीं होता परन्तु अपानको अपनी स्वाधीनतामें करकेसमाधिअवस्थामें मनकेलयहोने में आपभी लय होजाताहै उसप्राणनाम गतिको मनकीगति कहते हैं अर्थात् वही बाहरजानेका साधनहै इसीहेतुसे चित्तवेदको बिचारता है १२ तुम जिसमनके कारणरूपबचनको मुझसेपूछतेहो इसहेतु से उनदोनों केपरस्पर प्रश्नोत्तरोंको तुझसे कहताहूं १३ दोनों बाणी और मनने जीवात्माके पास जाकर पूछा कि हेप्रभु हम दोनोंमें जो श्रेष्ठ होय उसको आप कहिये और हमारे चित्तके सन्देहको दूर करो१४तब जीवात्माने कहा कि मन श्रेष्ठहै फिर सरस्वती रूप बाणीने कहा में तेरी कामधुकहूं १५ तब मन रूप ब्राह्मणने कहा कि स्थावर अर्थात् बाह्य न्द्रीसे जाननेके योग्य प्रत्यक्ष सृष्टि जंगम अर्थात् इन्द्रियोंसे परे स्वर्गादिक इन दोनोंको मेरा मन जानो प्रत्यक्ष सृष्टि

मेरी दृष्टिके सन्मुखहै और स्वर्गादिक तेरा मुद्रकहै १६ जो मन्त्र वर्ण स्वर उन स्वर्गादिक स्थानोंको प्राप्तकरे उसको मन्त्रादिकसे जाननेवाला मन जंगमनाम कहा जाताहै इस हेतुसे बचनभी वृद्ध अर्थात् श्रेष्ठहुआ १७ हेशोभायमान जिस कारणसे तू अपने आप सन्मुख आकर अपनेपक्षको दृढ़ करताहै इसीहेतुसे अन्तर्मुख श्वास को पाकर तुझ सरस्वतीसे कहताहूं हेमहाभाग यह देवी सरस्वती उन प्राण अपानके मध्यमें जो कि मनकी मुख्य वृत्तीहैं सदैवनियत रहतीहैं बिना प्राणोंके चलायमानभी अपने प्रकट होनेमें असमर्थ सरस्वती ब्रह्माजीके पासगई और कहा कि हेभगवन् आप प्रसन्न हूजिये १८।१६ इसके पीछे बाणीकी वृद्धि करताहुआ प्राण प्रकट हुआइस हेतुसे बचन प्राणकी आकर्षणताकोपाकरकभी बार्त्तालाप नहीं करताहै २० वह बचनरूप बाणी सदैव दो नामोंसे बर्त्तमान होतीहै प्रथम घोषणी अर्थात् शब्दायमान दूसरी अघोषा अर्थात् शब्दरहित इन दोनोंके मध्यमें घोषणीसे अघोषा श्रेष्ठहै क्योंकि घोषणी प्राणोंकी वृद्धि चाहतीहै और इस मन्त्ररूप अघोषा सब दशाओंमें बर्त्तमानहै इस हेतुसे वह श्रेष्ठहै २१ उत्तम रससे स्तूय-मान बचनरूप गौ मनोरथोंको देतीहै यह ब्रह्मवादिनी अर्थात् उप-निषद बचनरूप उस नित्य सिद्ध मोक्षको देतीहै अर्थात् बचनरूप गौ के यह चार थनहैं स्वाहाकार,स्वधाकार, नहुतकार, हंतकार वषट्कार २२ हेपवित्र मुसकानवाली दिव्य बचनरूप गौ इन दो प्रभावोंसेयुक्तहै दिव्य अर्थात् देवताओंका आह्वानअदिव्य अर्थात् व्यवहारादिक इनदोनोंचलायमान औरसूक्ष्मबचन औरचित्तके अ-न्तरकोदेखो२३ब्राह्मणीबोली कि तबबचनोंकेउत्पन्नहोनेपर बार्त्ता-लापकरनेकी इच्छासे चलायमान देवी सरस्वतीने प्रथम किसतत्त्व कोअधिकतम आश्रय स्थानकिया२४ ब्राह्मणनेकहा कि जो बचन शरीरमेंप्राणसे प्रकट होतेहैं वहप्राणसे चलायमान होकर नाभिके स्थानपर अपानसे एकताप्राप्तकरतेहैं फिर उदानके स्थानपर आ-करउससे भी एकताकरके शरीरकोछोड़करव्यान रूपसेसबआकाश

को व्याप्त करतेहैं २५ इसके पीछे फिर पूर्व्वकेसमान समान में नियत होतेहैं इसप्रकारसे बचनोंने अपने प्रथम प्रकटहोने कीरीति कोवर्णन किया इसी हेतु से चित्त स्थावर रूप होने से श्रेष्ठहै उसी प्रकार बचन भी जंगम रूप होनेसे श्रेष्ठहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुएकविंशो़ऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणनेकहा कि हे सुभद्रे इसचित्त और बचन के बिषयमेंइस प्राचीन इतिहासको भी बर्णन करताहूं इस में सात होताओंका जैसा विधानहै उसको सुनों १ नाक आंख जिह्वा चर्म कान मन बुद्धि यह सातों पृथक् २ स्थित होकर होताहैं २ वह सब सूक्ष्म स्थानपर नियत परस्पर में एक एक को नहीं देखतेहैं हे सुन्दरि तुम इन सात होताओंको स्वभावसे जानों ३ ब्राह्मणी बोली हे भगवन् वह सूक्ष्म स्थान में नियत होकर परस्पर में क्यों नहीं देखतेहैं उनका स्वभाव कैसाहै हे प्रभु उसको मुझसे कहो ४ ब्राह्मणने कहा कि गुणोंकोबिज्ञता, अविज्ञता, विज्ञान, अविज्ञान, यह चारों गुणहैं वह सातों होता किसी समय पर भी एक दूसरे के गुणोंको नहीं जानतेहैं ५ जिह्वानेत्र कान बचन मन बुद्धि यह गन्धोंको नहीं प्राप्त करते परन्तु घ्राणेन्द्री गन्धोंको प्राप्त करतीहैं ६ नाक आंख कान बचन मन बुद्धि रसोंको प्राप्तनहीं करतेहैं परन्तु जिह्वा उनको प्राप्त करतीहै ७ नाक जिह्वा कान बचन मन बुद्धि रूपोंको प्राप्त नहीं करतेहैं परन्तु आंख उनको प्राप्त करतीहै ८ नाक जिह्वा कान नेत्र बुद्धि मन यह सब स्पर्श गुणको नहीं प्राप्त करते परन्तु त्वंगेन्द्री उनको प्राप्त करती है ९ नाक जिह्वा आंख त्वक् मन बुद्धि यह सबशब्दोंको नहीं प्राप्तकरतेहैं परन्तु कान उनको प्राप्त करताहै १० नाक जिह्वा आंख त्वचा कान बुद्धि यहसब संशयको नहीं प्राप्तकरतेकेवल मनही उसकोप्राप्त करताहै ११ नाक जिह्वा आंख त्वचाकान मन यह सब निष्ठाको प्राप्त नहीं करते हैं

उसको केवल बुद्धिही प्राप्तकरतीहै १२ हे तेजस्विनी इस स्थानपर इस प्राचीनइतिहासको भी कहताहूं जिसमेंकिमन और इन्द्रियोंका प्रश्नोत्तरहै१३मनने कहा कि मेरे बिना घ्राण इन्द्री नहीं सूंघती है जिह्वारसको नहीं पासक्तीहै नेत्ररूपको नहींदेखते त्वक् इंद्रीस्पर्श को नहीं जानती १४ और कान भी मुझसे पृथक् होकर किसी दशामें शब्दको नहीं जानताहै मैं सब जीवोंकेमध्यमें श्रेष्ठतम और प्राचीनहूं मुझसे पृथक् होकर इन्द्रियां ऐसे प्रकाशित नहीं होतीं जैसे कि उजड़े हुये स्थान और बिना ज्वलित अग्नि१५।१६मनसे रहित इंद्रियां आर्द्र और शुष्क काष्ठके समान होतीहैं सबजीवमात्र मेरे बिना उपाय करनेवाली इंद्रियों के द्वारा विषयोंको प्राप्तनहीं करतेहैं १७ इन्द्रियां बोलीं कि यह इसीप्रकार सत्य होय जैसे कि आप इसको मानतेहैं जो आपहमारे बिना हमारे बिषयादिकभोगों को भोगतेहैं १८ जो हमारे लयहोजाने पर प्राणोंकी तृप्ती और स्थितिहै और आप भोगोंको भोगतेहैं उसदशामें जैसा आपमानते हैं वह सत्यहै १६ जो हमारे लयअथवा बिषयों में नियत होनेपर आप संकल्प मात्रसे भोगोंकोयथेच्छ भोगतेहैं २० औरजो हमारे विषयोंमें सदैव सिद्धी मानतेहो उसदशामें घ्राणेन्द्रीसेरूपको और नेत्र से रसको प्राप्तकरो २१ कानसे गन्धोंको जिह्वासे स्पर्शों-को त्वचासे शब्दोंको और बुद्धि से स्पर्शको प्राप्तकरो २२ बल-वान् लोग नियम से रहितहैं निर्बलही लोगोंके नियमहैं तुम अनु पम भोगोंको प्राप्तकरो उच्छिष्ट भोजन करनेके योग्य नहींहै२३ जैसे कि शिष्य वेद प्राप्त करनेकेमनोरथ से गुरूके पास जाताहै और उस गुरूसे वेदको पढ़कर वेदार्थको बिचारताहै २४ उसी प्रकार स्वप्न और जाग्रत अवस्थामें हमारे दिखाये हुये व्यतीत अ-थवा आगे होनेवाले बिषयोंको अपना मानतेहो २५ छोटे चित्त-वाले जीवोंके बेमनहोनेमें हमारे निमित्त कर्म करने पर प्राणकी स्थिति दिखाई देतीहै २६ बहुत से संकल्पोंको मनसे करके और स्वप्नको देखकर तृषासेदुखी मनुष्य बिषयोंकी ओरको दौड़ताहै

वाह्येन्द्री रूप द्वारोंसेरहित स्थान अर्थात् हार्दाकाश अथवा सुषु-प्त्यवस्था अथवा मोक्षमें प्रवेश करके फिर व्युत्थान दशामें बिषय बासनासे वंधेहुये संकल्पसे उत्पन्नहुये बिषयों को भोगकर मनके नाशके समय सुषुप्तिदशा अथवा संप्रज्ञात दशामें ऐसे शान्तीको पाताहै जैसे कि लकड़ियोंके भस्महोजानेपर अग्नि शान्तहोजाता है २७। २८ चाहै हमारा संग अपने बिषयों में होय चाहै परस्पर बिषयों की प्राप्ती न होयपरन्तु हमारे बिनातुम प्राप्तनहीं होसक्ते केवल इतनाहीहै कि बिना तेरे किसी प्रकारकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होसक्ती यह अहार शुद्धीसे संवंध रखनेवाला प्रश्नसमाप्त हुआ २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांद्वाविंशोऽध्याय: २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

अब तालु और जिह्वासे संबन्ध रखने वाला दूसरा प्रश्न दो अध्यायोंमें बर्णन करतेहैं छांदोग्य उपनिषदमें पुराणाग्निहोत्र वि-द्यामें प्राण अपान व्यान उदान समान इन पांचोबायुओंको अधि-लोक और स्वर्ग पृथ्वीदिशा अकाश इनको बिजली रूप कहाहै इनमें से प्राण अपान परस्पर एक दूसरेके आधीन हैं क्योंकि पूरक रेचकमें अपानक्रिया रुकजातीहै और रेचक अपानमें प्राणगतिरुक-जातीहै मूल बिन्दुसे एक होनेवाले पहले दोनोंकी गति ऊपरको होजातीहै वह दोनोंउदानके आधीनहैं इसीप्रकार परिजन्यकेद्वारा यज्ञ परस्पर रक्षाश्रित स्वर्ग और पृथ्वीदोनों आकाशके आश्रित हैं उसी प्रकारसे नाभिस्थानपर वर्त्तमान समान उसव्यानके स्वा-धीनहै जोकि सब अंगोंमें व्याप्त है ब्यानभी सब योगोंमें व्याप्त उदानसेही प्रेरणा पूर्व्वक चलायमान कियाजाताहै उसके व्याप्त होनेसे उदानभी चेष्टाकरताहै इसीप्रकार बिजली दिशाओंमें और दिशा आकाश में आश्रितहैं सब प्राण उदानके स्वाधीनमें हैं जब उदान नाक और दोनों भृकुटियों में रुकजाताहै तब उसस्थानके

नियत ब्रह्ममें स्वर्ग पृथ्वी आदिके साथ आकाश रुकजाता है इस प्रकार उसदशामें सब प्रपंचके लयहोजानेसे योगी कृतकृत्य होजाताहै ऐसा होनेपर तीन भावना होतीहैं प्रथम प्राणाग्निहोत्र करने से तीनोंलोक तृप्तहोतेहैं और इसीसे चित्तशुद्ध होता है इनके दोषों से लिप्त नहीं होता है दूसरे चंचल चित्तको खेचरी मुद्रा और हट योगसे रोकनाचाहिये तीसरे सब प्रपंचकी लयता यह तीनों अधिकारके बिचारसेहैं इसकेप्रकटकरनेको ब्राह्मणनेकहाकि इस चित्त के नाश करनेको इस प्राचीन इतिहासको बर्णन करताहूं हे भाग्यवान् इसमें पांच होताओंका जैसा बिधानहै उसको श्रवण करो १ प्राण अपान उदान समान और व्यान इन पांच होताओंको ज्ञानी लोग परम जानतेहैं २ ब्राह्मणी बोली कि स्वभावसे सात होता हैं यह मेरा मुख्यमतहै जैसेकि पांच होताहैं और जैसा उनका परम भावहै उसको बर्णनकरो ३ ब्राह्मणने कहाकि प्राणसे पोषण किया हुआ अपान नाम प्रकट होताहै अपान से पोषित व्यान वर्त्तमान होताहै ४ व्यानसे पोषित उदाननाम वर्त्तमान होताहै उदानसे पोषण कियाहुआ समान नाम प्रकट होताहै ५ पूर्व्व समयमें उन प्राणोंने प्रथम उत्पन्न होनेवाले ब्रह्माजीसे पूछाकि हमसबमें जो बड़ाहै उसको आप कहिये वही हमारा उत्तम और श्रेष्ठ होगा ६ ब्रह्माजीने कहा कि जीवोंके शरीरोंमें जिसके लयहोनेपर सबप्राण लय होजातेहैं और जिसके चेष्टावान् होनेसे सब प्राण चलायमान होकर चेष्टा करतेहैं वही श्रेष्ठ है अब आपकी जहां इच्छा है वहां जाइये ७ अब इसको सिद्धकरते हैं कि प्राणोंमेंसे एक प्राणके भी अत्यन्त नाश होनेपर दूसरे प्राणोंका भी नाश होजाता है प्राण बोला कि जीवों के शरीरों में मेरे लय होनेपर सब प्राण लयता को पाते हैं और मेरे चलायमान होनेपर फिर चेष्टा करने लगते हैं मैं उत्तमहूं मुझ लयहुयेको देखो ८ ब्राह्मणबोला इसकेपीछे प्राण लय हुआ और फिर चेष्टा करनेवालाहुआ फिर समान और उदान ने यह बचन कहाकि ९ यहां हमजिसरीतिसे सबको व्याप्त करके

नियत हैं उस प्रकार तूनहींहै हेप्राण तूहमसे उत्तम नहींहै केवल अपानही तेरे आधीनहै प्राण चेष्टाकरने लगातब अपानने उससे कहा १० सबजीवोंके शरीरों में मेरेलय होनेपर सबप्राण लयको प्राप्त होते हैं और फिर जबमैं चेष्टाकरने लगताहूं तबवहभी चेष्टा करते हैं मैं सबसे उत्तमहूं मेरे लयको देखो ११ ब्राह्मण बोला कि इसके पीछे व्यान और उदानने उस बार्त्तालाप करने वाले अपान सेकहा कि हे अपान तुम श्रेष्ठ नहींहो केवल प्राणही तेरे आधीन है १२ अपान चेष्टा करनेवाला हुआ तबव्यानने उससे कहा किमैं जिसकारण से सबमें श्रेष्ठहूं उसको सुनों १३ जीवोंके शरीरों में मेरे लयहोनेपर सब प्राण लयहोजाते हैं और मेरे चेष्टा करनेपर फिर चेष्टाकरने लगते हैं मैं उत्तमहूं मेरे लय होनेको देखो १४ ब्राह्मणने कहा यहकहकर व्यान लयहोगया और फिर चेष्टाकरने लगा प्राण अपान उदान और समानने उससे कहा १५ किहेव्या-नतूहमसे श्रेष्ठ नहींहै समानही तेरे आधीनहै फिर व्यानचेष्टाकरने लगा तब समान ने कहा सुनों मैं इस कारण से सब में श्रेष्ठहूं १६ जीवोंके शरीरोंमें मेरे लयहोनेपर सब प्राण लयहोते हैं और मेरे चेष्टावान् होनेपर वह सब भी चेष्टा करने वाले होते हैं मैं श्रेष्ठहूं मुझलय होनेवालेको देखो १७ इसके पीछे समान चेष्टाकरनेलगा और उदानने उस से कहा कि सुनों मैं इस कारणसे सबमें श्रेष्ठ हूं १८ प्राणियोंके शरीरों में मेरे लय होनेपर सब प्राणलयताको पातेहैं और मेरे चेष्टावान् होने पर वह भी चेष्टाकरने लगतेहैं मैं सबसेश्रेष्ठहूं मेरी लयकोदेखो १९ तब उदान लयहोकर फिर चेष्टा करनेलगा इसके पीछे प्राण अपान समान और व्यानने उससे कहाकि हेउदान तूश्रेष्ठ नहींहै केवल व्यान ही तेरे आधीनहै २० इसके पीछे प्रजापति ब्रह्माजीने उन एकत्र नियत प्राणोंसे कहा कि तुम सब श्रेष्ठहो अथवा अस्वतंत्र होनेसे श्रेष्ठ नहींहो और सब परस्पर धर्म रखने वालेहो २१ तुमसब अपने २ बिषयमें उत्तमहो और सब परस्पर सम्बन्ध रूप धर्म रखनेवालेहो प्रजापति ब्रह्मा-

जीने उन एकत्र नियत होनेवाले प्राणों से यहकहा २२ कि एकहो प्राण नियत और चेष्टा करने वालाहै वही अपने मुख्य गुणसे पंच प्राणरूप होताहै इसीप्रकार मेरा एक आत्मा बहुत रूपसे भोगता और भोगरूपको प्राप्त करताहै २३ तुम परस्पर प्रीतिमान होकर अन्योन्य मित्रहो तुम्हारा कल्याण हो तुम आनन्द और कुशलसे जाओ और परस्पर पोषण करो २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणने कहाकि इसस्थानपर उसप्राचीन इतिहासकोभीकहताहूं जिसमेंकि नारद और देवमत ऋषिका संबादहै १ एक आत्मा को अध्यारूपा बादसे बहुत्वरूप कहनेके लियेदेव मतनेकहा कि समष्टिव्यष्टि शरीरकेस्वामी जन्मलेनेवाले जीवधारीके प्राणअपान समान व्यान अथवा उदान मेंसेआदि कौनउत्पन्न होताहै २ नारद जी बोलेकि जिसकारणसे यहजीव उत्पन्नकिया जाताहै उसकारण से दूसराभी आदिकारण रूपसे उसको प्राप्तहोताहै प्राणको द्वन्द्व जानना योग्यहै और जो तिर्य्यग योनि मनुष्यादिक उन्नत देवता आदिक और नीचा पशु आदिकहैं इनसबका रूपभी जाननेकेयोग्य है ३ देवमतने पूछाकि यहजीव किससे उत्पन्न कियाजाताहै और कौनदूसरा कारण रूपसेउसको प्राप्तहोताहै द्वन्द्वप्राण और दूसरे जो तिर्य्यग ऊंचा नीचाहै उस सबको मुझ से कहो ४ नारदजी बोलेकि जिस आनन्द रूप ब्रह्मसे सबजीवधारी उत्पन्न होतेहैं उसके आनन्दका भाग संकल्पकेद्वाराजीवरूप से प्रकट होताहै और वेदमन्त्ररूप शब्दसेभी वहतत्त्वोंकी उत्पत्ति जोकि प्रलयकी अग्नि में भस्महोगईथी वहऐसे उत्पन्न होतीहै जैसेतक्षक से काटाहुआ बटकावृक्ष काश्यपकेमन्त्रसे प्रकटहुआथा और रसरूपबिषय बासनासेभी उत्पत्ति होतीहै ५ शुक्र अर्थात् दृष्टिसे गुप्त प्रारब्ध और शोणित अर्थात् रागादिक इनदोनोंके मिलनेसे प्रथमलिंगशरीररूप

प्राण उत्पत्तिके करनेको कर्मकरताहै उसीप्रकारप्राणसे जन्मादिक
के द्वाराउस बिपरीत दशाओंसे संयुक्त बासना रूपी कर्मसे उत्पन्न
शरीरमें अपान उत्पन्न होताहै ६ फिरउस जन्ममें प्राप्त होनेवाले
प्रारब्ध और बासनासेभी उत्पन्न होताहै यहउदानकारूप अर्थात्
ब्रह्मकारूप आरोपित नामहै क्योंकि वह आनन्द स्वरूप कारण
रूपब्रह्म कार्य्य के मध्यमें आनन्दको व्याप्तकरके नियतहै ७ इच्छा
से अज्ञान उत्पन्न होताहै और इच्छाहीसे रजोगुण उत्पन्न होता
है प्रारब्ध और रागादिक समान व्यान से अर्थात् सम्बन्धवान्
विद्युत और श्रोत्र इन्द्रीसे उत्पन्न हुआहै ८ प्राण अपान अर्थात्
इच्छा और प्रीति युक्तता यहद्वन्द्वहै अर्थात् जोड़ा है जीवात्मा की
उपाधी प्राण अपानहै यहअवाक् और ऊपरको जातेहैं और व्यान
समान अर्थात् देखाहुआ और सुनाहुआ यहदोनों ऊर्ध्व गति से
रहित द्वन्द्व रूप कहेजातेहैं यहदोनों ब्रह्मकी प्राप्तीनहीं करातेहैं६
अग्नि अर्थात् परमात्माही सब देवता रूपहै यहवेदकी आज्ञाहै जो
ब्रह्मज्ञानीहै उसका परम ज्ञान उसी वृत्तिसे युक्त होकर उसीवेदसे
उत्पन्न होताहै १० जैसेकि धुआं और भस्म अग्नि रूपसे बाहरहैं
उसी प्रकार लयक्षेपके कारण रजोगुण तमोगुणभी चैतन्य रूपसे
बाहरहैं जिसअग्निमें हव्यडाला जाताहै उसीसे सबउत्पन्न होताहै
११ जीव ब्रह्मकी ऐक्यताकरनेवाला जो योगहै उसकेज्ञातालोगोंने
उसको जानाहै कि समान व्याननाम सबदेखा और सुनाहुआ बुद्धि
सत्त्वसेउत्पन्न होताहै प्राण औरअपान यह आज्य भागअर्थात् घृत
के भागहैं इनदोनोंको होमकरनेसे उनके मध्य में उदाननाम पर-
ब्रह्मप्रकाशमानहोताहै वही इसहोमेहुये सब दृश्यपदार्थों को भोज-
न करताहै १२ इसउदान के परम रूपको ब्रह्मज्ञानी लोगोंनेजाना
है अबजो द्वन्द्वसे पृथक्है उसको मुझसे श्रवणकरो १३ यहदिनरा-
त्रिअर्थात् विद्या अविद्या वा जाग्रत और स्वप्नावस्था अथवा उत्प-
त्ति और नाश द्वन्द्वहैं उनके मध्यमें कार्य्यकारण को अपने में लय
करनेवाला शुद्ध ब्रह्महै उस अधिकतर चेष्टादेनेवाले ब्रह्मका आनंद

रूप ब्रह्मज्ञानी लोगोंने जानाहै १४। १५ उनसे बढ़कर ब्रह्मसंकल्प के द्वारा समान व्यान अर्थात् कार्य्य कारणरूप होताहै उसीकारणसे यह कर्म्म विस्तृत किया जाताहै तात्पर्य्य यहहै कि संकल्प रोकना चाहिये फिर तीसरा रूप ब्रह्म समान अर्थात् अपलक्षणसे ऐसे निश्चयकियाजाताहै जैसे कि वृक्षकी डालीपर चन्द्रमाहोताहै व्यान समान सनातन ब्रह्म इन तीनोंका समुदाय त्रिशान्ती नाम अर्थ रखनेवाला है क्योंकि ब्रह्म शान्ती रूप है इस शुद्धब्रह्मके आनन्द रूपको ब्रह्मज्ञानियों ने जानाहै १६। १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पच्चीसवां अध्याय॥

इसरीतिसे सदुपदेशसे अद्वैतब्रह्मकोकहकर सिद्धकरनेकी उत्तमता वर्णन करनेको ब्राह्मणने कहा कि इसस्थानपर मैं एकचातुरहोत्र विधान नामइतिहासको कहताहूं जिसमें अपूर्वरीतिसे ब्रह्मका जतलानाहै १ उस सब ज्ञात और अज्ञातकी रीति अनुष्ठान बिधिके समान उपदेश किया जाताहै हे कल्याणिनि मेरे कहेहुये इस अपूर्व्व और गुप्तरहस्यको सुनो २ हे शुद्धभाव, करण, कर्म, कर्त्ता और मोक्षयहचारोंहोताहैंइन्हींसे यहसबजगत्व्याप्तहै घ्राणादिकइंद्रियों के जो हेतुहैं उनके सब साधनोंको संपूर्णतासेसुनो ३ घ्राण जिह्वा चक्षु त्वक् श्रोत्र मन बुद्धि यहसातों अविद्यासेउत्पन्नहैं अर्थात् जैसे रस्सीमें अविद्या सर्पकी समान कल्पितहै उसीप्रकार उसका दृश्य पदार्थ भी देखनेके समय प्रकट होनेवालाहै ४ गंध, रस, रूप, शब्द, स्पर्श, मानना, जानना यहसातों कर्म्मसे उत्पन्नहैं अर्थात् सब स्थूल कर्मजन्य फलहै ५ सूंघनेवाला खानेवाला द्रष्टा बक्ता सुननेवाला माननेवाला जाननेवाला यह सातों कर्त्तापनेकेहेतुहैं अर्थात् कर्त्ताही भोक्तारूप खाने पोनेवाला आदिक होताहै ६ यह घ्राणादिक जो कि सूंघने आदिक बिषय रखनेवाले और उन्होंके साधकहैं वह अपने शुभाशुभ गन्धादिक गुणोंको भोगते हैं यह घ्राणादिक सातों

मोक्षके हेतुहैं अर्थात् सुनने सूंघने देखने बोलने आदिके अभिमान का त्यागकरनाही मोक्षहै और मैं गुणोंसे पृथक् और असंख्यहूं ७ पूर्ण बुद्धिमानी ब्रह्मज्ञानियोंकी खानेंआदिकी प्रशंसा नहींहै क्योंकि घ्राणादिक इन्द्रियोंका स्थान बिधिके अनुसार अबिद्या आदिक है वही देवतारूप घ्राणादिक सदैव हव्यको भोगतेहैं आत्मा नहीं भोगताहै ८ अज्ञानीलोग रूप रस आदिक भोजनकी बस्तुको भोजन करता अर्थात् भोक्तापनेका अभिमान करता भोगमें ममता करताहै केवल अपनेही निमित्त अन्नको पकाताहुआ ममतासे युक्त होताहै और फिर नाशको पाताहै ९ जो बस्तु खाने के योग्य नहीं है वह और मद्यपानादिक उसको नाशकरतेहैं वह अकेला भोजन करताहुआ अन्नको नाश करताहै और अन्न उसको मारताहै तब वह अन्नको मारकर फिर आप मारा जाताहै १० जो ब्रह्मज्ञानी इस सब प्रपंचरूप अन्नको अपनेमें लय करता ईश्वर होता फिर उसको उत्पन्न करताहै उस भोजनसे कुछ अल्प पापभी उत्पन्न नहीं होता ११ अब अन्न शब्दके अर्थको वर्णन करतेहैं जो मनसे जानाजाताहै जो बाणीसे कहाजाताहै जो कानसे सुनाजाताहै जो नेत्रसे देखनेमें आताहै १२ जो त्वचासे स्पर्श होताहै जो घ्राणसे सूंघा जाताहै यह सब हवनके योग्य पदार्थ हैं जब कि मन समेत छओं इन्द्रियोंको स्वाधीन करताहै १३ होमका अधिष्ठान मेरा कारण ब्रह्मरूप गुणवान् अग्नि जीवात्माकेभीतरक्रीड़ाकरताहै १४ मेरा योगरूप वह यज्ञ जारीहुआ जिसमें ज्ञानही गुणहै और उस गुणसे उस ज्ञान यज्ञकी प्रकटताहै प्राणस्तोत्रहै अपानशस्त्रहै और सब त्यागही दक्षिणाहै १५ अहंकार मनबुद्धि यह तीनों ब्रह्मरूप होता अध्वर्य्य और उद्गाताहैं उपदेश करनेवालेका जो सत्यबचन है वह शस्त्रहै और कैवल्यमोक्ष उसकी दक्षिणाहै १६ पूर्वसमय में वेदअथवाआत्मारूप नारायणको जाननेवाले पुरुषोंने नारायणकी प्राप्तीके अर्थ जो इन्द्रियोंको आधीन किया वह उस यज्ञमें ऋचाओं को वर्णनकरतेहैं १७ वहां आत्मलाभसे प्रसन्न ज्ञानी सामवेदकी

ऋचाओं को गाते हैं उन ऋचाओंमें उपमा कहीहैं हेभीरुस्त्री उस सबके आत्माऔर देवता नारायणको जानो १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

नारायण स्वरूप बर्णन करनेके अर्थ ब्राह्मणने कहा कि जो हृदयमें शयन करनेवालाहै वही अन्तर्यामी प्रधान स्वामीहै दूसरा नहीं है मैं उसकी कृपासे बचन कहताहूं औरजैसे कि निचाईसे जल छोड़ाजाता है इसीप्रकार उसका प्रेरणाकिया हुआ मैं उस प्रकार कर्मकर्त्ताहोताहूं जैसे किउससेआज्ञप्तहुआहूं १ एकहीगुरूहै उससे अन्य दूसरा नहींहै जो कि हृदयमें शयन करनेवाला है उसीकी कृपासे मैं कहताहूं कि बान्धव रखनेवाले और बान्धवरूप ईश्वर से आज्ञापानेवाले सातऋषि स्वर्गमें प्रकाशमान हैं २ एकही श्रोता है उसका दूसरा नहींहै जो कि हृदयमें शयन करनेवाला है मैं उस की कृपासे कहता हूं इन्द्रने उस गुरू के पास निवास करके सब लोकोंमें अमर पदवीको पाया ३ वही अकेला द्वेष्टाहै अर्थात् रक्षक है उससे दूसरा नहीं जोकि हृदयमें शयन करनेवालाहै मैं उसकी कृपासे कहताहूं उस गुरूसे उपदेश पानेवाले सर्पों ने संसार में बिरुद्धताकोपाया ४ मार्ग दिखानेवाले एकगुरूकेहोनेपर शिष्योंकी बुद्धिका जो बिपर्य्ययहै उसमें मैं इसप्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें ब्रह्माजीके पासदेवता ऋषि और सर्पोंकी शिक्षा पानाहै ५ समीप बैठेहुये देवताऋषि नाग और असुरों ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे ब्रह्मा आप हमारा कल्याण बर्णन कीजिये ६ भगवान् ब्रह्माजीने ओम् इस एक अक्षर ब्रह्मको ही उन प्रश्नकर्त्ताओं का कल्याणकारी कहा उन्होंने उस को सुनकर बहुत मार्गों को प्राप्तकिया ७ अपने उपदेशके निमित्त अर्थको बिचारनेवाले उन सर्पोंका चित्त प्रथमही काटनेमें प्रवृत्तहुआ अर्थात् ओम्शब्दकेकहने में मुखके खोलने और बन्द करनेको देखकर इसी स्वभावको प्राप्त

किया ८ और ओष्ठोंकी चेष्टापर दृष्टिकरनेवाले असुरोंका चित्तदंभ, में प्रवृत्त हुआ जोकि उनके स्वभाव से उत्पन्नहै देवताओंनेदानको निश्चय किया महर्षियोंने दम अर्थात् इंद्रियोंकी निग्रहको स्वीकार किया ६ उनसबदेवता ऋषि दानव और सर्पोंने एक मार्गदिखानेवाले को पाकर एकही शब्द के श्रवण करने वालोंने उसएक शब्दको बहुतप्रकारका निश्चयकिया १० इसीहेतुसेआपही अपना गुरूहैइस- कावर्णनकरतेहैं यहगुरूकेकहे हुयेको सुनताहै और यथातथ्यवाद करताहैइसकेपीछे वह पृच्छकअपने शिष्योंको उपदेश करताहैउस- केसिवाय दूसराकोई गुरूनहीं वर्त्तमानहै ११ इसके पीछे उसकी आज्ञासे कर्मजारी होताहै बुद्धिमान् श्रोता विरुद्ध कर्त्ता और गुरू सब हृदयसे प्रकटहैं १२ इस संसारमें पापकर्मकर्त्ता पापचारीहोता है १३ जब इन्द्रियोंके सुखमें प्रवृत्त होताहै तब इच्छापूर्व्वक कांम चारी होताहै जो इन्द्रियोंके जीतनेमें प्रवृत्तहै वह सदैव ब्रह्मचारी है १४ व्रत और कर्मोंसे रहित केवल ब्रह्ममें नियत और लोकमें ब्रह्मरूप घूमता यह पुरुष ब्रह्मचारी होताहै १५ उसकी समिध अर्थात् हवनकी लकड़ीब्रह्महीहै अग्निभी ब्रह्महै जलभी ब्रह्मसे प्रकट है और गुरूभी ब्रह्महै क्योंकि वह ब्रह्ममें समाधि करनेवालाहै १६ ज्ञानियोंने इस ऐसे सूक्ष्म ज्ञानको ब्रह्मचर्य्यजानाहै तत्त्वदर्शीगुरूसे आज्ञापाये हुये महात्माओंने उसको जानकर प्राप्तकियाहै १७

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

जबकि आत्मापाप कर्मका अभ्यासी है फिर ब्रह्मचर्य्य से क्या लाभहै इसशंकाको करके आत्माके असंग सिद्ध करनेको बनअध्याय का प्रारम्भ करतेहैं ब्राह्मणने कहा कि जिस संसार मार्गमें संक- ल्पहीडांस,मच्छरहैं सुखदुःख यहदोनों शरदी और धूपहैं अपराध और मूल अन्धकारहै लोभ और रोग सर्प बिच्छूआदिक जीवहैं १ जो अधिकतर बंधनमें डालनेवाला अकेलेसे उल्लंघन करनेकेयोग्य

इच्छा और क्रोधसे रुकनेवाला दुर्गम्य संसारमार्ग है उसको व्यतीत करके मैंने महाबन अर्थात् सगुणब्रह्ममें प्रवेश कियाहै २ ब्राह्मणी बोली हे महाज्ञानी वह बन कहां है उसमें कौनसे वृक्ष नदी और पर्व्वत हैं और कौनसे मार्गमें है ३ ब्राह्मणने कहा उस ब्रह्मसे पृथक् कोई दूसरा न प्रकाशहै न सुख है अर्थात् सत्ता और सुख सब सृष्टिभरमें ब्रह्महीहै जो कदाचित्कहो कि आकाशादिक इससे जुदेनहींहैं यह भी नहीं होसक्ता क्योंकि ब्रह्म और जगत्के समान मृत्तिका और घटनहींहै किन्तु सीपमें चांदीकेसमानभ्रान्तीहै इसके सिवाय कुछ दुःख भी नहीं है ४ न उससे कोई लघुहै न वृद्धतर है न उससे सूक्ष्मतरहै और न उसके समान कोई दूसरा सुखहै ५ ब्राह्मण उसमें प्रवेशकरके न शोचतेहैं न प्रसन्नहोते हैं न किसीसे भयकरते न उनसे कोई भयकरताहै ६ उसबनमें रात्रिरूप सात बड़े वृक्ष महत्तत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्राहैं उनके कारण प्रकट होनेवाले यज्ञादिक सातफलहैं उनके उत्पत्तिकेहेतुरूपसातअतिथि यज्ञ क्रियादिकहैं उसके उत्पत्तिके हेतु सात आश्रमकर्त्ता कर्मादिक हैं उसके उत्पत्ति स्थान रागादिक सात समाधि हैं उन्होंका मूल दीक्षाहै यह सातों बन रूप हैं ७ उस वनमें मन वृक्ष बीजरंगदार द्रव्य शब्दादिक पांचों विषय फूल और उनसे उत्पन्न प्रीति आदिक फलोंको उत्पन्न करते इस वन को व्याप्त करके नियत हैं ८ वहां नेत्रादिक वृक्ष श्वेत पीतादिक रंगोंसे शोभित सुख दुःखादि के विभागसे दो रंगके फूल और फलोंको उत्पन्नकरते उस वनको व्याप्त करके नियत हैं ९ और यज्ञादिक वृक्ष सुगन्धित रंगदार स्वर्गादिकफूल फलोंको उत्पन्न करते उसवनको व्याप्तकरके नियत हैं १० और ध्यानादिक सुगन्धित वृक्षकेवल सुखरूप फूल फलों को उत्पन्नकरते उसवनको व्याप्त करके नियतहैं ११ मन बुद्धिरूपी दो बड़े वृक्ष उन बहुतसे फूल फलोंको जिनका स्वरूप प्रकट नहीं और ज्ञानियों के मनोरथमात्रहैं पैदाकरते उसवनको व्याप्तकरके नियतहैं १२ इस महावन में एक आत्माही अग्निहै मन और बुद्धि

स्त्रक, स्त्रव, नाममात्र के स्थानापन्नहैं ब्रह्मज्ञानी होताहै पांचों इन्द्रियां समिधहैं उन्होंके होम करनेसे सात मोक्ष प्रकट होतीहैं मुक्तपुरुषोंकी वह दीक्षा सफल होतीहैं वह फिर शरीरको नहीं प्राप्त करातीहैं क्योंकि वह अनुपम और अद्भुतहैं परन्तु देवता आदिकही उनको प्राप्त करनेवालेहैं ईश्वर बादी कर्त्ता नहीं करसक्ते जैसे कि वेदमें लिखाहै कि उस महात्माके शुभकामोंको उसके मित्र और पापकर्मों को उसके शत्रुलोग प्राप्त करतेहैं वह पुण्य पापसे पृथक् होकर मोक्षको पाताहै१३ वहां वहां महर्षीअर्थात् इन्द्रियोंके अधिष्ठाता देवता अतिथि नाम पूजनको स्वीकार करतेहैं उन पूजित देवताओंके लयादिक होनेपर उनसे दूसरा अद्वितीय बन प्रकाशित होताहै १४ जो वृक्ष शान्तीनाम छायासे युक्त मोक्षनाम फल और तृप्तीनाम जल रखनेवाला शास्त्र गुरु उपदेशमें आश्रित है और सूर्य्य आत्माहै १५ जो सन्त उस वृक्षको प्राप्त करतेहैं फिर उनको किसीप्रकार का भय नहीं है क्योंकि ऊपर बाईं और तिरछी ओर उसका अन्त नहीं पायाजाता है अर्थात् सबको चिन्मात्र रूप देखता हुआ निर्भय होता है क्योंकि द्वैतभावही भयका कारण है १६ अब जीवन्मुक्त के ऐश्वर्य्य को कहते हैं वहां सात स्त्री अर्थात् मन बुद्धि और इन्द्रियों की वह वृत्तियां निवास करती हैं जो कि संकल्प सिद्ध हैं और ज्ञानी को अपना आज्ञावर्त्ती न करनेसे लज्जितहैं चैतन्य ज्योतिरूप में और सृष्टिके निमित्त बिषयसे उत्पन्न सब सुगन्धियोंको भोगतेहैं यहांपर सत्य और मिथ्याका जो अन्तर है वही ज्ञानी और अज्ञानीका अन्तरकहाहै १७ उस यज्ञकर्त्ता में वषट् आदिक इन्द्रियरूप सातऋषि लय होतेहैं और फिर उसीसे प्रकट होतेहैं १८ यश, तेज, ऐश्वर्य्य, बिजय, सिद्धी, कान्ति, ज्ञान यह सातों नक्षत्र क्षेत्रज्ञ नाम सूर्य्यकेसाथी और आज्ञावर्त्तीहैं १९ उस यतीमें पर्ब्बत नदी और ब्रह्मसेप्रकट जलको बहानेवाली नदियां सूक्ष्मरूप से नियतहैं २० जिसमें योग यज्ञका बिस्तारहै उस अत्यन्त अज्ञान हार्दाकाशमें नदियोंकासंगम

है उस मार्गसे वह योगी जोकि अपनी आत्मामें तृप्तहैं साक्षात् ब्रह्मा जीकेपास जातेहैं २१ वह लोकके जीतनेवाले सुन्दरब्रती तपसेपापों के भस्म करनेवाले ज्ञानी आत्माको आत्मामें प्रवेश करके ब्रह्मकी उपासना करतेहैं २२ ब्रह्मज्ञानी पुरुष बाह्य इन्द्रियोंके जीतनेकीही प्रशंसा करतेहैं क्योंकि उसमें आकांक्षी होकर भिन्नबुद्धि चिदात्माके समान ऐश्वर्य्यमान होताहै २३ ब्रह्मज्ञानियोंने इसप्रकारके इस पवित्रबनको जानाहै इसको शास्त्रसे जानकर ब्रह्मरूप क्षेत्रज्ञ के द्वारा शम दमादि कर्मोंको करतेहैं २४॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

ब्राह्मणने कहा मैं गन्धोंको नहीं सूंघता रसोंको नहीं चाटतारूप को नहीं देखता स्पर्शको नहीं करता नानाप्रकार के शब्दोंको नहीं सुनता और कुछ संकल्पभी नहीं करताहूं तात्पर्य्य यहहै कि जैसे किसान जब अपने खेतकी स्वता को छोड़ देताहै तब उसकी वृद्धि और हानिसे उसको प्रसन्नता और शोकनहीं होताहै उसीप्रकार जो एकान्तमें आत्माका दर्शनकरनेवालाहै उसका अनुराग बिषयों से नहीं होता १ बुद्धिआदिकका स्वभाव प्यारे बिषयोंको चाहताहै और अप्रियबिषयोंसे घृणा करताहै इच्छा और अनिच्छाके अप्रकट होनेके स्वभावहीसे प्राण और अपान जीवोंके शरीरोंमें प्रवेशकरके भोजनादिक करतेहैं मैं नहीं करताहूं २ उन वाह्यइच्छासे जो दू-सरी बासनारूप इन्द्रियांहैं और उनमेंसे जो अधिष्ठानमें बर्त्तमान भावहैं उनसेभी दूसरे भूतात्माको योगीलोग शरीर में देखैं उस भूतात्मामें नियत होताहुआ मैं किसीदशामेंभी इच्छा क्रोध जराव-स्था और मृत्यु के पास नहीं बैठताहूं मुझे सब इच्छाओंसे रहित अप्रिय में दोष न लगानेवालेकी लिप्तता बुद्धि आदिकके स्वभावसे ऐसे नहीं होतीहै जैसे कि कमलोंपर जलकणकी लिप्तता नहीं होतीहै ३।४ इस अबिनाशी ब्रह्मज्ञानीके सत्यसंकल्प होनेमें और कर्म

करनेकीदशामें प्रत्यक्ष संसारका भोगजाल जोकि इन्द्री मन और बुद्धिका स्वभावहै ऐसे उस ज्ञानीमें संयुक्त नहींहोताहै जैसे कि आकाश में सूर्य्यकी किरणों का जाल संयुक्त नहीं होताहै ५ आत्माके असंग होनेमें इस प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें अध्वर्य्य ब्राह्मण और संन्यासी का प्रश्नोत्तरहै हे यशस्विनी उसको सुनो ६ यज्ञकर्ममें प्रोक्षण कियेहुये पशुको देखकर निन्दा करते बैठे हुये संन्यासीने उस अध्वर्य्यसे यह बचन कहा कि यह हत्याहै ७ अध्वर्य्यने उसको उत्तर दिया कि इस बकरेका नाश नहीं होता है यह जीव कल्याण युक्त होगा क्योंकि यह श्रुति ऐसीहीहै अर्थात् श्रुतिमें लिखाहै कि जो पशु बिधिके अनुसार यज्ञमें देवताओं की भेंट कियाजाताहै वह स्वर्गको जाताहै ८ इसके शरीरमें जो पृथ्वी का भागहै वह पृथ्वीमें मिलजायगा जो जलका भागहै वह जलमें मिलेगा ६ इसकी चक्षुरिन्द्री सूर्य्यमें श्रोत्रइन्द्री दिशामें और प्राण आकाशमें लय होकर मुझ शास्त्ररीतिके कर्मकर्त्ताको कोईप्रकारका दोष नहींहै १० संन्यासीबोला जो प्राणके पृथक् होनेमें बकरेका कल्याण देखताहै तब यज्ञ बकरेहीके निमित्त जारीहै आपका कौन प्रयोजनहै ११ इस पशुकेही भाई माता पिता और मित्र तेरे कर्म को स्वीकार करेंगे मुख्यकर इस नाथवानको उनसे कहकर सलाह करो १२ कदाचित् वह इसप्रकार स्वीकारकरें आप उनके देखने को योग्यहो उन्होंके बिचारको सुनकर बिचार करना संभवहै १३ तुमने इस बकरेके चक्षुरादिक प्राणभी उनके उत्पत्तिस्थान सूर्य्यादिकोंमें प्रविष्टकिये तो अब केवल एक निश्चेष्ट शरीरही शेष रह गया १४ काष्ठादिकके समान जड़रूप शरीरसे हिंसा प्राप्तकरनेके इच्छावान् मनुष्योंका इंधन पशु नामहै १५ सब धर्मोंमें अहिंसा श्रेष्ठहै यह वृद्धोंकी आज्ञाहै जो हिंसासे रहित कर्म होय उसको करना योग्यहै यह हम जानतेहैं १६ जो कि यह हिंसा जाननेके योग्यहै इसीहेतुसे आपको कहताहूं कि करनेके योग्यकर्ममें दोष लगाना संभवहै १७ सब जीवोंकी हिंसा न करना सदैव हमको

स्वीकृतहै जिसका कि फल प्रत्यक्षहै उसका अभ्यास करतेहैं और जिसका फल अदृष्टहै उस कर्मको नहींकरते १८ अध्वर्य्य बोला कि आप पृथ्वीके गन्ध गुणको भोगतेहो जल रूप रसको पानकरतेहो प्रकाशमान शरीरीके रूपको देखतेहो वायुसे उत्पन्न गुणको स्पर्श करतेहो १६ आकाशजन्य शब्दोंको सुनतेहो चित्तसे बिचारतेहो यह सब प्राणोंकी प्रत्यक्षता है यहभी मानतेहो २० आप हिंसाके त्यागनेवाले हो परन्तु हिंसाही में कर्म कररहेहो क्योंकि बिना हिंसाके चेष्टा नहींहै हे ब्राह्मण तुम हिंसा को कैसे मानतेहो २१ संन्यासीने कहा कि आत्मा का यह प्रत्यक्ष अक्षर और क्षरनाम दोभेदोंकाहै उसमें अक्षर चिदात्मा सत्रूपहै और क्षरतीनोंकालमें भी मिथ्यारूप कहाजाताहै २२ जो गुणनाम मायाके साथ नियत प्राण अपान और मन सत्भाव रूपमें अर्थात् भ्रान्तीसे युक्त सत् ही व्यवहाररूपहै जो इन प्राणादिकोंसे छुटे सुख दुःखादिक योगों से पृथक् अनिच्छावान् २३ सब जीवधारियोंमें समदर्शी ममतासे रहित मनका जीतनेवाला होकर चारोंओरसे मुक्तहै उसको भय कहींभी वर्त्तमान नहींहै २४ अध्वर्य्य बोला कि हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ इसलोक में सत्पुरुषोंके साथ निवास करना उचितहै आपके सिद्धान्तको सुनकर मेरी बुद्धि प्रकाश करतीहै २५ हे भगवान् मैं आपकी बुद्धिसे संयुक्त होकर कहताहूं हे ब्राह्मण मुझ वेदमन्त्रके अनुसार व्रत करनेवालेका अपराध नहींहै २६ ब्राह्मण बोला कि इसके पीछे वह संन्यासी इस वेदयुक्तीसे मौन होगया और मोहसे रहित अध्वर्य्यभी अपनेबड़े यज्ञकर्म में प्रवृत्तहुआ २७ इसप्रकार ब्रह्मज्ञानियोंने इसरीतिकी अत्यन्त सूक्ष्मताको जानाहै और अर्थ दर्शी क्षेत्रज्ञके द्वारा उसको जानकर शम दमादिक गुणों के करने वाले होतेहैं २८ ॥

इतिश्रीमहाभारते आश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय॥

इन्द्रियोंका जीतनाही बड़ो शूरताहै उसकेप्रकटकरनेको ब्राह्मणने कहा कि इसस्थानपर इसप्राचीन इतिहास को कहताहूं हे भावनी जिसमें राजासहस्त्राबाहु और समुद्रका संबादहै १ सहस्त्र भुजाधारी कार्त्तबीर्य्यार्जुन नाम एक राजाहुआ जिसने धनुष से चतुस्समुद्रान्त पृथ्वी को विजयकरलिया था २ किसीसमय समुद्रके समीप घूमते उस बलसे अहंकारी राजाने सैकड़ों बाणों से समुद्रकोढकदियातब हाथजोड़ नमस्कार करके समुद्रने उससे कहा कि हेबीर अब बाणों को मतछोड़ो जो तेरा अभीष्ट होय उसको मैं करूं ३।४ हे राजाओं में श्रेष्ठ तेरे छोड़े हुये बड़े बाणोंसे मुझमें निवास करनेवाले जीव मरतेहैं हे समर्थ उननिरपराधियों को निर्भयकरो ५ कार्त्तबीर्य्यार्जुन ने कहा जो किसी स्थानपर कोई धनुषधारी युद्धमें मेरेसमान बर्त्त-मान होय तो उसको मुझसे बर्णनकर जोकि युद्ध में मेरे सन्मुख होय ६ समुद्रबोला हे राजा जो तुमने जमदग्नि महर्षी सुनेहैं उस का पुत्र तेरा आतिथ्य बिधिपूर्व्वक करनेको समर्थ और योग्य है ७ फिर बड़ा क्रोधयुक्त वह राजावहां से चलदिया उसने उनकेआश्रम को पाकर परशुरामजी को देखा ८ तब उसनेबान्धवोंसमेत परशु रामजी के अप्रियकर्मकिये अर्थात् महात्मा परशुरामजी के दुःखों को उत्पन्न किया ९ हे कमललोचने तब उस बड़ेतेजस्वीपरशुराम-जी कातेज शत्रुकी सेनाओं को भस्मकरता देदीप्यअग्निके समान हुआ १० और उन परशुरामजीने फरसा लेकर अकस्मात् उस सहस्त्र भुजाधारी राजाकी भुजाओं को ऐसाकाटा जैसे कि बहुतसी शाखारखनेवाले वृक्षको काटते हैं ११ उस मृतक और गिरेहुये को देखकर इकट्ठे होनेवाले सब बान्धव खड्ग और शक्तियोंको लेकर चारोंओरसे भार्गवजीकी ओर दौड़े १२ तब धनुषको लेकर रथपर सवार बाणोंकी बर्षा करते परशुरामजीने भी राजाओंकी सेनाओं को मारा १३ तदनन्तर परशुरामजी के भयसे पीड़ामान होकर

कुछेक क्षत्रीधर्म को त्यागपर्व्वतों के बड़े दुर्गम्य स्थानोंमें ऐसे छिप गये जैसे कि सिंहसे पीड़ामान मृगछिपजातेहैं १४ उन राजाओं और ब्राह्मणों के न देखनेसे प्रजालोगोंने शूद्रभावकोपाया १५ इस प्रकार की विपरीत कर्म तासे उन द्रविड़ भीर पुंड्रदेशी क्षत्रियों ने शवरोंके साथ शूद्रभावको पाया १६ फिर क्षत्रियाओं के विधवा होनेपर ब्राह्मणोंसे मिले झुले क्षत्रियों को परशुरामजीनेमारा १७ इक्कीसवें युद्धके अन्तहोने पर बड़ी मधुर आकाशवाणीने जिसको कि सबलोग सुनतेथे परशुरामजी से यह वचन कहा १८ हे राम हे राम तुमकर्म को त्याग करो हेतात इन क्षत्रीजातों को बारंबार प्राणों से पृथक् करके आप किसगुण को देखतेहो १९ हे महाभाग इस प्रकार से ऋचीक आदिक पितामहाओं ने उन महात्मा परशुरामजी से यह कहा कि हिंसा को त्यागो २० अपने पिता के मरणको न सहकर परशुरामजी ने उनऋषियों से कहा कि यहां आप मुझको निषेधकरने को योग्यनहीं हो २१ पितर बोले कि हे विजय करनेवालों में श्रेष्ठ तुमक्षत्रियों के मारनेको योग्य नहीं हो तुझसत्पुरुष ब्राह्मण से यहां राजाओं का मारना उचितनहींहै २२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय॥

पितृ बोलेहे ब्राह्मणोत्तम इसहिंसाके निषेधमें एक प्राचीन इतिहासको कहताहूं उसको सुनकर तुमको वैसाही करना उचितहै १ अलर्क नाम राजर्षि बड़ातपस्वी धर्मज्ञ सत्यबक्ता महाबुद्धिमान् और दृढ़ब्रतवालाहुआ २ उसने धनुषसे इस पृथ्वी को चारोंसमुद्र तक बिजयकर अत्यन्त कठिन कर्म करके मनको बिचारमेंनियतकिया ३ हे बुद्धिमान् बड़े २ शत्रु बिजय आदिक रूप धर्मों को करके वृक्षके मूलपर नियत उस राजाकी चिन्ता ब्रह्मप्राप्तीके अर्थहुई ४ अलर्क बोला कि मेरा अन्तःकरण संबंधीबल उत्पन्नहुआ निश्चय चित्तको जीतकर मेरी बिजयहै बाहरके शत्रुओंके सिवाय अपनी इन्द्री रूप

शत्रुओंसे घिराहुआ मैं उन बाणोंको चलाऊंगा ५ जिनको कि सब जीव चाहतेहैं यह कर्म चपलतासे है मैं तीक्ष्णनोकवाले बाणोंको चित्तपर छोड़ूंगा अर्थात् हठयोग और बायुनिरोधसेबिजयकरूंगा६ चित्तने कहा कि हे अलर्क यह बाण किसीदशामें भी मुझको बिजय नहीं करसक्ते किन्तु तेरेही मर्मस्थलोंको छेदेंगे तब तुम मर्मस्थलों से बिदीर्ण होकर मरजावोगे अर्थात् हठयोग में मृत्यु अवश्य होती है ७ अब तुमदूसरे बाणोंको बिचारोजिनसे कि तुम मुझकोमारोगे राजा ने उसके बचन को सुनकर और बड़े बिचार पूर्बक उससे फिर यह बचन कहा ८ कि अनेक गन्धियोंको सूंघकर उनमेंही लोभ करतेहैं इसहेतुसे मैं घ्राण इन्द्रीपर अपने तीक्ष्णबाणमारूंगा ६ तब घ्राणइन्द्री बोली हे अलर्क यह बाण किसीदशामें भी मुझको बिजयनहीं करसक्ते तेरेही मर्मस्थलों को तोड़ेंगे फिर मर्मोंसे घायल होकर तू मरजायगा १० अन्य बाणोंको बिचारो जिससे कि मुझको तुममारोगे राजाने उसको सुन बिचार पूर्बक फिर यह बचन कहा ११ आप उत्तम स्वादुयुक्त रसोंको खाकर उनमें लोभ होताहै इसहेतुसे मैं जिह्वाग्रवर्त्ती रसना इन्द्रीपर अपने तीक्ष्णबाण छोड़ूंगा १२ रसनाने कहा हे अलर्क यह बाण किसीप्रकारसे मुझको बिजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे और मर्मोंसे बिदीर्णहोकर तू मरजायगा १३ दूसरे बाणोंका बिचारकरो जिनसेकिमुझको मारोगे उसने उसको सुन और बिचार करके फिर बचन कहा १४ त्वक्इन्द्री अनेकप्रकारके स्पर्शोंको स्पर्शकरके उनमेंहीलोभ करती है इसहेतुसे नानाप्रकार के बाणों से अपनी त्वक् इन्द्री को छेदूंगा १५ त्वक्इन्द्री ने कहा हेअलर्क यहबाण किसीदशामें मुझको विजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे तब मर्मोंसे भिदाहोकर मरजायगा १६ दूसरे बाणोंको बिचारो जिनसे कि मुझको मारोगे उसने उसको भी सुनकर बिचार पूर्बक फिर बचन कहा १७ कि नानाप्रकार के शब्दोंको सुनकर उनमेंही लोभ करती है इसहेतुसे श्रोत्रइन्द्री पर अपने बाणोंको छोड़ूंगा १८ श्रोत्रइन्द्रीने कहाकियह

बाण किसीदशामें भी मुझको बिजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंक काटेंगे जिससे तू मरजायगा १९ इससे तुम दूसरे बाणोंको बिचारो जिनसे कि मुझको मारोगे फिर उसने उसको भी सुनकर बिचार करके बचनकहा कि यह चक्षुरिन्द्री २० बहुतसे रूपोंको देखकर उनमेंही लोभकरतीहै इसहेतु से अपने तीक्ष्णबाणोंसे मैं चक्षुरिन्द्रीको मारूंगा २१ चक्षुरिन्द्री बोली हेअलर्क यह बाणमुझको किसीप्रकारसे भी नहीं मारसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे उन कटेमर्मोंसे तू मरजायगा २२ अन्यबाणोंको बिचारो जिनसे कि तू मुझको मारसके उसने उसको सुन बिचारपूर्वक फिर बचन कहा २३ यह बहुतप्रकारकी निष्ठा बुद्धिसे निश्चय कीजातीहै इसहेतुसे मैं तीक्ष्ण बाणोंको बुद्धिपर छोडूंगा २४ बुद्धिनेकहा हे अलर्क यह बाण किसी दशामेंभी मुझको बिजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे जिनके बिदीर्ण होनेसे तू मरजायगा दूसरे बाणोंको बिचारो जिनसे कि तूमुझको मारसके २५ ब्राह्मणनेकहा इसके पीछे अलर्कने वहां दुःखसेकरनेके योग्य घोरबिचारमें नियतहोकर इनसातोंपर चलानेके लिये किसी बाणकोभी ऐसा नहीं पाया जोकि सामर्थ्यमें सबसे श्रेष्ठहो २६ उस सावधान चित्त समर्थने बारंबार बिचार किया उस द्विजन्माबुद्धिमानोंमें श्रेष्ठअलर्कने बहुत कालतकबिचारकर२७ राजयोग से परमकल्याणको नहीं पाया तब वह निश्चेष्ट अपने मनको स्वरूपमात्र निष्ठावाला करके योगमें नियतहुआ २८ पराक्रमीने एकही बाणसे शीघ्रता पूर्वक इन्द्रियोंकोमारा औरयोग से परब्रह्म में प्रवेशकरके परमसिद्धी को पाया २९ उस आश्चर्य्य युक्त राजऋषिने इस श्लोकको गाया कि बड़े कष्टका स्थानहै कि जिसप्रकार हमनेसब बाह्यकर्मकिया३० संसारी भोगोंकी इच्छासे युक्तमैंने प्रथमराज्यके पीछेसेजाना कि योगसेबढ़करकोई सुखनहीं है ३१ पितृ बोले हे परशुराम इसको तुमभी जानो और क्षत्रियोंको मतमारो घोर तपस्यामें नियत होजावो इसके पीछे कल्याणको पावोगे३२पितामहाओंके इसप्रकारकेबचनोंको सुनकर वह महाबाहु

परशुरामजी घोरतप में नियत हुये और महा दुष्प्राप्य सिद्धीको पाया ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांत्रिंशोऽध्याय: ३०॥

इकतीसवांअध्याय॥

अब हृदय बन्धन नाम तीन गुण जोकि मोक्षाभिलाषीपुरुषोंको त्याग करनेके योग्य हैं उनको प्रकट करनेके लिये ब्राह्मण ने कहा कि इसलोक में तीन बड़ेशत्रुहैं वह गुणरूप वृत्तिभेद से नौ प्रकार के कहेहैं--प्रहर्ष, अर्थात् आगे प्राप्त होनेवाले प्रिय में सुखप्रीति, अर्थात्प्राप्तहुये प्रियकासुख आनन्द, अर्थात् प्रियके भोगकासुख यह तीनों सात्त्विक गुणहैं १ लोभ, क्रोध, शत्रुता अथवा ईर्षा, यह तीनों राजसी गुण कहेजाते हैं परिश्रम अथवा शोक, आलस्य, मोह, यह तीनों तामसीगुणहैं २ धैर्य्यमान, निरालस्य, शान्तचित्त, इन्द्रियोंका जीतना, मनुष्यको उचितहै कि शमादिकनाम बाणोंकेसमूहों से इन सबको काटकर दूसरोंके बिजयकरनेमें उत्साहकरताहै ३ पूर्वकल्पके ज्ञातालोग इसस्थानपर उनश्लोकों को कहतेहैं जोकि पर्व्वसमय में शान्तरूप होनेवाले राजा अम्बरीषने गायेहैं ४ रागादिक दोषोंके प्रकटहोने और शम दमादिगुणों के बिदितहोजानेपर बड़ेकीर्त्ति मान अम्बरीषने स्वाराज्यनाम परमानन्द को प्राप्तकिया अपने दोषोंको आधीनकर गुणोंका अभ्यासकरके बड़ीसिद्धीको पाया और इनश्लोकोंको कहा५।६ बहुतसे दोष बिजयकिये सब शत्रुओंको मारापरन्तु जो एक बड़ादोष मारनेके योग्यथा वह मैंने नहीं मारा ७ जो यह कर्ममेंप्रवृत्त जीवात्मा निर्लोभताको नहीं प्राप्तकरताहै और लोभसे पीड़ित होकर इसलोक में दौड़ता हुआ बुरेकर्मोंको नहीं जानता है ८ जिसहेतुसे इसलोकमें प्रवृत्त मनुष्य न करनेके योग्य कर्मको भी करताहै तीक्ष्णखड्गोंसे मारडालनेवाले उस लोभको मारो ९ लोभसेही इच्छा उत्पन्न होतीहै उससे शोच होताहै वह इच्छावान् बहुतसे राजसीगुणोंकोपाताहै उनके मिलनेपर बहुत तामसीगुणोंको

प्राप्तकरताहै १० उनगुणोंसे संयुक्त शरीररूप बन्धन रखनेवाला वह मनुष्य बारंबार जन्म लेताहै और कर्मकरता है फिर मृत्युके समयपर जीवात्मासे पृथक् गिरेहुये शरीरवाला वह मनुष्यजन्मकी आदिसे मृत्युको प्राप्तकरताहै ११ इसहेतुसे इसलोभको अच्छीरीति से बिचारकर धैर्य्यसे आत्मामें रोककर स्वाराज्यनाम परमानन्द को चाहै इसलोकमें यही राज्य है दूसरा राज्य नहीं है आत्माही ठीक२ राजा जाना गयाहै१२अकेले लोभको मारनेवालेकीर्त्तिमान् राजाअम्बरीषनेब्रह्मानन्दकोप्रत्यक्षकरके इनश्लोकोंकोगायाहै १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्ववमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुएकत्रिंशोऽध्यायः३१॥

बत्तीसवां अध्याय॥

ब्राह्मणने कहा हे भावनी मारनेके योग्य लोभके बिषयमें इस प्राचीन इतिहासको भी कहतेहैं जिसमें राजाजनक और ब्राह्मणका सम्बादहै १ राजाजनकने किसी अपराधी ब्राह्मणको उसकेअपराध की पवित्रताके निमित्त आज्ञादी कि मेरेदेशमें निवास न करनाचा-हिये २ इसरीतिसे कहेहुये ब्राह्मणने उस श्रेष्ठराजाको उत्तरदिया कि हे राजाबिषयरूपी देशवाशब्दादिक ममता और बन्धनकेस्थान को वहांतक बर्णनकरो जहांतक तेरीआज्ञाके आधीनहै ३ हेसमर्थ सो मैं दूसरेराजाके देशादिक बिषयमें निवासी होना चाहताहूं हे राजा शास्त्रके अनुसार तेरीआज्ञाका प्रतिपालन करना चाहताहूं४ तब यशस्वी ब्राह्मण से इसरीतिपर कहेहुये राजाने बारंबार उष्ण श्वास लेकर कुछ उत्तर नहीं दिया उसशोचते बैठेहुये महातपस्वी राजाको अकस्मात् ऐसे मूर्च्छा आगई जैसेकि सूर्य्यमें राहु आजा-ताहै५।६ फिर मूर्च्छाके दूर होजाने पर राजाने एकमुहूर्त्त मेंही उस ब्राह्मणको बिश्वास करके यह बचन कहा ७ कि मैं बाप दादोंके राज्यमें देशके आज्ञावर्त्ती होनेपरभी संपूर्ण पृथ्वीको खोजताबिषय-रूपीबन्धनमें करनेवाले ममता के स्थानको नहीं पाताहूं८ जबमैंने पृथ्वीके बिषयमें बिषयकोनहीं पाया तब मिथिलापुरीमें खोजा जब

उसमेंभी बिषयको नहीं पाया तब मैंने शरीरके सुखादिक रूपप्रजा में बिचारसे खोजा ६ जब मैंने उसमेंभी बिषयको नहीं पाया तब मुझको मूर्च्छा प्राप्तहुई फिर मेरी मूर्च्छाके अन्तहोनेमें बुद्धिउत्पन्न हुई १० तबमैं बिषयको नहीं मानताहूं अर्थात् जैसेकि रक्तपीतादिक उपाधिमें बर्त्तमान स्फटिक वास्तवमें रंगसे रहित है इसीप्रकार आत्मा बिषयोंसे संबन्ध नहीं रखता अथवा सब बिषय मेराहै यह चिदाभास समेत अहंकारभी मेरा स्वरूप नहींहै अथवा सब पृथ्वी मेरा स्वरूपहै क्योंकि मुझ आत्मासे जुदा कुछ नहींहै ११ और जिसप्रकार मेरी है उसीप्रकार दूसरेकोहै हे ब्राह्मण श्रेष्ठ मैं इसको मानताहूं जबतक आपकी प्रसन्नता होय तब तक निवास करो और भोग करो १२ ब्राह्मणने कहा कि बाप दादोंके राज्यमें देशके आज्ञावर्त्ती होनेपर तुमने किसबुद्धी में नियत होकर ममता को त्यागकिया उसको कहिये १३ और किस बुद्धिमें आश्रित हो- कर सब बिषय तेराहीहै जिसहेतुसे बिषय को प्राप्त नहीं करताहै और बिषय तेराहै उसको भी कहो १४ जनक बोलेयहां धनाढ्यता और दरिद्रताआदिक सबदशा बिनाशवान् हैं इसीहेतुसे मैंने सब कर्मोंमें ममताको नहीं प्राप्तकिया जिससे यह बातहो कि यह मेरा है १५ यह किसकाहै और धनकिसकाहै अर्थात् किसीका नहींहै यह वेदका बचन है मैंने बुद्धीसे उसको नहीं पाया जिसमें कि बुद्धी से यह मेरी ममता होय १६ मैंने इस बुद्धि में आश्रित होकर ममताको त्यागाहैसुनो जिस बुद्धीकोजानकरसर्वत्र मेराबिषयहै१७ घ्राणेन्द्रीमें बर्त्तमान गन्धोंको अपने अर्थ नहीं चाहताहूं इसीहेतुसे मेरी बिजय कोहुई पृथ्वी सदैव मेरी आधीनता में नियत है अर्थात् में उनके आधीन नहीं हूं १८ मुखमें बर्त्तमान रसोंको भी अपने निमित्त नहीं चाहता इसीहेतुसे मुझ से बिजय कियाहुआ जल सदैव मेरी आधीनतामें नियतहै १९ मैं रूप और चक्षुकी ज्योति को अपने लिये नहीं चाहता हूं इसीहेतुसे मुझसे बिजय की हुई ज्योति सदैवमेरी आधीनतामें बर्त्तमानहै २० जो स्पर्श करनेवाली

त्वगिन्द्री जिसमें बर्त्तमानहैं मैं उनको अपने निमित्त नहीं चाहता इसहेतुसे मुझसे बिजयकीहुई वायु सदैव मेरे आधीन नियतहै २१ मैं श्रोत्रइन्द्री के बर्त्तमान शब्दादिकों को अपने लिये नहीं चाहताहूं इसहेतुसे मुझसे बिजय कियेहुये शब्द सदैव मेरे आधीन बर्त्तमानहैं २२ मैं सदैव मनकेसंकल्पको अपने निमित्त नहींचाहता इसकारण बिजयकियाहुआ मन सदैव मेरे अधीन बर्त्तमानहै २३ देवता पितृ भूत और अतिथियों के अर्थ चाहताहूंऔर सबकर्मों के प्रारंभ इसी निमित्त होतेहैं २४ इसके अनन्तर ब्राह्मणने हँसकर राजाजनक से कहा यहां अब तुम अपनी परीक्षाके लिये आये हुये मुझ धर्मको जानो २५ तुम्हीं एकअकेले इस चक्र अर्थात् ममतासे रहित ज्ञानरूप प्रवृत्तिके जारी करनेवाले हो जो कि ब्रह्ममें लय होनेका कारण न रखनेवाला सीमाके अन्तपर पहुंचनेवालाहै और जिसकी नेमि सतोगुणहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांद्वात्रिंशोऽध्यायः३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्मविद्या समाप्तहुईसाधनों समेत जीवन्मुक्त की दशा कहने को ब्राह्मणने कहा हे भीरु मैं लोक में इसरीतिसे नहीं विचरताहूं जैसे कि तुम अपनी वृत्तीसे निन्दाके निमित्त मुझको संगी कहतेहो मैं वेदपाठी हूं मुक्तहूं बनचारीहूं और व्रत करनेवाला गृहस्थीहूं १ हे सुन्दरमुखी मैं वैसा नहींहूं जैसा कि तुम मुझको देखती हो यहसब प्रत्यक्ष जो कुछ ब्रह्माण्डमेंहै मुझसेव्याप्तहै अर्थात् मैं सबकाआत्माहूं २ लोकमें जो स्थावर जंगमजीवहैं उनका लयकरनेवालामुझको ऐसा जानो जैसे कि लकड़ियोंका लय करनेवाला अग्नि होताहै ३ उसीप्रकार यह बुद्धी जानतीहै कि सब पृथ्वी और स्वर्गमें भी मेरा राज्यहै और बुद्धि ही मेराधनहै ४ ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणोंका ज्ञानरूप मार्ग एक है जिससे कि गृहस्थ बनवास ब्रह्मचर्य और संन्यास आश्रमोंमें लोग चलतेहैं ५ बहुत प्रकारके दृढ़ चिह्नोंसे एकहीबुद्धि

उपासना कीजातीहै बहुतप्रकारका चिह्नरखनेवाले जिन आश्रमों की बुद्धि विजयकीहुई बाह्य नद्री रूपहै वह अद्वैत ब्रह्मभावको ऐसे पातेहैं जैसे कि नदियां समुद्रको पातीहैं यह मार्ग बुद्धीसे मिलताहै शरीरसे नहीं प्राप्त होता ६। ७ सब कर्म आदि अन्त रखनेवालेहैं शरीर कर्म्मों से बंधा हुआहै ८ हे सुभगे इसीसे अनात्मलोक से उत्पन्न तेरा भय नहीं है मुझसे एकता प्राप्त करनेमें प्रवृत्त तुम मेरी आत्माको प्राप्त होगी ९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

ब्राह्मणी बोली कि यह बहुत थोड़ा किन्तु संक्षेप ज्ञान निर्बुद्धी और म्लानअन्तःकरणवालोंसे जानना संभव नहींहै मेराज्ञान नाशमानहुआ १ अब उस उपायको मुझसे कहो जिससे कि यह बुद्धि प्राप्त कीजातीहै और उसहेतुको भी मैं तुमसे जानना चाहतीहूं जिससे कि यह बुद्धि बर्त्तमान होतीहै २ ब्राह्मणने कहा हे ब्राह्मणी बुद्धिको अरणीकाष्ठ जानो और उसका गुरू ऊपरका अरणीकाष्ठहै तब मननआदिक बिचार और वेदांतका श्रवण दोनों इसको मथते हैं उससे ज्ञानाग्निकी उत्पत्ति होतीहै ३ ब्राह्मणी बोली यह जो जीवात्मानामहै वह असंग ब्रह्मका स्वरूपहै वह कहां अर्थात् नहीं होसक्ता क्योंकि जिससे उसका स्वरूप जानना संभव हो उसका स्वरूप कहां देखागया अर्थात् कहीं नहीं देखागया ४ ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि जो यह क्षेत्रज्ञ कहाहै वह चिह्न से रहित है क्योंकि निर्गुणहै इसके सगुणहोनेका कारण दिखाई नहीं पड़ताहै अर्थात् भ्रान्तिरूप है सच्चानहीं है मैं अब उस उपायको कहताहूं जिससे कि वह जानाजाय अथवा बिनाचित्तशुद्धी भ्रान्तीके दूर न होनेसे न जानाजाय ५ वेदान्त शास्त्रादिकोंका श्रवणरूप पूर्ण उपाय देखा जैसे कि पुष्पके भीतर नियतहुये भ्रमरोंको सुगन्ध दृष्टपड़ती है उसीप्रकार आत्माभी समाधि शास्त्रादिकोंसे दिखाई देताहै कर्म

से पवित्र जो बुद्धिहै वही परा उपायहै उस बुद्धीकेन होनेसे अज्ञानी पुरुष उस ज्ञानके चिह्नोंमें नियत आत्माको संगीमानतेहैं ६ यह कर्त्तव्यहै यह अकर्त्तव्यहै यह बात मोक्षके धनीमें उपदेश नहीं की जातीहै क्योंकि यह ब्रह्मज्ञान उस त्याग और स्वीकार से रहित सच्चिदानन्दसे सम्बंध रखनेवालाहै द्रष्टाऔर श्रोता मनुष्यकी बुद्धि जिसबातके धनीमें प्रकट होतीहै तात्पर्य्य यह है कि उस स्थानपर शुद्ध ब्रह्मके सिवाय कुछ बाकी नहीं रहता ७ जहांतक संभव होयँ उतनेहीअंशोंकोकल्पनाकरे जो कि अव्यक्त अर्थात् अविद्याआदिक माया शब्दादिक व्यक्तरूप और वृत्तिभेदसे सैकड़ों और हजारोंहैं तात्पर्य्य यह है कि वह सब मनहीके बिचार हैं सत्य नहीं हैं ८वह सब नानाप्रकारके अर्थोंसे युक्त और प्रत्यक्षताके कारण रखनेवालेहैं शम दमादि गुणोंके अभ्यास होनेपर अधिकारी पुरुष वह बस्तुहोगा जिससे कि कोई दूसरा वर्त्तमान न होय तात्पर्य्य यहहै कि ब्रह्म प्राप्तीउसप्रकारकीहै जैसे कि यादसे भूलीहुईकंठगतमालाका स्मरण आवे ६ श्रीभगवान् बोले कि इसके पीछे परमात्मा में जीवात्मा के लय होनेपर उस ब्राह्मणीकी ब्रह्माकार बुद्धि उत्पन्नहोगई क्षेत्रकेही ज्ञानसे क्षेत्रज्ञसेभी बड़ा अर्थात् ब्रह्म प्रकट होता है आशय यह है कि जीवात्माही उपाधिके लय होजाने से ब्रह्मरूप है १० अर्जुनने पूछा हे श्रीकृष्णजीवहब्राह्मणी कहांहै और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण कहांहै जिन्होंने कि यह सिद्धीप्राप्तकी हे अबिनाशी उनदोनोंका वृत्तान्त मुझसे कहिये ११ श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे चित्तकोही ब्राह्मण जानो और मेरी बुद्धिको ब्राह्मणी जानो और जिसको क्षेत्रज्ञ बर्णन कियाहै वह मैंही हूं १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्मरूप मन और बुद्धिसे ब्रह्मजानाजाताहै उन दोनोंका साक्षी चैतन्यात्माहै वहांपर प्रपंच और साक्षीदो हुये वह दोनों ब्रह्म हैं

अथवा उनदोनोंमें जो ब्रह्महै उसके पूछने को अर्जुनने प्रश्न किया कि जो सबसे परे ब्रह्म जाननेके योग्यहै उसको मुझसे कहने को आप योग्यहैं आपकी कृपासे मेरी बुद्धि उस प्रपंचसे रहित होकर ब्रह्ममें रमतीहै २ वासुदेवजी बोले इसस्थानपर उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें मोक्षसम्बन्धी शिष्य गुरूका सम्बाद है शास्त्रोंको स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी शिष्यने किसी बैठे हुये बड़े ब्रतनिष्ठ प्रशंसनीय आचार्य्य ब्राह्मण से पूछा कि हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले कल्याण क्याहै ३ मैं मोक्षाभिलाषी होकर भगवान्की शरणमें आयाहूं हे वेदपाठी शिरके बल आपसे प्रार्थना करताहूं किजो मैं पूछूं उस को आप मुझसे बर्णन कीजिये ४ हे अर्जुन तब उस गुरूने इसप्रकार से प्रार्थना करनेवाले शिष्य से कहा हे ब्राह्मण जिस२ में तुझको संशयहै वह सबतुझसे कहूंगा ५ हे कौरवों में श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान् अर्जुन गुरूसे इसप्रकार आज्ञप्त गुरूके प्यारे शिष्यने हाथ जोड़कर जो २ प्रश्न किये उनको तुम मुझसे सुनो ६ शिष्यनेकहा कि मैं कहांसे आया तुम कहांसे प्रकट हुये इन दोनों से परे जो अबिनाशी ब्रह्महै उसकोकहिये आकाशादिक तत्त्व और पंच भूतात्मक सृष्टिजोकि स्थावर और जंगम नाम से प्रसिद्धहै वहां से उत्पन्न हुये ७ वह दोनों प्रकारके जीवकिससे जीवते रहते हैं उनसे परे और उनके लयका स्थान कौन है सच्चे फलवाला कौनसा कर्महै कायिक बाचिक मानसिकनाम तप क्याहै और सत्पुरुषों से कहेहुये सत्त्वादिगुण कैसे स्वरूपवाले हैं ८ हे भगवन् कल्याण मार्ग कौनसेहैं सुखक्या है पाप क्याहै हे श्रेष्ठब्रत इन प्रश्नोंको यथार्थता पूर्व्वक ९ मूल समेत आप मुझसे कहनेको योग्यहैं हे ब्रह्मऋषि आप के सिवाय कोई इन प्रश्नोंके कहने को योग्य नहीं है १० हे धर्मज्ञों में श्रेष्ठ मुझको बड़ा शोच है इससे अवश्यकहो आप सबलोगों में मोक्षधर्म और अर्थमें पूर्ण कहेजाते हो ११ आपके सिवाय सब सन्देहोंका निवृत्त करनेवालाकोई बर्त्तमान नहींहै और हम संसार से भयभीत और मोक्षके अभिलाषी

हैं १२ बासुदेवजी बोले हे कौरवों के कुल में श्रेष्ठशत्रु बिजयी अर्ज्जुन उस बुद्धिमान् व्रत धारी गुरूने उस शरणागतको बुद्धि के अनुसार गुणवान् शान्तरूप अपने अभीष्ट कर्ममें प्रवृत्त छायारूप इन्द्रियों के जीतनेवाले यती ब्रह्मचारी के अर्थ उन सब प्रश्नोंको अच्छी रीति से बर्णन किया १३। १४ गुरू बोले कि यह सब तेरे प्रश्न वेद बिद्या में आश्रित होकर उत्तम ऋषियों से अभ्यास कियेहुये ब्रह्माजी के बर्णन किये हुयेहैं और जिसमें ब्रह्मज्ञान रूप अर्त्थ का विचार है १५ परब्रह्मसे सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान श्रेष्ठ है संन्यासनाम तप उत्तम है जो पुरुष अपने पूर्ण निश्चय के द्वारा उस पीड़ा आदिक से रहित ज्ञान तत्त्वको जानताहै औरजो संपरिज्ञात दशामें सब जीवोंमें नियत आत्माको जानताहै वह सब मनोरथोंको सिद्ध करताहै १६ जो ज्ञानी संपरिज्ञात दशामें जड़ चैतन्य को एकत्त्वभाव तं पदार्थ ज्ञानमें पृथकृताको देखताहै इसीप्रकार जीव ईश्वरकी एकताकोभी देखताहै और ब्यबहार में उन दोनोंके बहुतसे भेदोंको देखताहै वह दुःखसे छूटताहै १७ जो किसीप्रकार कीभी इच्छानहीं करताहै अर्थात् ममतासे रहितहै निरभिमानी अर्थात् अहंकारसे रहितहै वह इसीलोकमें नियत ब्रह्मभावके योग्य है अर्थात् जीवन मुक्तहै १८ माया और सत्वादिक गुणोंके मूलका जाननेवाला सब जीवोंके उत्पत्ति कारण से बिदित अहंकार ममता से रहित पुरुष निस्सन्देह मुक्त होताहै १९ जिसबड़े वृक्षका उत्पन्न होना अज्ञाननामबीजसेहै महत्तत्त्वरूप बुद्धिही उसकीशाखाहै महा अहंकार उसके पत्र समूहहैं इंद्री रूप अंकुर जिसके छिद्रोंमेंहैं २० आकाशादिक महाभूत उसकी निबिड़ता स्थूल सृष्टी रूप उसकी छोटी २ शाखाहैं संकल्प रूपी सदैव रहनेवाले पत्ते और फूलोंका रखनेवाला और सुखादिक कर्म्म फल रखनेवालाहै यह वृक्षसदैव उत्तमफलोंका उदयकरनेवालाहै २१ इसके बिशेष जीवात्मासेलेकर सब दृश्य पदार्थोंकाबीज सनातनब्रह्महै इसको मूलसमेत जानकर और ज्ञानरूपी उत्तम खड्गसे मायारूपी वृक्षकोकाटकर अबिना-

शताको प्राप्तकरके जन्म और मृत्युको त्यागकरताहै तात्पर्य यहहै कि ज्ञान खड्गकीओर दृष्टि करके सब तत्त्वादिक अज्ञानकी प्रकटतासे उत्पन्न हैं २२ जिसमें भूत वर्तमान और भविष्यत आदिक और धर्म अर्थ कामादिकका निश्चयहै और सिद्धोंके समूहोंसेजाना गया उस सनातन २३ और उत्तम ज्ञानके लय स्थानरूप ब्रह्मको अब तुझसे कहताहूं हे महाभागिनी इस लोकमें ज्ञानी पुरुष जिस बुद्धीसे मुक्तहोतेहैं २४ पूर्वसमयमें सबकर्मगतिरूपमार्गोंमें बारंबार चलकर अपने कर्मोंसे थकेहुये परस्पर ब्रह्मज्ञान के अभिलाषी इन सन्तानवाले भरद्वाज गौतम भार्गव बशिष्ठ कश्यप बिश्वामित्र और अत्रि इन सब ऋषियोंने इकट्ठे होकर २५ । २६ वृद्ध अंगिरा ऋषि को अग्रवर्त्तीकरके ब्रह्मलोकमें उसपाप रहित ब्रह्माजी को देखा २७ नम्रतायुक्त महर्षियोंने उस सुखपूर्वक बैठे हुये महात्माको दण्डवत् करके इस परम कल्याणको पूछा २८ कि कैसे शुभ कर्म करे कैसे पापसे निवृत्तहोय हमारे कल्याणमार्ग कौनसेहैं कौनसा सत्यकर्म्म है और कौनसा पापकर्महै २९ उत्तरायन दक्षिणायन दोनों कर्म्म मार्गों को कौन प्राप्त करताहै प्रलय मोक्ष और जीवोंका जन्म मरण किस रीतिसे होताहै ३० उत्तम मुनियों के ऐसे बचन सुनकर उन ब्रह्माजी ने जो उत्तर दिया उस सबको में शास्त्रके अनुसार तुझसे कहताहूं हे शिष्य श्रवणकरो ३१ ब्रह्माजी बोले कि तीनों कालमें जो रूपान्तर दशासे रहितहै उस ब्रह्मसे अव्यक्त भूतादिक आकाशादि, स्थावर, जरायुजादिक चर उत्पन्न हुये और कर्म्म से प्राणी जीवतेहैं अपने उत्पत्ति स्थान ब्रह्मको उल्लंघनकर अर्थात् धर्म्मसे च्युत होकर बिक्षेपदशामें अपने कर्मपर कर्मकर्त्ता होतेहैं हे सुन्दर ब्रतवाले ऋषियो इसको यथार्थही जानो ३२ वह निर्गुण ब्रह्म जब गुणसे युक्त होताहै तब निश्चयकरके पांच लक्षणवाला है ३३ ब्रह्म सत्यरूप तप सत्य रूप और प्रजापति अर्थात् जीवात्मा सत्यरूप है सत्य ब्रह्मसे पंचभूत उत्पन्नहुये यह जगत भी सत्यरूपहै ३४ इसी हेतु से सदैव योगमें नियत क्रोध दुःख से रहित नियमवान्

धर्मसेतु वेदपाठी ब्राह्मणभी सत्य प्रधान होतेहैं ३५ मैं परस्परीय ज्योतिसे धर्मपर नियत विद्यावान् धर्म मर्यादा जारी करनेवाले जगतके पिता उन सनातन ब्राह्मणोंको वर्णन करताहूं ३६ ज्ञानियों ने सदैव एक धर्मको चार चरण रखनेवाला कहाहै धर्म अर्थ काम मोक्षके देनेवाले विद्याको चारों वरण आश्रमोंके बिषयमें पृथक् २ बर्णन करताहूं ३७ हेऋषियो मैं कुशल मंगल उत्पन्न करनेवाले कल्याणरूप मार्गको तुमसे कहताहूं निश्चय करके वह पूर्वसमय में ब्रह्मज्ञानकेनिमित्त ज्ञानियोंसे प्राप्तकिया गयाहै ३८ हे भाग्यवान् बोलनेवाले ऋषियो अब यहां मुझसे उस मार्गको संपूर्णता समेत जानो और उसके द्वारा दुर्ज्ञेय सबसे परे बड़े लयस्थान ब्रह्मको जानो ३९ ब्रह्मचर्य्य नाम आश्रमको ब्रह्ममें लय होनेकी पहली रीति कही गृहस्थाश्रम दूसरा है उसके पीछे वाणप्रस्थ आश्रमहै ४० उससेपरे संन्यास आश्रमको परमपद जानना योग्य है अग्नि आकाश सूर्य्य वायु इन्द्र और प्रजापति यह तबतकही दृष्टिगोचर होतेहैं जबतक कि संन्यास के साथ ब्रह्मज्ञानको प्राप्त नहीं करताहै और फिर उनको नहीं देखताहै ४१ उसके उपायको वर्णन करताहूं प्रथमही उसको समझो बनमें रहनेवाले फलमूल और वायुके भोजन करनेवाले मुनि ४२ रूप तीनों द्विजका वाणप्रस्थ धर्म दिखाई देताहै और वह गृहस्थाश्रम सब वरणोंका धर्म रूप कहाजाताहै ४३ जो श्रद्धा अर्थात् आस्तिक्य बुद्धिहै वही धर्म को जतलाने वालीहै पंडितलोग उसीको धर्म कहतेहैं इस प्रकार देव यानमार्ग मिलने के उपाय तुमसे कहे जोकि सत्पुरुष पंडितों से अभ्यास किये हुयेहैं और वह पंडित कर्मोंके द्वारा धर्मके सेतुरूपहैं ४४ जो व्रत में प्रशंसनीय मनुष्य इन धर्मोंमेंसे एक धर्मको अभ्यास करताहै वह समयपर अर्थात् क्रमपूर्व्वक मनकी पवित्रतासे सदैव जीवधारियोंकी उत्पत्ति और नाशको जानताहै ४५ इसकारण युक्तिसे उन तत्त्वोंको पूरा २ वर्णन करताहूं जोकि सब बुद्धियों में नियत और भागी होकर वर्त्तमानहैं ४६ अव्यक्त, महत्तत्त्व, अ-

हंकार, पंचभूत, दशोइन्द्री, मन ४७ पंचतत्त्वोंके शब्दादिक बिषय यहचौबीस तत्त्वोंको उत्पत्ति और पुरुष समेत तत्त्वोंकी संख्याबर्णन करी ४८ जो मनुष्य सब तत्त्वोंकी उत्पत्ति और लयको जानता है वह पंडितसब तत्त्वोंमें मोहको नहीं प्राप्त होताहै ४६ जो पुरुषसब गुणतत्त्व और अखिल देवताओं को ठीक २ जानताहै वह पापसे रहित संसार बंधनसे छूटकर सर्वात्मारूप होनेसे सब निर्मललोकोंको भोगताहै ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्य संबादेपंचत्रिंशोऽध्याय: ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय॥

तत्त्वोंकी व्याख्या करनेको ब्रह्माजी बोले कि वह तीनोंगुणोंका समूह गुप्त अव्यक्तसबमें व्यापक अबिनाशी और निश्चलहै उसको शरीर रूपीपुर जानों उसके नौ द्वारहैं पांचोंइन्द्री मन बुद्धि प्राण और अहंकार और जिसमें पांचतत्त्वहैं १ बिषय भोगबासनासे जीवको चलायमान करनेवाली ग्यारहइन्द्री जिसमेंहैं और मनसेप्रकट होने वाले बिषय जिसमें नियतहैं और उसकी बुद्धिस्वामिनीहै वह शरीर रूपी पुरी ब्रह्मरूपहै जो ग्यारहवां मनहै वही सबका रूपहै २ उस मनमें तीननदियांहैं प्रथम कठिन नाम हिंसासे रहित धर्म रूप नदीदूसरी कृष्णा नाम हिन्साप्रधाननदी तीसरी शुक्लकृष्णानाम हिन्सासे युक्त प्रवृत्ति प्रधाननदी यह तीनों नदियां बारंबार वृद्धि पातीहैं त्रिगुणरूप संस्कार स्वरूप तीननाड़ियांहैं यह नदियां उनसे जारीहोतीहैं ३ अव्यक्तके अंगरूप सत्वरजतमहैं इन्हींका गुणकहते हैं वह सब परस्पर मिलेहैं अर्थात् स्त्री पुरुषके समान एक सृष्टिको उत्पन्न करतेहैं और बीजअंकुरके समान परस्पर जीवतेरहनेवाले हैं ४ परस्पर आश्रयस्यातरूप स्वामी सेवकके समान परस्परवर्त्तनेवाले और परस्पर एक एकमें मिलेहुयेहैं और पंचतत्त्वतीनों गुणोंके रूपहैं ५ सतोगुण तमोगुणका जीतनेवालाहै रजोगुण तमो-

गुणका जीतने वाला और सतोगुण रजोगुणका बिजय करने वाला होताहै तमोगुण सतोगुणका जीतनेवालाहै ६ जिसस्थान परतमोगुण दूरहोताहै वहां रजोगुण बर्त्तमान होताहै और जहांपर रजोगुण दूरहोताहै वहांसतोगुण बर्त्तमान होताहै ७ तमोगुणकोरात्रि रूपजाने जो पापकर्मोंमें प्रवृतहैं उन्होंके तीनोंगुण मोहनाम और धर्मनाम लक्षण रखने वालेहैं ८ सब जीवोंमें प्रवृत्त दृष्टआने वाले रजोगुणकी उत्पत्तिके चिह्नको स्वभाव रूप और विरोधीकरने वाला कहतेहैं ९ सब जीवोंमें जो प्रकाशश्रद्धा और धर्म ज्ञानादिकोंमें सावधानी है यहीसतोगुणका रूपहै औरधर्मज्ञानादिकोंमें सावधानी साधुओंकी स्वीकृत है १० इन गुणोंसे सृष्टिके गुणजो कहेहैं वह ब्योरे समेतहैं और सहेतुक वर्णन किये जातेहैं उनको मूल समेत जानों ११ पूर्णमोह, अज्ञान, त्यागकेयोग्य को न त्यागना कर्मोंका बिचार न करना शयन, अहंकार, भय, लोभ, शोक, अपने कर्म में दोषलगाना १२ भूलजाना, संशय,नास्तिकता,दुराचार योग्या, योग्य में बिवेक न होना सब इन्द्रियोंसे, अन्धापन होना बुरेगुण, हिन्सा, अपबित्रता, आदिकमेंरहना १३ कामकी अपूर्णतामेंपूर्णता मानना अज्ञान,को ज्ञान जानना,मित्रताकात्याग,धर्ममें, अप्रवृत्तिता अश्रद्धा, अज्ञानता, १४ कुटिलता, अचेतता,पापकर्म, बिस्मरणता, आलस्यादिक, देवताआदिकोंमें भक्तिका न होना अजितेन्द्री,तुच्छ कर्ममेंप्रीति, १५ यह सब गुण और चलन तामसीहैं इस लोकमें जो दूसरे भाव नियतहुयेहैं वह सब तामस गुण जहां तहां नियम से प्रत्यक्षमें नियत होतेहैं १६ सदैव देवता और ब्राह्मणोंको निन्दासे युक्त निन्दा बचन कहना त्यागकरनेके योग्य गुणोंकोनत्यागना मोह, क्रोध, अशान्ती, १७ जीवोंपर ईर्षा यह सब तामसी चलन कहे जाते हैं जो कि प्रारंभकर्म निरर्थकहैं और निष्फलदान हैं १८ जो निरर्थक भोजनहैं इसको तामसी चलन कहतेहैं कठोर बचनादिक अशान्ती ईर्षा अहंकार १९ अश्रद्धा यह भी तामसगुण कहे जातेहैं इस लोकमें जो कोई मनुष्य इस प्रकार के पाप कर्म

करनेवाले २० मर्यादासे रहित हैं वह सब तामसीहैं अब इनपाप करनेवालोंकी निश्चित योनियोंको बर्णन करताहूं अर्थात् नर्कमें जानेके निमित्त नीचे और तिरछेनर्कोंमें जानेवाले स्थावर, पशु, सवारी के पशु, कच्चेमांसभक्षी, सर्पादिक, कृमि, कीट, परग्ड, अंडजजीव, सब प्रकार के पशु २१।२२ उन्मत्त बधिरमूक और जो २ अन्य पाप योगीहैं अज्ञानमें डूबेदुराचारीअपनेकर्मोंका चिह्नरखने वाले २३ जिनके चित्तका प्रवाह अधोगतिके योग्यहै यह तामसी मनुष्य तमोगुणमें डूबेहुयेहैं २४ अब इसके पीछे इनकी रीतें प्रताप और पुण्यके उदयकोबर्णन करताहूंजैसे कि वहपवित्र कर्मीहोकर शुभ कर्मियोंके लोकोंको प्राप्तकरतेहैं २५ जो जीवस्थावर शरीर वृक्षादिक और तिरछे चलनेवाले पशुपक्षीआदिक योनियोंमें नियत हैं वह अग्नि होत्रादिकके निमित्त अपने धर्ममें प्रवृत्त शुभ चिन्तक ब्राह्मणों के हाथसे घायल होकर २६ । २७ सन्स्कार से ऊपरके लोकोंमेंजातेहैं फिर वहांसे क्षीणपुण्यहोकर च्युतहोके ब्राह्मणादिक बर्णोंको प्राप्त करके उपाय करनेवाले होकर स्वर्ग्ग में देवताओंकी सालोक्यताको प्राप्तकरतेहैं यहवेदकी श्रुतिहै २८ वह स्थावरजीव पशु पक्षी ऊपरलिखीहुई रीतियोंसे अपने कर्मोंमें सावधान होतेहैं वहइसलोक में न परावृत्ती नाम धर्मवाले मनुष्य होतेहैं २९ पाप योनिमें वर्त्तमान चांडाल और गूंगेमनुष्य और दूसरे बरणोंको भी क्रमपूर्वक प्राप्तकरतेहैं ३० शूद्रबरणको उल्लंघनकर वैश्यादिककी योनिप्राप्त होनेमें जो दूसरे तामसगुणहैं वह तामसीइन्द्रीमें प्रवेश करके वर्त्तमान होतेहैं ३१ स्त्री आदिक अभीष्टवस्तुओंमें जो स्नेहहै वह महामोहनाम कहाजाताहै सुखके चाहनेवाले ऋषि मुनि और देवता इसमें मोह को पाते हैं ३२ तम, मोह, महामोह, क्रोधनाम तामिश्र, मरणनाम अन्धतामिश्रहै परन्तु तामिश्र क्रोध कहाजाताहै अर्थात् तामिश्र और अन्धतामिश्र यह दोनों द्वेष और अभिनिवेष नाम कहेजाते हैं ३३ हे ब्राह्मणो यह सब बरणगुण योनितत्त्व से तमोगुणहीहै जो कि बुद्धिके अनुसार मैंने तुमसे कहा कौन इसको

अच्छी रीतिसे जानताहै और कौन इसको अच्छे प्रकारसे देखताहै जो पुरुष अतत्त्व में तत्त्वको देखता है वही तमो गुण का लक्षण है ३४ । ३५ तमके गुण बहुत प्रकारके बर्णन किये और वह उत्पादक और उत्पाद्य रूप तम भी ठीक कहा जो मनुष्य इन गुणोंको जानताहै वह सब तामसी गुणोंसे छूटजाताहै ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंबादेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे महाभाग ऋषियो जैसाकि रजो गुणहै उसको भी मैं यथार्थतासे कहताहूं तुम राजसी चलनको समझो १ सन्ताप, रूप, परिश्रम, सुख, दुख, शीत, उष्ण, ऐश्वर्य्य, बिग्रह, सन्धि, हेतुबाद, रति, क्षमा, २ बल, शूरता, मद, रोष, व्यायाम, कलह, ईर्षा, ईप्सा, पिशुनता, युद्ध, ममता, शरीरादिकका पालन ३ मरण और बन्धनका दुःख मोलबेच, काटो छेदो घायलकरो इस प्रकार दूसरेके मर्मस्थलोंको काटना ४ कठोर बचन, धिक्कार देकर बोलना, गालीदेना, पराये छिद्रका कहना, लोकचिन्ताकी चिन्ता, मत्सरता, परिपालन, मृषाबाद, मृषादान, बिकल्प, निन्दायुक्त दुर्बाद, प्रशंसा प्रताप, परिधर्षण अर्त्थात् दूसरेको विजयकरना५ । ६ परिचर्य्या अनुशुश्रूषा, सेवा, तृष्णा, व्यपाश्रय, अर्थात् ब्यवहारमें सावधानी नीति शास्त्र, प्रमाद, परिबाद, परिग्रह ७ लोकमें जो सन्स्कार मनुष्यस्त्री अन्यजीव द्रव्य, और रक्षकोंमें बर्त्तमानहोतेहैं ८ पश्चात्ताप, अबिश्वस्थता, ब्रत, नियम, आशीर्बादात्मककर्म, नानाप्रकारके कर्म, बापी, कूपादिकोंका बनवाना ९ स्वाहाकार, नमस्कार, स्वधाकार, बषट्कार, याजन, अध्यापन, यज्ञकरना कराना वेदका पढ़ना पढ़ाना १० दानदेना दानलेना प्रायश्चित्त, मंगलकर्म, यहमेराहै यह मेराहै। गुणसे उत्पन्न प्रीति ११ शत्रुता, माया अर्थात् छलनिकृति, अर्थात् फरेब, अहंकार, चोरी, हिन्सा, निन्दा, अपने इष्ट मित्रोंकी ब्याकुलतासे चित्तमें जलन जागरण, १२ पाखंड, गर्ब, प्रीति, भक्ति,

स्नेह, प्रमोद द्यूत जन वाद और जो स्त्री संबंधी, नातेदारीहैं १३ और जो कोई नृत्य गान और बाजोंकी संगतिहैं हे ब्राह्मणलोगो यह सब गुण राजसी कहेजाते हैं धर्म अर्थ काम त्रिवर्ग पृथ्वीपर प्रकट भूत भविष्य वर्त्तमानको उत्पन्न करनेवाले और सदैव उन में प्रीति करनेवाले हैं १४।१५ काम व्रत अर्थात् अध्याश मनुष्य सब इच्छाओंकीवृद्धि से प्रसन्न होतेहैं यह रजोगुणी मनुष्य स्वर्गसेनीचे पृथ्वीपर निवास करनेवाले हैं १६ वह बारम्बार जन्मलेनेवाले लोग इसलोक में आनन्द करतेहैं और इस जन्म और दूसरेजन्म की कुशलताको चाहते हैं १७ दान करतेहैं दान लेतेहैं तर्पणकरते नित्य नियम करते और हवन करते हैं १८ रजोगुणके अनेक प्रकारकेगुण तुमसेकहे और उस गुणकी रीतियांभी यथार्थ वर्णन करीं जो मनुष्य इन गुणोंको जानताहै वह सदैव सब राजसीगुणों से छूटजाताहै १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्बादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि इसकेपीछे अब में तीसरे उत्तम गुणको वर्णन करताहूं जोकि सब जीवोंका हितकारी निर्दोष और लोक में सत्पुरुषोंका धर्महै १ आनन्द, प्रीति, उद्रेक, अर्थात् प्रतापका उदय सब प्राणीमात्रोंसे हितकरना सुख उदारता, निर्भयता, सन्तोष, श्रद्धा, २ क्षमा, धैर्य, अहिन्सा, सबमें एकभावहोना सत्यता सत्य बोलना क्रोध न करना दूसरेको दोष न लगाना वाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता सावधानी पराक्रम ३ यह गुणसतोगुण कहलातेहैं जो ज्ञानचलन सेवा और प्रीति निरर्थकहैं उनको जानकर जो योग धर्मपर चलताहै वह आत्मामें अविनाशी पनेको पाताहै ४ ममता, अहंकार और आशासे रहित सबओर से समदर्शी और अनिच्छा वान्हो यह सत्पुरुषोंका सनातन धर्महै ५ विश्वास, लज्जा, क्षमा, त्याग, वाह्याभ्यन्तर, की पवित्रता निरालस्यता, दया, विमोहनहोना

जीवोंपर दया करना किसीकी निन्दा न करना ६ पुत्रादिके जन्मसे उत्पन्न सुख, सन्तोष, प्रसन्नमुख रहना, नम्रता, मधुरप्रिय भाषी मुक्तिके उपायमें पवित्रता,सुबुद्धिता,जीवनमुक्ती ७ उदासीन होना ब्रह्मचर्य्य,सर्बत्याग,ममता और इच्छा न होनाधर्ममें पूर्णता ८ और उसमोक्षमार्गमें दानयज्ञ वेदपाठ ब्रतदानलेनाधर्मऔर तपको निरर्थक न जानना ९ इस लोकमें सतोगुणमें आश्रितवेद और सगुण ब्रह्ममें नेष्ठामान जो कोई ब्राह्मण ऐसा चलनरखने वालेहैं वहीपंडित और साधुदर्शीहैं १० वह शोकरहित पंडित मनुष्य सबराजसी तामसीकर्म रूप वा पापोंको त्याग करके स्वर्गको प्राप्तहोकर फिर योगबलसे बहुत प्रकारके शरीरोंको उत्पन्न करतेहैं ११ जो ईशित्व अर्थात् सबपर शासन वशित्व, अर्थात् सबका अधिकारी और मनसे लघुत्व अर्थात् सूक्ष्मता उत्पन्न अथवा प्राप्तकरतेहैं वहस्वर्ग बासी देवताओं के समान हैं १२ यह ऊपरके लोकों में जानेवाले वैकारिक नाम देवता कहेजाते हैं भोगजन्य संस्कारके द्वारा फिर भोगकेलिये अपनी प्रकृतिको बिपर्य्ययकरनेवाले स्वर्गमें बर्त्तमान वह योगी १३ जो २ चाहतेहैं वहसब अपने आप प्राप्त होतेहैं और दूसरेके भी अभीष्टको देतेहैं हे ऋषियो यह सात्विकी चलन मैंने तुमसे कहा १४ मुख्य करके सात्विकीगुण वर्णन किये और गुणों का ठीक २ चलनभी कहा जो मनुष्य इन गुणोंको जानता है वह सदैव गुणोंको भोगताहै और गुणोंमें आशक्त नहीं होता १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेअष्टत्रिंशोऽध्यायः३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीबोले कि सबगुणपृथक् २ बर्णनकरने असंभवहैं क्योंकि रजोगुण सतोगुण तमोगुण यह तीनोंसंयुक्त दिखाईपड़तेहैं अर्थात् यह जो कहाजाताहै कि यह सतोगुणहै यह रजोगुणहै यहतमोगुण है यह बात उनकी प्रधानतासे है १ वह सब परस्पर प्रीतिकरतेहैं परस्पर अभीष्टप्राप्तकरनेवाले परस्पर आश्रित और परस्पर सहा-

यताकरनेवालेहैं २ जितना सतोगुणहै उतनाही रजोगुण वर्त्तमान होताहै अर्थात् अधिकता प्राप्त करनेवाला तमोगुणवृद्धिमान् सतोगुणको बिजयकरताहै इसहेतुसे निस्सन्देह उनकीबराबरीहोजाती है यहां जितना सतोगुण और तमोगुण है उतनाही रजोगुण कहा जाता है अर्थात् वह रजोगुण उन दोनोंको बिजय करके बराबरी प्राप्तकरताहै ३ वह इकट्ठे रहनेवाले तीनों गुण मिलकर साथही ब्यवहार करतेहैं साथ रहनेवाले यह सब हेतुसे और बिना हेतुसे बिरुद्ध कर्मकरतेहैं ४ अधिकता न रखनेवाले परस्पर सहायक सब गुणोंका वह रूप न्यूनाधिकतासेरहित अर्थात् समान कहाजाताहै ५ जिसमें तमोगुणअधिक है वह तिरछे चलनेवाले जीवोंके शरीर में वर्त्तमान् हुये उसशरीरमें रजोगुण थोड़ासा और सतोगुणबहुतही कम जाननाचाहिये ६ जिस जीवमेंरजोगुण अधिकहै वह मनुष्य शरीर को प्राप्त करनेवाला होताहै उसशरीर में तमोगुणकम और सतोगुणबहुत कमजानो ७ जबसतोगुण अधिकहै तब वह ऊपर के लोकमें नियत होनेवालाहै उस शरीरमें तमोगुण कम औररजोगुण बहुतहीकमजाननाचाहिये८सतोगुण इन्द्रियोंका उत्पत्ति स्थान और इन्द्रियोंके द्वारा उनके बिषयोंको प्रकट करनेवाला होकरअहंकार से सम्बन्ध रखनेवालाहै सतोगुणसे अधिककोई दूसरा धर्मनहींकहा जाताहै ९ सतोगुणमें नियतहोकर जीवधारी ऊपरकेलोकोंको जाते हैं रजोगुणी नरलोकमें नियतहोतेहैं खोटेगुणसे युक्त तामसीमनुष्य अधोगतिको पातेहैं१०शूद्रमें तमोगुण क्षत्रीमें रजोगुण और ब्राह्मणमें उत्तम सतोगुणहै इसरीतिसे तीनोंगुण और तीनोंबर्णों में वर्त्तमान होतेहैं वह साथ विचरनेवाले सतोगुण रजोगुण और तमोगुण दूरसेही दिखाई पड़तेहैं उनको पृथक् २ नहीं सुनतेहैं क्योंकितमोगुणी शूद्रमें भी रजोगुण और सतोगुण दिखाई देतेहैं ११।१२ उदय हुये सूर्य्य को देखकर चौरादिकोंको भय होताहै और गरमीसेदुःख पानेवाले बिदेशी संतप्तहोतेहैं१३सूर्य्य सतोगुणहै जोकि समानबुद्धि में अधिकहै और चौरादिक तमोगुणहै बिदेशियोंका दुःख रजोगुण

का धर्म कहाजाताहै १४ सतोगुण रूपसूर्य्य वह गुणरखताहै जिस-
सेकि विषयोंका और शास्त्र का प्रकाश होताहै सन्ताप रजका
गुणहै पर्व्वों में तमोगुण इससतोगुण रूपीसूर्य्य का ग्रहणजानना
योग्यहै १५ इसप्रकार तीनोंगुण सब जीवधारियों में क्रम पूर्व्वक
नियत होतेहैं और जहांतहां उसी २ प्रकार से पृथक् होतेहैं १६
स्थावर जीवोंके मध्यमें तमोगुणकी आधिक्यता दिखाई देतीहैरजो-
गुणी ऐसे विपरीत दशा करतेहैं जैसेकि दूधसे दही औरसात्विक
गुणघृतरूपहै क्योंकि प्रकाश की वृद्धि का कारणहै १७ दिनतीन
प्रकारका जाननाचाहिये और इसीप्रकार रात्रिमहीनापक्ष वर्षऋतु
और सन्धियह तीन २ प्रकार की कहीजातीहैं १८ दानतीनप्रकार
के दियेजातेहैं तीनप्रकार का यज्ञजारी होताहै लोकतीनप्रकार के
हैं देवता विद्या और गतिभी तीन२ प्रकार कीहैं १९ भूतवर्त्तमान
भविष्य धर्म अर्थ काम प्राण अपान उदान यहभी तीनोंगुणकेरूप
हैं २० वह जहां तहां उस२ प्रकार से वर्त्तमान होतेहैं इसलोकमें
जो कुछहै वहसबयह तीनोंगुणहीहैं सत्त्वरज तम अव्यक्त रूपतीनों
गुण सदैव वर्त्तमान होतेहैं यह गुणोंकी उत्पत्ति प्राचीनहै २१।२२
तम, अव्यक्त, शिव, धाम, रज, सनातनयोनि, प्रकृति, बिकार, प्रलय
प्रधान, जन्म, मरण २३ सत्, असत्, यहसब तीनगुण रखनेवाला
अव्यक्तकहा जोकि न्यूनाधिकतासे रहित निष्कंप अचेष्ट औरअवि-
नाशीहै अर्थात् वह अव्यक्त रस्सीमें सर्पके समान कल्पित है सत्य
पदार्थ नहींहै क्योंकि न्यूनाधिकता आदिक सत्य पदार्थों में होते
हैं २४ ब्रह्मविद्याके बिचारकरनेवाले मनुष्योंको यह नाम जानने
के योग्यहै २५ जो पुरुष अव्यक्तके इनगुणोंके नाम और शुद्धब्रह्म
से सम्बन्ध रखनेवाले सबगुणोंकोमुख्यतासे जानताहै वहविभागके
मूलको जाननेवाला शरीर से छूटकर उपाधिसे पृथक् पुरुष सब
गुणोंसे छूटजाताहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंबादेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीबोले कि अव्यक्तसे महत्तत्त्व उत्पन्नहुआ जो कि सब सृष्टिके गुणोंका आदि महान् आत्मा महामतिनाम और आदिमें प्रकाशहोनेवाला कहाजाताहै १ महान् आत्मा, मति, विष्णु, जिष्णु पराक्रमी, शम्भु, बुद्धि, ज्ञानप्राप्ती प्रसिद्धी धैर्य्य सम्बर्त्ती २ इन परियाय बाचक शब्दोंसे वह महान् आत्मा कहाजाताहै ज्ञानी ब्राह्मण उसको जानकर मोहको नहींपाताहै आशय यहहै कि विष्णु और शम्भुदोनों देवता महत्तत्त्वरूप बर्णनकिये इसीसे दोनोंएकहैं ३ वह सब ओरको हाथ पांव आंख शिर मुख और कान रखनेवाला लोक में सबको व्याप्तकरके नियतहै ४ वह बड़े प्रभाववाला पुरुष सबके हृदयमें नियतहै अणिमा लघिमा और प्राप्तीनाम बिभूती वही अविनाशी ज्योतिरूप ईश्वरहै ५ लोकमें जो बुद्धिमान् सद्भावमें प्रवृत्त ध्यानमें मग्न सदैव योगी सत्य संकल्प और इन्द्रियों के जीतनेवालेहैं ६ और जो कोई ज्ञानी निर्लोभ क्रोधके जीतनेवाले शुद्ध चित्त पण्डित ममता और अहंकारसे पृथक् ७ और विमुक्त हैं यह सब महत्तत्त्वको प्राप्तहोतेहैं जो कि महानात्माकी पवित्र और उत्तमगतिको जानतेहैं ८ अहङ्कारसे पंचतत्त्व उत्पन्नहुये पृथ्वी अप तेज वायु आकाश ९ सबप्रकट होनेवाले उन पांचोंतत्त्वों में प्रवेश करतेहैं और वह पंचतत्त्व शब्द पुरुष रूप रस गन्धकी क्रियाओंमें लयहोते हैं १० हे पंडित लोगो प्रलयके समय पंचतत्त्वकी प्रलय वर्त्तमानहोनेपर सबजीवमात्रोंको बड़ाभय उत्पन्नहोताहै ११ परन्तु जो ज्ञानीहै वह सबलोकोंमें मोहको नहीं पाताहै उत्पत्तिकी आदिमें विष्णु भगवान् अपनेआप प्रकटहोतेहैं १२ इस रीतिसे जो पुरुष उस वेदरूप गुफामें शयन करनेवाले सबसेपरे प्राचीन प्रभु शरीरों में निवासी विश्वरूप सुवर्ण वर्ण बुद्धिमानोंकी परम गतिको जानताहै वह बुद्धिमान् बुद्धिको उल्लंघन करके नियतहोताहै १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

एकतालीसवां अध्याय॥

कार्य्य कारणकी एकता सिद्धकरनेको ब्रह्माजीबोले कि प्रथम-हो जो महत्तत्त्व उत्पन्नहुआ वही अहंकार कहाजाताहै मैंहूं इसशब्द से प्रकटहुआ वह दूसरा प्रत्यक्ष कहाजाताहै १ पंचतत्त्वोंकी आदि वह अहंकार विकारक नाम महत्तत्त्वसे उत्पन्नकहा उसीका नाम रजोगुणहै वह प्रवृत्तिरूप तेजकी रूपान्तर दशाहै तेजसे चेतना धातु और चेतना धातुसे प्रजाओंकी उत्पत्ति होतीहै इसीहेतुसे यह प्रजापतिहै २ वह ईश्वर संसारके सब पदार्थों समेत देवताओंका और मनका उत्पन्नकरनेवालाहै वह मैं सबमें वर्त्तमानहूं इसप्रकार अभिमान करनेवाला वह अहंकारनाम कहाजाताहै ३ जो अध्यात्म-ज्ञानसे तृप्तपवित्रात्मा वेदपाठ और यज्ञसे शुद्ध मुनियोंका यह स-नातन लोकहै अर्थात् आवागमन का स्थानहै आशय यहहै कि इ-सको समष्टिरूप अनरुद्धभी कहतेहैं ४ तीनोंगुणोंके रूप अहंकारसे शब्दादिक विषयोंको भोगकरनेके इच्छावान् पुरुषका वह आदितत्त्व तामसी अहंकार आकाशादिक को उत्पन्न करताहै इस हेतुसे वह पंचतत्त्वोंका उत्पन्न करनेवाला है सब इन्द्रियों को उत्पन्न करके उनसे देखने और स्पर्शादिक क्रिया करने वालाहै और इस सबको चेष्टादेता है कर्मेन्द्री और पंचप्राणोंको उत्पन्न करके इनसे सब भोक्ताओंको प्रसन्न करताहै ५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि तामसी अहंकारसे यह पंचभूत उत्पन्न हुये पृथ्वी अपतेज वायु आकाश १ उन पंचतत्त्वोंमें जो स्पर्शरूप रस गन्धकी क्रियाहैं उनमें सब सृष्टिभरके जीव अचेत होतेहैं २ हे पं-डित लोगो महाभूतों के बिनाशके समय स्थूल शरीर रूप पंचतत्त्व के प्रलय वर्त्तमान होनेपर सबजीवोंको बड़ाभय उत्पन्न होताहै ३

जो २ भूत जिस२से उत्पन्न होताहै वह उसी२ में लय होजाता है फिर वह क्रमसे उत्पन्न होतेहैं परन्तु क्रमपूर्व्वक लयनहीं होतेहैं ४ इसीहेतुसे जिसपुरुषने योग सामर्थ्यसे स्थूलपंच महा भूतोंको सूक्ष्म महाभूतों में लय कियाहै तब सूक्ष्म शरीर होनेके कारण वह अपनी स्मरण शक्तीसे प्रशंसनीय योगीभी नाशको नहीं पातेहैं ५ शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध और उनको प्राप्तकरनेवाली क्रिया यह सब नित्यमनके अविनाशी होते हैं अथवा हार्दाकाश नाम सगुण ब्रह्मरूप से अविनाशी होतेहैं और स्थूलरूप बिनाशवान् होतेहैं ६ अब बिनाशवानोंके लक्षण वर्णनकरते हैं लाभकी इच्छासे जो कर्म सफल हैं उससे प्रकट मुख्यतासे रहित रस्सीके सर्पके समान तुच्छपदार्थमांस रुधिरके समूह परस्पर के मांससे जीवते रहनेवाले ७ स्थूल शरीर रोगादिकोंमें फंसेहुये बाह्य साधनों से जीवन करतेहैं ८ प्राण अपान उदान समान और ब्यान यह पंच-प्राण मनबाणी और बुद्धिकेसाथ अन्तरात्मा अर्थात् चैतन्यछायासे युक्त अहंकारनाम जीवमें नियम पूर्व्वक बंधेहुये हैं इनआठोंका इकट्ठाहोना जगत्है अर्थात् यहसब मोक्षतक नियतहैं ९ स्पर्श, त्वक् श्रोत्र, घ्राण, रसना, बाणी यहसब जिसके आधीन हैं और जिसका मन अत्यन्तपवित्रहै और डामाडोलनहींहै १० यह आठोंगुणसदैव जिसको जलातेहैं वह उस शुभब्रह्मको पाताहै जिससे अधिक तम दूसरा बर्त्तमान नहींहै ११ हे ब्राह्मण लोगो जिन सब इन्द्रियों को ग्यारह कहाहै वह सब अहंकारसे उत्पन्न हुईहैं उनको अबक-हताहूं १२ श्रोत्र, त्वक, चक्षु, घ्राण, रसना, दोनों हाथ, दोनों चरण लिंग गुदा और दशवींबाणी है १३ यह इन्द्रियों का समूहहै इनकाग्यार हवां मनहै प्रथम उसइन्द्रियोंके समूहकी बिजयकरै उससे ब्रह्म प्र-काशकरताहै १४ पांचज्ञानेन्द्री पांच कर्मेन्द्री बर्णनकरी श्रोत्रादिक पांचों ज्ञानेन्द्रियोंका मुख्यता पूर्व्वक बुद्धिसे संयुक्त वर्णन किया १५ जो दूसरी कर्मेन्द्रियांहैं इन दोनोंमें मनको संयुक्त जानना चाहिये बुद्धि बारहवींहुई १६ यह ग्यारहों इन्द्रियोंको क्रम पूर्व्वक आत्मामें

वर्णन किया पंडितइनको जानकर कृतकृत्यहोतेहैं १७ सबइन्द्रियां नाना प्रकारकी हैं प्रथमतत्त्व आकाशहै उसमें श्रोत्र अध्यात्मकहा जाताहै १८ इसीप्रकार शब्द अधिभूत है उसमें दिशा अधिदैवहै दूसरा तत्त्व वायुहै उसमें त्वक् अध्यात्म प्रसिद्ध है १९ स्पर्श अधिभूतहै बिजली उसमें अधिदैव है तीसरा तत्त्व अग्निहै उसमें चक्षु अध्यात्म कहाजाता है २० रूप अधिभूत है उसमें सूर्य्य अधिदैवहै चौथातत्त्व जलजानना चाहिये जिह्वा अध्यात्म कहीजाती है २१ उसमें रस अधिभूतहै उसमें चन्द्रमा अधिदैवहै पांचवां तत्त्व पृथ्वी है घ्राणइन्द्री अध्यात्मा कहीजाती है २२ गन्ध अधिभूतहै हवा उसमें अधिदैवहै इनपांचोंतत्त्व और अध्यात्म अधिभूत अधिदैवइन तीनोंमें जो बुद्धिहै वह वर्णन करी २३ इसके पीछे सब कर्मेन्द्रियों को जोकि नानाप्रकारकी हैं वर्णन करताहूं तत्त्वदर्शी ब्राह्मणों ने दोनों चरणोंको अध्यात्मकहा २४ चलना अधिभूत है विष्णु उसमें अधिदैवहै अधोगति रखनेवाली अपाननाम वायुइन्द्री अध्यात्मकही जातीहै२५फोकका निकालना अधिभूतहै मत्सर उसमेंअधिदैवहै सबजीवोंकी उत्पत्तिका कारण उपस्थइन्द्री अध्यात्मकहीजाती २६ वीर्य्य अधिभूतहै प्रजापति अधिदैवहै योगी मनुष्योंने दोनोंहाथोंको अध्यात्मकहा कर्म अधिभूतहै २७ इन्द्र उसमें अधिदैव है इसलोकमें संपूर्ण विश्वकी देवी प्रथम वाणी अध्यात्मकही जातीहै २८ कहनेके योग्य वाणी अधिभूतहै अग्नि इसमें अधिदैवहै पंचभूतोंसे उत्पन्न जीवोंको कर्ममें प्रवृत्त करनेवाला मन अध्यात्म कहा २९ संकल्प अधिभूतहै चन्द्रमा अधिदैवहै उसीप्रकार सब संस्कारोंका उत्पन्न करनेवाला अहंकार अध्यात्महै ३० अभिमान अधिभूत है रुद्रउसमें अधिदैव है छहोंइन्द्रियोंकी विचारनेवाली जो बुद्धिहै उसको अध्यात्मकहा ३१ चित्तमें विचारकरना अधिभूतहै ब्रह्मा इसमें अधिदैवहै जीवोंके निवासस्थान तीनहैं चौथा विदित नहींहोता ३२ स्थल जल आकाश जन्म भी चारप्रकारकाहै अंडेसे उत्पन्न पृथ्वीसे प्रकट पसीनेसे पैदा और जरायुज ३३ यह चारि प्रकारकी उत्पत्ति

जीव समूहोंकी देखनेमें आतीहै इसीप्रकारजो छोटे २ जीव आकाश चारीहैं ३४ उनको और सब सर्पादिकके प्रकारको अंडेसे उत्पन्न जाने पसीने से उत्पन्न जीवधारी क्रमसे कीटादिक कहे ३५ यह द्वितीयजन्मनिकृष्टतर कहाजाताहै को अपने नियत समयपर पृथ्वी को फाड़कर उत्पन्न होते हैं ३६ हे ऋषियो उन जानदारों को उद्भिज कहा जीव द्विपाद बहुपाद रखने वाले और तिरछे चलनेवालेहैं ३७ जो कि जरायुज और बिकृत नाम भी कहे जाते हैं हे बड़े साधू ब्राह्मणों ब्रह्मकी ऐक्यताका स्थान जो सनातन ब्राह्मण जन्म है वह दो प्रकारकाहै प्रथम तो मातापितासे दूसरा संस्कारसे ३८ उसमें करनेकेयोग्य कर्म्म यहहै तप पुत्र कर्म्म नाना प्रकारका कर्म्म पूजन दान जो यज्ञमें होताहै जानना चाहिये यह ज्ञानियोंकी नीति है ३९ द्विजन्माका वेदपाठ वा जप पवित्रहै यह वृद्धोंका उपदेशहै हे ऋषियो जो इसको बुद्धिके अनुसार जानताहै वह योगी होताहै औरवहसब पापोंसे मुक्तहै इसको निश्चय जानो पहिला तत्त्व आकाश है श्रोत्र अध्यात्म कहाजाता है ४० । ४१ शब्द अधिभूत है इसमें दिशा अधिदैव है दूसरातत्त्व वायुहै उसमें त्वक् इन्द्री अध्यात्म प्रसिद्धहै ४२ स्पर्श अधिभूत है उसमें बिजली अधिदैव है तीसरा तत्त्व अग्निहै उसमें चक्षुरिन्द्री अध्यात्म कही जातीहै ४३ रूप अधिभूतहै सूर्य्य उसमें अधिदैवहै चौथा तत्त्वजल जानना चाहिये जिह्वा अध्यात्म कहीजातीहै ४४ चन्द्रमाकोअधि भूत जानना चाहिये जल उसमें अधिदैवहै मैंने यह अध्यात्मविधि ठीक २ तुमसे कही ४५ हे धर्मज्ञ ऋषियो यहां इसका ज्ञान ज्ञानी लोगोंको प्राप्तहुआ इन्द्रियां, इन्द्रियोंकेविषय, पंचतत्त्व इन सबको एक निश्चय करके मनके साथ धारण करे अर्थात् केवल मनसेही नियत होय ४६ इस मतमें सब इन्द्रीआदिके नाश होनेपर और फिर उसमनके भी लयहोनेपर निर्बिकल्प सुखकाअनुभवकरनेवाले पुरुषको संसारी सुख अर्थात् पुत्रऔर स्त्रीआदिके मिलनेकाआनन्द प्यारा नहीं लगताहै वह सुख उन ज्ञानियोंका अंगीकृतहै जिनको

बुद्धि आत्म अनुभवसे संयुक्त है ४७ उसके पीछे मनको सूक्ष्मकर-
नेवाली निवृत्ती रूप बाणीको बर्णन करताहूं जो कि मनकी इच्छा
और दृढ़योगसे सब ब्राह्मण आदिक जीवोंमें अभ्यास करनेकेयोग्य
है ४८ जिसमें शूरताआदिक गुण अहंकारके कारण होनेसे निर्गुण
हैं और वह अभिमानादिकसे रहितहै और जिसमें एकान्त निवा-
सिताहै और भेदसे रहित है और जिसमें ब्राह्मण ज्ञाति प्रधान है
इस रीति को सब सुखोंका निवास स्थान कहा ४९ जैसे कि कछु
आ सब अंगोंको समेट लेताहै उसीप्रकार जो ज्ञानी अपनी इच्छा-
दिकोंको सब प्रकारसे रोककर रजोगुण से रहित सब ओरसे मुक्त
है वह मनुष्य सदैव सुखीहै५० इच्छादिकोंको आत्मामें लय करके
अनिच्छावान् सावधान सबजीवोंका शुभचिन्तक मित्र मनुष्यब्रह्म-
भावके योग्य होताहै५१इन्द्रियों के विषयाभिलाषी सब इन्द्रियोंके
रोकने और सब ब्रह्माण्ड त्यागकरनेसेमुनिको बिज्ञान रूप अग्नि
अच्छी वृद्धिको पाताहै ५२ जैसे कि ईंधनसे वृद्धि पानेवाली अग्नि
अच्छी ज्योति रखनेवाली होकर प्रकाशकरतीहै उसीप्रकार इन्द्रि-
योंके रोकनेसे महानात्मा प्रकाश करताहै ५३ निर्मल चित्त योगी
जब सम्परिज्ञात दशामें अपने हृदयके मध्य जीवोंको देखताहै तब
वह स्वयंज्योति रूप होताहै और हार्दाकाशसे परमज्योतिकोप्राप्त
करता है ५४ जिस कालचक्र में रूप अग्निहै रुधिरादिक जलहै
स्पर्शवायुहै पृथ्वी घोरकीचहै श्रोत्र आकाशहै ५५ वह रोगशोकसे
पूर्ण पंचेन्द्री रूप नदियोंसे संयुक्तहै पांचों तत्त्वोंसे युक्तहै दो कान
दो आंख दो नाक मुख दो नीचेके छिद्र यह नव द्वार रखनेवालाहै
जीव ईश्वरनाम जिसके दो देवताहैं५६ रजोगुणसे युक्तहै अमंगल
रूप होनेसे देखनेके योग्य नहीं तीनगुण रखनेवालाहै अर्थात्दृष्टि
करतेही देखनेवालोंके सुख दुःख और मूलको उत्पन्न करनेवालाहै
त्रिधातुका रखनेवालाहै भोजनकी बस्तु आदिक अभ्याससे रमने-
वाला जड़ रूप शरीर के समान रूपहै ५७ जोकि कष्टसे निपत
होनेवाला और इस सब लोकके मध्यबुद्धिमें आश्रितहै इसलोकमें

बाल्यावस्थादिक समयसेसंयुक्त यहकालचक्र वर्त्तमानहोताहै ५८ यह बड़े समुद्रकी समान भयका उत्पन्न करनेवाला अथाह मोह नामहै देवताओं समेत इस जगत्को जानकर त्याग और लयादिक करे ५६ शरीर त्याग करनेवाला मनुष्य इन्द्रियोंके जीतनेसे इन कठिनत्याग इच्छा क्रोध भय लोभ शत्रुता और मिथ्यापनेकोत्याग करताहै६०यह तीनोंगुण और पंचतत्त्वलोकमें जिसकेबिजयकियेहुये हार्द्दाकाश में उसका अपार ब्रह्मलोक दिखाईदेता है ६१ पंचेन्द्री रूप बड़ा किनारा और मनकी तीव्रताके समान बड़ाजल और मोह रूप हृद रखनेवाली नदीको पार होकरदोनों इच्छा औरक्रोध को बिजय करे ६२ फिर सब दोषों से निवृत्त वह योगी मनको हृदयकमल में धारणकर शरीर में आत्माको देखता उस ब्रह्मको देखताहै ६३ सब जीवमात्रों में ब्रह्मको देखनेवाला एकरूपअर्थात् तत्पदार्थका साक्षात्कार भूरूप बिश्वरूप से जहां तहां रूपान्तर दशा करनेवाला वह योगी आत्मामें आत्माको जानताहै ६४ निश्चय करके वह बहुत रूपोंको देखताहै अर्थात् आत्म रूपसे उन में ऐसे नियत होताहै जैसे कि एक दीपकसे सैकड़ों दीपक प्रकाशित होयं वही योगीबिष्णुहै वही सूर्य्य, बरुण, अग्नि और प्रजा पतिहै ६५ वही धाताहै वहीबिधाता है वही प्रभुहै और वही सब ओरको मुखरखनेवालाहै वही सबजीवोंका हृदय वही महानात्मा और प्रकाश करताहै ब्राह्मण देवता असुर यक्ष पिशाच पितृ गरुड़ आदिक राक्षसगण भूतगण और सब महर्षी सदैव उसकी स्तुति करतेहैं ६६ । ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिके पर्वणिगुरुशिष्यसंवादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

इस सबके स्वामी योगीका ऐश्वर्य्य प्रकट करने को ब्रह्माजीने बिभूतियों को वर्णन किया मनुष्यों का राजा क्षत्रीहै जोकि रजोगुण प्रधानहै सवारी के जीवोंका राजा हाथी बनवासी जीवोंका

सिंह १ सब पशुका राजाअबि बिलेशय जीवोंका सर्प गौवोंका बैल और स्त्रियोंका स्वामी पुरुषहै२ बट,जामन, पीपल, शालमली शिंशप, मेषशृंग, कीचकनाम बांस अर्थात् जो बायुसे शब्दकरते हैं ३ यह सब निस्सन्देह इस लोकमें वृक्षोंके राजाहैं हिमवान् पारिपात्र, सह्य, बिन्ध्य, त्रिकूटाचल, श्वेत, नील, भास, कोष्ठवान् गुरुस्कंध,महेन्द्र,माल्यवान्४।५ यहसब पहाड़ बहुत पर्बतसमूहोंके राजाहैं सूर्य्यग्रहोंका चन्द्रमा नक्षत्रोंका राजाहै ६ पितरोंका राजा यमराजहै नदियोंकास्वामीसागरहै जलोंकाराजाबरुणहै मरुद्गणों काराजा इन्द्रकहाजाताहै ७ उष्णकिरणवालोंका राजासूर्यहै नक्षत्रों काराजा चन्द्रमाकहाजाताहै अग्नितत्त्वोंका राजाहै ब्राह्मणोंकाराजा बृहस्पतिहै ८ चन्द्रमा औषधियोंका राजाहै पराक्रमियों का राजा बिष्णुहै रूपोंका राजा त्वष्टाहै पशुओं के ईश्वर शिव हैं ९ दीक्षित पशुओंकाराजा यज्ञहै१०देवताओंका राजा इन्द्रहै दिशाओंकाराजा उत्तर दिशाहै प्रतापवान् चन्द्रमा ब्राह्मणोंका राजाहै सब रत्नोंका स्वामी कुबेरहै इन्द्र देवताओंका स्वामी है यह जीवधारी मात्रोंका स्वामी प्रजापतिसब प्रजाओंका राजाहै ब्रह्मारूप में सब जीवोंका बड़ाराजाहूं मुझसे और बिष्णुसे अधिक कोईनहींहै११।१२ब्रह्मरूप बिष्णु सब सृष्टिभरेके राजाधिराजहैं उस पैदाकरनेवाले स्वयंसिद्ध हरिको सबका ईश्वरजानो १३ वही नर,किन्नर,यक्ष, गन्धर्व्व,उरग राक्षस, देवता, नाग और सबका ईश्वर है १४ आकांक्षी लोग जिनकी यादकरतेहैं उनसब स्त्रियोंकीस्वामिनी महेश्वरी महादेवी पार्वतीजी कहीजातीहैं १५ उमादेवी को स्त्रियोंमें उत्तम और शुभ-जानो प्रीति और आनन्द के मध्यमें जो सुख प्रीति अहंकार और धनकी प्राप्तीसे युक्तहै वही बड़ा है स्त्रियों में अप्सरा श्रेष्ठ हैं १६ राजालोग धर्म के अभिलाषी हैं ब्राह्मणधर्मके सेतुहैं इसी हेतुसे राजा ब्राह्मणोंकी रक्षामें अनेक उपायकरे १७ साधू मनुष्य जिन राजाओं के देशमें कष्टपातेहैं वह अपने सबगुणोंसे रहित मरकर नरकगामी होतेहैं १८ साधूलोग जिनराजाओंके देश में चारोंओर

सेरक्षितहैं वह राजाइसलोक में आनन्द करतेहैं और परलोकमें सुखकोपातेहैं १९ महात्मा योगीज्ञानी इसप्रकारसे विश्वके ऐश्वर्य्य को पातेहैं हे ऋषियो तुम इसको निश्चयही जानो अब इसके पीछे नियम संयुक्त धर्मलक्षणको वर्णन करताहूं २० अहिंसाधर्म सर्वोत्तम है हिंसा अधर्मका चिह्नहै देवता प्रकाशका चिह्नरखने वालेहैं मनुष्य कर्मचिह्नरखनेवालेहैं २१ आकाश और वायुशब्द स्पर्श लक्षण रखनेवाले हैं ज्योति लक्षणरूप है जलका लक्षणरस है २२ सबजीवोंको धारण करनेवाली पृथ्वी गन्धरूप लक्षण रखनेवालीहै स्वरव्यंजनके संस्कार सेयुक्त बाणी शब्दरूप लक्षण रखनेवालीहै अर्थात् दूसरे की विद्या शब्दसेही जानी जातीहै २३ मनका लक्षणचिन्ताहै चिन्ताका लक्षण बुद्धिहै क्योंकि मनसेशोचे हुये अभीष्टोंको बुद्धिसे निश्चयकरताहै २४ निस्सन्देह बुद्धिनिश्चय से दिखाईदेतीहै मनका लक्षण ध्यान है पुरुष का लक्षण अव्यक्त है २५ कर्म प्रवृत्तिलक्षणवालेहैं ज्ञान संन्यास का लक्षणहै इसलिये बुद्धिमान् इसलोकमें ज्ञानको मुख्यकरके संन्यास लेवे २६ सन्मान व असन्मानता आदिकयोगोंसे रहित तमोगुण जरामरणसे पृथक् ज्ञानसे युक्त संन्यासी परब्रह्मको पाताहै और उसमें प्रवेश करता है २७ मैंने तत्त्व और इन्द्रियोंका धर्म लक्षण और संयोगबुद्धि के अनुसार तुमसे कहा अब इसके पीछे बिषयों की प्राप्त होनेवाली रीतोंको अच्छीरीतिसे कहताहूं २८ पृथ्वीसे सम्बन्ध रखनेवाली गन्धनाम वस्तु घ्राणइन्द्रीसे प्राप्त कीजातीहै उसीप्रकार घ्राणेन्द्री में नियतवायु गन्धज्ञानमें सहायक होताहै २९ जलों का जो सार रसहै वह सदैव जिह्वा से प्राप्त कियाजाताहै उसीप्रकार जिह्वा पर नियतचन्द्रमा ज्ञानमें सहायता करताहै ३० अग्निका जो गुण रूपनामहै वह चक्षुरिन्द्री से प्राप्त किया जाताहै तब चक्षुमें नियत सूर्य्य रूप ज्ञानमें सहायता देताहै ३१ वायुका जो गुण स्पर्शहैवह सदैव त्वगेन्द्री से जानाजाताहै जो वायु जिसमें सदैव स्पर्शेन्द्री वर्त्तमानहै वह स्पर्श करनेमें सहायक होताहै ३२ आकाशका गुण

शब्दहै वह बायुके सम्पर्कसे प्राप्तहोताहै श्रोत्रमें नियत्त होकरउस में सब दिशा सहायकहैं ३३ मनका गुणचिन्ताहै वह बुद्धिसे प्राप्त होताहै हृदयमें नियत चिन्ताधातु ज्ञानमनमें सहायता करताहै ३४ बुद्धि निश्चय स्वरूपसे प्राप्त होतीहै उसीप्रकार महान् शुद्ध सतो गुण रूप स्वरूपसे प्राप्त होताहै निश्चय करके उनबुद्धि और महत्तत्त्व का प्राप्त करना यद्यपि प्रकट है परन्तु अव्यक्तही है क्योंकि वह निस्सन्देह इन्द्रियोंसे रहित हैं ३५ इन्द्रियों से रहित और अपनेही तेजसे प्रकाशित इनदोनों का जो प्राप्त करनेवालाहै उसको कहतेहैं वह निर्गुण रूपजीवात्मा सदैव बुद्ध्यादिकके बिषयसे रहितहै इसहेतुसे वह चिह्न रहित आत्मा केवल ज्ञानरूप लक्षण रखनेवालाहै ३६ साक्षीमें उसशरीर रूप चिह्नमें स्थित सृष्टि के कारण उत्पत्ति और नाश पकड़नेमें न आनेवाले अव्यक्तको सदैव देखताहूं जानताहूं और सुनताहूं ३७ पुरुष अर्थात् आत्मा उस अव्यक्त को जानताहै इस हेतुसे क्षेत्रज्ञ ज्ञाताहै वह क्षेत्रज्ञगुणोंके बिशेषण अर्थात प्रकाश प्रवृत्ति और मोहादिकको और चरित्रको चारोंओरसे देखताहै ३८ बारंबार बिपरीतरूप करनेवाले गुणोंने निर्बिकार आत्माको नहींजाना किन्तु आत्माही उस उत्पत्ति स्थिति और लयमें बिपरीत दशामें लगानेवाली मायाको प्रकट करता है ३९ कोई आत्माको नहीं जानताहै क्षेत्रज्ञही जानताहै वह गुण भोग पदार्थोंसे परे और वृद्धतम है ४० इस हेतुसे धर्मज्ञ दोष और गुणोंसे पृथक् आत्मा इसलोक में बुद्धि और गुणोंको त्याग करके परमात्मामें प्रवेश करताहै ४१ वह क्षेत्रज्ञ सुख दुःखादियोगों से रहित नमस्कार और स्वाहाकारसे रहित निश्चेष्ट और स्थानसे रहित श्रेष्ठतर और सबका स्वामीहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंबादेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

बर्णनसे पूर्व आत्मस्वरूप मोक्ष मिथ्याबस्तु कर्मसे प्राप्तके बर्णन

करनेको ब्रह्माजी बोले जो आदि मध्य और अन्तसे बन्धन किये हुये अर्थात् जन्मादिकरखनेवाला बन्धनमें नियतनाम और लक्षण से संयुक्तहै उस सबको मुख्यता समेत कहताहूं १ आदि में दिवस फिर रात्रि महीना शुक्लादिक पक्ष श्रवणादि नक्षत्र शिशिरादिक ऋतु बर्णन किये २ गन्धोंकी आदिपृथ्वीहै रसोंकाआदिजल रूपों काआदि अग्नि और सूर्य्य और स्पर्शोंकाआदि बायु कहाजाताहै ३ शब्दकाआदि आकाशहै यह पंचभूतोंके गुणहैं इसके पीछे जीवोंके उत्तम आदि रूपको बर्णन करताहूं सब तेजवान् शरीरोंका आदि सूर्य्य चारों प्रकारोंके जीवोंका आदि जठराग्नि कहाता है सब बि-द्याओंमें सावित्री और देवताओंमेंप्रजापति आदिहै ४।५सबवेदोंका आदि प्रणवहै वचनोंका आदि प्राणहै इस लोकमें जो मन्त्र जपके योग्यहै वह सब सावित्रीकहाजाताहै ६ छन्दोंका प्रथम गायत्री है सृष्टिका प्रथम उत्पत्ति काल कहाजाताहै पशुओं में प्रथम गौ और मनुष्योंमें प्रथम ब्राह्मणहैं ७ पक्षियोंका प्रथम बाजपक्षी है यज्ञोंका आदि वह होमहै जोकि अग्नि अथवा ब्राह्मणके हाथमें कियागया हे ऋषिलोगो बिच्छूआदिक विषधरों में सर्प सबसे बड़ा है ८ सब युगोंका आदि सतयुगहै सब रत्नोंकाआदि सुवर्ण है औषधियोंका आदि यवान्नहै ९ भक्षण और भोजन की सब बस्तुओं में अन्न उत्तम कहाजाताहै सब पीनेकी बस्तुओंमेंजल श्रेष्ठहै १० मुख्यकर सब स्थावर बस्तुओं में प्लक्षनाम ब्रह्मक्षेत्र प्रथम और धर्म्मकी वृद्धिका हेतुकहाहै ११ सब रक्षक और स्वामियोंका आदि निस्स-न्देह में ब्रह्माहूं वह बुद्धिके विषयसे परे अपने आप उत्पन्न होने वाला विष्णु मेराआदि कहागया १२ सब पर्वतोंमें महामेरु पहाड़ सृष्टि की आदिकहा दिशा और बिदिशाओं में ऊर्ध्वदिशा और पूर्व दिशाप्रथम कही १३ उसीप्रकार स्वर्गपृथ्वी पाताल नाम मार्ग में वर्त्तमान गङ्गाजी सब नदियों में प्रथमसृष्टि कही उसीप्रकार सब सरोवर और कूपादिकोंमें सागर प्रथमसृष्टिहै १४ और इनदेवता दानव,भूत,पिशाच,उरग,राक्षस, नर, किन्नर और यक्षों का ईश्वर

है १५ वहब्रह्मरूप विष्णु इस विश्व जगत् का आदि और वृद्ध है इस त्रिलोकी में जिससे परे कोई प्रकट नहीं है सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम उत्तम और प्रथम है निस्सन्देह लोकोंका और सबका आदि अव्यक्तहै और वही अन्तहै १६। १७ दिनोंका अन्त सूर्य्यास्तहै रात्रिका अन्त सूर्य्योदय है सदैव सुखका अन्त दुःख है और दुःखकाअन्त सदैव सुखहै १८ यह सब समुदाय विनाशको अन्तमें रखनेवाले हैं और सब उदय क्षीणताको रखनेवाले हैं सब योग वियोगको और जीवन मृत्युको अन्त रखनेवालाहै १९ सब कर्म्म नाशमान है उत्पन्न होनेवाले का मरना निश्चयहै इसलोकमें जड़ चैतन्य जीव सदैव नाशमान है २०जो यज्ञ दान तप वेद पाठ और नियमहैं नाशको अन्तमें रखनेवाला यह सब समूह ज्ञानके अन्तमें वर्त्तमान नहीं रहताहै २१ इसीहेतुसे शान्तचित्त जितेन्द्री ममता अहंकारादि से रहित पुरुष शुद्ध ज्ञानके द्वारा सब पापोंसे निवृत्त होताहै २२॥

इतिश्रीमहाभारते आश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्बादे चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

आगेके दो अध्यायोंमें ज्ञानके उपाय वर्णन करनेके इच्छावान् ब्रह्माजीने अज्ञानियोंको कालचक्र अर्थात् शरीरके आधीनमें कहना प्रारम्भ किया जिसमें बुद्धि अंगीकार के योग्यहै मन स्तंभ और इन्द्री समूह बन्धनहै और वह पांचों इन्द्री परिस्कन्ध और निमेष परिवेशनहै १ वह जरा शोकसे पूर्ण रोग और दुःखोंकी उत्पत्ति का स्थानदेश कालसे बिचरनेवाला दुर्गम्य स्थानपर जाना आदिक और उससे उत्पन्न जो दुःखहै वही जिसमें शब्द का हेतुहै २ दिन और रात्रिको चेष्टा देनेवाला शीतोष्णरूप मंडल रखनेवाला सुख दुःख रूप सन्धी और क्षुधातृषा रूप शंकुरखनेवाला ३ छायाऔर धूपरूप विलेखरखनेवाला निमिष उन्मिष नाम समय में व्याकुल होनेवाला दोषयुक्त शोकके अश्रुपातोंसे युक्तसदैव चलनेवालाजड़ ४

महीना और पक्ष आदिक समयसे गिनती में आनेवाला प्रत्येक समयपर मनुष्य पशु आदिक का रूपप्राप्त करनेवाला ऊपरनीचे के लोकादिकोंमें घूमनेवालाहै तमोगुणसे जो कर्म ज्ञानकी रुकावट है वही जिसमें पापकामूलहै और सतोगुण तमोगुणसे संयुक्त रजोगुणकी तीव्रता जिसके मध्यमें निषिद्ध कर्मोंमें प्रवृत्त करनेवालीहै बड़े अहंकार से चैतन्यहै सत्त्वादिक गुणोंसे जिसकी स्थितिहै अभीष्ट लाभके न मिलनेमें जो दुःखहैं वही उसमें रस बन्धन है और जो मृत्युके शोकसेजीवताहै ५।६ क्रियाकारणसे संयुक्त रागसेविस्तार युक्त लोभ और इच्छा जिसमें बैठने उठनेके स्थान हैं तीन गुण के रूपहोने से अपूर्व्व जोअज्ञानहै वही उसका उत्पादकहै ७ भय और मोहसे घिराहुआ जीवोंको अचेतकरनेवाला बाहरके सुखों के अभ्यास से घूमनेवाला इच्छा और क्रोधमें बंधा हुआ ८ महत्तत्त्व से लेकर स्थूल पिंडतक का रूप किसी स्थानपर एकक्षणभर भी न रुकनेवाला जीवोंकी चेष्टा का कारण सब प्रकट होनेवालों का हेतु संसारहै वहमन के समान शीघ्रगामी स्वेच्छाचारी होकरकाल चक्र भ्रमण करता है ९ मान अपमानादिकसे संयुक्त विना चैतन्य इसकालचक्र को जाने और देवताओं के साथ इस जगत्को त्याग और लयादिक करे १० जो मनुष्य सदैव कालचक्र की प्रवृत्ति और निवृत्तिके कारण को मुख्यता समेत जानताहै वह इस प्रत्यक्षादि मायामें अचेतनहींहोताहै ११ सबसंस्कारोंसेछुटा सुखदुःखादियोगोंसे पृथक् सब पापोंसे मुक्त मनुष्य परमगतिकोपाताहै १२ गृहस्थ,ब्रह्मचारी,बानप्रस्थ, संन्यासी यहचारों आश्रम कहेहैं उन सबका मूल गृहस्थ है १३ इस लोकमें जो कोई शास्त्र बर्णन किये उसके अन्तपर पहुंचना कल्याणहै यह सनातन कीर्ति है १४ प्रथम संस्कारों से संस्कृत विधि के अनुसार व्रत करनेवाला ब्रह्म ज्ञानी मनुष्य जोकि ज्ञाति और गुणोंसे प्रतिष्ठा युक्तहोय ब्रह्मचर्य्य की समाप्ति का स्नानकरे १५ अपनी स्त्री पर प्रवृत्त उत्तमआचार रखनेवालाजितेन्द्री श्रद्धामान मनुष्य इसलोकमें सदैव पांचयज्ञोंसे

पूजनकरे १६ देवता और अतिथि से शेष बचे हुये अन्नादि का खानेवाला वेदोक्तकर्म में प्रवृत्त और सामर्थ्यके अनुसार सुखपूर्वक यज्ञ दानमें प्रवृत्त होवे १७ मुनि और हाथ पांव आंख अंग और बाणी से चपलनहोय यह शिष्य कीरीति और लक्षणहै १८ सदैव यज्ञोपवीती श्वेत पोशाक और पवित्र व्रतवाला इन्द्रियों में प्रवृत्त दानका नियम रखनेवाला शिष्य सदैव उत्तम पुरुषोंके पासबैठे१६ लिंग और उदर को बशीभूत करनेवाला सबकामित्र, उत्तम पुरुषों के आचारसे युक्त शिष्य बांसका दण्ड और जलसे पूर्ण कमण्डलको धारणकरे २० वेद पढ़कर पढ़ावे यज्ञकरे और करावे दानदेवे और लेवे इस छःप्रकारके कर्म्मको करै २१ नीचेलिखेहुये तीन कर्म्मों को ब्राह्मणों की आजीविका जानो यज्ञकराना पढ़ाना और शुद्ध मनुष्यसे दानलेना २२ फिर जो शेषबचेहुये तीनकर्म्म अर्थात् दान वेदपाठ और यज्ञनामहैं वह धर्म्मसे संयुक्तहैं २३धर्म्मज्ञ जितेन्द्री सबके मित्र क्षमावान् सब जीवोंमें समदर्शी मुनि उन तीनोंकर्म्मों में असावधानीसे भूल न करे २४ इसप्रकार पवित्र व्रतनिष्ठ वेदपाठी गृहस्थी इस सबको अपनी सामर्थ्य के अनुसार करता स्वर्ग को बिजय करताहै २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्बादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि इसप्रकार प्रथम बिधिके अनुसार इसवर्णन कीहुई रीतिसे सामर्थ्यके अनुसार वेद पढ़नेवाला ब्रह्मचारी१अपने धर्म्म में प्रवृत्त बुद्धिमान् सावधानचित्त सत्यधर्म्म में प्रवृत्त पवित्र और गुरूके प्यारे अभीष्टोंमें प्रवृत्तमुनि २ गुरूकी आज्ञालेकर भोजनकी बस्तुओंकी निन्दा न करताहुआ भोजनकरे हविष्यनाम भोजनकी बस्तुको खाकर भी गुरूके स्थान आसनपर बिहार करने वाला ३ पवित्र और सावधान होकर दोनोंसमय अग्निहोत्र करने वाला ब्रह्मचारी बेल और पलाश के दण्डको धारणकरे ४ उस

ब्रह्मचारीकी पोशाक बल्कल, सन, कपास, और मृगचर्म से बनीहुई सब गेरूआवर्ण रक्त होनाचाहिये ५ मूंजकी मेखलाहोय सदैवजटा और जल रखनेवाला वेदपाठ करनेवाला लोभसे रहित यज्ञोपवीतधारी और व्रतका नियम करनेवालाहोय ६ नियमवान् ब्रह्मचारी सदैव प्रीतिपूर्वक पवित्र जलकेद्वारा देवताओंका तर्पण करता प्रशंसनीय होताहै७इसप्रकार प्रवृत्त जितेन्द्री बानप्रस्थ लोकोंको बिजय करताहै और बड़ेस्थानमें आश्रितहोकर शरीरोंमें प्रवेशनहीं करताहै८सब संस्कारोंसे संस्कृत ब्रह्मचारीमुनि ग्रामोंसे निकलकर संन्यासीरूप होकर बनमें निवासकरे ६ मृगचर्म और बल्कलकी पोशाक रखनेवाला प्रातःकाल सायंकाल स्नानकरे सदैव बनबासी होकरफिरग्रामोंमेंनहींप्रवेशकरे १०बानप्रस्थफल मूलपत्र औरशामाकसेनिर्बाह करतासमयपरअतिथियोंको पूजताउनको निवासस्थान भीदेवे ११ आलस्यसे रहित वह बानप्रस्थदीक्षाके अनुसार क्रमपूर्व्वक भोजनकरे चलतीहुई बायुजल औरसबजंगली फलादिक को काममें लावे १२ वह निरालस्य बानप्रस्थमूल फलनाम भिक्षाओं से आयेहुये अतिथियोंकोपूजे और जोअपने खानेकीबस्तुहोय उसी से भिक्षादे १३ बाणीका, जीतनेवाला, ईर्षासे, रहित मन कल्याण प्राप्त, देवतामें, आश्रित वह बानप्रस्थ सदैव देवता और अतिथिके पीछे भोजननकरे १४ जितेन्द्री, सबकामित्र, क्षमावान् वेदपाठ का अभ्यासी सत्यधर्म परायण केशडाढ़ी मूछकोरखता हवनकरता१५ पवित्र शरीर सदैव सावधान बनबासी इन्द्रीजीतनेमें कुशल ऐसा बानप्रस्थ स्वर्गको बिजयकरताहै १६ गृहस्थो ब्रह्मचारी बानप्रस्थ यहतीनों जो मोक्षमें नियतहोना चाहैं वहउत्तमवृत्ती में आश्रित होजांय १७ फिर सब जीवमात्रों को निर्भयता देकर संन्यासले सब जीवोंको सुख देनेवाला सर्बमित्र सब इंद्रियोंका जीतनेवाला मुनि१८मध्याह्नके समय जब कि सबकेघरनिर्धूमहोंय और मनुष्य भोजन करचुके होंय उस भिक्षाको करके भोजनकरे जोकि बिना याचनाकिये अपनेआप प्राप्तहो और किसी देवताके नामसेकल्पित

नहो१९ वह मोक्षका ज्ञाता टूटे और पड़ेहुये मृत्तिकाके पात्रमें भिक्षा को चाहै मिलने से प्रसन्न होय और न मिलने से उदास भी न होय २० अलगहोनेका अभिलाषी ब्रह्मसमाधिमें नियतसंन्यासीलयके समय ब्रह्मको चाहताभिक्षाकरे साधारणलाभकोनचाहै और पूजित अन्नको न खाय अर्थात् जिसमें संन्यासीपनेके भोजनकी मुख्यता नहींहै मिलजाय लेलेना वही साधारण है २१ वह संन्यासी पूजित लाभ से निन्दित होताहै कषैलेकडुये जोभोजनहैं उनको खाकर२२ खाता हुआ स्वाद न लेवे और मीठेरसों काभी स्वाद नलेवे केवल शरीरके निर्बाह और प्राणकेयोग्यभोजन करे २३ वहमोक्षकाजानने वाला भिक्षाकरता जीवोंके बिनाकष्टकी आजीविका को चाहै इसके सिवाय किसीदशामेंभी अन्यप्रकारके भोजनको न चाहै २४ धर्मको प्रकट नहींकरे और बिमुक्त होनेपर रजोगुणसे रहित होकर बिचरे उजाड़, स्थान, बन, वृक्षकीजड़, नदी २५ अथवा पहाड़कीगुफाको अपने निवासकेलिये सेवनकरे उष्णऋतुमें एकरात्रि गांवमें निवास करे वर्षाऋतुमें एकहीस्थानमें निवास करतारहै२६ सूर्य्यसे दिखाया हुआजोमार्गहै उसमें कीटकेसमान अर्थात् धीरेसे पृथ्वीपरचले और जीवोंकी दयाके बिचारसे पृथ्वीको देखकरचले २७ वस्तुओंको संचय अर्थात् इकट्ठा न करे प्रीति से जो निवासहै उसको त्यागकरे वह मोक्ष का ज्ञाता सदैव पवित्र जलों से स्नानादिक करे २८ वह पुरुष सदैव कूपादिकोंके जलोंसे आचमनादिक करे अहिंसा, ब्रह्मचर्य्य, सत्य, सत्यवक्ता २९ क्रोधनकरना दूसरेके गुणोंमें दोष न लगाना सदैव जितेन्द्री चुगली न करना इन आठोंगुणों से युक्त और इन्द्रियोंकानिग्रह करनेवालाहोवे ३० पाप, शठता, और कुटिलतासे रहितहोकर सदैव आचारवान् और अनिच्छावान् सदैव भोजनकेयोग्य प्राप्तहुये ग्रासको सेवनकरे ३१ केवल निर्बाह और शरीरसमेत प्राणकी रक्षाके निमित्त भोजन करे धर्मसे प्राप्तहुये को खाय अपनी इच्छा के समान स्वतन्त्रकर्मी न होवे ३२ किसी दशमेंभी आवश्यकवस्त्र और नियत भोजनसे अधिक नले वेजितना

खाय उतनाहीलेवे अधिक न ले३३ किसीदशामें भी किसी से दान लेना वा दूसरेको दान देना आवश्यक नहीं ज्ञानीपुरुष जीवोंकी कंगाली और कष्टके कारण उनको भागदेकर ३४ दूसरेके धनोंको न ले और बिनामांगाहुआ भी न लेवे किसी बिषय को भोगकर फिर उसकी इच्छा न करे ३५ आवश्यकता रखने वाला उन मिट्टी जल फूल फल पत्र और अन्यप्रकारके भोजनकी वह बस्तुलेवे जिनका कोई रक्षक नहोय और यह संन्यासी आदि के निमित्त निषेधहैं ३६ हाथकी शिल्पजीविका से निर्बाह न करे सुवर्णको न चाहै शत्रुता और शत्रुताका उपदेश यह दोनों न करे भूषणादिक कभी न पहरे ३७ जो भोजनकी बस्तु श्रद्धासे पवित्रहैं उनको भोजनकरे शकुनोंका बर्णन अर्थात् ज्योतिषशास्त्रकी रीतिसे अच्छी बुरी होनहारके कहने को त्यागकरे स्वधावृत्ति संसारकी बस्तुओंमें असक्तचित्त संन्यासी सबजीवों करके त्यागीहुई बस्तुको भी त्यागकरे ३८ जो कर्मकि फल प्राप्तकरनेकी इच्छासे हिन्सायुक्त हैं और जो धर्मलोक संग्रहहैं उनको न आपकरे न दूसरेको करा-वे३६सब मनकी इच्छाओंको त्यागकरके चिन्ता और शोचसेरहित होजाय—और सब जड़ चैतन्य जीवोंमें संन्यासीको समदर्शी होना योग्यहै ४० न किसी दूसरेको डरावे न आप किसीसे डरे सबजीव धारियों में बिश्वास पात्र होय ऐसा मोक्षकाङ्क्षाता श्रेष्ठ कहाजाता है ४१ वह कालको चाहनेवाला सावधान संन्यासी अभ्युत्थानका बिचार न करे गतबातको न शोचे बर्त्तमानको त्यागकरे४२नेत्र मन और बाणीसे कहीं किसीको दोष न लगावे प्रत्यक्षमें अथवा परोक्ष में थोड़ाभी बुराकर्म नकरे ४३ जैसे कि कछुआ शरीरके सबअंगों को समेटलेताहै उसीप्रकार इन्द्रियोंको लयकरके इन्द्री मन और बुद्धिका नाशकर्त्ताहोकर अनिच्छासे सबतत्वोंका जाननेवाला४४ सुख दुःखादिक योगोंसे रहित नमस्कार और स्वाहाकारका त्यागी ममता और अहंकारसे पृथक् प्राप्त और अभीष्ट रक्षासे जुदा ब्रह्म ज्ञानी ४५ अनिच्छावान् गुणोंसे पृथक् जितेन्द्री संसार से प्रीति

का त्यागनेवाला स्थान रहित आत्माका प्यारा तत्त्वज्ञानी निस्स-न्देह मुक्तहोताहै ४६ जो ज्ञानी उस आत्माको हाथ पांव पीठ शिर उदर न रखनेवाला गुण और और कर्मसे रहित एक निर्मल नि-यत४७गन्ध रस स्पर्श रूप शब्द न रखनेवाला लयके योग्यमाया रहित निर्मांस ४८ चिन्ता न्यूनतासे रहित दिव्य सदैव निर्बिकार रूपान्तर दशारहित और सबजीवों में नियत देखतेहैं वह मृतक नहीं हैं अर्थात् जीवन्मुक्तहैं ४९ उस आत्मामें बुद्धिलय होतीहै न इन्द्री न देवता वेदयज्ञ लोक तप और ब्रतभी नहीं प्रवेश करते ५० इसमें जो ज्ञानियोंकी प्राप्तीहै उसको चिह्न रहित लयता कहतेहैं इसी से उस चिह्न रहित के धर्मको जाननेवाला ज्ञानी धर्मतत्त्व को अभ्यासकरे ५१ गुप्तधर्म में नियत ज्ञानी गुप्त आचरणकरे और धर्मको दोष न लगाता वह ज्ञानी अज्ञानी रूपसे बिचरे ५२ जिसप्रकार अन्य मनुष्य सदैव उसको तिरस्कार करतेहैं वैसीरीति रखनेवाला जितेन्द्री सत्पुरुषों के धर्मकी निन्दा न करताहुआ बि-चरे ५३ जो ऐसी रीतिका करनेवालाहै वह उत्तम मुनि कहाताहै इन्द्री इन्द्रियोंके, अर्थ पंचतत्त्व ५४ मन, बुद्धि, अहंकार, और अव्यक्त पुरुष इनसबको तत्त्व निश्चय से अच्छेप्रकार से ठीक जानकर ५५ फिर सब बन्धनों से छुटा होकर स्वर्गको पाताहै वह तत्त्वज्ञानी आत्म मर्य्यादमें इसप्रकार जानकर ५६ एकान्तबासी होकर ध्यान करे वह सबसे जुदाहै जैसे कि आकाश में बर्त्तमान वायुहोती है उसीप्रकार सब प्रीतियोंसे पृथक् और किसीस्थानपर नियत न होने वाला ज्ञानी मुक्तहोताहै ५७ जिसके मनोमय आदिक कोश खाली हुये वह भयादिकोंसे छुटाहोकर परमपदको पाताहै ५८॥

श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंवादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीबोले कि निश्चितदर्शी वृद्धलोगोंने संन्यासको तपकहा ब्रह्मयोनियोंमें नियत ब्राह्मणोंने ब्रह्मज्ञान को श्रेष्ठ जाना १ वह

ब्रह्ममाया और बहुतदूर वेदविद्या में नियत सुख दुःखादि योगोंसे छुटा निर्गुण सदैव वर्त्तमान बुद्धिसेपरे गुणयुक्त और सबसे वृद्ध-तमहै २ स्वच्छमन पवित्र रजोगुण रहित निर्मलज्ञानी लोग ज्ञान और तपकेद्वारा उस परब्रह्म को देखतेहैं ३ जो मनुष्य सदैव सं-न्यासमें प्रवृत्त और ब्रह्मज्ञानीहैं वह तपकेद्वारा उस कल्याणमार्ग परमेश्वरको प्राप्तहोतेहैं ४ तपको उत्तम दीपक कहा धर्म्म पूर्व्वक आचार साधकहै ज्ञानको उत्तमजानें संन्यास उत्तमतपहै५ जो ज्ञानी तत्त्व निश्चयसे उस उपाधियोंसे रहित ज्ञानरूप सबजीवोंमें नियत आत्माको जानताहै वह कृतकर्मी होकर अभीष्टको प्राप्तकरताहै ६ जो ज्ञानी मायाब्रह्मकी एकता और व्यवहारमें वियोगको देखता है इसीप्रकार जीव ईश्वरकी ऐक्यता और बहुतसे प्रकारोंकोजानता है वह दुःखसे छूटताहै ७ जो कुछ इच्छानहीं करताहै और न किसी का अपमान करताहै वह इसीलोक में नियत ब्रह्मभाव को प्राप्त होताहै ८ मायाके गुणोंकी मुख्यता जाननेवाला सब जीवोंके उ-त्पत्ति कारणसे विदित ममता अहंकारसे जुदाहोकर निस्संदेहमुक्त होताहै ९ जो सुख दुःखादिक योगोंसे छुटा नमस्कार और स्वधा कारसे रहितहै वह शान्तीसेही उस ब्रह्मकोपाताहै जो कि निर्गुण सदैव सुख दुःखादिक योगों से जुदाहै १० सब गुणरूप और कर्म से उत्पन्न शुभाशुभ फलको त्याग दोनों सत्य मिथ्याको छोड़कर निस्संदेह मुक्तहोताहै ११ वह बड़ा वृक्ष जिसका अंकुर और मूल अव्यक्तहै महत्तत्त्व जिसकी शाखाहै और महा अहंकार पत्र समूह हैं इन्द्रीरूप अंकुर जिसके छिद्रोंमेंहैं १२ पंचतत्त्व जिसके सदाफूल हैं और सूक्ष्म महाभूतोंकी उत्पत्ति जिसकी छोटीशाखाहैं सदैवपत्र पुष्प रखनेवाला और शुभाशुभ फलका उदय करनेवालाहै१३ सब जीवोंका जीवनमूल सनातन वृक्षहै ज्ञानीब्रह्म ज्ञानरूपी खड्गसे इसप्रकारके वृक्षको काट छेदकर १४ जन्ममृत्यु और जरावस्थाकी उदय करनेवाली स्नेहरूप फांसीको त्यागकर ममता अहङ्कार से जुदाहोकर मुक्तहोताहै इसमें संदेहनहींहै १५ यहजीव ईश्वरनाम

दोनों पक्षी प्राचीनरूपमें लय होनेवाले अथवा परस्पर मित्र और छायारूप होनेसे प्रकट हैं इन दोनों से विशेष जो परब्रह्म है वह चेतनावान् कहाजाताहै १६ जिन शरीरादिक उपाधियों से जीव पृथक्२गिनेजातेहैं उनसे छुटाहुआ जीवात्मा उस पदार्थ बस्तुको जो कि बुद्धिसे परेहै और क्षेत्ररूप होकर बुद्ध्यादिक को चैतन्य करताहै उसे प्राप्तहोता है वही क्षेत्रज्ञ सब बुद्धियोंका ज्ञाता और गुणोंसे जुदाहोकर सबपापोंसे छूटताहै १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंबादे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

इसप्रकार साधनों समेत ब्रह्मबिद्याको समाप्त करके शिष्यकी बुद्धिकी परीक्षाके अर्थ मिले हुये बचनोंसे ब्रह्माजी बोले कि कोईतो इस संसार वृक्षको ब्रह्मरूप कहतेहैं अर्थात् ब्रह्मही जगत् रूप से रूपान्तर दशा करताहै कोई अव्यक्त ब्रह्म कहते हैं कोई सब उपाधियोंसे रहित परब्रह्म कहतेहैं(आशय यहहै कि जगत् स्वप्नकेसमान कल्पितहै अब सांख्यमत को कहते हैं) और कोई मानते हैं कि अब यह सब अव्यक्तसे प्रकट होनेवाला औरउसीमें लयहोनेवाला है १ जो उपासक अन्तसमयपर एक दम भी ब्रह्मरूप होय वह हार्द्राकाश में ब्रह्मकी उपासना करके ब्रह्मलोकके मार्ग से मोक्षके योग्य होता है २ सिवाय उपासना के जो पलमात्रभी आत्माको आत्मामें लयकरे तब ब्रह्माकार मनकोस्वच्छतासेज्ञानियोंका लय स्थान कैवल्यमोक्षको पाताहै ३ वह बारंबार प्राणायामों से प्राणरूप इन्द्री मन और बुद्धिको रोककर चौबीसवेंसे परे आत्माको पाताहै वह प्राणायाम यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, बिहार, धारणा, ध्यान, समाधि, त्याग, बैराग्य इनभेदोंसे दश हैं अथवा मैत्रेय करुणादिक से बारह हैं अथवा पांचयम पांचनियम छःप्राणायामादिक, चार मैत्रीआदिक दो तर्क, वैराग्य इनभेदोंसे

बाईस हैं ४ इसप्रकार शुद्ध सतोगुण रखनेवाला योगी योग सामर्थ्य से जो जो चाहताहै उस उसको पाताहै जब अव्यक्तको पाकरसतो-गुण श्रेष्ठतम होताहै तब अविनाशीपनेके योग्य होताहै ५ सतो-गुणसे श्रेष्ठ कोई दूसरा नहींहै यहां उसके जाननेवाले पुरुष उसकी प्रशंसा करतेहैं—हम अनुमानसे पुरुषको सतोगुणमें नियत जानते हैं हेऋषियो पुरुषको दूसरे प्रकारसे पाना संभवनहींहै ६ शान्ती, धैर्य्य, अहिंसा, समता, सत्यता, सत्यबोलना, ज्ञान, तर्क, संन्यास यह सतोगुणी रीति प्रीतिके योग्य कीजातीहै ७ तार्किकलोग इसी अनुमानसे सतोगुण और पुरुषको एकही मानते हैं इसमें बिचार करना नहींहै ८ बुद्धिमान् तार्किक जो ज्ञानमें नियतहैं क्षेत्रज्ञ आत्मा और सतोगुणकी ऐक्यता कहते हैं परन्तु यह सिद्ध नहींहोताहै ९ इसलिये सतोगुण आत्मा से पृथक् है तार्किक पुरुषों ने उसको नहीं बिचारा उनकी पृथक्ता और ऐक्यता मुख्यता से जाननी योग्यहै (आशयार्थ) सतोगुण और पुरुष समुद्र और समुद्र की लहरोंके समानहैं कि दोनों पृथक् बिदित होतेहैं जैसे कि लहरके गुप्तहोनेपर समुद्र बाकी रहताहै उसीप्रकार मोक्षदशा में सतोगुण नियत नहीं रहता १० इसरीतिसे सतोगुण और पुरुषके एकजात होनेपर जड़ औरचैतन्यका बिभाग नहींहोताहै यह शङ्काकरके कहते हैं कि जैसे गूलर और उस के भीतर नियत होनेवाले भुनगों में एकता और पृथकता भी दिखाईपड़तीहै उसीप्रकार सतोगुण और पुरुषकी ऐक्यता और पृथकताभी कही जातीहै यह ज्ञानियोंकी युक्तिहै दूसरा अर्थ जैसेकि गूलरके फलमें बाहरी वस्तुओंका प्रवेश नहोनेसे भुनगा उसीका अंग और उससे दूसरी जातहै इसीप्रकार चैतन्य का बिलास सतोगुण उससे पृथक होकर जड़रूपसे प्रकट होताहै १२ जिसप्रकार जलसे दूसरी मछली जलहीके मध्यमेंहोय उसीप्रकार इन दोनोंकी भी ऐक्यताहै और जैसे कि कमलपत्रपर जलकणों की स्थिति होतीहै उसीप्रकार उनकाभी योग सम्बन्धहै अर्थात् पुरुष चसंगहोनेसे सतोगुण धर्मोंसे लिप्तनहीं होताहै उसकी

लिप्तता मानीहुईहै १२ गुरूजी बोले कि तब इसप्रकार शिक्षाकिये हुये सन्देह में पूर्ण उत्तम मुनियोंने लोकके पितामह ब्रह्माजी से फिर पूछा १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्यसंवादे अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

इसप्रकार सन्दिग्ध चित्तमनुष्य प्रथमशास्त्रोंमें तर्कना करते हैं उसकेप्रकट करनेको ऋषिबोलेकि इसलोकमें प्रवृत्तिनिवृत्तधर्मरूप कर्म्मोंमेंसेकौनसाकर्म्म पूरे अभ्यासके योग्यमानाहै हमनानाप्रकारकी धर्मगतियोंको एकदूसरेकी खंडनकरनेवाली देखतेहैं १ कोईकहते हैं कि शरीरके नाशहोनेके पीछेभी आत्माहीहै और कोई कहते हैं कि यहनहींहै कोई सबको सन्देहयुक्त कहतेहैं कोई २सन्देहसे रहितभी कहतेहैं २ कोई तार्किकआदि कहतेहैं कि यह विनाशमानहै अर्थात् उत्पत्ति और नाशसेसंयुक्तहै कोई मीमांसक कहतेहैंकियहसबनित्य प्रवाहहै और कोई २ शून्यवादी कहतेहैं कि नहींहै और सौगतमत वाले कहतेहैं कि है परंतु एक २ क्षणमें उत्पन्न नियत और नाश होने वालाहै और योगाचार्य्यकहतेहैं कि वह एकरूपविज्ञानहीदोप्रकार काहोगयाहै कोईइड़लोम मतवाले कहतेहैं कि वह मिला और अनमिलाहै ३ जोआत्मज्ञ अपरोक्ष ज्ञानवाले ब्राह्मणहैं वह मानतेहैं कि एक ब्रह्महीहै और सगुण उपासक उसको पृथक् कहते हैं और परमाणुवादी कारणोंकी आधिक्यतावर्णनकरतेहैं ४ कोई ज्योतिषी दोनोंदेश और कालको कहतेहैं और कोईजटामृगचर्म्मधारी वृद्धलोग कहतेहैं कि यह सब प्रत्यक्ष संसार तीनोंकाल मेंभी नहींहै स्वप्नके राज्यकी समान केवल चिदात्मा का विलासहै ५ कोईनैष्ठिक ब्रह्मचर्य्यको चाहतेहैं कोई गृहस्थाश्रमको इच्छाकरतेहैं हे देवता ब्रह्मज्ञानी तत्वदर्शी ब्राह्मण इसप्रकार मानतेहैं ६ कोई आहारकोचाहते हैं कोईभोजनके त्यागनेमेंप्रवृत्तहैं कोई कर्मकी प्रशंसा करतेहैं कोई

संन्यासको अच्छा कहतेहैं ७ कोई दोनों देश और कालको कहते हैं कोई कहतेहैं यह नहींहै कोई मोक्षकी प्रशंसा करतेहैं कोई पृथ-क् २ प्रकारके भोगोंको श्रेष्ठ कहतेहैं ८ कोई धनोंको चाहतेहैं कोई निर्द्धनताको चाहतेहैं कोई ध्यानादिक साधनोंको करके कहतेहैं कि यह नहींहै अर्थात् आत्माके सिवाय सबमिथ्याहै ९ कोई हिंसा के त्यागनेवालेहैं कोई हिंसामें प्रवृत्त हैं कोई पुण्य और शुभकीर्त्ति में प्रवृत्तहै कोईकहतेहैं कि पुण्यादिक नहींहै १० सतभाव में प्रवृत्तहैं कोईसन्देहोंमें नियतहैं कोई मनुष्य कहतेहैं कि दुःखकीनिवृत्ति और सुखकी प्राप्तिके अर्थध्यान करना चाहिये कोई अनिच्छा कर्म फल को अच्छाकहतेहैं ११ कोई ब्राह्मण यज्ञकोअच्छा कहतेहैं कोई दान की प्रशंसा करतेहैं कोई तपको कोई वेदपाठको अच्छाकहतेहैं १२ कोई कहतेहैं कि वह ज्ञानस्वरूप संन्यासहीसे प्राप्तहोताहै औरबि-भूत चिन्तकलोग कहतेहैं कि बहुतसाधन करने से ज्ञान प्राप्तहोता है कोई सब को अच्छाकहते हैं कोई उसके बिपरीत हैं १३ हेश्रेष्ठ देवता इसरीतिसे धर्ममें अनेक प्रकारका ज्ञान बिपरीतकर्मता होने पर अत्यन्त अज्ञानी हमलोग निश्चयकोनहींपातेहैं यह कल्याणका-र्य्यहै इसप्रकार बारंबार लोगपरस्पर बिपरीत बार्त्ताकरतेहैं जोजिस धर्ममें प्रवृत्तहै वहउसीको अच्छाकहताहै १४।१५ इसीहेतुसे तुमने हमारी बुद्धिको अशिक्षित वर्णनकिया और मन बहुतप्रकारकाहुआ है बड़ेसाधु देवता हम इसको जानना चाहतेहैं कि कल्याण क्या है १६ इसके अनन्तर जोगुप्त पदार्थहै आपउसके कहनेकोयोग्यहैं सतोगुण और आत्माका संयोगभी किसीहेतुसेहै १७ उनब्राह्मणों के ऐसे २ बचनोंको सुनकर उस धर्मात्मा बुद्धिमान् संसारके कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजीने इन सब बातोंके ठीक२ उत्तर उन ब्राह्मणों को दिये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंबादएकोनपंचाशतमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे बड़े साधुओ बहुत अच्छेप्रश्न तुमने पूछेहैं उनकाउत्तर जैसे गुरूने शिष्यको पाकर कहाहै उसको मैं तुमसेकहताहूं १ यहां तुम उस सबको सुनकर अच्छी रीतिसे धारण करो सब जीवोंकी हिन्सा न करना नाम कर्म कल्याणमाना है २ यह अहिन्सा कर्म ब्रह्म से मिलानेवाला निर्भय श्रेष्ठ और धर्मरूप लक्षण रखनेवाला है मुख्यता के जाननेवाले वृद्धों ने ज्ञानको: ही कल्याणरूप कहाहै ३ इसीहेतुसे शुद्ध ज्ञानके द्वारा सब पापोंसे रहितहोताहै जो मनुष्य हिन्सामें प्रवृत्तहैं और जो नास्तिक चलन रखनेवालेहैं और जो लोभ और मोहसे संयुक्तहैं वह सब नरकगामीहैं ४ जो निरालस्य मनुष्य सफलकर्म करते हैं वह बारंबारजन्म लेनेवाले होकर इसलोकमें आनन्द करते हैं ५ जो श्रद्धावान् पंडित अनिच्छा पूर्व्वक योगयुक्त होकर इच्छासे रहित कर्म करते हैं वह बुद्धिमान् और सदाचारीहैं ६ हे बड़ेसाधु ऋषियो इसकेपीछे सतोगुण और क्षेत्रज्ञकी एकयता और पृथकता जैसेप्रकारको है उसको मैं कहताहूं तुम चित्त लगाकर समझो ७ यहां यह बिषय और बिषयिक नाम संबंध कहाजाता है पुरुष सदैव बिषयी और सतोगुणबिषय है ८ पूर्बकल्पसे बर्णन कियागया है कि सदैव जड़रूप सतोगुण ऐसे अपने को भोजन रूप नहीं जानताहै जैसे कि गूलर भुनगों को अर्थात् सतोगुण गूलर के समान आपको और अपने भोजन करनेवाले को नहीं जानता है और भोक्ता पुरुष भुनगेकी समान दोनोंको जानताहै जो इसप्रकार जानताहै वहक्षेत्रज्ञहै ९ सतोगुण सदैव सुख दुःखादिक रूपान्तरदशासे युक्तहै और क्षेत्रज्ञ सदैव इनयोगोंसे छुटाहुआ उपाधिसे पृथक् निर्गुण और प्राचीनहै अर्थात् उनका सम्बन्ध मुख्यनहींहै कल्पित है ज्ञानियोंने इसको कहाहै १० वह क्षेत्रंज्ञ अपने अधिष्ठान सतोगुण से बराबरी और एक नामता प्राप्त करनेवाला और सर्व्वत्र नियत है सदैव सतोगुणको ऐसे भोग-

ताहै जैसे कि जलसे पृथक् कमलकापत्र जलको भोगताहै ११ ज्ञानी सबगुणोंसे युक्त होकर भी ऐसे लिप्त नहींहोताहै जैसे कि कमलपत्र पर नियत चलायमान अंबुकण उससे किंचित्भी लिप्तनहींहोते १२ इसीप्रकार पुरुषभी सतोगुणसे निस्सन्देह जुदारहताहै परन्तु सतोगुण और पुरुष दोनोंमिलकर द्रवमात्र अर्थात् निश्चयकरके सतोगुणरूपहुये(तात्पर्य्य)जैसे कि रस्सी और रस्सीमें नियत सर्पकी भ्रान्ति दोनों सर्पमात्र होतेहैं १३ जिसप्रकार द्रव और कर्त्ताहैं उसीप्रकार उन दोनोंका मिलापहै वह तीनोंमिलकर द्रवरूप होतेहैं फिर द्रवसे पुरुषका बियोग कैसे है उसको कहते हैं जैसे कि कोई बड़ा दीपक लेकर अंधेरे में जाता है उसीप्रकार सतोगुणरूपी दीपक से ब्रह्म के चाहनेवाले चलतेहैं अर्थात् सतोगुण के रूपान्तर ब्रह्मज्ञान से सतोगुण और पुरुषको पृथक् जानतेहैं १४ जबतक तेल और बत्ती है तबतक दीपक प्रकाश करताहै उन तेल और बत्तीके समाप्तहोने पर दीपककी ज्योतिगुप्त होजातीहै यही सतोगुण का वृत्तान्तहै १५ इसप्रकार सतोगुण प्रकटहै और पुरुष गुप्तहै जो कि अभीष्टहै हे ब्राह्मणो इसको जानो अर्थात् समाप्त होनेके पीछे अथवा कर्म के नाश होनेमें वह सतोगुण आपबिजयी होजाताहै और पुरुषसमाधि सुषुप्ती और सुखका साक्षीहै और तुम से कहताहूं १६ कि दुर्बुद्धी मनुष्य हजारों दृष्टान्तोंसे भी बुद्धिको नहीं पाताहै और बुद्धिमान् चौथाई शिक्षासे भी सुखसे वृद्धिपाताहै १७ इसप्रकार उपायसेधर्म का पूरासाधन जानना योग्यहै उपाय का ज्ञाता बुद्धिमान् पुरुष असंख्य सुखको पाताहै १८ जैसे कि मार्ग का खर्च न रखनेवाला मनुष्य किसीमार्ग में बड़े कष्टसे जाताहै और वह मार्ग के मध्यमें नाशभी होजाताहै १९ उसीप्रकार ज्ञानसाधनकर्मों में भी जानना योग्यहै फल होताहै और नहीं होताहै अर्थात् बहुत पुण्यरखनेवाला पूर्णयोगको पाताहै और थोड़ा पुण्यरखनेवाला योगसे पूर्वही मर जाताहै पुरुषका कल्याण चितमेंही है और शुभाशुभ कर्म दृष्टान्त रूपहैं २० जैसे कि न देखे हुये बड़ेमार्गको बिचारकिये पैरोंसेजाता

है वैसाही योगरहित भी होताहै २१ और जिसप्रकार उसीमार्गको शीघ्रगामी और घोड़ोंसे युक्त रथकी सवारी से जाताहै उसीप्रकार योगीलोगोंकी भी गतिहै (अर्थ) शास्त्ररूपरथसे संसाररूपी मार्ग उल्लंघन करना योग्यहै २२ परम्पद रूपी ऊंचे पर्व्वतपर चढ़कर रथसे दुःख पानेवाले अपूर्णयोगी को देखते शास्त्ररूपी पृथ्वीको नहीं देखते २३ जबतक रथ का मार्गहै तबतक वह योगी रथ की सवारीसे जाताहै और रथमार्गके न होनेपर रथको छोड़कर चलता है अर्थात् चित्तकी पवित्रतातक शास्त्रकी आज्ञापर कर्महोताहैपरंतु फिर वह तत्त्वको जानता क्रम पूर्व्वक इनहंसऔर परमहंस आश्रम को अच्छीरीति से जानकर प्राप्त करताहै २४ इसप्रकार योग में बुद्धिमान् तत्त्ववुद्धी को जाननेवालायोगी जाताहै और अच्छेप्रकार से जानकर एक मार्गसे दूसरे उत्तम मार्गपर चलताहै २५ जैसे कि नौका न रखनेवाला मनुष्य भूलसे बड़े भयकारी समुद्रको भुजाओं से मझाताहै वह निस्सन्देह मृत्युको चाहताहै२६ और जिसप्रकार भेदोंका जाननेवाला योगी श्रेष्ठवल्ली रखनेवालीनौकाकेद्वारा आनन्दसे जलमें चलताहै वह शीघ्रही हृदसे पारहोताहै (तात्पर्य)रथ रूपी गुरूके बिनामार्ग व्यतीत नहीं होताहै२७ वहपार होनेवाला ममतासे रहित योगी नौकाको छोड़कर संसारसागर के अन्तपर जाताहै रथ और पदाती का जैसा वृत्तान्तहै वह प्राचीन शास्त्र से मैंने वर्णन किया २८ जैसे कि मोहसे नौकामें डूबताहै उसीप्रकार गुरूआदिक की प्रीतिसे अचेत और ममता से आधीन होता हुआ उसी संसारसागरमें घूमताहै २९ जैसे नौकापर सवारहोकरस्थल पर घूमना असंभवहै उसीप्रकार रथपर सवारहोकर जलमें चलना नहीं होताहै तात्पर्य्यहहै कि कर्माधिकारीको योग और योगाधिकारीको कर्म करना उचितनहीं ३० इसप्रकार नानाप्रकारका कर्म फल पृथक् २ आश्रममें नियतहै जैसाकर्मकाफलहै लोकमें वैसाही प्राप्तहोताहै३१जो गन्ध रस रूप शब्द स्पर्श न रखनेवाला और जानने के योग्यहै मुनिलोग उसको बुद्धिसे जानतेहैं और प्रधान

कहते हैं ३२ उस स्थानपर प्रधान अव्यक्तहै अव्यक्तका अव्यक्तसे उत्पन्न महत्तत्त्वहै और प्रधानरूप महत्तत्त्वसे उत्पन्न अहंकारहै ३३ अहंकारसे पंचतत्त्वकेशब्दादिक बिषय प्रकटहुये वही बिषय पंचतत्त्वोंकेपृथक्२गुण कहेजातेहैं ३४उसीप्रकार अव्यक्त उत्पाद्य उत्पादक रूपहै ३५ महत्तत्त्वभी उत्पादक उत्पाद्यरूपहै अहंकारभी उत्पादक और बारम्बार उत्पाद्यरूप हैं यह हमने सुना है ३६ पंचतत्त्व भी उत्पादक उत्पाद्यरूप हैं पंचतत्त्वोंके शब्दादिक गुण उत्पादकरूप और उत्पाद्यरूप भी होते हैं उन्होंके भेदोंका कारण चित्त है ३७ उनमें आकाश एकगुण रखनेवाला बायु दोगुण रखनेवाला कहा जाताहै अग्नि तीनगुण रखनेवाला और जल चारगुण रखनेवाला है ३८ स्थावर जंगमजीवोंसे पूर्ण सब जीवोंकी उत्पन्न करनेवाली शुभाशुक कर्म्म फलकी दिखानेवाली देवी पृथ्वीको पांचगुण रखनेवाली जाननाचाहिये ३९ हे बड़ेसाधु ऋषियो शब्द स्पर्श रूपरस गन्ध यह पांचगुणपृथ्वीकेजाननेयोग्यहैं४०पृथ्वीकामुख्यगुणगन्ध है वह बहुत प्रकारकाकहा उसगन्धके बहुतसे गुणोंको ब्योरेसमेत कहताहूं४१ इष्ट[1],अनिष्ट[2],मधुर[3],अम्ल[4],कटु[5],निर्हारी[6],संहत[7],स्निग्ध[8],रूक्ष[9] बिशद[10],इसप्रकारपृथ्वीकी गन्धकोदशप्रकारकाजाननाचाहिये शब्द स्पर्शरूप रसयहजलकेगुणहैं४२।४३अबरसज्ञानकोकहताहूंवहरस बहुतप्रकारका कहाहै मधुर,अम्ल,कटु,तीक्ष्ण,कषैला,निमकीन ४४ इसप्रकारसे जलकारस गुणछःप्रकारकाहै शब्दस्पर्श और रूप यह तीनगुण रखनेवाला अग्नि कहाजाताहै ४५ अग्निका मुख्यगुण रूपहै वह रूप बहुतप्रकारका कहाहै श्वेत,कृष्ण,रक्त,नीला,पीला, अरुण ४६ ह्रस्व, दीर्घ, कृश, स्थूल, चतुरस्र, वृत्तसम इसप्रकार अग्निकारूप बारहप्रकारका कहाताहै ४७धर्म्मज्ञ सत्यवक्ता वृद्ध ब्राह्मणोंसे जाननेके योग्यहै शब्दस्पर्श जाननेचाहियें क्योंकि बायु भी दोगुण रखनेवालाहै ४८ बायुका मुख्यगुण स्पर्श है वह स्पर्श

१ प्रिय २ अप्रिय ३ मीठा ४ आंबिल ५ करुआ ६ हिंग्वादिक ७ चित्रगंध ८ चिकना ९ रूखा १० उज्ज्वल ॥

अनेकप्रकारकाहै रूखा, शीतोष्ण, स्निग्ध, बिशद ४९ कठोर, चिक्कण, श्लक्ष्ण, पिच्छल, दारुण, मृदु इसप्रकार बायुका गुण बारह प्रकारका कहाता है ५० धर्मज्ञ तत्त्वदर्शी सिद्धब्राह्मणों से बुद्धिके अनुसार जानागया ५१ उनमें आकाश एकगुण रखनेवालाहै उसको शब्द कहते हैं उस शब्दके बहुत गुणोंको व्योरेसमेत कहताहूं ५२ खड़ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, निषाद, धैवत, इष्ट, अनिष्ट, संहतनाम प्रकार रखनेवाला जाननेके योग्य है ५३ इसप्रकार आकाशसे प्रकट शब्द दशप्रकारका जाननायोग्यहै आकाश उत्तम तत्त्वहै उससे श्रेष्ठ अहंकार है अहंकारसे उत्तमबुद्धि है बुद्धिसे श्रेष्ठ महत्तत्त्वहै उससेश्रेष्ठ अव्यक्तहै अव्यक्तसे श्रेष्ठतम पुरुषहै ५४।५५ जो ज्ञानी भूतोंके परापरका ज्ञाताहै सब कर्म्मोंकी रीतोंका जाननेवाला और सृष्टिभरेका आत्मारूपहै वह न्यूनतासे रहितआत्मा को प्राप्तहोताहै ५६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्य संवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि जिसप्रकार मन पंचभूतोंका ईश्वर है और उत्पत्ति वा नाशमें भी मनही जीवधारियोंका ऐसे स्वरूप है जिस प्रकार कुण्डलादिक का सुवर्ण स्वरूप है १ उसीप्रकार वह मन सदैव बड़े भूतोंकाभी निमित्त कारणहै व्यक्तसे उत्पन्न बुद्धि मनका ऐश्वर्य्य कही जातीहै वहीमन जीवात्माकहाताहै २ मनही इन्द्रियों को शरीररूपी रथमें ऐसेजोड़ताहै जैसे कि सारथी उत्तम घोड़ों को जोड़ताहै—और इन्द्री मन और बुद्धि सदैव क्षेत्रज्ञमें मिलजातेहैं ३ इंद्रीनाम घोड़ोंसेयुक्त बुद्धिरूप सारथीसे पकड़ाहुआ जो रथहै शरीराभिमानी जीवात्मा उसपर चढ़कर सुखकी इच्छासे चारोंओरको दौड़ताहै(तात्पर्य) जो इन्द्री मन और बुद्धिसे वहिर्मुखहैं वह आत्मा कोजीवनाम करतेहैं और जो अन्तर्मुखहैं वह उसके ब्रह्मभाव को

प्रकट करतेहैं अगलेश्लोकमें देखो ४ इन्द्रीजित रूप घोड़े मन रूप सारथी बुद्धिरूपी चाबुकसे संयुक्त बड़ारथ ब्रह्मरूपहै ५ इसरीतिसे जो योगीसदैव ब्रह्मरूप रथको जानताहै वह ध्यानका अभ्यासी सब सृष्टिमें मोहको नहींपाताहै ६ अव्यक्तसे लेकर शब्दादिकविषयतक और जड़ चैतन्य जीवभी जिसका स्वरूपहै और जिसमें सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणोंसे दीखताहै और ग्रह नक्षत्रादि से शोभायमान है ७ नदी और पर्व्वतोंके जालोंसे सबओरको अलंकृतहै उसीप्रकार नानाप्रकार का होकर नानाप्रकार के जलोंसे सदैव अलंकृतहै ८ सबजीवोंके जीवनका कारण और सब प्राणीमात्रों की गतिहै यह प्राचीन ब्रह्मबन कहाता है उसमें क्षेत्रज्ञ आत्मा बिचरताहै ९ इस लोकमें जो स्थावर जंगमजीव हैं वह प्रथमलय होतेहैं उसके पीछे शब्दादिक गुणलय होतेहैं उनगुणोंकेपीछे सूक्ष्म महाभूत लय हो-जातेहैं यह स्थूल सूक्ष्मशरीररूपदोनों प्रकारके महाभूतोंका लयहो कर चिन्मात्ररूप से नियतहोनाहै १० देवता मनुष्य गन्धर्व पिशाच अप्सरा राक्षस यह सब स्वभावसे उत्पन्न हुयेहैं यज्ञादिकोंसे नहीं हुयेहैं और न ब्रह्मादिक सृष्टिकर्त्ताओं से ११ हे ब्राह्मणो यहसृष्टि का कर्त्ता और मरीच्यादिक ऋषि बारंबार प्रकट होतेहैं वहसब भूत उनही पांचोंतत्वों में नियत समयपर ऐसे लय होजाते हैं जैसे कि समुद्रमें तरंगलयहोजातीहैं १२ इनसृष्टिकर्त्ता स्थूल महाभूतोंसे श्रेष्ठ सूक्ष्म महाभूतहैंयोगीउन सूक्ष्म महाभूतोंसे छुटेहुयेभी परमगतिको पातेहैं १३ प्रभुब्रह्माने इससब को संकल्परूप मनसेही उत्पन्न किया है उसीप्रकारऋषियोंने वेदोंको मन इन्द्रियोंके एकत्र होनारूप तप सेही प्राप्तकिया १४ उसीप्रकारफलखानेवाले सिद्ध और संकल्पक्रम द्वारासमाधियुक्त ऋषि तपके द्वारा तीनोंलोकोंको देखतेहैं १५ औषधी नीरोगता आदिक अनेक प्रकारकी सबविद्या तपसेही सिद्ध होतीहैं साधनका मूलतपहै १६ जोदुष्प्राप्य इन्द्रादिक पदहैं और जो वेदा-दिकहैं जो दुराधर्ष अग्निआदिकहैंऔरजो महाप्रलयादिकहैं वहसब तपसेही सिद्धहोतेहैं तप बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोताहै १७ मद्यपान

ब्राह्मण का मारनेवाला चोर भ्रूणहत्या करनेवाला गुरु की स्त्री से भोगकरनेवाला यहसब अच्छेतपेहुये तपसेही उस पापसे छूटते हैं १८ मनुष्य पितरदेवता पशुमृगपक्षी और जो अन्यस्थावर जंगम जीवहैं १९ वहसदैव तपकोही श्रेष्ठ माननेवालेहैं और तपसेही सदैवसिद्धहोतेहैं उसीप्रकार बड़ीमायावाले देवता तपके द्वारा स्वर्गं को गये २० आलस्यसे रहित अहंकारयुक्त मनुष्य अपनी इच्छासे कर्म्मोंको करतेहैं वह प्रजापतिके लोकमें जाते हैं २१ ममता और अहंकार से रहित महात्मा लोग शुद्धध्यान के द्वारा महत्तत्त्व योग से संबन्ध रखनेवाले उत्तमलोकको प्राप्त करते हैं २२ सदैव शुद्ध मन बुद्धिवाले पूर्ण योगी मनुष्य ध्यानयोग को प्राप्त करके उस अखंड आनन्द स्वरूप निराकार ब्रह्ममें प्रवेश करते हैं जिससे सब संसार के सुखों की वृद्धिहै २३ ममता और अहंकार से जुदेमनुष्य पूर्ण ध्यानयोगको न पाकर उस अव्यक्तमें अर्थात् प्रकृति माया में प्रवेश करते हैं जोकि महत्तत्त्वादिक तत्त्वोंका श्रेष्ठ लोकहै २४ जो अव्यक्त सेही प्रकट हुआ था फिर अव्यक्त रूपको पाया तमोगुण रजोगुणसेछूटा सबपापोंसेजुदा मनुष्य शुद्ध सतोगुणमें नियतहोकर सबको उत्पन्न करताहै उसको ईश्वरजाने जो उसको जानताहै वह वेदका जाननेवाला है २५।२६ मनके द्वारा ज्ञानकोपाकर सावधान मुनि होताहै जो चित्तहै उसीका रूपहोताहै अर्थात् जिस रूपका ध्यानकरताहै वही होताहै वह स्थिर प्राचीन और गुप्तहै२७ अव्यक्त सेलेकर शब्दादिक तक अविद्याका चिह्न कहा उसीप्रकार गुणोंसे इस लक्षणको जानो २८ दो अक्षर मृत्युहोतेहैं और तीन अक्षर अविनाशी ब्रह्म हैं मम अर्थात् मेराहै यहमृत्युहै, और न मम अर्थात् मेरानहीं यह सनातन ब्रह्महै २९ कोईनिर्बुद्धी मनुष्य कर्म्मकी प्रशंसा करतेहैं जो महात्मा वृद्धहैं वह कर्मकी प्रशंसानहीं करते ३० कर्म्महीसे अर्थात् पञ्चतत्त्व दशों इन्द्रियों और मन इन सोलहवस्तुओं का रखनेवाला शरीर है उसका धारण करनेवाला जीव उत्पन्न होताहै परन्तु ब्रह्मविद्या उससोलह अंगरखनेवाले पुरुषको निर्मल

जातीहै वह बिद्या उनकी स्वीकृतहैं जो कि देवता आदिकसे शेष बचेहुये अमृतको भोजन पान करनेवालेहैं ३१ इसलिये जो कोई दूरदर्शी हैं वह कर्मोंमें प्रीतिनहीं करते यह पुरुष बिद्यारूपहै कर्म रूप नहीं कहाजाताहै ३२ जो इसप्रकार उस बंधनसे जुदा अबिनाशी प्राचीन सदैव रहनेवाले असंग आत्माको जानताहै वह चित्त का जीतनेवाला ज्ञानी सदैव जीवन्मुक्त होताहै ३३ जो इस प्रकार इस अनुपम अकल्पित प्राचीन अजित बन्धनसे रहित ईश्वरकोभी अपने में लयकरनेवाले परमात्माको जाने वह उन आगेलिखे हुये कारणों के बन्धनसे रहित अबिनाशी और अचेष्ट होताहै ३४ वह मैत्री आदिक सब संस्कारों को दृढ़ करके चित्तको हृदय कमलमें रोककर उस शुभब्रह्मको पाताहै जिससे श्रेष्ठ और वृद्ध कोई वर्त्तमान नहींहै ३५ चित्त शुद्धीमें शान्ती प्राप्तकरे चित्तकी शुद्धीकाचिह्न इस प्रकारका है जैसे कि स्वप्नका देखना होताहै (तात्पर्य्य) जैसे कि स्वप्नमें शरीरके स्नेहसे जुदा होकर निवासहै उसीप्रकार जब चित्तयोग युक्तिके द्वारा बाहिरी बस्तुओं से रहित अन्तरचारी होताहै वह शुद्धताका चिह्नहै ३६ यह चित्त शुद्धी मुक्त पुरुषोंकी गति है जो ज्ञानमें निपुण और पूर्णहैं वह उन भूतभबिष्य वर्त्तमान इन तीनों कालकी बस्तुओंको देखतेहैं जो कि रूपान्तर दशासे उत्पन्न हैं ३७ बिरक्त पुरुषोंकी यह गतिहै यह सनातन धर्महै यह मिलना ब्रह्मज्ञानियोंका है यह रीति निर्दोषहै ३८ जो सब जीवों में एकसा भाव रखनेवाला अनिच्छावान् मनोभिलषित को न चाहनेवाला और सर्बत्र समदर्शीहै उसको इसगतिका प्राप्तहोना संभवहै ३९ हे बड़ेसाधु ब्रह्मऋषियो मैंने यह सब तुमसे कहा इसपर शीघ्र ध्यानकरो इसीसे सिद्धीको पावोगे ४० गुरूने कहा ब्रह्माजीसे इस प्रकार कहेहुये उन महात्मा मुनियों ने उसीप्रकार से कर्म किया और उसी से ब्रह्मलोकको पाया ४१ हे पवित्रात्मा भाग्य शील शिष्य तुमभी मुझसे कहेहुये इस ब्रह्माजीके बचनको अच्छीरीतिसे काममें लावो इसीसे अवश्यसिद्धीको पावेगा ४२ बासुदेवजी बोले

कि हेकुन्तीके पुत्र तब गुरुसे इसप्रकार शिक्षापाये हुये उस शिष्यने सब उत्तम धर्मोंका अभ्यास किया उससे उसने मोक्षको पाया४३ हेअर्जुन तबउसकृतकृत्य शिष्यने उसलयकेस्थानब्रह्मकोप्राप्तकिया जिसमेंप्राप्तहोकर फिर नहीं शोचकरताहै४४ अर्जुननेकहा हेदुष्ट-संहारी श्रीकृष्णजी यहब्राह्मण कौनहै और शिष्यकौनहै हे प्रभुजो यह बातमेरे श्रवण करने के योग्यहै तो आप उसकोमुझसे कहिये ४५वासुदेवजी बोले हे महाबाहु अर्जुनक्षेत्रज्ञ होकर मैंहीं गुरुहूं औरमेरेही मनकोशिष्य जानो मैंने तेरी प्रीतिसे इस गुप्त रहस्यको वर्णन किया ४६ हे सुंदरव्रतवाले अर्जुन जो सदैव तेरी प्रीतिमुझ मेंहै तब तुम इस ब्रह्मज्ञान को सुनकर अच्छीरीति से अभ्यास करो अर्थात् यम नियमों पर प्रवृत्त होजावो ४७ हे शत्रुविजयी फिरतुम इस धर्मके अच्छे प्रकार अभ्यास करने पर सब पापों से मुक्तहोकर कैवल्यमोक्षको पावोगे ४८ प्रथमयुद्धके वर्त्तमानहोनेके समयपरभी मैंनेयही ज्ञानतुझसे कहाथा हे महाबाहु इसीहेतुसेइस में चित्तको लगावो ४९ हे भरतर्षभ अर्जुनमैंने बहुतसमयसे अपने प्रभुपिताको नहीं देखाहैमैंतेरे सम्मतसे उनको देखनाचाहताहूं५० बैशंपायन बोले कि इसवचनके कहनेवाले श्रीकृष्णजीको अर्जुनने उत्तरदिया कि हेश्रीकृष्णजी हमअबहीं हस्तिनापुर को चलेंगे ५१ वहांधर्मात्मा राजायुधिष्ठिरसे मिलकर और पूंछकर आप अपनी पुरीमें जानेको योग्यहो ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुगुरुशिष्यसंवादेसकपंचाशत्तमोऽध्यायः५१

इतिब्राह्मणगीतासमाप्तम् शुभंभूयात् ॥

बावनवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले इसकेपीछेश्रीकृष्णजीने दारुकसारथीको आज्ञा करी कि रथतैयारकरो तबदारुकने दोहीघड़ीमें प्रार्थनाकरी कि रथ तैयारहै१ इसीप्रकार पांडव अर्जुनने सेनाको आज्ञाकरी कि तैयार हो हमहस्तिनापुर कोजायंगे२ हेराजा इसप्रकारसे आज्ञाकोपाकर

वह सेनाके लोग सबतैयार होगये औरबड़े तेजस्वी अर्जुनसे बिनय करी कि सेनातैयार है ३ हे राजा इसके अनन्तर वह प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुनरथमें सवार होकर अपूर्व्व बार्त्तालाप करतेहुये चले ४ हे भरतर्षभ महातेजस्वी अर्जुनने इनसवारहुये बासुदेवजी से फिर यह बचनकहा ५ हे श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिरने आपकी कृपासे बिजय पाई शत्रुभी मारेगये अब यह राज्य निष्कंटक प्राप्त हुआ ६ हेमधुसूदनजी पांडव आपसेही सनाथहैं नौकारूपी आप-कोपाकर कुरुरूपी सागरसे पारहोगये ७ हे संसारकेकर्त्ता जगदा-त्माबिश्वरूप तुमको नमस्कारहै जिसप्रकार आपसबके अंगीकृतहो उसीप्रकार मैंभी आपको जानताहूं ८ हेप्रभु मधुसूदनजी यहजी-वात्मासदैव आपके तेजसे प्रकटहै आपकी उत्पत्तिक्रीड़ा निवास और नाशरूपहै औरदोनों संसार आपकी मायामेंहैं ९जो यहस्थावरजंगम नाम संसारहै वहसब आपकेरूप है तुमहीं चारोंप्रकार के सबजीव समूहोंको उत्पन्न करतेहो १०हेमधुसूदन तुम पृथ्वी अन्तरिक्ष और स्वर्गको उत्पन्न करतेहो निर्मल चांदनी आपका ईषद्धास्यहै औरसब ऋतु इंद्रियांहैं११सदैवचलनेवाला बायुआपका प्राणहैऔरआपका क्रोधही प्राचीनमृत्युहै औरप्रसन्नतामें लक्ष्मीहै हेमहाज्ञानीवहलक्ष्मी सदैव आपके पासहै१२ हेनिष्पाप प्रीति आदिक रति सन्तोषादिक तुष्टि धैर्य्यादिक धृति क्षमा क्षान्ति ज्ञान स्मरणादिक मति इन्द्रियों काजीतना आदिक शान्ति और तुमहीं स्थावर और जंगमहो अर्थात् आपकेही तेजसे प्रकटहैं और युगोंके अन्तमें तुमहीं नाशकिये जातेहो अर्थात् उनको अपने रूपमें लयकरतेहो१३आपके गुण चिरकालमें भी मुझसे कहने असंभवहैं तुमहीं आत्माहो परमात्माहो हेकमल-लोचन तुमको नमस्कार १४ हेअजेय आप नारद, देवल, व्यास और भीष्मजी के कहनेसे मुझको बिदितहुये १५ सब भूत तुमहींमें प्रबिष्ट हैं अकेले तुमहीं सबके ईश्वरहो हेपापोंसे रहित तुमनेअनु-ग्रहसे युक्त जो यह ज्ञान बर्णन किया१६ हेजनार्दनजी मैं इससब को अच्छी रीतिसे अभ्यास करूंगा तुमनेहमारे प्रियकरनेकी इच्छा

से यह अत्यन्त अपूर्बकर्म किया १७ जो युद्धमें वह पापी कौरव दुर्योधन मारागया मैंने तुमसे भस्मकरी हुई वहसेना युद्धमें विजय करी १८ दुर्योधनके युद्धमें आपने वह कर्मकिया जिससे बुद्धिकेद्वारा आपके बलसे मैंने बिजयपाई१६ आपनेही कर्ण पापी जयद्रथ और भूरिश्रवाके मारनेका उपाय बतलाया२० हेदेवकीनन्दन तुझप्रीति-मानूने जो मुझसे कहाहै मैं उसको अवश्य करूंगा इसमें मुझको किसीबातका बिचार नहीं करनाहै२१ हेधर्मज्ञ निष्पाप मैं धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरको पाकरआपके द्वारका जानेके विषय में प्रार्थनाक-रूंगा २२ हेप्रभु जनार्द्दनजी यह आपका द्वारका का जाना मुझको स्वीकारहै आपमेरे मामाजीको शीघ्र देखोगे २३ अजेय बलदेवजी को और उत्तम वृष्णियोंको देखोगे इसप्रकारकी बार्त्ता करनेवाले वहदोनों रथमें बैठेहुये हस्तिनापुरपहुंचे २४ और उसी प्रकार से वहदोनों उसनगर में घुसे जोकि अत्यन्त प्रसन्न लोगोंसे परिपूर्णथा हेमहाराज उन दोनोंने प्रथम इन्द्रभवनके समान धृतराष्ट्र के महल में जाकर २५ राजा धृतराष्ट्र कोदेखा बड़े बुद्धिमान् बिदुर राजायु-धिष्ठिर २६ अजेय भीमसेन पांडव नकुल सहदेव बैठेहुये धृतराष्ट्र अजेय युयुत्सु २७ बड़ी बुद्धिमान् गान्धारी कुन्ती तेजस्विनी द्रौप-दी और सुभद्रा आदिक उनसब भरतबंशियों की स्त्रियोंको २८ और गान्धारीकी दासी स्त्रियोंको देखा तदनन्तर उन शत्रुबिजयी श्रीकृ-ष्ण और अर्जुनने राजाधृतराष्ट्र के पासजाकर २६ अपने नामकह-कर उसके दोनों चरणोंको पकड़ा दोनों महात्माओंने गान्धारीकुन्ती धर्मराज युधिष्ठिर ३० और भीमसेन के चरणोंको स्पर्श किया और बिदुरजी से भी मिलकर कुशलक्षेम पूछी ३१ फिर उन सब समेत दोनोंने राजाधृतराष्ट्र केपासही अपनी बर्त्तमानता रक्खी इसकेपीछे महाराज बुद्धिमान् युधिष्ठिरहे रात्रिके समय उन पांडव ३२ और श्रीकृष्णको निवास स्थानपर जानेको बिदाकिया राजाकी आज्ञा पाकर वहसब अपनेर निवास स्थानोंकोगये ३३ पराक्रमी श्रीकृ-ष्णजी अर्जुन के घर गये वहां न्यायके अनुसार पूजित सब अभीष्ट

बस्तुओंसे तृप्त ३४ बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी अर्जुन समेत सोये प्रातःका-
लसन्ध्या आदिक कर्मदिनके प्रथम भागमें करके ३५ पोशाकआदिक
से अलंकृत वह दोनों धर्मराज के भवनमेंगये जिसमें कि बड़ेबली
धर्मराज अपने मन्त्रियों समेत बैठेथे ३६ उन दोनों महात्माओं ने
उस अत्यन्त अलंकृत भवनमें प्रवेशकरके धर्मराजको ऐसेदेखा जैसे
कि अश्विनीकुमार देवराजको देखते हैं ३७ वह श्रीकृष्ण और अ-
र्जुन राजाको पाकर उसकी प्रीति पूर्व्वक आज्ञाको पाकर आसनों
परबैठगये ३८ फिर उस बक्ताओंमें श्रेष्ठ बुद्धिमान् महाराज युधि-
ष्ठिरने उनदोनोंको बार्त्तालाप करनेका अभिलाषीदेखकर यहवचन
कहा कि तुमदोनों यादव और पांडवको मैं बार्त्तालाप करनेका अ-
भिलाषी मानताहूं कहोमैं तुम्हारे सब प्रयोजनोंको शीघ्रतासेकरूंगा
बिचार न करो राजाको इसप्रकारकी आज्ञापाकर बार्त्तालाप करनेमें
चतुर अर्जुनने बड़ी नम्रताके साथ समीप आकर धर्म्मराजसे बचन
कहा ३९।४०।४१ कि हेराजा यह प्रतापवान् बासुदेवजी बहुत काल
तक यहां स्थितरहे अब आपकी आज्ञालेकर अपने पिताको देखना
चाहतेहैं ४२ जो आपआज्ञादें तो वह आपकी आज्ञानुसार द्वारका
पुरीकोजायँ उनको आप आज्ञादेनेको योग्यहो ४३ युधिष्ठिरबोलेहे
कमललोचन प्रभु मधुसूदनजी आपका कल्याणहोय अबतुम अपने
पिताके देखनेको द्वारकापुरी अवश्यजावो ४४ हे महाबाहु केशव-
जी आपकाजाना मुझको स्वीकारहै तुमनेमेरे मामा और देवीदेवकी
को बहुतकालसे नहीं देखा ४५ हेबड़ाई देनेवाले बुद्धिमान् तुम
जाकर मेरे मामा और बलदेवजी से मिलकर मेरे बचनसे उनका
यथोचित पूजनकरना ४६ हेमहाभाग प्रशंसनीय तुम सदैव परा-
क्रमियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव और मुझकोभी सदैव
स्मरण रखना ४७ हे निष्पाप महाबाहु तुम आनर्त्त देशियोंको
और वृष्णिबंशियोंको देखकर फिर मेरे अश्वमेध यज्ञमें आवो ४८
हेयादवजी जो आप नानाप्रकारके रत्न और धनोंको और अन्य २
अपनी अभीष्ट बस्तुओंको भी लेकर मामाकोदेखो ४९ हेबीर केशवजी

आपकीही कृपासे यह संपूर्ण पृथ्वी हमको प्राप्त हुई है और शत्रु भी मारेगये ५० इसरीतिसे कौरव धर्मराज युधिष्ठिरके कहनेपर पुरुषोत्तम वासुदेवजीने यह बचन कहा ५१ हे महाबाहु अब रत्न सिद्धि धन और सम्पूर्ण पृथ्वी आपहीकीहै हे महाराज मेरे घरमें जो कोई प्रकारका भी धनहै उसके तुमहीं सदैव स्वामीहो ५२ तब बहुत श्रेष्ठहै इसप्रकार धर्मपुत्रसे कहेहुये और आशीर्वाद पाये हुये पराक्रमी श्रीकृष्णजीने विधिपूर्व्वक अपनी फूफीको दण्डवत्करी फिर फूफीसे आशीर्बाद पायेहुये श्रीकृष्णजीने उनकी परिक्रमाकरी ५३ इसकेपीछे उससे अच्छेप्रकार अशीर्बाद पाकर और विदुरादिक सब कौरवोंसे बिदाहोकर चतुर्भुज श्रीकृष्णजी आप दिव्यरथकी सवारीपर चढ़कर हस्तिनापुर से बाहर निकले ५४ महाबाहु श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर और फूफीकी सलाहसे अपनी बहिन सुभद्रा को रथमें बैठाकर राज्यके कार्य्य कर्त्ताओंसे घिरेहुये नगरसे बाहरनिकले ५५ बानर ध्वजाधारी अर्जुन सात्यकी नकुल सहदेव और बड़ेभारी बुद्धिमान् गजराजके समान पराक्रमी भीमसेन यह सब उन श्रीकृष्णजीके पीछे चले ५६ इसके पीछे पराक्रमी श्रीकृष्णजी ने उनसब पांडव और पराक्रमी बिदुरको लौटाकर शीघ्रही दारुक सारथी और सात्यकीसे कहा कि घोड़ोंको चलायमान करो ५७ इसकेपीछेशत्रुसमूहों के मारनेवाले श्रीकृष्णजी जिनकेपीछे सात्यकीथा द्वारकापुरीको ऐसेगये जैसे कि शत्रुओंके समूहोंको मारकर इन्द्र स्वर्गको जाताहै ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिश्रीकृष्णप्रयाणेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

विश्वरूप दर्शन विद्याका फलहै गुरुकीसेवा विद्याका साधन है इसबातके प्रकट करनेको बैशंपायन बोले कि शत्रुबिजयी भरतर्षभ पांडव इसप्रकारसे जानेवाले श्रीकृष्णजीसे स्नेह पूर्व्वक मिलकर सब साथियों समेत लौटे १ अर्जुन बारम्बार श्रीकृष्णजी से

मिला और अपनी दृष्टिके अन्ततक उसने उनकोदेखा २ तदनन्तर अर्जुनने गोविन्दजीमें लगीहुई और उनमें प्रविष्टहुई उस अपनी दृष्टिको बड़े दुःखसे लौटाया और अजेय श्रीकृष्णजीनेभी इसीप्रकारकिया ३ उसमहात्माके चलेजानेमें जो बहुतसे अपूर्व अद्भुत रूपके चमत्कारहुये उनको मुझसे सुनो ४ कि वायु रथके आगे २ मार्ग को कंकड़ धूल से रहित बिना कंटक करताहुआ बड़ी तीव्रता से चला ५ इन्द्र ने भी पवित्र सुगन्धितजल और दिव्य फूलों को शार्ङ्ग धनुषधारी के आगे बरसाया ६ वह महाबाहु रेतलेस्थान को समान भूमिवाले मार्ग में चले फिर मुनियों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी मुनियों में श्रेष्ठ उत्तंक ऋषिको देखा ७ उस कमललोचनतेजस्वी श्रीकृष्णजी ने मुनिको दण्डवत् करके उनसे आशीर्वाद लिया और आशिषयुक्तने उनके कुशल क्षेमके समाचार पूछे ८ उससे कुशल क्षेम पूछेहुये उन ब्राह्मणोत्तम उत्तंकने उस लक्ष्मीपति श्रीकृष्णको पूजकर यह पूछा ९ कि हे श्रीकृष्ण तुमने कौरवों के और पांडवों के स्थानपर जाकर जैसे उनके भाईपने की प्रीतिको दृढ़किया वह सब मुझसे कहनेके योग्य हो १० हे वृष्णियोंमें श्रेष्ठ तुम अपने प्यारे नातेदार बीरोंको सदैव सन्धिमें नियत करके लौटकर आये हो ११ हे परन्तप पांचों पांडव और धृतराष्ट्र के सबपुत्र तेरे साथ लोकोंमें विहार करेंगे १२ हेकेशव तुझनाथके द्वारा कौरवोंकेशान्त रूप होनेपर राजालोग अपनेदेशोंमें सुखको पावेंगे १३ हेतातजो मेरा बिचारसदैव तेरेरूपमेंथा वह तुमने भरतबंशियोंकेऊपर सफल किया १४ श्रीभगवान्बोले मैंनेपहले कौरवोंकी सन्धिमेंबिचार पूर्व्वक उपाय किया जब वह सन्धिमें नियत न होसके १५ फिरउन सबने पुत्र और बान्धवों समेत मृत्युको पाया बुद्धिऔर पराक्रमके द्वारा प्रारब्ध उल्लंघन नहीं होसक्ता १६ हे निष्पाप महर्षी फिर यहसब तुमकोबिदितहै उन्होंने भीष्म बिदुर और मेरे भी कहनेको स्वीकार नहीं किया १७ इसी हेतु से वह परस्पर सन्मुख होकर यमलोककोगये पांचोंपांडव जिनके कि शत्रु और पुत्र मारेगये वही

शेष रहगये १८ सब धृतराष्ट्रके पुत्र अपने पुत्र और बान्धवोंसमेत मारेगये श्रीकृष्णके इस बचनके कहने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त और क्रोधसे बिस्तीर्ण नेत्र उत्तंकने उनसे यह बचनकहा १६ हे श्रीकृष्णजी जिसहेतुसे कि तुझ समर्थने अपने प्यारे नातेदार कौरवों में श्रेष्ठ लोगोंकी रक्षानहीं करी इस हेतुसे मैं तुमको शापदूंगा २० हे मधुसूदन जिसनिमित्त तुमने हठ और जबरदस्ती से उनकोधिक्कार देकर निषेध नहीं किया उसहेतुसे क्रोधमें भराहुआ मैं तुमकोशाप दूंगा २१ हे लक्ष्मीपति तुझछलयुक्त कर्मवाले समर्थ से त्यागे हुये वह कौरवोतम अत्यन्त नाश होगये २२ बासुदेवजी बोले हेभृगुनन्दन इसको आपमूल समेत मुझसे सुनिये और अनुनयकोभीस्वीकार कीजिये हे भार्गव आपतपस्वी हो २३ अबमुझसे उसब्रह्मज्ञान को सुनकर शापको त्यागकरोगे मनुष्य थोड़ेतपसे मेरेबिजयकरने को समर्थनहींहैं २४ हे तपस्वियोंमें श्रेष्ठ मैं तेरेतपका बिनाशनहीं चाहताहूं क्योंकि तेरातप बड़ा प्रकाशित है तुमने गुरुलोगोंको भी प्रसन्न किया २५ हे ब्राह्मणोत्तम तेराब्रह्मचर्य्यमें लड़कपनकीदशा से जानताहूं इसलिये दुःख से प्राप्त होनेवाले तेरेतपका नाशनहीं चाहताहूं २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिउत्तंकोपाख्यानेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

उत्तंकने कहा हेदुष्टोंके पीड़ादेनेवाले केशव तुम निर्दोष ब्रह्मबिद्याको मूल समेत कहो उसको सुनकर तुमको आशीर्वाद दूंगा अथवा शापदूंगा १ बासुदेवजी बोले हे ब्राह्मण तमोगुण रजोगुण और सतोगुण नाम इन तीनोंको मुझी में आश्रय भूत जानो और इसी प्रकार ग्यारह रुद्र और अष्टवसुओं को भी मुझसे ही प्रकट जानो २सब जीवधारी मेरे रूपमें नियतहैं और मैंभी सब जीवों में नियत हूं इसमें तुम किसी बात का सन्देह न जानो ३ हे ब्राह्मण इसीप्रकार सब दैत्य यक्ष गन्धर्व राक्षस नाग और अप्सराओंके

समूहोंको भी मुझसे प्रकट जानो ४ और जिसको अव्यक्त अक्षर सत् व्यक्त क्षर और असत् कहाहै यहसबभी मेरेही स्वरूपहैं ५ हे मुनि आश्रमोंमें जो चारप्रकारकेधर्म जानेगये उनको औरसबवेदोक्त कर्मों को मेरारूपजानो ६ जो शशविषाण के समान असत् और घटादिके समान सदसत्से परे अव्यक्तहै वहतीनों मुझ देवताओंके देवता सनातनसे पृथक् प्रकटनहींहैं ७ हेभार्गव तुम उनसब वेदोंका जिनका आदिप्रणवहै उनको भी मुझी से जानो यज्ञमें यज्ञस्तंभ सोम, चरु, होम, देवताओंकी तृप्ति यहसबभी मुझीकोजानो ८ हे भृगुनन्दन होता और हव्यभी मुझीसे जानो अध्वर्यु कल्पक और अच्छा संस्कृत हव्यभी मैंहींहूं ६ उद्गाताभी बड़े यज्ञ में गीतों के शब्दोंसेमेरीही प्रशंसाकरताहै हेब्राह्मणवर्य्यजो मंगलवाचक शांती हैं वह प्रायश्चित्तों में १० सदैव मुझसृष्टिके कर्त्ताको स्तुतिकरतेहैं श्रेष्ठब्राह्मण धर्मपुत्र नाम प्रथम सृष्टिको भी मुझेही जानो ११ हे ब्राह्मण जोकि संकल्पसे उत्पन्न प्यारा और सब जीवोंका कृपारूपहै उस धर्ममें नियत और अनियत मनुष्योंके कारणसे १२ रक्षा और धर्मकी स्थितिके अर्थ बहुतसे अवतार धारण करताहूं १३ हेभार्गव मैं तीनोंलोकों के मध्यमें उन२ रूप और वेशसे प्रकट होताहूं मैंहीं बिष्णुहूं मैंहीं ब्रह्माहूं इन्द्रहूं और उत्पत्ति प्रलय का कारणहूं १४मैं अविनाशी सबजीव समूहोंका कर्त्ताहूं और अधर्ममें प्रवृत्त होनेवाले सब जीवधारियों का नाशकर्त्ताहूं १५ प्रत्येक युगके अन्तपर सृष्टिके प्रियकी इच्छासे उन२ शरीरोंमें प्रवेशकरके धर्मका सेतुबांधताहूं १६ हेभृगुनन्दन जबमैं देवताके शरीर में बर्त्तमान होताहूं तब निस्सन्देह देवताके समान सबकर्मोंको करताहूं १७ हेमुनि जबमैं गन्धर्व शरीरमें बर्त्तमान होताहूं तब निश्चय करके गन्धर्वके समान सबकर्म करताहूं१८ जबमैं नागशरीर में बर्त्तमान होताहूं तब नागके समान कर्म करताहूं यक्ष राक्षसके शरीर मेंभी उसीप्रकार कर्मकरताहूं १६ मनुष्य शरीर में बर्त्तमान मुझसे लाचारकी समान प्रार्थना किये गये उनमोहोंसे पूर्ण अचेतोंने मेरे बचनको अंगीकार नहीं किया२०

फिर क्रोधयुक्त मैंने बड़ाभारी भयप्रकट करकेभी उनकौरवोंको डराया और फिर ऐश्वर्य्यवान् होकर होनहारसेभी बारम्बार विदित किया २१ अधर्मसे युक्त और कालधर्मसे घिरेहुये वह सब युद्ध में धर्मसे मारेगये और निस्सन्देह स्वर्गको गये२२और पांडवोंनेलोकों में कीर्त्ति और यशको पाया हेद्विजवर्य्य जोतुम मुझसे पूछतेहो वह सब मैंने तुमसे कहा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेचतुःपंचाशत-
मोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

उत्तंकने कहा हेजनार्द्दन मैं तुमको संसारका कर्त्ता जानताहूं निश्चयकरके यह आपकी कृपाहै इसमें सन्देह नहींहै१हेअविनाशी मेराचित्त अत्यन्त प्रसन्न और आपके स्वरूपमें नियत हुआ मैंने उस चित्तको शापदेनेसे लौटाया हे परन्तप इसको आप जानिये २ हे जनार्द्दन जोमैं तुमसे कुछ अनुग्रहके योग्य समझाजाऊं तोमैं आपके विश्वरूप को देखना चाहताहूं आप अपने उसरूपको दिखाइये ३ वैशंपायनबोलेकि इसके अनन्तर उस प्रसन्नचित्त बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने वह सनातन विष्णुरूप दिखाया जिसकोकि अर्जुनने देखाथा४ उसने उस महाबाहु महात्माको विश्वरूप हजार सूर्य्यके समान प्रकाशित अग्निके समान सब आकाशको ढककर नियत सब ओर मुख रखनेवाला देखा उत्तंक ब्राह्मणने विष्णुकेउस अद्भुत और श्रेष्ठ विष्णुरूपको देखकर और उसपरमेश्वरका दर्शनकरकेआश्चर्य्यको पाया ५।६ तबउत्तंकने कहाहे सृष्टिके कर्त्ताविश्वात्मा सबजड़चैतन्यके कारण तुमको नमस्कारहै तेरे चरणोंसे पृथ्वी और शिरसे आकाश व्याप्तहै हेअविनाशी पृथ्वी और आकाशका जो अन्तरहै वह आपके उदरसे घिरा हुआ है भुजाओंसे सब दिशा व्याप्त हैं यहसब तुमहींहो ७।८ हेदेवता तुम फिर इस अविनाशी और श्रेष्ठ रूपको अन्तर्द्धान करो मैं फिर तुझ अविनाशी को निजरूप से

देखना चाहताहूं ६ वैशंपायन बोले हे जनमेजय तब प्रसन्न-चित्त गोबिन्दजीने उससे कहा कि बर मांगो तब उत्तंकने उससे यह वचन कहा १० हे महातेजस्वी पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी आ-पसे वहीवरदान बहुतहै जो आपके इस स्वरूपको देखताहूं ११ फिर श्रीकृष्णजीने उससे कहा कि तुम इसमें विचार न करो यह अवश्य करना योग्यहै क्योंकि मेरादर्शन सफल है निष्फल नहीं है १२ उत्तंकने कहा हेप्रभु जो आप इसको मानतेहो कि अ-वश्यही करनेके योग्यहै तो मैं जलको चाहता हूं अर्थात् इस मरुस्थली नाम भूमिमें जहां इच्छाहो वहां जलका मिलना कठिन है १३ इसके पीछे उस ईश्वरने उसतेजको अपने में लयकरके उत्तंकको उत्तरदिया कि जलकी इच्छा होनेपर मैं ध्यानके योग्य हूं यह कहकर द्वारकाको चलदिये १४ इसके पीछे कभी उत्तंक ऋषितृषित होकर जलकी इच्छा से मरुभूमिमें घूमनेलगे और श्रीकृष्णजी को स्मरणकिया १५ फिर बुद्धिमान् ने मातंग नाम चांडालको उस मरुभूमिमें देखा जोकि नङ्गा और मलिन शरीर कुत्तोंके समूहोंसे व्याप्त १६ भयकारी रूपखड्ग और धनुषबाण धारण कियेथा उसउत्तम ब्राह्मणने उसके चरणोंके नीचे मूत्रसे उत्पन्न बहुत जलको देखा १७ हंसते और स्मरण करते हुये मातंगने उससे कहा हे भार्गव मुझसे जलको लो यह बात उचित है १८ तुझ तृषितको देखकर मुझ को बड़ी करुणा है उसके उस बचनको सुनकर उस मुनिने उसजलको श्रेष्ठ नहीं मानकर अंगीकार नहीं किया १६ बुद्धिमान् ने कठोर बचनोंसे उसबर दाता श्रीकृष्णकी निन्दाकरी मातंगने बारंबार उससे कहा कि आपजलपान कीजिये २० उस क्रोधयुक्तने अन्तरात्मासे तृषित होकरभी पान नहींकिया हे महाराज उस निश्चयसे उसमहा-त्मासे उत्तर पायाहुआ वह मातंग २१ अपने कुत्तोंसमेत उसी स्थानमें गुप्तहोगया उसको उस प्रकारका देखकर लज्जित चित्त उत्तंकने २२ अपनेको उस शत्रुसंहारी श्रीकृष्णसे ठकाहुआ माना

फिर उसीमार्गसे शंख चक्र गदाधारी २३ बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी भी आपहुंचे उत्तंकने उनसे कहा कि हे प्रभु पुरुषोत्तम आपको उत्तम ब्राह्मणोंके निमित्त मातंग स्रोतसे उत्पन्न हुआ जलदेना उचित नहींहै बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी ने यह बचन कहनेवाले २४ २५ उसउत्तंकको साफ२ मीठेवचनोंसे बिश्वास कराकर यह कहा कि यहां जैसेरूपसे जलका देना उचितहै २६ निश्चय करकेवैसा ही जलतुझको दियातुमने उसको नहीं जाना वज्रहाथमें रखनेवाले प्रभु इन्द्रसे तेरे निमित्त मैंने कहाथा २७ कि उत्तंकके निमित्तजलरूप अमृतदो उसदेवराजने मुझसेकहा कि मनुष्य अमरपदवी को नहीं पाताहै २८ उसको दूसरा वर दीजिये यह वारंबार कहा हे भृगुनन्दन तब मैंने यही कहाकि उसको अमृतहीदो२९ उसदेवराजने मुझको प्रसन्न करके फिर यह कहा हे बड़े बुद्धिमान्जो अवश्य ही देनेके योग्यहै तो मैं मातंगरूप ३० होकर महात्मा भार्गवके अर्थ अमृतदूंगा जोवह भार्गव अब इसरीतिसे अमृतको लेलेगा ३१ तो यह अमृत मैं भार्गवके देनेको जाताहूं हे प्रभु जो वह इसको नहींलेगा तो फिरमैं उसको कभी न दूंगा ३२ वह इन्द्र इसप्रकार नियम करके उसरूपसे तुम्हारे सन्मुख आया और अमृतकोदेता था परन्तु तुमने निषेध युक्त उत्तर दिया ३३ जो भगवान् इन्द्र चांडाल रूपथा यही तेरीबड़ी बिपरीत बुद्धि है फिर भी जिस कारण मुझसे तेरा अभीष्ट करनाउचितहै ३४ इससेमैं तेरी इसकठोरजलकी इच्छाको सफल करूंगा हे ब्रह्मन् जिनदिनोंमें तेरीजलकीइच्छा होगी ३५ तब इस मरुभूमिमें बादल जलसे पूर्णहोंगे और हेभृगुनन्दन वहबादल तुझे रसयुक्त जलदेंगे ३६ वह उत्तंकनाम बादल तेरे नामसे प्रसिद्धीको पावेंगे श्रीकृष्णजी के ऐसे बचनको सुनकर वह ब्राह्मण प्रसन्न हुआ हेभरतर्षभ अबभी उत्तंकनाम मेघ मरुभूमिमें बर्षाकरतेहैं ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

जनमेजयने पूछाकि बड़े मनवाला उत्तंक किस तपसे संयुक्तथा जोकि बहुत प्रकारके अवतार लेनेवाले विष्णुको भी शाप देने को इच्छावान् हुआ १ वैशंपायन बोले कि उत्तंक बड़े तपसेयुक्तहै वह तेजस्वी गुरुका भक्तहै उसने गुरुके सिवाय किसीको नहीं पूजा २ हे भरतवंशी सब ऋषियोंके पुत्रोंको यह चित्तसे इच्छाहुई कि हम उत्तंकके समान गुरुभक्ति परायण होकर गुरुवृत्तीको प्राप्तकरें ३ हे जनमेजय तब बहुत शिष्योंके मध्यमें उत्तंकपर गौतम ऋषिकीप्रीति और स्नेह अधिकहुआ ४ वह गौतम उसके जितेन्द्रीपन औरबाह्या-भ्यन्तरकी पवित्रता धैर्य्यकर्म और पूरी सेवासे प्रसन्न हुआ तब ऋषिने हजारोंशिष्योंको अपने २ घरजानेकी आज्ञादी परन्तु बड़ी प्रीतिसेउत्तंक को आज्ञादेनानहीं चाहा ५।६ हेतात क्रम२सेवृद्धाव-स्था इसकोप्राप्तहुई तब उसगुरुवत्सल मुनिने उसको नहींजाना ७ हे राजेन्द्र इसके अनन्तर किसी समय उत्तंकलकड़ियोंके लानेको गया ८ और बहुतबड़ेभारीलकड़ीके बोझेकोलाया हेशत्रुविजयी उस भारसे थकितशरीर होकर उसउत्तंकने उसलकड़ीके बोझेको पृथ्वी परडाला उससमय इसकीजटा जोकि चांदीके समान श्वेतथी उस लकड़ीके गट्ठे में लिपटगई ६।१० तब वह लकड़ियोंसमेत पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजातबभारसे चूर्ण दुर्बलतासे भराहुआ वह ऋषि ११ उस वृद्धावस्था को देखकर बड़े कष्टित शब्द के समेत रोनेलगा इसकेपीछे उसके गुरुकी पुत्री जोकि कमलपत्रके समान मुखरखने वाली १२ दीर्घनेत्र और धर्म के जानने वालीथी उसशिरसे झुकी हुईने पिताकी आज्ञासे अश्रुपातोंको हाथमें लिया १३ उनअश्रुपा-तोंके जलकणोंसे भस्महुये उसके दोनोंहाथ पृथ्वीपर गिरपड़े और पृथ्वीभी उनगिरनेवाले अश्रुपातोंके सहनेको समर्थनहीं हुई १४ तब प्रसन्नचित्त गौतमने उत्तंक ब्राह्मणसे कहा हे तात अब यहां किस कारणसे यहतेरा बचन शोकसे पूर्णहै हेब्रह्मऋषितुम इच्छा-

पूर्बककहो मैं उसको मूलसमेत सुनना चाहताहूं १५ उत्तंक बोला आपको प्रिय करनेकी इच्छासे आपके स्वरूपमें प्रवृत्तचित्त आपके भक्तऔर आज्ञाकारी १६ मैंने यह वृद्धावस्था नहीं जानी मैंने सुख कोभी नहीं जाना आपने मुझ सौबर्षसे निवास करने वालेकोआज्ञा नहींदी १७ मेरे सन्मुख दूसरे शिक्षापाये हुये सैकड़ों हजारों शिष्योंको आपने आज्ञादीन्ही १८ गौतमने कहा हे ब्राह्मणोत्तम तेरी प्रीतिसे युक्त मैंने तेरी गुरुसेवाके कारणसे बहुतसा समय व्यतीत होता हुआ नहीं जाना १६ हे भार्गव अब क्याकियाजाय जो घर जानेमें तेरी श्रद्धाहै तो तुम आज्ञालेकर अपने घरको जावो बिलम्ब मतकरो २० उत्तंकने कहा हे ब्राह्मणश्रेष्ठ मैं किस गुरुदक्षिणाकोदूं जो आप आज्ञाकरें मैं उसीको भेट करके आपकी आज्ञा पाकर अपने स्थानको जाऊं गौतमने कहा कि सत्पुरुषों का बचन है कि गुरुओंका प्रसन्नकरनाही दक्षिणाहै हेब्रह्मन् मैं निश्चयकरके तेरी सेवाहीसे बहुत प्रसन्नहूं २१।२२ हे भार्गव मुझको ऐसाप्रसन्नजानो कि जो तुम सोलहबर्षकी अवस्थाके होकर तरुण होगे २३ हेश्रेष्ठ ब्राह्मण मैं अपनीपुत्री कन्याका तेरेसाथ बिवाहकरूंगा इसके सिवाय दूसरी कोईभी स्त्री तेरेतेजके सेवन करनेको योग्य नहीं है २४ इसकेपीछे उत्तंकने तरुणरूप होकर उस यशवन्ती कन्याको प्राप्त किया फिर गुरुसे आज्ञापाये हुयेने गुरुपत्नीसे यह बचन कहा २५ कि आपको कौनसी गुरुदक्षिणादूं जो आपकी इच्छा होय उसको आप मुझे आज्ञाकरें मैं प्राणसे और धनसे आपके मनके अभिलाषितको चाहताहूं २६ इसलोक में जो अत्यन्त अपूर्ब बड़ा रत्न दुष्प्राप्यहोय उसकोभी मैं तपके निस्सन्देह लासकताहूं२७ अहल्या बोली हेनिष्पाप ब्राह्मण मैं तेरी इस भक्तिसेही अत्यन्तप्रसन्नहूं यही गुरुदक्षिणा बहुतहै हेपुत्रतेरा कल्याण होय तुम अपनी इच्छाके अनुसार जावो २८ वैशंपायन बोले हे महाराज उत्तंक ऋषिने फिर बचनकहा कि हेमाता मुझको आज्ञादो मुझेतेरा प्रिय करना अवश्य योग्यहै २६ अहल्या बोली तेरा कल्याण होय जो तू

दक्षिणाही दिया चाहताहै तोराजा सौदासकी स्त्री जिन दिव्यमणि कुण्डलोंको धारण करतीहै उन को लावो उनसे गुरुदक्षिणा देना श्रेष्ठहै ३० हेजनमेजय तब उत्तंकने कहा कि तथास्तु ऐसा प्रणकरके गुरुपत्नीके अभीष्टके अर्थ उन कुंडलोंके लानेको चला ३१ इसके पीछे वह ब्राह्मणोत्तम उत्तंक उस पुरुषाद अर्थात् मनुष्यों के खाने वाले राजा सौदाससे मणि कुंडलकी भिक्षा मांगनेको शीघ्रतासे चला ३२ गौतमने पत्नीसे कहा कि अबउत्तंक दृष्टनहीं पड़ताहै इस प्रकारसे पूछीहुई उस अहल्याने कुंडलके निमित्त जानेवाले उत्तंक को वर्णनकिया फिर उस ऋषिने अपनी स्त्रीको उत्तरदिया कि यह तुमने अच्छा नहीं किया निश्चय करके शापदिया हुआ वह राजा उस ब्राह्मणको मारेगा ३३। ३४ अहल्या बोली हे भगवन् मुझ अज्ञात से वह ब्राह्मण आज्ञा दियागया है आपकी कृपासे उसको कुछभी भय न होगा ३५ पत्नीके इसप्रकारके बचन सुनकर गौतमने अपनीस्त्रीसे कहा कि इसीप्रकार होय उत्तंकने भी निर्जनबन में उस राजाको देखा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले उसब्राह्मणने उसप्रकारके भयकारी दर्शनवाले बड़ी डाढ़ी मूछ रखनेवाले और मनुष्यों के रुधिरसे लिप्तशरीरउस राजाको देखकर १ चित्तमें खेदनहीं किया उस बड़े पराक्रमी भयकारी यमराजके समान राजाने उससे कहा २ हेकल्याणरूप ब्राह्मणर्षभ तुम प्रारब्धसे छठवें समय मुझ भोजनके अभिलाषी अन्वेषण करने वालेके पास आयेहो ३ उत्तंकने कहा हेराजा गुरुदक्षिणा के निमित्त विचरते यहां आयेहुये तुममुझको जानो ज्ञानियोंने गुरुदक्षिणाके लिये उपाय करने वाले शिष्यको नहीं मारनेके योग्य कहा है ४ राजाबोले हे ब्राह्मणोत्तम छठवें समयपर मेरा आहार नियतहै अब मुझसे आप त्यागकरनेको असंभवहो ५ उत्तंकनेकहा

हेमहाराज इसी प्रकारहो मुझसे नियमकरलीजिये मैं गुरुदक्षिणा देकर फिर आपकी आधीनतामें आऊंगा ६ हेश्रेष्ठ राजामैंने जोगुरु दक्षिणा देनेकी गुरूसे प्रतिज्ञा करीहै हेराजेन्द्र वहतेरे आधीनमें है मैं उसको तुमसे भिक्षामांगताहूं ७ तुमसदैव रत्नोंको उत्तम ब्राह्मणों के अर्थदिया करतेहो हेनरोत्तम तुम पृथ्वीपरपात्ररूप और दाताहो हेश्रेष्ठ राजा मुझको भी दानलेने में पात्र जानों ८ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले राजेन्द्र तेरेदियेहुये धनको गुरूकीभेंटकरके फिर यहां प्रतिज्ञासे तेरे आधीनहूंगा ६ मैं सत्यप्रतिज्ञाकरताहूं इसमें किसी प्रकारका मिथ्यापन नहींहै मैंने प्रथम अपनी स्वतन्त्र दशा मेंभी कभी मिथ्या बचन नहीं कहा फिर दूसरी दशामें कैसेकहस-काहूं १० सौदासने कहा जोतेरे गुरूका प्रयोजन मेरे आधीन है वह मुझे अवश्य कर्त्तव्यहै जोतुममुझसे कहसक्तेहो तो उस सबवृत्ता न्तको मुझसेकहो ११ उत्तंकने कहा हेपुरुषोत्तम मैंने आपको सदैव प्रार्थनाके योग्यमानाहै इसीसे मैं आपसे मणिकुंडल भिक्षामांगनेको आयाहूं १२ सौदासने कहा कि हेब्रह्मर्षी वह मणि कुंडल मेरीही स्त्रीके योग्यहैं तुमदूसरे अभीष्टको मांगो हेसुन्दर ब्रतऋषि वह मैं तुमकोदूंगा १३ उत्तंकनेकहा हेराजा जोहमारा तुमको प्रमाणहैतो बहानामत करो और मणि कुंडल मुझकोदो और सत्यवक्ताहो १४ वैशंपायन बोले कि इसप्रकार के बचन सुनकर राजाने उस उत्तंक से फिर यह बचनकहा कि हेबड़े साधूतुम जाकर मेरे बचनसे देवी सेकहना कि मणि कुंडल देदे १५ हेब्राह्मणोत्तम वह देवीमेरे कहे हुये बचन से आपके कहनेपर पबित्र ब्रतवाली दोनों कुंडल निस्स न्देह तुमको देगी उत्तंकने कहा हेराजा आपकी स्त्रीको मैंकैसे देख सक्ताहूं आपही अपनी स्त्रीकेपास क्योंनहीं जातेहो १६।१७ सौदासने कहाकि अब आप उसको किसी जलके झिरने केपास देखोगे अब छठवें समयपर मैं उसको देखनहीं सक्ता १८ वैशंपायन बोले कि हेभरतर्षभ इसप्रकार से उसके बचनको सुनकर वह उत्तंक उसके पास गया औरउस मदयन्ती रानीको देखकर अपना प्रयोजन उस

से प्रकट किया १९ हे जन्मेजय उस दीर्घ लोचना मदयन्तीने राजा सौदासके बचनको सुनकर बड़े बुद्धिमान् उत्तंकको उत्तरदिया किहे निष्पाप ब्राह्मण जोआपने कहासो सत्य और यथार्थहै आपमिथ्या नहीं कहतेहो आप उनकीप्रसन्नता का कोई चिह्न लानेको योग्य हो २० । २१ मेरेयहमणि कुंडल दिब्यहैं देवता यक्ष और महर्षी बड़े २ उपायोंसे इनके हरनेकी इच्छा करके अवकाशों को इच्छा किया करते हैं २२ इनरत्नोंको पृथ्वीपर रक्खा हुआ देखकरसर्प हरण करेंगे और निद्रा और मोहके बशीभूत मनुष्यसे देवता चुरा लेजाते हैं और उच्छिष्ट में रक्खे हुयेको यक्षहरले जाते हैं २३ हे ब्राह्मणोत्तम यहदोनों कुंडलोंको इन अवकाशोंमें सदैव देवताराक्षस और नागहरना चाहते हैं इन कुंडलोंको सदैव सावधान मनुष्यही धारणकर सक्ताहै २४ हेब्राह्मणर्षभ यहकुंडल अहर्निशसुवर्ण उगलते हैं औररात्रिके समय ग्रह नक्षत्रादिकोंके प्रकाशों को तिरस्कार करके बर्त्तमान होतेहैं २५ हे भगवन् इनको कर्णभूषण करकेक्षुधा तृषा आदिकभी नहीं होतीहै इनके धारण करने वालेको विष और अग्निसे कभी भयनहीं उत्पन्न होताहै २६ जब छोटा मनुष्य इनको धारण करताहै तबयह छोटेहोजाते हैं और जबउनके योग्य रूप वाला कोई पुरुष उनको धारण करताहै तब वह उस प्रमाण वाले होजातेहैं २७ यहमेरे कुंडल इसप्रकारके महापूजित औरतीनों लोकोंमें बिख्यात हैं इसहेतुसे तुमउनके अंगीकार करनेको अभिज्ञा अर्थात् मंजूरीको लाओ २८ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेसप्तपंचाशतमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि उसने राजाके पास जाकर अभिज्ञा चिह्न अर्थात् मंजूरीके निशानको मांगा उसइक्ष्वाकुबंशियों में श्रेष्ठराजाने उसको मनहीसे मंजूरीका चिह्नदिया १ सौदासबोला यहराक्षस

योनिरूपगति कल्याणरूप नहींहै दूसरी गतिनहींहोसक्ती अर्थात् राक्षसयोनिसे छूटनानहीं होसक्ता इस मेरेमतको जानकरतुममणि कुंडलोंको देदो२इसप्रकार कहेहुये उत्तंकने उसरानीसेउसके पति काबचन कहातबउसने सुनकर वहमणिकुण्डलदेदिये३उत्तंकने वह दोनों कुंडल पाकर फिर राजासे आकर कहा हे राजा यह गुप्त बचन आपका क्याहै मैं उसको सुनना चाहताहूं ४ सौदासने कहा कि क्षत्री लोग संसारकी उत्पत्तिके प्रारंभ से ब्राह्मणों को पूजतेहैं और ब्राह्मणोंसे भी बहुत से शापादिक दोष प्रकट होतेहैं ५ सो ब्राह्मणों के अर्थ सदैव से झुकेहुये मैंने ब्राह्मणसेही दोषको पाया मदयन्तीको साथ रखनेवाला मैं दूसरी गति अर्थात् मुक्तरूपगति को नहीं देखताहूं ६ हे ब्राह्मणोत्तम मतिमानोंमें श्रेष्ठ स्वर्गद्वारपर जाते अथवा यहां नियत होतेहुये मैं दूसरी बुद्धिकोभी नहीं देखता हूं ७ मुख्य करके ब्राह्मणों के विरोधी राजालोगोंको इस लोकमें नियत रहना अथवा परलोकमें सुखसे वृद्धिपाना असंभवहै अर्थात् कहीं आनन्दनहीं पासक्ता ८ इसी हेतु सेयह मैंने अपने बड़े प्रिय कुंडल आपको दियेहैं अबआपने जो प्रतिज्ञा मुझसे करीहै उसको मेरे साथ सफलकरो ९ उत्तंकने कहा हे राजा यहां मैं उसीप्रकार कर्म करूंगा अर्थात् फिर तेरे आधीन बर्त्तमानहूंगा हेपरन्तप कुछ प्रश्न तुझसे पूछने के लिये मैं लौटाहूं १० सौदासनेकहा हे ब्राह्मण इच्छा पूर्व्वक पूछो मैं तेरे प्रश्नका उत्तरदूंगा अब तेरे सन्देहको मैं निस्सन्देहदूर करूंगा इसमें किसीप्रकारका विचार न करूंगा ११ उत्तंकने कहा कि धर्मके पारांगतहोनेवालोंने वेदपाठी ब्राह्मण को सत्यवक्ता कहाहै और जो मनुष्य अपने मित्रोंका बिरोधीहै उसको चोरजानो१२हे राजा सो अब आपने मेरी मित्रताको प्राप्त किया हे पुरुषोत्तम सो तुम अच्छे लोगोंके अंगीकृत मतको मुझसे कहो१३ अब मैं अभीष्ट सिद्ध करनेवालाहूं और आप मनुष्य भक्षी हैं आपके सन्मुख मेरा आना योग्यहै या नहीं १४ सौदासने कहा हे ऋषियोंमें श्रेष्ठ जो यहां उचितही मतकहना योग्यहै तो हे द्विज

वर्य्य किसीदशामेंभी मेरे सन्मुख तुम को न आना चाहिये १५ हे भार्गव इसरीति सेमैं तेरे कल्याणको देखताहूं हे ब्राह्मणजोतू आ-वेगा तो अवश्य निस्सन्देह तेरी मृत्युहोगी १६ वैशंपायन बोलेकि तब वह बुद्धिमान् नरोत्तम उत्तंकराजा सौदाससे इसप्रकार उचित शिक्षापायाहुआ उसराजासे पूछकर अहिल्याकी ओरको चलागुरु-पत्नीको प्रियकरनेवाला वह ऋषि दोनों दिव्य कुंडलोंको लेकर बड़ी तीव्रतासे गौतमके आश्रमकी ओरकोचला १७।१८मदयन्तीने जिस २ प्रकार से उनकुंडलोंकी रक्षाकरनी कहदीथी उसीप्रकारसे उनकुंडलोंको मृगचर्ममें बांधकर लेचला १९ उस क्षुधा युक्त ब्रह्म ऋषिने किसी बनमें फलोंके भारसे संयुक्त विल्वके वृक्षको देखा और उसपर चढ़ा २० हे शत्रु बिजयी राजा तब उस श्रेष्ठब्राह्मण ने उसवृक्षकी शाखामें उस मृगचर्मसे बँधेहुये कुंडलोंको लटकाकर विल्व फलोंको गिराया २१ हे प्रभु फिर विल्व फलोंकी ओर दृष्टि करनेवाले और गिरानेवाले उस ऋषिके वह विल्वफल मृगचर्मपर गिरे २२ तब जिस मृगचर्ममें वह कुंडल बांधेथे उनकी ग्रन्थीखुल गई २३ औरवह मृगचर्म अकस्मात् कुंडलों समेत वृक्षसे खुलकर नीचे पृथ्वीपर गिरा उस बड़े दृढ़ बंधेहुये मृगचर्मक ग्रन्थीखुलकर पृथ्वीपर गिरनेसे २४वहांकिसी ऐरावतबंशी सर्पने उनमणिकुंडलों कोदेखा तब वहशीघ्रगामी होकर २५ मुखसे कुंडलोंको पकड़कर कुंडलों समेत बामीमें प्रवेशकरगया सर्पसेहरणकियेहुये कुंडलोंको देखकर २६ वहउत्तंक व्याकुल और अत्यन्त क्रोधितहोकर वृक्षसे गिरा और बड़ीसावधानी से उसने एकलकड़ीकोलेकर २७ पैंतीस दिनतकउससर्पकोबामीको खोदा उससमयमें वहब्राह्मणक्रोध और अशान्तीपनेसे महादुःखितथा२८काष्ठयष्ठीसेटूटेअंगवाली अत्यन्त व्याकुल पृथ्वी उसके हस्तकी लाघवता औरअसह्य पराक्रमको न सहकर कंपायमान हुई इसके पीछे निश्चयसे नागलोकका मार्ग करनेकी इच्छासे ब्रह्मऋषिके हाथसे पृथ्वीके खोदनेकी दशामें२९ महा तेजस्वी बज्रधारी इन्द्रहरिजातके अश्वयुक्त रथकी सवारीसे

उसदेशमें गये और वहांउस श्रेष्ठ ब्राह्मणको देखा ३० वैशंपायनबोले कि उसके दुखसे दुःखीउस इन्द्रने ब्राह्मणरूप होकर उस उत्तंक से यह बचनकहा कि यह तुझसे करनासंभव नहींहै ३१ क्योंकि यहांसे नागलोक हजारों योजन दूरहै मैं लकड़ीसे इसतेरे कामकरने को पूराहोताहुआ नहीं मानताहूं उत्तंकने कहा कि हे ब्राह्मण जो नागलोकमें ३२ मुझे कुंडल नहीं मिलसक्तेहैं तो हेश्रेष्ठ ब्राह्मण मैं तेरे देखतेहुये अपनेप्राणोंको त्यागूंगा ३३ वैशंपायन बोले कि जब वह बज्रधारी इन्द्रउसके निश्चयको मिथ्या करनेमें समर्थ नहीं हुआतब बज्रास्त्रसे दण्डको संयुक्तकिया ३४ हे जन्मेजय उसकेपीछे उसबज्र से आघातित पृथ्वीमें नागलोकका मार्गउत्पन्न किया ३५ तबवह उसमार्गसे नागलोक में पहुंचा और हजारों योजनके बिस्तृत नागलोकको देखा ३६ हे महाबाहु जोकि मणिमोती से अच्छा अलंकृत दिव्य सुवर्ण के अनेक कोटोंसे संयुक्तथा ३७ स्फटिक की सीढ़ियोंसे युक्त बावड़ी वा निर्मल जलरखने वाली नदियां और नाना पक्षियोंके समूहोंसे युक्तवृक्षोंको देखा ३८ उसभार्गवने वहां जाकर उस नागलोकके द्वारको देखा ३९ जो कि पांचयोजन चौड़ा और सौयोजन लंबाथा तबउत्तंक नागलोक को देखकर दुखीहुआ ४० और कुंडलोंके फिर मिलनेसे निराशहुआ हे कौरव वहांतेजसे ज्वलितरूप रक्तनेत्र और मुखयुक्त कृष्ण श्वेत पूछरखने वाले घोड़ेने उससेकहा ४१ कि हे वेदपाठी तुममेरे अपानबायु स्थानको फूंको इसके पीछे तुम कुंडलोंको पाओगे ४२ ऐरावत के पुत्रने तेरे दोनों कुंडल हरणकियेहैं हे पुत्र तुम इसप्रयोजन में किसी प्रकारकी निन्दा नकरना क्योंकि तुमने गौतमऋषिके आश्रममें भी इसकर्मको कियाहै ४३ उत्तंकनेकहा कि मैं गुरूके आश्रममें होना आपका कैसे जानूं मैंने प्रथम जो आश्रममें कियाहै उसको सुनना चाहताहूं ४४ घोड़ाबोला मुझको तुम अपने गुरूका गुरूअग्निदेवता जानो हे ब्राह्मण तैंने गुरूके निमित्तसदैव मुझकोपूजा ४५ हे भृगुनंदन ब्राह्मण मैं तुझ पवित्रात्मासे सदैव बिधिपूर्वक पूजागया

हूं इसीहेतुसे तेराकल्याण करूंगा शीघ्रतासे मेरा कहनाकरो बिलंब मतकरो ४६ अग्निकेउस बचनको सुनकर उत्तंकने उसी प्रकार से किया और प्रीतिमान अग्नि देवता भी नागलोकके भस्मकरने की इच्छासे प्रचंड रूपहुये ४७ हे भरत वंशी इसके पीछे उसके फूंकेहुये रोमबूर्योंसे नागलोकमें महाभयकारी धूआं उत्पन्नहुआ ४८ हे महाराज उसबड़े वृद्धियुक्त धुएंसे उसनाग लोकमें कुछनहींजाना गया ४९ हेभरतबंशी जन्मेजय उससमय ऐरावतके सबगृहमेंहाहा-कारमचा औरधुएंसे व्याप्त होकरबासुकी आदिक सर्पोंकेमकान ऐसे गुप्तहोगये जैसेकि कुहरेसे ढकेहुये बन औरपर्ब्बतहोतेहैं ५० । ५१ धुएंसेरक्तनेत्र औरतीक्ष्ण अग्निसेसंतप्त वहसबनागमहात्माभार्गवका निश्चय जाननेकोआये ५२ उसबड़ेतेजस्वी महर्षी का निश्चयसुन-करभ्रांतियुक्तनेत्रवालेसबनागोंने बिधिपूर्ब्बकउनकापूजनकिया ५३ वृद्ध औरबालक जिनके अग्रवर्तीथे ऐसेउनसबनागोंने शिरोंसे दंड-वत्पूर्वकहाथोंको जोड़करकहाकि हे भगवन्आपप्रसन्न हूजिये ५४ उनसब सर्पों ने ब्राह्मणको प्रसन्न कर पाद्यर्घदान देकर उन बड़े दिब्यपूजित कुंडलोंको देदिया ५५ इसकेपीछे नागोंसे पूजित वह प्रतापवान् उत्तंक अग्निको प्रदक्षिण करके गुरूके स्थान को च-ला ५६ हे निष्पाप राजाजन्मेजयउसने शीघ्रही गौतमजीकेस्थान पर जाकर वहदिव्य कुंडल अहल्याकोदिये ५७ और गुरूके पास जाकर उसउत्तंकने बासुकीआदिक सबसर्पोंके सत्य २ वृत्तान्त को कहा ५८ हे जन्मेजय इस प्रकार वह महात्मा तीनों लोकों को भ्रमण करके उनमणि कुंडलोंको लाया ५९ हे जन्मेजय जिस को तुमने मुझ से पूछाहै वह उत्तंक मुनि ऐसे प्रतापवाला होकर तपसे युक्तहै ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्याने अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उन्सठवां अध्याय ॥

जन्मेजयने कहाकि हे ब्राह्मणोत्तम महाबाहु यशवान् गोविन्द

जीनेउत्तंकको बरदेकरफिरक्याकिया १ वैशंपायननेकहाकिगोबिन्द जी उत्तंकको बरदेकर सात्यकी के साथ शीघ्रगामी बड़े घोड़ों की सवारीसे द्वारकाको चले २ और सरोवर नदीबन और पर्ब्बतों को व्यतीत करके सुन्दरद्वारका पुरीको पाया ३ हे महाराज तब रैवत पर्ब्बतकाउत्सव वर्त्तमानहोनेपर श्रीकृष्णजी जिनका कि अनुगामी सात्यकीथा वहां जापहुंचे हे पुरुषोत्तम वह पर्बत अनेक प्रकार के अद्भुत रूपोंसे अलंकृत और रत्नरूप बस्तुओंके ढेरोंसेयुक्तशोभाय मानहुआ ४।५ वहबड़ा पहाड़ सुबर्णकीमाला,उत्तमफूल,वस्त्र,कल्प वृक्ष ६ और सुबर्णकेदीपक और वृक्षोंसे क्रमपूर्बकशोभितथा गुफा और झिरनाओंके स्थानोंमें दिवसके समान अथवा सूर्य्यके समान प्रकाशमानथा७घंटारखनेवाली बिचित्रित पताकाओं से चारोंओर को शोभायमानथा स्त्री और पुरुषोंके शब्दोंसे शब्दायमान सरोद गानकेउत्तम स्थानके समान होगया ८ और ऐसा अत्यन्त देखने के योग्यथा जैसेकि मुनियों के समूहोंसे युक्त मेरु पर्ब्बत होताहै हेभरतबंशी मद्यपानके आवेश से मत्तप्रसन्नमूर्त्ति गानेवाले स्त्री पुरुषोंके ६ और गुंजनेवाले पर्बतके शब्दस्वर्गको स्पर्श करनेवाले हुये वहपर्बतबाजे आदि कलगानेमें प्रवृत्त मदोन्मत्ततासे अचेत प्रसन्नमनुष्योंकेसिंहनाद और परस्परकी आकर्षणतासेपूर्णहुआ १० उसी प्रकार किलकिला नामशब्दों सेभी शब्दाय मानहोकर चित्त रोचक हुआ और मोलबेचकी बस्तु रखनेवाली और क्रीड़ायोग्य भक्ष्य भोज्य पदार्थों की बेचनीवाली हट्टा अर्थात् दूकानों से शोभित औरबिहार स्थानवालाथा ११ बस्त्र और मालाओंके समूहों से संयुक्त बीणा बांसुरी मृदंग रखनेवाला सुरामैरेय से युक्तभक्षण और भोजन की बस्तु जोकि सदैव दुखी अन्धे और दरिद्रियों को दीजातीथीं उनसेशोभित उसबड़े पर्बतका वह कल्याणरूप उत्सव शोभायमानहुआ१२।१३हेबीर रैवतकपर्ब्बतकेउत्सवमें वृष्णीबीरों का वह बिहार पवित्रस्थान रखनेवाला होकर शुभकर्मियोंसे सेवित था १४ स्थानादिकोंसे युक्त वह पर्ब्बत देवलोकके समान शोभा-

यमान हुआ हे भरतर्षभ उससमय वह गिरिराज श्रीकृष्णजीकी समीपताको पाकर १५ इन्द्रभवनके समान शोभायमान हुआ इस के पीछे अच्छी रीतिसे पूजित होकर वह गोबिंदजी शुभ भवनमें प्रवेशितहुये १६ और सात्यकीभी अपने भवनको गया बहुतकाल से बिदेशवासी प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजीने वहां ऐसे प्रवेशकिया जैसे कि बहुत कठिनकर्मोंको करके इन्द्रदानवोंमें प्रवेश करताहै—भोज वृष्णी अंधकवंशी उस पास आनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजीके १७। १८ सन्मुख ऐसेगये जैसे कि देवतालोग इन्द्रके सन्मुख जाते हैं उस समय उन बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने उनका यथोचित सत्कार पूजनपूर्व्वक कुशलमंगल पूछके अप्रसन्नहोकर अपने माता पिता को दण्डवत्करी उनसे मिलकर बिश्वासयुक्त वह महाबाहु उनसब समीपबैठेहुये वृष्णियोंके मध्यवर्त्तीहुये१९।२० और उनसबनेउनको परिधिके समान घेरलिया पितासमेत उस चरण धोनेवाले बिश्रांत रूप महातेजस्वी श्रीकृष्णजीने वहांके सब लोगोंसे उस सब महा-भारतके युद्धका वृत्तान्त बर्णनकिया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिरैवतकबर्णनेएकोनषष्ठितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय॥

बसुदेवजी बोले हे श्रीकृष्ण मैंने सदैव मनुष्योंके मुखसे अत्यंत अपूर्व्व युद्धको सुनाहै सो वहां उन कौरव और पांडवोंमें कैसे युद्ध हुआ १ हेनिष्पाप महाबाहु तुम प्रत्यक्षमेंदर्शी और भूतज्ञहो इस हेतुसे मैं पूछताहूं कि जैसे कौरव और पांडवोंका युद्धहुआ उसको यथातथ्य बर्णनकरो २ अर्थात् जिस प्रकार महात्मा पांडवोंका वह उत्तम युद्ध उनभीष्मकर्ण कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य औरशल्य आदिकके साथमें हुआ ३ और बहुतदेशोंकी सूरत रखनेवाले नानाप्रकारके देशोंकेरहनेवाले महाअस्त्रज्ञ अन्य२ क्षत्रियोंकेभी साथ जैसेहुआ ४ उसको बर्णनकीजिये—वैशंपायन बोलेकि माता पितासे इसप्रकार आज्ञात श्रीकृष्णजीने जैसे जैसे कि कौरव बीरोंका युद्धमें मरना

हुआ वहसब उनकेआगे बर्णनकिया ५ वासुदेवजी बोले किमहात्मा क्षत्रियोंकेकर्म अत्यन्तअद्भुतहैं असंख्यहोनेसे सैकड़ोंबर्षोंमेंभी बर्णन नहीं किये जासक्ते ६ हे देवताके समान तेजस्वी मुझ प्रधानता पूर्व्वक कहनेवाले के मुखसे आप राजा लोगोंके कर्मोंको ठीक २ श्रवणकरो ७ ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी कौरव भीष्मजी कौरवेन्द्रोंके ऐसे सेनापति हुये जैसे कि देवताओंका स्वामी इन्द्र होताहै ८ सातअक्षौहिणी सेनाका स्वामी बुद्धिमान् शिखंडी श्रीमान् अर्जुनसे रक्षितहोकर पांडवोंका सेनापतिहुआ ९ उन महात्मा कौरव और पांडवोंका वह महायुद्ध दशदिन तक रोमांचोंका खड़ा करनेवालाहुआ १०इसके पीछे शिखंडीने अर्जुनकी सहायतासे बड़े युद्ध में लड़नेवाले भीष्मको बहुत बाणोंसेमारा ११ इसके पीछे उस शर शय्यापर बर्त्तमान भीष्मरूप मुनिने दक्षिणायन सूर्य्य को व्यतीत करके उत्तरायण सूर्य्य बर्त्तमान होनेपर अपने शरीरको त्याग किया १२ फिर अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ बड़े बीर द्रोणाचार्य्यजी कौरवेन्द्रोंके ऐसे सेनापति हुये जैसेकि दैत्य राजोंके शुक्रजी सेनापति थे १३ वह युद्धमें प्रशंसनीय ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य शेषबची हुई नौ अक्षौहिणी सेनासे युक्त कर्ण कृपाचार्य्य आदिक बीरोंसे रक्षित हुये १४ महा अस्त्रज्ञ बुद्धिमान् धृष्टद्युम्न पांडवोंका सेनापति हुआ वह धृष्टद्युम्न भीमसेनसे ऐसे रक्षितथा जैसेकि मित्रसे रक्षितबरुण हुआथा १५ सेनासे घिरेहुये बड़े साहसी द्रोणाचार्य्य के चाहने वाले उस धृष्टद्युम्नने अपनेपिताकी पराजय आदिको ध्यानकरके युद्धमें बड़ा कर्मकिया १६ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न के उस युद्धमें बहुधा वह बीर राजा मारेगये जोकि बहुत दिशाओंसे आयेथे १७ पांचदिन तक वह बड़ा असह्य कठिन युद्धहुआ फिरथके हुये द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्न के आधीन हुये १८ इसके पीछे युद्धमें शेषबची हुई पांच अक्षौहिणी सेनासे युक्त कर्ण दुर्योधनकी सेनामें सेनापति हुआ १९ पांडवोंकी तीन अक्षौहिणी सेना जिनमें बहुधा बीरमारेगये अर्जुनसे रक्षित होकर नियतहुई२० इसके पीछे जैसे कि पतंगनाम

पक्षी अग्निमें प्रवेश करताहै उसी प्रकार भयकारी कर्ण अर्जुनके सन्मुख होकर दूसरे दिन मारागया २१ कर्णके मरनेपर अप्रसन्न नाश युक्त बल पराक्रमवाले कौरवोंने तीन अक्षौहिणी सेनाकेसाथ राजा शल्यको अपना सेनापति बनाया २२ जिनकी बहुत सवारी नाश होगई उन अप्रसन्न पांडवोंने शेषबची हुई एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिरको सेनापति किया २३ तब कौरवराज युधिष्ठिरने उस युद्धमें बड़े कठिन कर्मको करके मध्याह्नके समय राजा शल्यकोमारा २४ शल्यके मरनेपर बड़े साहसी और पराक्रमी सहदेवने उस द्यूत खेलनेवाले उपद्रवके मूलरूप शकुनीको मारा २५ शकुनीके मरनेपर महादुखोचित्त गदा हाथमेंलिये राजा दुर्योधन जिसकी बहुतसी सेनामारीगई थी वहांसे भागगया २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापवान् भीमसेन उसके पीछे दौड़ा और व्यास ह्रदके जलमें नियत उस दुर्योधनको देखा २७ फिर प्रसन्न चित्त पांचों पांडव मरनेसे शेषबचीहुई सेनाके साथ उस ह्रदमें नियत दुर्योधनको चारोंओरसे घेरकर बैठगये २८ जलको मझाकर बाणी रूपीबाणसे अत्यन्त घायल गदाहाथ में रखने वाला वह दुर्योधन शीघ्रहीजल सेबाहर निकलकर युद्धके निमित्त सन्मुख नियतहुआ २९ फिरवह राजा दुर्योधन उसबड़े युद्धमें पराक्रम करके राजाओंके देखते हुये भीमसेनके हाथसे मारागया ३० इसके अनन्तर वह पांडवी सेना रात्रिके समय डेरोंमें शयन करनेवाली हुई और पिताके मरनेको न सहनेवाले अश्वत्थामा के हाथसे मारीगई ३१ जिनके पुत्र सेना और शत्रुमारेगये वह पांचों पांडवमेरे और सात्यकीकेसाथ शेषरहगये ३२ कृतवर्मा और कृपाचार्य्य समेत अश्वत्थामा और कौरव्य युयुत्सुभी पांडवोंके पास शरण लेनेसे मुक्तहुये अर्थात् छोड़दियेगये ३३ साथियों समेत कौरव राज सुयोधन अर्थात् दुर्योधनके मरने पर बिदुर और संजय धर्मराजके पास नियत हुये ३४ हेप्रभु इस प्रकार वह महायुद्ध अठारह दिनतक हुआ युद्धोत्सव में मरनेवाले उन राजाओंने स्वर्गको पाया ३५ बैशंपायन बोले हेमहाराज तब

उसरोंमाच खड़ा करनेवाली कथाके सुनने वाले वृष्णी बंशियोंके दुःखशोक और पीड़ा उत्पन्न हुई ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिबासुदेवबाक्येषष्टितमोऽध्यायः६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले कि पिताकेआगे महाभारतके युद्धकोकहतेप्रतापवान् बड़ेबुद्धिमान् बीर बासुदेवजीने कथाके अन्तपर१अभिमन्युके मरनेका वृत्तान्तकहना त्याग किया अर्थात् बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्ण ने यह शोचकरनहीं कहाकि बसुदेवजी के अप्रिय बातको क्यों कहना चाहिये २ क्योंकि बसुदेवजी बड़े नाश युक्त दौहित्रके मरनेको सुनकर दुःख और शोकसे पीड़ित होंगे इसहेतुसे उनके शोचकरने के अर्थ बड़े ज्ञानीने यह शोचा ३ सुभद्राने युद्धमें मरनेवाले पुत्रको जिसकोकि श्रीकृष्ण ने नहीं कहाथा पूछाकि हे कृष्ण अभिमन्युके मरण को वर्णन करो यह कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ी तब बसुदेवजी ने पृथ्वीपर गिरीहुई उस सुभद्राको देखा उसको देखकर वह भी दुखसे मूर्च्छामान होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ४। ५ हे महाराज उस दौहित्रके मरने के दुख और शोकसे घायल उन बसुदेवजीने श्री कृष्णसे यह बचन कहा ६ हे शत्रुओंके नाश करनेवाले श्रीकृष्ण निश्चय करके आप इस पृथ्वीपर सत्यवक्ता प्रसिद्धहो जोकि अब मेरे दौहित्रके मरने को नहीं कहतेहो ७ हेसमर्थ अब अपने भानजे के मरण का ठीक २ वृत्तान्त मुझसे कहो वह तेरेसमान नेत्ररखनेवाला युद्धमें कैसे शत्रुओंके हाथसे मारागया ८ हे वृष्णिवंशी असमयपर मनुष्यका मरना कठिनसमझा जाताहै क्योंकि ऐसेस्थान पर भी मेरा हृदय खंड २ नहीं होता। हे कमललोचन उसमेरेप्यारे लाल लाल नेत्रवालेने युद्धमें सुभद्रामाताके और मेरे बिषयमें तुम से क्या कहा९।१०हे गोविन्दवह युद्धसे मुखमोड़कर तो शत्रुओं के हाथसे नहीं मारागया उसने युद्धभूमिमें अपना रूपान्तरतो नहीं किया ११ हे कृष्ण बालकपन से मेरे आगे अपनी प्रशंसा करते

उस बड़े तेजस्वी समर्थने अपनी शिक्षाका बर्णन किया १२ हे केशव वह बालक द्रोणाचार्य्य कर्ण और कृपाचार्य्यादिकसे छलाऔर माराहुआ तो पृथ्वीपर नहीं शयन करताहै उसको मुझसेकहो १३ वह मेरा दौहित्र सदैव पराक्रमियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भीष्म और कर्णसे ईर्षाकरताथा १४ तब अत्यन्त दुखीरूप गोबिन्दजीने इस प्रकारके अनेक रूपोंसे बिलाप करनेवाले अत्यन्त दुखित अपने पितासे यह बचनकहा १५ कि उसनेयुद्धके मुखपर होकर भी अपने रूपान्तरको नहीं किया औरपीछेकी ओरसे घायल भीनहींहुआ उस पराक्रमीने बड़ा कठोर युद्धकिया १६ लाखों राजाओंके समूहोंको मारकर द्रोणाचार्य्य और कर्ण से दुखित होकर दुश्शासनके पुत्रके स्वाधीनहुआ १७ हे प्रभुजो कदाचित वह अकेला किसी एककेही साथमें युद्धकर्त्ता होता तो वह युद्धमें वज्र धारी इंद्रसेभी नहीं मर सक्ताथा १८ संसप्तके क्षत्रियों करके अर्जुन को युद्ध भूमिसेहटाले जानेपर युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यादिकोंने उस अभिमन्यु को घेरलियाथा १६ हेपिता इसकेपीछे वह आपका दौहित्र युद्धमें शत्रुओंकाबड़ाभारी बिध्वंसकरकेदुश्शासनकेपुत्रके आधीनहुआ २० हेबड़े बुद्धिमान् निस्सन्देह वह अभिमन्यु स्वर्गको गया आप शोक को दूरकरो बुद्धिमान्‌लोग दुःखकोपाकर पीड़ामाननहीं होतेहैं २१ युद्धमें द्रोण कर्णादिक जिसके सन्मुखहुये वह महा इन्द्रके समान कैसे स्वर्गको नहीं पावेगा २२ हे अजेय पिताजी आप शोचको त्यागो दुःखके आधीनमतहोउसशत्रुओंकेपुरोंके बिजयीनेशस्त्रोंसेपबित्रगति को पाया २३ उस बीरके मरनेपर दुःखसे पीड़ामान यहमेरी बहिन सुभद्रापुत्रको पाकर कुररी पक्षीके समान पुकारनेलगी २४इसदुखी ने द्रौपदीकोपाकर पूछाकिहेआर्य्या वहसबपुत्रकहांहैं मैंउनको देखा चाहतीहूं उसके बचनको सुनकर कौरवोंकी वहसबस्त्रियां बड़ेदुखी के समान भुजाओंसे उसको पकड़कर पुकारीं २५ । २६ उत्तरा से कहाकि हे कल्याणिनि वह तेरापति कहां गया तू शीघ्रही उस के आनेको मुझसे कह २७ निश्चय करके उत्तरा मेरेबचनको सुनकर

शीघ्रही महल से दौड़तीथी हे उत्तरातेरापति किस हेतुसे सन्मुख नहीं आताहै २८ हे अभिमन्यु तेरेमहारथी मामा प्रसन्न हैं सबने तुझ युद्धाभिलाषी और यहां आनेवालेको अपनी क्षेमकुशल कही है २६ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले अब पूर्वके समानयुद्ध का बर्णन मुझसे करोअब यहां इसप्रकार बिलाप करनेवाली मुझ को किस हेतुसे उत्तर नहीं देताहै ३० बड़ेदुखसे पीड़ित कुन्तीने इस सुभद्राके इस प्रकारके और अन्य २ प्रकारके बिलापों को सुनकर धीरेपनेसे यहबचनकहा ३१ कि हेसुभद्रा जो बालक युद्धमें बासुदेव सात्यकी और पितासें भी रक्षित किया गया वहकाल धर्म से मारागया ३२ हे यादवनन्दिनी यह मनुष्यताका धर्मऐसाहीहै शोच मतकर तेरे अजेय पुत्रने परमगतिको पाया ३३ हे कमलदल लोचन रखनेवाली तू महात्मा क्षत्रियोंके बड़ेऊंचे कुलमें उत्पन्नहै उस चपलाक्ष पुत्रको मतशोच ३४ हे शुभदर्शनतुमइस गर्भवती उत्तरा को देखो यह भाविनी उस अभिमन्यु के पुत्रको शीघ्रही उत्पन्न करेगी ३५ हे यादव कुन्तीने इस प्रकार से उसको विश्वास देकर और बड़े शोकको त्याग करके उसके श्राद्ध का बिचार किया ३६ उस धर्मज्ञने राजा युधिष्ठिर भीमसेन और अश्विनीकुमार के समान नकुल और सहदेवको बतलाकर बहुत से दानदिये ३७ हे यादवजी इसकेपीछे सुभद्रानेबहुतसी गौओंका ब्राह्मणोंको दानकर के प्रसन्नता पूर्वकउत्तरासेयह बचनकहाकि ३८ हे निर्दोष बिराट पुत्रीयहां तुमको अपने पतिका शोक न करना चाहिये हे सुन्दरी गर्भमें नियत अपने पुत्रकी रक्षाकर ३९ हे महातेजस्वी वहकुन्ती इस प्रकार कहकर फिर मौनहोगई मैं उससे पूछकर इस सुभद्रा को यहां लायाहूं ४० हे बड़ाई देनेवाले इस प्रकार से आपके दौहित्रने मरणकोपाया इसबड़े शोकको त्यागकरो और शोचसमुद्रमें मतडूबो ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिबासुदेवबाक्येएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि तबधर्मात्मा वसुदेव जीने पुत्रके इसबचनको सुनकर शोकको त्यागकर उसका उत्तम श्राद्धकिया १ उसी प्रकार बासुदेवजीनेसदैवपिताकेप्यारे अपने भानजे महात्मा अभिमन्युका श्राद्धादिक कर्मकिया २ बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णने साठलाख ब्राह्मणों को बिधिके अनुसार वह भोजन करवाये जो कि सबगुणोंसे संयुक्त थे ३ महाबाहु श्रीकृष्णजीने उनभोजनकियेहुये ब्राह्मणोंकोपोशाकें पहिराकर ब्राह्मणोंके अभीष्टधनोंका प्रबन्ध किया वह कर्म उस प्रसन्नता का करनेवाला हुआ जिसमें लोमहर्षण होताहै ४ तब ब्राह्मणोंने उससुबर्णगौस्थान और पोशाकोंकेदानकोपाकर आशीर्बाद दिया कि तुम्हारी वृद्धिहोय ५ तबदाशार्ह देशी बासुदेव बलदेव सात्वकी और सत्यकने अभिमन्युका श्राद्धकिया ६ परन्तुवह दुःखसे अत्यन्त पीड़ामान थे इस्से सुखको नहींपाया उसी प्रकार अभिमन्युसे जुदे होकर बीर पांडवोंने हस्तिनापुरमें ७ शान्तीकोनहींपाया हे राजेंद्र पतिके शोकसे पीड़ामान उत्तराने बहुत दिनतक ८ नहींखाया वहबड़ा करुणापूर्वक दुःखका स्थानहुआ और उसकाउदरवर्ती गर्भभीअबिदितसा हुआ ९ इसकेपीछे बड़े तेजस्वीव्यासजी दिव्यनेत्रोंसे उसको जानकर आये औरवहां आकर उस बुद्धिमानने कुंतीसे और उत्तरासे मिलकर यह बचन कहा कि १० तुमको यहशोक दूरकरना चाहिये हे यशस्विनी तेरापुत्र बड़ा तेजस्वी होगा ११ यह वासुदेवजीके प्रभाव और मेरे बचनसे पांडवों केपीछे संसारकी रक्षा और पोषण करेगा १२ हे भरतबंशी उनको प्रसन्न करते अर्जुनको देखकर धर्मराजके सुनतेहुये इस बचनकोकहा १३ कि तेरापौत्र भाग्यवान् और बड़ा साहसी होगा औरचारो समुद्रतक पृथ्वीको धर्मसे पालेगा १४ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले कौरव्य अर्जुन इसहेतुसे तुम शोकको दूरकरो इसमें तेराकोई बिचार नहींहै यह सत्य २ हीहोगा १५ हे कौरव नंदन पूर्वसमयमेंजो

नृष्णोबीर श्रीकृष्णने कहाहै वह उसी प्रकारसे होनहार इसमेंतेरा बिचारना कुछनहीं चाहिये १६ जो अपने पराक्रमसे बिजयकरकेअ बिनाशी लोकोंको गया वह अभिमन्युभी तुमसे और अन्यसबकौरवोंसे शोचनेके योग्यनहींहै १७ हे महाराज तब धर्मात्मापितासे इसप्रकार समझाया हुआ अर्जुनशोकको त्यागकर प्रसन्न मुखहुआ १८ हेबड़े बुद्धिमान् धर्मज्ञ जन्मेजय तेरापिताभी उसगर्भमें इच्छानुसार ऐसे वृद्ध हुआ जैसेकि शुक्लपक्षमें चंद्रमा १६ उसकेपीछेव्यासजीने अश्वमेध यज्ञके निमित्त उसधर्मपुत्र राजा युधिष्ठिरको प्रेरणा पूर्व्वक आज्ञादी औरवहांहीं अन्तर्द्धान होगये २० हेतात बुद्धिमान धर्मराजनेभी व्यासजीके उसबचनको सुनकर धनलानेकेलिये उसपर्व्वत पर जानेका बिचारकिया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिव्यासउपदेशेद्विषष्टितमोऽध्याय: ६२ ॥

तिरेसठवां अध्याय॥

जन्मेजयनेकहा कि हेब्राह्मण तबराजा युधिष्ठिरने अश्वमेधयज्ञ के बिषयमें महात्मा व्यासजीसे कहेहुयेइसबचनको सुनकरफिरक्या कहा १ हेब्राह्मणोंत्तम राजामरुतने जो रत्न पृथ्वी में गाड़े उन को किस२प्रकारसे पायाउसकोमुझसे बर्णनकरो २ वैशंपायन बोले कि धर्मराज युधिष्ठरने व्यासजीका बचनसुनकर और अर्जुन भीमसेन नकुलसहदेवइन सबभाइयोंको बुलाकर यहबचन कहा कि हे बीर लोगो तुमनेवह बचनसुनाहै जो कि शुभचिन्तकतासे ३। ४ कौरवोंका भलाचाहनेवाले बुद्धिमान् तपोवृद्ध महात्मा भक्तों का सुख चाहनेवालेव्यासजीने कहाहै ५ धर्मके अभ्यासी अपूर्व्वकर्म्मी गुरू व्यास बुद्धिमान् गोबिंदजी और भीष्मजीसे कहा गयाहै ६ सो हे महाज्ञानीपांडव लोगोंमें उसको स्मरणकरके अच्छे प्रकारसे काम में लायाचाहताहूं वह तीनोंकामोंमें सबका हितकारीहै ७ और पुत्र पौत्रादिकोंमें कल्याणहै जिसकोकि ब्रह्मबादी कहतेहैं हे कौरव यह सबपृथ्वी रत्नोंसे रहितहै ८ हेराजाओ तब व्यासजीने राजा मरुत

केधनकाबर्णनकिया जो यह तुम्हाराबहुत अंगोकृतहै और जो उस-
को उचित और योग्यमानतेहोतो उसीप्रकारहो ९ जैसाकि उपदेश
कियागयाहै हेभीम अथवातुमधर्मसे उसको किसप्रकार कामानतेहो
हेकौरव्य राजाके इसबचनके कहनेपर १० भीमसेनने हाथजोड़कर
उस श्रेष्ठराजासे यह बचनकहा कि हेमहाबाहु यहमुझको स्वीकार
है ११ जो तुमनेव्यासजीके बतायेहुये धन लानेके बिषयमें कहाहै
हेप्रभु जो यहांराजा मरुतके उसधनको हमप्राप्तकरें१२ तब हमारा
अभीष्ट प्राप्तहोय हेमहाराज इसमें मेरा यहबिचार है कि हमलोग
शिवजीको पूजकर उस महात्मा गिरीशकेधनको १३ उनकीकृपासे
लावें आपकाकल्याणहोयनिश्चयकरकेहमउस देवेश्वर और उसके
अनुचरोंको १४बुद्धि मन बाणी औरकर्मसेप्रसन्नकरके धनकोपावेंगे
जो उसधनकीरक्षा करतेहैं वह भयकारी दर्शनबालेकिन्नरहैं १५
वह सर्वकिन्नर शिवजी महाराजके प्रसन्न होनेपरस्वाधीनहोंगे हे
भरतबंशीउसभीमसेनके इस शुभबिचारपूर्व्वकबचनको सुनकर१६
धर्मपुत्र युधिष्ठिर अत्यन्त प्रसन्नहुये औरअर्जुन आदिक अन्य सब
लोगोंनेभी इसी बचनको कहा १७ तब सब पांडवोंने रत्नलानेको
निश्चय करके उत्तरायण रोहिणी नक्षत्रमें रबिबारके दिन सेनाको
आज्ञादी १८ इसके पीछे पांडवलोगोंने प्रथमही देवताओंमें श्रेष्ठ
महेश्वरजी को पूजकर ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराके यात्राक-
री १९ मोदक तस्मै और मांस पूप आदिक से महात्माको पूजबहुत
स्तुतिकरके अत्यन्तप्रसन्नहोकरचले२०वहांअत्यन्तप्रसन्नचित्त उन
नगरबासी श्रेष्ठब्राह्मणोंने उन यात्रा करनेवाले पांडवोंकेशुभमंगल
बर्णनकिये फिरवहपांडव अग्नि औरब्राह्मणोंकोप्रदक्षिणाकर शिरोंसे
दण्डवत करकेचलदिये२१।२२ पुत्रोंके शोकसे घायलराजा धृतराष्ट्र
और गान्धारी और दीर्घ नेत्रवाली कुन्तीको जतलाकर २३ धृत-
राष्ट्र के पुत्र कौरव युयुत्सूको वृद्धोंके पास छोड़कर पुरबासी और
ज्ञानी ब्राह्मणों से आशीर्बाद युक्त होकर पांडवोंनेयात्राकरी २४॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिरत्नार्थयात्रायांत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौसठवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि इसके पीछे बहुत आनन्दसे भरे हुये सब मनुष्य औरसवारी रखनेवाले वहपाण्डव रथके बड़े शब्दोंसे पृथ्वी को शब्दायमानकर चलदिये १ सूतमागध और बन्दीजनों की स्तुतियों से स्तूयमान औरजिसप्रकार सूर्य्य अपनी किरणोंसे घिरा हुआ होताहै उसीप्रकार अपनी सेनाओं से चारों ओर को व्याप्त होकर पांडवलोगचले २ उससमय युधिष्ठिर मस्तक पर श्वेत छत्र धारण किये हुये ऐसाशोभित हुआ जैसे कि पूर्णमासीकेदिन चन्द्रमा शोभित होताहै पुरुषोत्तम पांडव युधिष्ठिरने मार्गमें अत्यन्त प्रसन्न चित्त मनुष्यों के बिजय के आशीर्वाद न्याय और बिधिके अनुसारलिये ३। ४ हे राजा उसीप्रकार जो सेनाके लोग राजा के आगेपीछे थे उनका हलहला शब्दआकाशको पूर्णकरकेनियतहुआ ५ तब महाराजने सरोवर नदीबन उपबनों को ब्यतीत करके उस पर्व्वतकोभी प्राप्तकिया ६ हे राजेन्द्र उसदेश में जहांपर कि वह उत्तमद्रब्य था वहां राजायुधिष्ठिर ने कल्याणरूप समधरातल स्थानपर सेनाके लोगोंसमेत निवासकिया हे भरतर्षभोंमेंश्रेष्ठ कौरव ७ वहां तप बिद्यासे पूर्णजितेन्द्री ब्राह्मणोंको और वेद वेदाङ्गसे युक्त धौम्य पुरोहितको आगे करके निवासकिया पुरोहित समेत ब्राह्मण और क्षत्रियोंने ८ न्यायके अनुसार शान्ति करके राजाको और उसके प्रधान मन्त्रियों को बिधिके अनुसार मध्यवर्त्ती नियत करके ६ छः राजमार्ग और नौखण्ड रखनेवाला सेनाका निवास स्थान बनाया फिर उस राजेन्द्रने बिधिपूर्वक मतवाले हाथियोंका निवासस्थान बनवाकर ब्राह्मणों से यह बचनकहा कि हे उत्तम ब्राह्मणलोगो इसकर्मके विषयमें जैसा आपकीबुद्धिमें शुभदिनऔर नक्षत्र ठहरे उसमें १० जैसा आपकहैं वैसाही हमको करनायोग्य होगा यहां बिचार करनेवाले हमलोगोंका समय व्यतीतनहोजाय ११ हे ऋषियो इसको ऐसा बिचार पूर्व्वक निश्चयकरो जिसको

बहुत शीघ्र करना योग्य होय धर्म राज का प्रिय चाहनेवाले प्रसन्न ब्राह्मणोंने पुरोहित समेत राजाके इस बचन को सुनकर यह उत्तर दिया कि १२ अबहीं पवित्रदिन और नक्षत्र है आप अपने उत्तमतर कर्म में उपायकरें हे राजा अबयहां केवल जलपानही करनेसे निवासकरें और आपभी इसीप्रकार से स्थितिकरो १३ उन उत्तम ब्राह्मणों के बचन को सुनकर व्रत करनेवाले प्रसन्न चित्तवह पांडव रात्रिके समय कुशासनों पर ऐसे नियतहुये जैसे कि यज्ञमें देदोप्त अग्नि १४ । १५ इसके अनन्तर ब्राह्मणों के बाक्योंके सुननेवाले उन महात्माओंकी वह रात्रिव्यतीत होगई फिर प्रातःकालके समय ब्राह्मणोंने राजायुधिष्ठिरसे यह बचनकहा १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपर्वतस्थितिबर्णनेचतुष्षष्ठितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

ब्राह्मण बोले कि हे राजा प्रथम उन महात्मा शिवजीकी भेंट कीजिये भेंटदेनेके पीछे अपने प्रयोजनमें उपायकरें १ युधिष्ठिरने उन ब्राह्मणोंके बचन को सुनकर शिवजीकी भेंट न्यायके अनुसार निवेदन करके अर्पणकरी २ हे राजा फिर वह पुरोहित बिधिके अनुसार संस्कार किये हुये घृतसे अग्निको तृप्तकर चरुको मन्त्रसे सिद्धकरचला ३ वहां जाकर उसने मन्त्रसे पबित्र पुष्पोंको लेकर मोदक तरमें और मांसों से बलिप्रदान किया ४ उस वेद पारग पुरोहित ने अपूर्व्व पुष्प और नानाप्रकारके पदार्थों समेत खीलसे सबस्विष्ठ तम करके ५ किंकर लोगों का उत्तम बलिदान किया यक्षराज कुबेर और मणिभद्रके निमित्त बलिदानकिया६ इसीप्रकार अन्ययक्ष और भूतपतियों के अर्थ कृषरान्न मांस और कालेतिलों समेत दानोंसे बलिदानकिया ७ फिर पुरोहित ओदननाम भोजन कीवस्तुओंको शकटोंमें तैयार करकेलाया और राजानेहजारों गौवें ब्राह्मणोंको दानदेकर ८ निशाचर भूतोंको बलिदिया हे राजाधूप गन्धसेपूर्ण और पुष्पोंसेयुक्त ६ वहशिवजीका स्थान अत्यन्त शो-

भायमानहुआ राजायुधिष्ठिर सबरुद्रगणों समेत शिवजीकी पूजा करके १० व्यासजीको आगेकरके रत्नोंकेभंडार अर्थात् खजाने के पासगया संसारके सबधनके अधिपति कुबेरजीको पूजकर दंडवत् नमस्कार करके ११ बिचित्र, पुष्प, अपूप, और कृषरसेशंखआदिक सबनिधियों समेत निधिपालोंको पूज १२ पवित्र ब्राह्मणों से स्वस्तिबाचन कराके वह पराक्रमी राजा उनके पुण्याह घोष और अपनेतेज समेत नियतहुआ १३ और प्रसन्न होकर युधिष्ठिरनेउस धनकोखुदवाया तब स्रवास्थाली आदिकपात्रलोटा कमंडलछोटा-कलशनामककरोदिक जोकि चित्तरोचक और अनेक प्रकारकेथे १४ भृंगार, अर्थात् सुवर्णकीझारी आदि कराह अर्थात् कढ़ाव कलश आदिक बर्द्दमानकान् अर्थात्घटादिकबहुतसेबिचित्र हजारों भाजनों को धर्मराज युधिष्ठिरने निकलवाया और सन्दूकोंमें उनको भर-वाया १५।१६ और उष्ट्रआदिकोंपर वहबांधाहुआ बोझा दोनोंओरको बराबरहुआ हेराजावहां राजायुधिष्ठिरके उष्ट्रादिभार बाहक इतने थे१७कि छयासठ हजारऊंट उनसे दूनेघोड़े और ग्यारहलाख हाथी १८ छकड़े रथ और हथिनियांभीउतनीहींथीं खिचवर और मनुष्योंकी संख्या अगणितथी १६ वहधन इतना था जिसको कि युधिष्ठिरनेलिया जिसमें सुवर्ण से भरे हुये आठहजारऊंट सोलह हजार छकड़े और चौबीसहजारहाथीथे २० पांडवयुधिष्ठिर इनसब सवारियोंपरधनको भरकरऔरफिर महादेवजीकोपूजकर हस्तिना-पुरकीओरचला फिर व्याससजीसे आज्ञालेकर वह पुरुषोत्तम युधि-ष्ठिर पुरोहितको आगेकरके प्रतिदिन दोकोशचलकर निवासीहुआ २१।२२ हेराजाधनकेभारसे महा पीड़ित वह बड़ीसेना पांडवोंको प्रसन्नकरतीहुई बड़ीकठिनतासे राजधानीके सन्मुखचली २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिधनाहरणेपंचषष्ठितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय॥

बैशंपायन बोलेकि उसीसमयपरपराक्रमीवासुदेवजीभी वृष्णियों

समेत हस्तिनापुरमेंआये १ वहपुरुषोत्तम द्वारकाजानेके समयजिस प्रकार राजायुधिष्ठिरसे सलाह करगयेथे उसीसमयपर अश्वमेधके नियमको जानकर २ प्रद्युम्न, युयुधान, चारुदेष्ण, साम्ब, गद, कृत-बर्म्मा, ३सारण, वीरनिष्ठऔर उल्मुकसमेत बलदेवजीको अग्रभागमें करके सुभद्रा समेत ४ द्रौपदी उत्तरा और कुन्तीके दर्शनाभिलाषी और जिनके स्वामीमारे गये उनक्षत्रियाओंको बिश्वासदेनेके अर्थ आपहुंचे राजाधृतराष्ट्र और बड़ेसाहसी बिदुरजीने उन आयेहुओं को देखकर न्यायके अनुसारलिया ५ । ६ महातेजस्वी बिदुर और युयुत्सूसे अच्छेप्रकार पूजित पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी वहांठहरे ७ हे जनमेजय वहां श्रीकृष्णजीके निवासकरनेपर शत्रुओंकेवीरोंकोमार-नेवाले तेरे पिता परीक्षित ने जन्मलिया ८ हेमहाराज ब्रह्मअस्त्रसे पीड़ामान वह राजा परीक्षित मृतक और अचेष्ट होकर प्रसन्नता और शोक का बढ़ाने वाला हुआ वहां प्रसन्न मनुष्यों के सिंहनादसे उत्पन्न शब्द सर्बदिशाओं में प्रवेशकरके फिर बन्दहोगया ९ । १० तब इन्द्री और मनसे महाब्याकुल श्रीकृष्णजी शीघ्रही सात्यकीको साथलेकर स्त्रियोंके महल में पहुंचे ११ तदनन्तर वहां शीघ्र आने वाली और बारंबार बासुदेवजी को पुकारती और दौड़ती हुईअपनी फूफी कुन्तीको देखा १२ और पीछेकी ओरसे यशवन्ती द्रौपदीसुभ-द्रा और बान्धवोंकी स्त्रियोंकोकरुणा पूर्ब्बक बिलाप करता हुआ दे-खा १३ हेराजेन्द्र तब राजा कुन्तभोजकी पुत्री कुन्तीने श्रीकृष्णको पाकर उष्ण अश्रुपातों से युक्त गद्गद बाणी समेत यह बचन क-हा १४ हेमहाबाहु बासुदेव तुमसे देवकी सुपुत्रवतीहै तुम्हींहमारी गति और प्रतिष्ठाहो यह बंशतेरेहीस्वाधीनहै १५ हेप्रभु यदुबीरजो यह तेरेभानजेका पुत्रहै वह अश्वत्थामाके अस्त्रसे मृतक उत्पन्नहुआ है हे केशव उसको जीवदानदो १६ हेप्रभु यदुनन्दन तुमने अश्व-त्थामाके अस्त्रफेंकने के समयमें यह प्रतिज्ञाकीहै किमैं मृतक उत्पन्न होनेवाले बालकको सजीव करूंगा १७ हेपुरुषोत्तम सोयह मृतक उत्पन्न हुआहै हेतात इसको देखो हे लक्ष्मीपति तुम इस उत्तरा

सुभद्रा द्रौपदी और मुझसमेत १८ युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव को रक्षा करनेको योग्यहो १६ हेश्रीकृष्ण पांडवोंके और मेरेप्राण इसकेही आधीन हैं इसीप्रकार मेरे सुसर और पांडवोंका पिंड इस में नियतहै २० हेजनार्द्दन तेरा कल्याण होय अबतुम उस अपनेस- मान बल पराक्रमी मृतक हुये प्यारे अभिमन्युके प्यारे अभीष्टको उत्पन्नकरो २१ हेशत्रुओंके नाशकरनेवाले श्रीकृष्ण यह उत्तरापूर्व समय में प्यारसे अभिमन्युके कहे हुये बचनको निस्सन्दे होकर कहतीहै २२ हेश्रीकृष्ण तब निश्चय करके अभिमन्युने उत्तरासेकहा था कि हेकल्याणिनि तेरापुत्र मेरेमामाके कुलकोजायगा २३ वृष्णी अन्धक कुलोंमें जाकर धनुर्वेद बिचित्र अस्त्र और शुद्धनीतिशास्त्र को पढ़ैगा २४ हेतात उस शत्रुओंके मारनेवाले अजेय अभिमन्युने बड़े बिश्वास पूर्व्वक कहाहै और यह इसीप्रकार है इस में किसी बातका सन्देह नहींहै २५ हेमधुसूदन हमसब तुमको प्रणामकरके प्रार्थना करतेहैं कि आप इसकुलकी रक्षाके निमित्त उत्तम कल्याण करो २६ बड़े नेत्रवाली कुन्ती श्रीकृष्णसे इस प्रकारकी बातें कह- कर और दुःख से पीड़ित अन्य२ स्त्रियांभी भुजाओंको उठाकरपृथ्वी पर गिरपड़ीं २७ हेसमर्थ महाराज अश्रुओं से व्याकुल नेत्रवाली उन सबस्त्रियों ने कहा कि वासुदेवजी के भानजे का पुत्र मृतक उत्पन्न हुआ २८ हेभरतवंशी इस बचनके कहनेपर श्रीकृष्णजी ने उस पृथ्वीपर पड़ी हुई कुन्तीको उठाया और बिश्वास दिया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीक्षितजन्मकथनेषट्षष्ठोऽध्यायः ६६॥

सड़सठवां अध्याय॥

बैशंपायनबोले कि तब कुन्तीके उठनेपर सुभद्रा भाईको देखकर दुःख से पोड़ामान होकर पुकारी और यह बचन बोली कि हेपुंडरी काक्षपौत्र तुमबुद्धिमान् अर्जुन के पुत्रको देखो जोकि कौरवोंकेनाश होनेपर बिना अवस्थाकेनाश होगया १।२ अश्वत्थामा ने एकसींक भीमसेन के निमित्त उठाई वह उत्तरा, अर्जुन, और मुझपर गिरी ३

हेकेशव वहीसींक मुझ बिदीर्ण चित्तके हृदय में नियतहै जोमैं उस अजेय अभिमन्युको उसके पुत्र समेत नहींदेखतीहूं ४ धर्मात्मा धर्मराज युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव इस अभिमन्युके मृतक हुये पुत्रको सुनकर क्या कहेंगे हे श्रीकृष्ण पांडवलोगों को अश्वत्थामाने नाशकरदिया ५।६ हेयदुनंदन वह अभिमन्यु निस्संदेह पांचों भाइयोंका प्याराथा उस को पांडवलोग अश्वत्थामा के अस्त्र से बिजयकिया हुआ सुनकर क्या कहेंगे ७ हे जनार्दन शत्रुओं के बिजयकरनेवाले श्रीकृष्ण अभिमन्युके मृतक पुत्र उत्पन्नहोनेके सिवाय बढ़कर कौनसा दुःखहोगा ८ हे श्रीकृष्ण सोअब शिरसे झुकी हुई मैंकुन्ती और यह द्रौपदी तुम को प्रसन्न करती हैं हे पुरुषोत्तम इनसबको देखो ९ हे शत्रुओंके मर्दनकरनेवाले लक्ष्मीपति जब अश्वत्थामा पांडवोंके गर्भको नाशकरताथा उससमयपर भी निश्चय करके तुझीक्रोधयुक्तने कहाथा कि १० हे ब्रह्मबन्धो नराधम मैंतुझको कामनासे रहित करूंगा और अर्जुनके पौत्रको सजीव करूंगा ११ हे अजेय इसबचनको सुनकर तेरे पराक्रमकी जानने वाली मैं तुझको प्रसन्न करतीहूं अभिमन्युका पुत्रजीउठे १२ हे श्रीकृष्ण जोतुम इसशुभ बचनको प्रतिज्ञा करके सफल नहीं करोगे तो मुझ कोभी मरा हुआही जानों हे बीरजो तेरे जीवते हुये यह अभिमन्यु कापुत्रनहीं जीवसक्ताहै तोमैं तुझसे कौनसा प्रयोजन चाहूंगी १३ हे अजेयबीर तुमइस अभिमन्युके मृतक पुत्रको जोकि तेरे समान नेत्ररखनेवाला है ऐसे सजीवकरो जैसे कि इन्द्रबर्षा करके खेतीको सजीव करताहै १४। १५ हे शत्रुंजय केशवजी तुमधर्मात्मा सत्यवक्ता और सत्यपराक्रमीहो तुम अपने शुभबचनके पूरेसच्चेकरनेको योग्यहो तुमजो चाहौतो इनमरेहुये तीनोंलोकोंकोभी जिलासक्तेहो फिर अपनेभानजेके प्यारेमरेहुये पुत्रकोकैसे न जिलाओगे १६।१७ हे श्रीकृष्ण मैं तेरे प्रभावको जानतीहूं इसहेतुसे मैं प्रार्थना करती हूं कि यह तुम्हारा पांडवोंके ऊपर बड़ा अनुग्रहहोगा १८ मैं तेरी छोटीबहिन हूं मृतक पुत्रवालीहूं और तेरेपास शरणमें आईहूं हे

महाबाहु इसकोजानकर करुणा करके दयाकरनेके योग्यहूं १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीक्षितजन्मकथनेसप्तषष्ठितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे राजेंद्र दुःखसेमूर्च्छामान इसप्रकारसे कहेहुये केशीके मारनेवाले श्रीकृष्णने उनसब स्त्रीपुरुषोंको प्रसन्न करते हुये बड़ेउच्चश्वरसे कहा कि ऐसाही होय १ तबउस प्रभु पुरुषोत्तम ने इसवचनसे उनसबको ऐसेप्रसन्नकिया जैसेकि धूपसे पीड़ामान मनुष्यको जलदेनेसे प्रसन्न करतेहैं २ इसकेपीछे वहश्रीकृष्णशीघ्र ही तेरे पिताके उसमहलमें प्रवेशकरगये हे पुरुषोत्तम जोकि श्वेत मालाओंसे बिधिके अनुसार शोभायमानथा ३ हे महाबाहुसब दिशाओंमें रक्खेहुये जलसे पूर्णघट घृत तिल तन्दुल और सरसों ४ चारोंओर रक्खेहुये अग्नि और निर्मल अस्त्रोंसे रक्षित औरसेवाके निमित्तस्वरूपवान् वृद्धस्त्रियोंसेयुक्त ५ चारोंओर को बड़े २ बिद्वान् वैद्यचिकित्सकोंसे व्याप्तथा हे बुद्धिमान् उसतेजस्वीने बिधिकेअनुसार सावधान मनुष्योंसे नियतकी हुई राक्षसोंकी नाशकरनेवाली सबद्रव्योंकोभीदेखा६।७आपकेपिताकाजन्म महलउसप्रकारकादेख करश्रीकृष्णजीप्रसन्नहुये औरबहुतश्रेष्ठहैबहुतहीश्रेष्ठहैयहबचन कहा तबअत्यन्त प्रसन्नमुख श्रीकृष्णके इसप्रकारके कहनेपर ८ द्रौपदीने शीघ्र जाकर उत्तरासे यह बचन कहा कि हेकल्याणिनि यह प्राचीन ऋषि बुद्धिसेपरे स्वरूपवाला अजेयश्रीकृष्ण तेरा सुसर तेरे सन्मुख आताहै देवताके समान श्रीकृष्णजीके दर्शन करनेकी अभिलाषा रखनेवाली वह देवी नेत्रों में अश्रुभरेहोने के कारण गुप्त अर्थ वाले बचन और आंसुओंकोरोककर बस्त्रसे अपने शरीरकोढक मृतकपुत्र कोगोदमेंरखकरबैठगई उसतपस्विनीने उसप्रकार दुखीहृदयकेसाथ ९।१०।११उन आतेहुये गोबिन्दजीको देखकरकरुणापूर्व्बक बिलाप किया कि हे दुष्टसंहारी हार्द्दीकाश निवासी श्रीकृष्णजी तुम इस बालकसे रहित अभिमन्युको और मुझको सदैव मृतक देखो १२

हेमधुसूदनबीर श्रीकृष्ण मैं तुमको शिरसेप्रणामपूर्व्वक प्रसन्नकर-तीहूं अश्वत्थामाके अस्त्रसे भस्महुये इसमेरे पुत्रको सजीवकरो १३ हेपुंडरीकाक्ष जो धर्मराज और भीमसेन और आपसे मैंने कोईबचन कहाहोय तो हेप्रभु यहबज्र मुझकोमारडाले मैंहींमरजाऊं परन्तुयह बालक ऐसीदशावालानहोय १४।१५ निर्दयबुद्धिवाला अश्वत्थामा ब्रह्मअस्त्रसे इस गर्भमें बर्त्तमान बालकके मारनेसे क्या फलपावेगा १६ हे शत्रुहन्ता गोबिन्दजी सो मैं तुमको शिरसे दण्डवत् पूर्व्वक प्रसन्नकरके प्रार्थना करतीहूं कि जो यह बालक नहीं जियेगा तो मैं अपने प्राणोंको त्यागूंगी १७ हेमाधवजो इसबालकमें मेरे बहुत मनोरथथे वहसब अश्वत्थामाने नाशकिये अबमैं जीकर क्याकरूंगी १८ हे श्रीकृष्णजी मेरी सलाहथी कि भरी गोदसे तुझ जनार्द्दन श्रीकृष्णको दंडवत् करूंगी १९ वह भी बिपरीत हुआ हेमधुसूदन निश्चय करके वह चपलनेत्रवाला आप का अत्यन्त प्याराथा तुम उसके पुत्रको ब्रह्मअस्त्रसे गिराहुआदेखो २०।२१ यह उसप्रकारका उपकार भूलजानेवाला और निर्दयहै जैसाकि इसका वह पिताथा जोकि पांडवोंकी लक्ष्मीको त्यागकरके यमलोकको गया २२ हेबीर केशवजी युद्धके मुखपर अभिमन्युके मरनेपर मैंने यह प्रतिज्ञाकरी थी कि मैं थोड़ेही कालपीछे तेरे पास आऊंगी २३ हे श्रीकृष्णजी बनकोप्यारा जाननेवाली निर्द्दयी मैंने उस कर्मको नहींकिया अब वहां जानेवाली मुझको वह अभिमन्यु क्याकहेगा २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअष्टषष्ठितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

बैशंपायनबोले कि वह महादुखी पुत्रकी चाहनेवाली तपस्विनी उत्तरा बिक्षिप्तोंके समान अनेकप्रकारके करुणा बिलापकरके पृथ्वी में गिरपड़ी१ दुखसे पीड़ामान कुन्ती और भरतबंशियोंकी सबस्त्रियां उस मृतकपुत्रवाली पृथ्वीपर पड़ीहुई उत्तराकोदेखकर पुकारीं२ हे राजेन्द्र पांडवोंका महल दोमुहूर्त्ततक दर्शनके अयोग्य और शोकोंके

शब्दोंसे शब्दायमानरहा ३ हेवीरजनमेजय वहउत्तरापुत्रके शोकसे पीड़ितहोकर दोघड़ीतक अचेतरही फिर उस उत्तराने सचेत होकर पुत्रकोबगलमें लेकर यहवचनकहा ४।५ किहेधर्मज्ञकेपुत्र तुमअधर्म कोनहीं जानते हो जो श्रीकृष्णको दण्डवत् नहीं करतेहो हेपुत्र तुम जाकर अपने पितासे यह मेरावचन कहो कि हेवीर किसीदशामेंभी बिनासमयके जीवोंका मरनाअसंभवहै ६।७ जोमैं अब यहांतुझपुत्र और अपनेपतिसे रहितहोकर अकुशलता और निर्द्धनताको प्राप्त होकरमरनेके योग्यहोकरभी जीवतीहूं ८ हेमहाबाहु अथवा धर्मरा-जसे आज्ञालेकर मैंअसह्य विषको खाऊंगी वा अग्निमें प्रवेशकरूं-गी ९ हेतात यहमरना बड़ाहीकठिनहै जोमुझपुत्र और पतिसेरहित का हृदय खण्ड खण्ड नहींहोता १० हेतातउठो इसदुःखीपीड़ामान आपत्तियुक्त शोकसागर में डूबीहुई परदादीको देखो ११ तपस्विनी आर्य्या सुभद्रा द्रौपदी और व्याधासे घायल मृगी के समान मुझ दुःख से पीड़ामान को देखो १२ उठो और लोकनाथ आनन्दस्व-रूपका मुख जोकि कमलदलके समान चपलनेत्र रखने वाला है उसको देखो १३ इसके पीछे सब स्त्रियोंने इस प्रकार बिलापकरने वाली पृथ्वीपर गिरीहुई उस उत्तराको देखकर फिर उठाया १४तब राजा बिराटकी पुत्रानेधैर्य्यसे उठकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजीको पृथ्वीपरपड़कर दण्डवत्करी १५ उसपुरुषोत्तम श्रीकृष्णजीनेउसके बड़े बिलापको सुनकर आचमन करके उस ब्रह्मअस्त्र को दूरकिया १६ उस पवित्रात्मा अविनाशी श्रीकृष्णने उसके जीवनकीप्रतिज्ञा करी और सब संसारको सुनाकर कहा कि १७ हेउत्तरा में मिथ्या नहीं कहताहूं यह सत्यही होगा मैं इसको सब जीवोंके देखते हुये सजीव करताहूं १८ मैंने जैसे पूर्व स्वतन्त्रदशाओंमेंभी मिथ्यानहीं कहा है और कभी युद्धसे मुखभी नहीं मोड़ाहै इसी प्रकार यह स-जीव होजाय १९ जैसे कि धर्म और मुख्यकर ब्राह्मण मेरे प्यारे हैं उसी प्रकार मृतक उत्पन्नहुआ यह अभिमन्यु का पुत्र भी जी उठे २० जैसे कि मैं कभी अर्जुनसे विरोधता नहीं किया चाहताहूं

उस सत्यतासे यह मृतक बालक जी उठे २१ जिस प्रकार सत्यता और धर्म सदैव मुझ में नियत है उसी प्रकार यह मराहुआ अभिमन्युका बालक पुत्रजी उठे २२ जैसे कि कंस और केशीको मैंनेधर्म से मारा अब उसी सत्यतासे यह बालक भी जीउठे २३ हेभरतर्षभ बासुदेवजी के इस बचनके कहतेही वह बालक चैतन्य होकर धीरे२ चेष्टा करने लगा २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीक्षितसंजीविनेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि हेराजा जब श्रीकृष्णजी ने ब्रह्म अस्त्रको निवृत्त किया तबवह महल तेरे पिताके तेजसे अत्यन्त प्रकाशमान हुआ १ इसकेपीछे सबराक्षस उसस्थान को छोड़ छोड़कर नाशमान होगये और अन्तरिक्षमें यह शब्द हुआ कि हेकेशवजी धन्यहै धन्य है २ तबवह प्रकाशमान अस्त्रभी ब्रह्माजी के पासगया हेराजाफिर तेरे पिताने प्राणोंको प्राप्तकिया ३ और वह बालक पराक्रम प्रसन्नताके समान चेष्टाकरनेलगा इसके पीछे वह भरतबंशियोंकी स्त्रियां प्रसन्न हुईं ४ फिर गोबिन्दजीकी आज्ञासे ब्राह्मणोंसे स्वस्तिबाचन कराया फिर उन सब प्रसन्नस्त्रियोंने श्रीकृष्णजीकी प्रशंसाकरी ५ जैसे कि नौकाको पाकरपार पहुंचनेवाला प्रसन्नहोताहै उसीप्रकार भरतबंशियोंकी स्त्रियां कुन्ती, द्रौपदी सुभद्रा, उत्तरा ६ और नरोत्तम लोगोंकी अन्य२ स्त्रियां प्रसन्नचित्त होगईं वहांपर मल्ल नट ज्योतिषी सौख्य शावक ७ सूत और मागधोंके समूहोंनेउन श्रीकृष्णजी कीस्तुतिकरी हेभरतबंशियों में श्रेष्ठ कौरवोंकी प्रशंसा कीर्त्ति और आशीर्बादोंसेभी श्रीकृष्णजी को प्रसन्न किया ८ फिर प्रसन्नचित्त उत्तराने अपनेपुत्रसमेत उठकर समयके अनुसार श्रीकृष्णजीको दंडवत्करी तबप्रसन्नहोकर श्रीकृष्णजीने बहुतसे रत्न उसकोदिये और इसीप्रकार अन्य२ यादवोंनेभी दिये हे महाराज प्रभु सत्यसंकल्प श्रीकृष्णजीने इसतेरे पिताकानाम नियतकिया अर्थात् अभिमन्युका

पुत्रनाशयुक्त कुलमें उत्पन्नहुआहै ९।१०।११ इसहेतुसे इसकानाम परीक्षितहो हे राजा फिरवह तेरा पिता समयके अनुसार बड़ाहुआ और सबसंसारके चित्तका प्रसन्न करनेवालाहुआ हे बीर भरतवंशी जबतेरा पिता एकमहीनेका हुआ १२ । १३ तबपांडव बहुतरत्नोंको लेकर आये सब श्रेष्ठ वृष्णी लोग उन समीप आनेवाले पांडवोंको सुनकर नगरसेबाहरनिकले १४ मनुष्योंने मालाओंके समूहबिचित्र पताकाओर नानाप्रकारकी ध्वजाओंसे हस्तिनापुरकोअलंकृतकिया पुरवासी और राज्यसेव कोंने अपने २ स्थानोंको अच्छेप्रकार से सुशोभित किया फिर बिदुरजीने पांडवोंके प्रियअभीष्टोंकी इच्छासे देवमन्दिरोंमें अनेक प्रकारके पूजनकरनेकी आज्ञादी औरराजमार्ग पुष्पोंसे अलंकृतहुये वह नगरभी समुद्रकी समान शब्दायमान होकर शोभायमानहुआ नाचनेवालेनर्तक और गानेवालोंके शब्दों से १५।१६।१७।१८ वह नगर कुबेर भवनोंके समानशोभायुक्तहुआ हेराजा स्त्रियें समेत सबबन्दीजनोंसे १९ जहां तहांएकान्तस्थानभी शोभायमानहुये तबचारोंओरकी बायुसे कंपायमान पताकाओंने२० उत्तरकौरव और दक्षिणकौरवनाम सूक्ष्म देशोंको दिखलाया उस समय राज्यके प्रबन्धक लोगोंने मनादीकी कि अब सब देशोंकी बिहार भूमि रत्न और भूषणोंसे अलंकृत होय २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिपांडवगमनेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

शत्रुबिजयी बासुदेवजी उनसमीप आनेवाले पांडवों को सुनकर प्रधानमन्त्री और नातेदारों समेतचले १ वहसब मिलकर दर्शन की इच्छासे न्यायके अनुसार आगे चलके लेनेकोगये हे राजा वह पांडवधर्मके अनुसार वृष्णियोंसेमिलकर २ एक साथही हस्तिना- पुरमेंआये उसबड़ी सेनाके रथोंकी नेमि और घोड़ोंके खुरोंकेशब्दों से सब पृथ्वी आकाश और स्वर्ग पूर्ण होगये तब वह प्रसन्नचित्त पांडव प्रधान और मित्रोंसमेत धनोंको आगेकरके अपनेपुरमें प्रवे-

शितहुये औरन्यायके अनुसार राजाधृतराष्ट्र से मिलकर ३।४।५ अपनानाम बर्णनकरनेवालोंने उसके दोनोंचरणों को दंडवत्किया हेभरतर्षभ फिरउनलोगोंने धृतराष्ट्रकेपीछे गांधारी ६ और कुन्तीको नमस्कारकिया फिर वह बीरबिदुर और युयुत्सुकोपूजकर ७ उनसे पजितहोकर शोभायमान हुये हेभरतवंशी तबउन बीरोंने तेरेपिता के उसअत्यन्तविचित्र और बड़ेअद्भुत अनुपमजन्मकोसुनाऔरज्ञानी बासुदेवजीके उसकर्मको सुनकर ८।६ पूजनके योग्य देवकीनन्दन श्रीकृष्णका पूजनकिया फिर थोड़ेदिनोंके पीछे बड़े तेजस्वी सत्यवतीकेपुत्र ब्यासजी १० हस्तिनापुर नगरमें आये तब सब पांडवों ने वृष्णी और अंधकों समेत न्यायके अनुसार उनकापूजनकिया ११ और वर्त्तमानताकरी फिर वहां धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर ने नाना प्रकारकी कथाओंको अच्छीरीति से कहकर १२ ब्यासजीसे यह बचन कहा कि हे भगवन् जो यह रत्नलाये गयेहैं वह सबआपही की कृपासेहैं १३ हे मुनिश्रेष्ठ मैं उन रत्नादिकोंको अश्वमेधनाम यज्ञमें ब्ययकिया चाहताहूं और आपसे उसकी आज्ञाचाहताहूं हम सब आपके और महात्मा श्रीकृष्णजीके आधीनहैं १४ ब्यासजी बोले कि जो शीघ्रकरना चाहतेहोतोमैं तुमको आज्ञादेताहूं कि करो दक्षिणावाले अश्वमेध यज्ञसे बिधिके अनुसार पूजनकरो १५ हे राजेन्द्र अश्वमेध यज्ञ सब पापोंका नाशकरनेवालाहै तुम उस यज्ञ से पूजन करके निस्सन्देह पापोंसे छूट जावोगे १६ वैशंपायनबोले कि हे कौरव्य ब्यासजीके इसवचनको सुनकर उसकौरवराजयुधिष्ठिरने अश्वमेध यज्ञ करनेका बिचार किया १७ वार्त्तालाप करने में सावधान राजा युधिष्ठिरने वह सबब्यासजी को जतलाकर और बासुदेवजीसे मिलकर यह बचनकहा १८ हे पुरुषोत्तम देवीदेवकी तुमसरीखे शुभकीर्त्तिमान् पुत्रके होनेसे सुपुत्रवती बिख्यातहै हे महाबाहु जो मैं आपसेकहूं हे अबिनाशी इसस्थानपर उसकार्य्यको करो १६ हे यादवनन्दन हम आपके प्रभावसे इकट्ठे भोगोंकोभोगतेहैं आपकेही पराक्रम और बुद्धिसे यह पृथ्वी बिजय हुई है २०

तुम अपने को दीक्षितकरो आपही हमारे परमगुरूहो हे श्रीकृष्णा-जी आपके यज्ञकरनेपर मैं पापोंसे मुक्त होजाऊंगा २१ तुम्हींयज्ञहो अविनाशीहो सर्वज्ञहो तुम धर्महो प्रजापतिहो और तुम्हींसबजीव-धारियोंके लय स्थानहो यह मेरी दृढ़बुद्धिहै २२ वासुदेवजी बोलेहे शत्रुबिजयी महाबाहु तुम्हीं ऐसा कहनेके योग्यहो तुम सबजीवोंकी गतिहो यह मेरीदृढ़बुद्धिहै २३ अब तुम कौरववीरोंके धर्मसेविराज-मानहो हेराजा हम तुम्हारे आज्ञाकारीहैं तुमहमारेराजा औरपरम गुरूहो २४ मेरी आज्ञासे तुम पूजनकरो यह यज्ञ तुमसे प्राप्तहोने केयोग्यहै हे भरतवंशी आप जहांचाहैं तहां हमको कार्य्यमें प्रवृत्त करो २५ हे निष्पाप राजायुधिष्ठिर मैं तुझसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं मैं तेरी सब आज्ञाओंको करूंगा तेरे पूजन करनेपर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेवभीपूजन करनेवाले होयंगे२६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिव्यासागमनेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि श्रीकृष्णाके इस प्रकारके वचनों को सुनकर धर्मपुत्र बुद्धिमान् युधिष्ठिरनेव्यासजीको समझमें करके यह बचन कहा १ कि जब आप अश्वमेध यज्ञका समय सिद्धांतसे जानतेहो तब मुझको दीक्षित करो मेरा यज्ञ आपके आधीनहै २ व्यासजी बोले कि हे कुन्तीके पुत्र मैं पैल और याज्ञवल्क्य तीनों मिलकर इस सब यज्ञको करेंगे जैसी जैसी कि बिधि समयके अनुसारहै ३ चैत्रकी पूर्णमासी के दिन तेरी दीक्षाहोगी हे पुरुषोत्तमतुम यज्ञके निमित्त सबसामग्री इकट्ठीकरो ४ अश्वबिद्या के ज्ञाता सूत और उसबिद्याके जानने वाले ब्राह्मणभी तेरी यज्ञसिद्धीके निमित्त उस पवित्रघोड़ेकी परीक्षाकरेंगे५ शास्त्रके अनुसार उसघोड़ेको छोड़कर फिरवह घोड़ा तेरी प्रकाशमान शुभकीर्त्तिको दिखाता सागराम्बरा पृथ्वीपर घूमेगा ६ वैशंपायन बोले हे राजेंद्र इसप्रकारके व्यास-जीके बचनोंको सुनकर उस पृथ्वीपति युधिष्ठिरने बहुतअच्छा कह

कर जैसा जैसा कि ब्रह्मवादी व्यासजीने कहा वह सबकिया ७ हे राजा सबसामान भी तैयारहुये तबउसबड़े बुद्धिमान् धर्मपुत्र युधिष्ठिरने सामग्री इकट्ठीकरके ८ व्यासजीसे प्रार्थनाकरी फिर महातपस्वी व्यासजीने धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहा ९ कि हेकौरव हमसमय और योगके अनुसार तेरेदीक्षित करनेमें तैयारहैं खड्ग लकड़ी कूर्च अर्थात् आसनके निमित्त पूर्णकुशा और जो अन्य प्रकार की बस्तुहैं वहभी स्वर्णमयी होनीचाहिये और जो२सुवर्णकी बस्तुहोयं उनकोभी तैयारकरवाओ और अब बिधिपूर्व्वक घोड़ाभी पृथ्वीपर छोड़दो १०।११ वहघोड़ा शास्त्रऔर बिधिके अनुसार अच्छीरीतिसे रक्षितहोकर चलेगा १२ युधिष्ठिर बोलेकि हेब्राह्मण जिस प्रकार यहछोड़ा हुआ घोड़ा इच्छानुसार इसपृथ्वीपर घूमेगा वहतन्त्रबिधान कीजिये १३ हेमुनि पृथ्वीपर घूमनेवाले स्वेच्छाचारी उस घोड़ेकी कौनरक्षा करेगा आपउसके कहनेके योग्यहो।१४वैशंपायन बोले हे राजेन्द्र इसप्रकार युधिष्ठिरके बचनको सुनकर व्यासजीने उत्तरदिया कि भीमसेनका छोटाभाई सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ १५ बिजयका अभ्यासी क्षमावान् बुद्धिमान् जो अर्जुनहै वहइसकीरक्षा करेगा निबात कवचोंका मारने वाला वह अर्जुन पृथ्वीके भी बिजय करनेको समर्थहै १६ उसकेपास दिव्यअस्त्र दिव्यकवच दिव्यधनुष और दिव्यही दोतूणीरहैं वहउसके पीछे जायगा १७ हे श्रेष्ठ राजावही धर्मअर्थमें कुशल सब बिद्याओं मेंभी पंडित अर्जुन शास्त्र कीरीतिके अनुसार तेरे घोड़ेको घुमावेगा १८ वह श्याम कमल लोचन महाबाहु राजपुत्रअभिमन्युका पिता अर्जुन इसकीरक्षाकरेगा १९ हे राजा तेजस्वी और बड़े पराक्रमी भीमसेन और नकुल देशकीरक्षामें समर्थहैं २० हे कौरव बुद्धिमान् बड़ा शुभ कीर्त्तिमान् सहदेव सबघरके कामोंका प्रबन्धकरेगा २१ इसप्रकार कहेहुये युधिष्ठिरने सब बातोंको न्यायके अनुसार किया और अर्जुनकोभी घोड़ेकी रक्षाके निमित्त शिक्षाकरी २२ युधिष्ठिर बोले हेवीर अर्जुन यहांआवो इसघोड़ेकी रक्षाकरो क्योंकि सिवायतुम्हारे दूसराकोई

मनुष्य घोड़ेकी रक्षाके योग्यनहींहै २३ हे पापोंसे रहित महाबाहु जो राजा तेरे सन्मुख होयंगे उनके साथमें जैसे प्रकारसे युद्ध न होय वही कामकरना चाहिये २४ हेमहाबाहु आपको सबराजाओं से यह कहनाभी योग्यहै कि यह मेरा यज्ञसब प्रकार राजाओंसेही है इस निमित्त समयपर आइये २५ वैशंपायन बोले कि उस धर्मात्मानेइस प्रकार अर्जुनसे कहकर भीमसेन और नकुलको नगरकी रक्षापर नियत किया २६ तब युधिष्ठिरने राजा धृतराष्ट्रसे पूछकर युद्ध करनेवालोंके अधिपति सहदेवको घरके कार्य्योंके प्रबन्ध करने में नियत किया २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसके अनन्तर दीक्षाबर्त्तमान होने के समय उन बड़े ऋत्विजोंने बिधिके अनुसार राजाको अश्वमेध यज्ञके निमित्त दीक्षित किया १ वह महा तेजस्वी धर्मराज पांडवनन्दन युधिष्ठिर दीक्षित होके और पशु बन्धादिक धर्मोंको करके ऋत्विजों समेत शोभायमान हुआ २ आप बड़े तेजस्वी ब्रह्मबादी ब्यासजीने अ-श्वमेधके लिये शास्त्र की बिधि से घोड़े को छोड़ा ३ हेराजा तबवह सुवर्णकी माला और कंठा रखनेवाला दीक्षित धर्मराज युधिष्ठिर दे-दीप्य अग्निके समान शोभायमान हुआ ४ फिर वह काला मृग-चर्म पट बस्त्रसे अलंकृत दंड हाथ मेंलिये तेजस्वी धर्मपुत्र ऐसे शो-भित हुआ जैसे कि यज्ञमें प्रजापति शोभित हुयेथे ५ हेराजा उसी प्रकार एकसी पोशाक रखनेवाले इसके सब ऋत्विज और अर्जुन भी देदीप्य अग्निके समान शोभायमान हुआ ६ हे भरतबंशी वह श्वेत घोड़े रखनेवाला अर्जुन उस श्यामकर्ण घोड़ेके पीछे चला ७ हे राजा प्रसन्नतायुक्त गोधांगुलित्र अर्थात् हस्तत्राणसे हाथोंको शोभित करनेवाला अर्जुन गांडीव धनुषको टंकारता उस घोड़े के पीछे चला ८।९ तब उस कौरवोत्तम चलनेवाले अर्जुनके देखनेके अभि-

लाषी नगरके बाल वृद्ध युवा सब स्त्री पुरुष वहां आये १० उस घोड़ेको और उसके पीछे चलनेवाले अर्जुनके देखनेके अभिलाषी लोगोंके परस्पर मर्द्दनसे ऊष्मा उत्पन्नहुई ११ हे महाराज इसके पीछे कुन्तीपुत्र अर्जुनके देखने वाले मनुष्योंके यह शब्द दिशा और आकाशको व्याप्त करके प्रकटहुए १२ कि यह तेजस्वी घोड़ा जाताहै १३ जिसके पीछे २ महाबाहु अर्जुन धनुषको स्पर्श करता हुआ जाताहै यह कहकर आशीर्वाद देनेलगे कि हे भरतबंशी तेरा कल्याण होय तुम कुशल पूर्व्वकजावो और फिर आनन्द पूर्व्वक आवो इसप्रकार कहनेवाले उन मनुष्योंकी वार्त्ताओंको बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने सुना १४।१५ हे महाराज फिर दूसरे मनुष्योंने यह बचन कहा कि यह धनुष जो दृष्ट पड़ताहै इस धनुषको हमने किसी युद्धमें भी नहींदेखा १६ यह गांडीवधनुष भयकारी शब्दोंका रखनेवाला प्रसिद्धहै निर्भयता पूर्व्वक मार्गमें कुशलसे जावोविघ्न कोई मतहो १७ इसतेरे लौटने को देखेंगे निश्चय करके तू मंगल पूर्व्वक फिर आवेगा बड़े बुद्धिमान् भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ अर्जुननेमनुष्योंके और स्त्रियोंके ऐसे २ अनेक आशीर्वादात्मक बचनोंको सुना याज्ञवल्क्यका शिष्यजोकि यज्ञकर्ममें सावधान१८।१९ और वेदमें पूर्णथा वह शान्तीकेनिमित्त अर्जुनके साथचला हेराजा बहुतसेवेदके पारगामी ब्राह्मण और क्षत्रीलोग उसमहात्माके पीछेचले २० अर्थात् वह सब धर्मराजकी आज्ञासे विधिपूर्व्वक साथचले हेमहाराज यह घोड़ा पांडवोंके अस्त्रोंके तेजसे बिजय किया हुआ पृथ्वीपर किसीदेशमें चला २१ हे बीर वहां अर्जुन के जो युद्धहुये उनबिचित्र और बड़े युद्धोंको तुझसे कहताहूं २२ अर्थात् हे राजा उस घोड़ेने पृथ्वीकी परिक्रमा इसक्रमसे प्रारंभकरी कि प्रथम उत्तरको ओर चला २३ वहां वह श्रेष्ठ घोड़ा राजाओंके देशोंको मर्द्दन करता हुआ धीरे२ चला तब महारथी अर्जुनभी उसके पीछे चला २४ हे महाराज वहां वह असंख्यक्षत्री जिनके बांधव पूर्व्वयुद्धमें मारेगये थे युद्ध करने लगे २५ किरात यवन आदिक बहुत धनुषधारी और

अनेक प्रकारके अन्य २ म्लेच्छ जो कि पूर्व युद्धमें बिजय कियेगये थे २६ और युद्ध दुर्मद अत्यन्त प्रसन्न चित्त सवारी रखनेवाले बहुतसे आर्य राजा लोग भी पाण्डव अर्जुनके सन्मुख आये २७ हे राजा इसप्रकार जहां तहांअर्जुन का युद्ध बहुत देशके राजाओं से हुआ२८ हे निष्पाप राजा जनमेजय अर्जुनके जोयुद्ध दोनों ओर सबड़े प्रबल और अपूर्व हुये उनको मैं तुमसे कहताहूं २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि महारथी प्रसिद्ध पराक्रमी पांडवों के हाथ से जो त्रिगर्त्त देशीमारे गये उनके पुत्र और पौत्रोंसेभी अर्जुनका युद्धहुआ १ उनबीरोंने देशकी हद्द पर आनेवाले यज्ञके उत्तम घोड़े को जानकर कवचधारी शस्त्रयुक्त होकर चारोंओरसे घेरलिया२ हे राजा उन तूणीर बांधनेवाले रथ सवारोंने अच्छे अलंकृत घोड़ों के द्वारा घोड़ेको घेरकर पकड़ना प्रारंभ किया ३ हे शत्रुओंके बिजयकर्त्ता इस के पीछे वहां अर्जुनने उन्होंके कर्म करने की इच्छा को बिचारकर मधुरबाणीके साथ उन बीरोंको निषेधकिया ४ परंतु तमोगुण रजो गुणसे आच्छादित बुद्धिवाले उन सबने उसकीशिक्षा को तिरस्कार करके उसको बाणोंसे घायल किया तब अर्जुन ने उनको रोका ५ हेभरतवंशी फिर हंसतेहुये अर्जुनने उनसे कहा कि हे धर्मके नजाननेवालो लौटजावो जीवन ही अच्छाहै क्योंकि उसबीरको चलते समय धर्मराजने निषेध करदियाथा कि हे अर्जुन जिनके बान्धव मारे गयेहैं उन राजाओंको तू मतमारियो६।७तब उस अर्जुन ने बुद्धिमान् धर्मराजके बचनको स्मरण करके उनसे कहा कि लौटो परन्तु वह नहीं लौटे ८ इसके पीछे युद्धमें अर्जुन अपने बाणजालोंके द्वारा त्रिगर्त्तके सूर्य्यबर्मानामराजाको बिजय करके हंसने लगा ६ फिर वह त्रिगर्तदेशी रथ और रथ की नेमियोंके शब्दोंसे दिशाओं को शब्दायमान करते अर्जुनके सन्मुख

दौड़े १० इसके पीछे अस्त्रकी तीव्रता दिखाते हुये सूर्य्यबर्मा ने टेढ़े पर्बवाले सौ बाण अर्जुन पर छोड़े ११ इसीप्रकार जो दूसरे धनुषधारी उनके पीछेकी ओरथे उन लोगोंने भी अर्जुन के मारने कोइच्छासे बाणोंकी बर्षाकरी १२ हे राजा फिर पांडव अर्जुनने धनुषकी प्रत्यंचासे छोड़ेहुये बहुत से बाणोंसे उनके बहुत बाणोंको काटा तब वह पृथ्वीपर गिर पड़े १३ फिर उनका छोटा भाई युवावस्था तेजस्वीकेतुबर्मानाम अपने भाईके अर्थ उस कीर्त्तिमान् अर्जुनसे लड़नेलगा १४ युद्धमें सन्मुख आनेवाले उस केतुबर्माको देखकर शत्रुहन्ता अर्जुनने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया १५ केतुबर्माके घायल होनेपर महारथी धृतबर्माने रथकी सवारी से शीघ्र सन्मुख आकर बहुत से बाणोंसे अर्जुनकोढकदिया १६ महातेजस्वी पराक्रमी अर्जुन उसबालक धृतबर्माकी तीव्रता को देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ १७तब अर्जुनने उसकोबाणलेता और चढ़ाता हुआ नहीं देखा किन्तुबाणोंको छोड़ताहीदेखा१८युद्धमें अत्यन्त प्रसन्नहोकर अर्जुनने दोमुहूर्त तक मनसेउस धृतबर्माकी प्रसंशाकरी १९ फिर मंद मुसकानकरतेकौरवबीर महाबाहु अर्जुनने पतंगके समान उसक्रोध युक्त बालकको प्रीतिपूर्ब्बक प्राणोंसे रहित नहीं किया २० तब उस प्रकार बड़े तेजस्वी अर्जुनसे रक्षित धृतबर्माने प्रकाशित बाणको अर्जुनपर छोड़ा २१ वह अर्जुन शीघ्रही उस बाणसे हाथपर घायल हुआ और गांडीवधनुष भी हाथसे छूटकर पृथ्वीपर गिरा २२ हे समर्थ भरतबंशी अर्जुन के हाथसे गिरते हुये धनुष का रूप इन्द्रधनुषके समान हुआ २३ हेराजा उस बड़े युद्धमें उसबड़े दिब्य धनुषके गिरनेपर धृतबर्मा बड़े शब्दके साथहंसा२४तब तो क्रोधसे पीड़ित अर्जुनने हाथसे रुधिरको पोंछकर उस दिब्यधनुष को लिया और बाणोंकी बर्षा करने लगा २५ तबउस कर्मकी प्रशंसा करनेवाले नाना प्रकारके जीवधारियोंके हलहला शब्द स्वर्गके स्पर्श करनेवाले हुये २६ इसके पीछे त्रिगर्त्त देशी शूरबीरोंने उस कालरूप अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनको देखकर चारोंओर से घेर

लिया २७ फिर उनलोगोंने धृतबर्माकी रक्षाकेनिमित्त उसके सन्मुख जाकर बाणोंकी बर्षाकरी वहां अर्जुन क्रोध युक्त हुआ २८ उस समय अर्जुन ने इन्द्र बज्रके समान बहुतसे लोहे के बाणोंसे उनके अठारह शूरबीरोंको बड़ी शीघ्रता से मारा २६ उन छिन्न भिन्नोंको देखकर हंसते हुये शीघ्रता करनेवाले अर्ज्जुनने बिषैले सर्प्पोंकी सूरत बाणोंसे मारा ३० हेराजा अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान टूटे चित्त वह सब त्रिगर्त्त देशी दिशाओंको भागे ३१ और शपथखानेवाले क्षत्रियोंके मारनेवाले उस पुरुषोत्तम अर्जुनसे कहा कि हम सब तेरे आज्ञाकारी हैं और तेरी आधीनता में नियत हैं ३२ हे कौरवनन्दन अर्जुन हम झुके हुये नियत आज्ञाकारियोंको आज्ञा दो हमतेरे सब अभीष्टोंको करेंगे ३३ तब अर्जुनने उनके इसबचन को सुनकर उनसे कहा कि हेराजालोगो तुम अपने जीवनकीरक्षा करो और मेरी आज्ञाको स्वीकार करो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि इसके पीछे वह उत्तम घोड़ा प्राग्ज्योतिष देशमें पहुंचकर घूमा वहां भगदत्तका पुत्रजोकि युद्धमें बड़ासाहसी था नगरसे बाहर निकला १ हेभरतबंशी वहराजा बज्रदत्तदेशकी सीमापर बर्त्तमान घोड़ेको देखकर युद्धकरने लगा २ वह राजा बज्रदत्त नगरसे बाहर निकलकर आतेहुये घोड़ेको लेकर नगरकी ओरकोचला तब कौरवों में श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुन उसको देखकर गांडीवधनुषको टंकारता शीघ्रही उसकेसन्मुखगया३।४ फिरगांडीव धनुष से छूटेहुये बाणोंसे मोहित वह बीर राजा उस घोड़े को छोड़कर अर्जुनके सन्मुखगया ५ फिर युद्धमें साहसी वह राजा नगरमें प्रवेशकर अपने कवचको धारण करके बड़े हाथी पर चढ़कर निकला६ वह महारथी मस्तक पर पांडुरवर्ण छत्रको धारण किये चलायमान श्वेत चमरसे शोभायमानथा ७ फिर उसने पांडवोंके

महारथी अर्जुन को पाकर लड़कपन और अज्ञानता से उसको युद्धमें बुलाया ८ उस क्रोधयुक्त राजा ने गंडस्थल से मद झाड़ने वाले पर्वताकार हाथीको अर्जुनकेऊपरपेला ९ वह बड़े बादल के समान मद झाड़नेवाला शत्रु के हाथियों का रोकनेवाला शास्त्रके अनुसार तैयार युद्ध में दुर्म्मद और स्वाधीनता में न होनेवाला था १० तब उस राजा के अंकुशसे चलायमान वह बड़ा पराक्रमी हाथी बादलकी समान उड़ताहुआ दिखाई पड़ा ११ हे भरतवंशी राजा जनमेजय उसपृथ्वीपर नियत क्रोधयुक्त अर्जुनने उस आते हुये हाथीको देखकर उस गजारूढ़से युद्धकिया १२ तबक्रोधयुक्त वज्रदत्तने टीड़ियोंके समान शीघ्रगामी अग्निके समान तोमरों को शीघ्र अर्जुनपर छोड़ा १३ तब अर्जुनने गांडीव से उत्पन्न आकाश-गामी बाणोंसे आकाशहीमें उन अपने पास न आनेवाले बाणोंको दोदो तीन२ खंडकरदिये उस भगदत्तकेलड़केने उसप्रकार काटेहुये उन तोमरोंको देखकर शीघ्रही पारहोनेवाले बाणों को अर्जुन पर चलाया१४।१५ तदनन्तर अत्यंत क्रोधयुक्तअर्जुनने शीघ्रही सुवर्ण पुंखसीधे चलनेवाले बाणोंको उसबज्रदत्त पर चलाया १६ उसबड़े युद्धमें बाणोंसे घायल और अत्यन्त घातित वह महातेजस्वी बज्र-दत्त पृथ्वीपर गिरपड़ा परन्तु स्मरणशक्ति और चित्तकी सचेतताने उसको त्याग नहीं किया १७ इस के पीछे उस सावधान बिजया-भिलाषीराजाने उस श्रेष्ठतमहाथीको युद्धमेंफिर अर्जुनपरभेजा १८ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने अग्निकेसमानबिषैले सर्पोंकी समान बाणोंकोउसपर चलाया १९ तबउससे घायलवहबड़ाहाथी रुधिरको गिराता ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि जल रखनेवाला गेरूकापर्वत धातुओंसे युक्तबहुत से झिरनोंको गिराताहुआ शोभित होताहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे भरतर्षभ इस प्रकार से अर्जुनका वह युद्ध राजा बज्रदत्तके साथतीन दिनतक ऐसाहुआ जैसेकि इन्द्रका और वृत्रासुरका युद्धहुआथा १ फिर चौथेदिन बड़ापराक्रमी बज्रदत्त बड़ेशब्दसे हंसा और यहबचन बोला कि २ हेअर्जुन ठहरो मुझसे जीवता नहीं छूटेगा मैं तुझको मारकर बिधिके अनुसार पिताका तर्पणकरूंगा ३ तेरेपिताका मित्र मेरापिताभगदत्त तेरेहाथसे मारा गया इसवृद्ध व्यवहारकेद्वारा तुममुझ बालकसे युद्धकरो ४ हे कौरव अत्यन्त क्रोधयुक्त राजाबज्रदत्तने इसप्रकारसे कहकर हाथीको अर्जुनके ऊपर भेजा ५ बुद्धिमान् बज्रदत्तका भेजा हुआ गजराज आकाश को उछलता अर्जुन की ओरको दौड़ा ६ उस गजराजने सूंड़से छोड़े हुये जलकणों से अर्जुन को ऐसे भिगोया जैसे कि बादल नीलपर्ब्बत को भिगोताहै ७ उस राजाका भेजा हुआ बादल की समान अत्यन्त गर्जता हुआ वह हाथी मुख के बड़े शब्दको करके अर्जुन केसन्मुखदौड़ा ८ हे राजा बज्रदत्तके प्रेरित नाचतेहुये उस गजराजने शीघ्रही कौरवोंके महारथी को पाया ९ वह शत्रुओंका मारनेवाला पराक्रमी अर्जुन उस आतेहुये बज्रदत्त के हाथीको देखकर अपने गांडीव के आश्रित होकर कंपायमान नहींहुआ १० हेभरतबंशी राजा जनमेजय वह पांडव अर्जुन अपने विघ्नकर्त्ता और प्राचीन शत्रुता को स्मरण करके उस पर अत्यन्त क्रोध युक्तहुआ ११ इसकेपीछे क्रोधभरे अर्जुननेबाण जालोंसे उस हाथी को ऐसेरोंका जैसेकि समुद्रको मर्यादा रोकतीहै १२ अर्जुन से रोकाहुआ वहहाथियोंमें श्रेष्ठतम शोभायमान हाथी बाणोंसेबिदीर्ण अंगऐसे नियतहुआ जैसेकि शलाकामें पिरोयाहुआ स्वाविनाम मृगहोताहै १३ फिर क्रोधसे मूर्च्छामान राजाबज्रदत्तने उस रोकेहुये हाथीको देखकर अर्जुनपर तीक्ष्णबाणोंको छोड़ा १४ महाबाहु अर्जुननेभीशत्रुओंके नाशकरनेवालेबाणोंसेउनबाणोंको हटाया

वह आश्चर्यसाहुआ १५ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्राग्ज्योतिषके राजाने पहाड़के समान हाथीको भेजा १६ इंद्रके पुत्रपराक्रमी अर्जुनने उसआतेहुये हाथीकोदेखकर अग्निकेसमान नाराच नामबाणोंको हाथीपरछोड़ा १७ हेराजाउससे मर्मस्थलोंपरघायल होकर वहहाथी अकस्मात् पृथ्वी परऐसा गिरपड़ा जैसेकि बज्रसे टूटा पर्वतगिरताहै १८ अर्जुनकेहाथोंसे घायल वहहाथी गिरता हुआ ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि बज्रसे पीड़ामान पृथ्वीपरगिरताहुआ बड़ा पर्वत होताहै १६ बज्रदत्तके उस हाथीके गिरनेपर अर्जुनने उस पृथ्वीपर वर्त्तमान राजासे कहा कि डरना न चाहिये २० महातेजस्वी युधिष्ठिरने मुझचलनेवालेसे कहाहै कि हेअर्जुन तुमको किसी दशामें भी राजालोगोंको मारना उचितनहींहै २१ हेनरोत्तम अर्जुन युद्धमें शूरबीर लोगोंको भी तुझको मारनायोग्य नहींहै इतनेही कर्मसे यहसब होताहै २२ सब राजाओंको उनके मित्र बांधवों समेत समझाना चाहिये कि युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ आपलोगोंसे सुशोभितहोय २३ हेराजा भाईके इसबचनको सुनकर मैं तुझको नहीं मारताहूं उठ तुझको भयनहींहै कुशलपूर्वक जावो २४ हेमहाराज चैत्रमहीनेकी पूर्णमासीको युधिष्ठिरका यज्ञ होगा उस समय आप लोगोंको आना योग्यहै २५ तब अर्जुनसे पराजितहोकर अर्जुन केइस बचनकोसुनकर राजाबज्रदत्त ने कहा कि ऐसाही होगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेबज्रदत्तपराजयेषट्सप्ततितमोऽध्यायः७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले हेमहाराज इसकेपीछे अर्जुनकायुद्ध उनसिंधदेशियोंकेसाथहुआ जो कि मरनेसे शेषबचे और मरनेवालोंके सैकड़ों नातेदारथे १ यहराजालोग अर्जुनको देशमें प्रवेशितहुआ सुनकर उसको न सहकर उसके सन्मुखगये २ उनविषके समान राजाओं

ने देशको सीमापर उस घोड़े को पकड़कर भीमसेन के छोटे भाई अर्जुनसे भय नहींकिया ३ उन्होंने यज्ञके घोड़ेकेपास पदाती नियत हुये धनुषधारी अर्जुनको पाया ४ प्रथम युद्धमें पराजित बिजयके अभिलाषी बड़े पराक्रमी उनराजाओंने उस नरोत्तम अर्जुनकोचारों ओरसेघेरलिया ५ तब अपने नाम गोत्र और नानाप्रकारके अपने कर्म्मों को बर्णन करते उन राजाओंने बाणोंकी बर्षा से अर्जुन को ढकदिया ६ हाथियोंके रोकनेवाले बाणसमूहोंको फैलातेयुद्धमें बिजय चाहते उनलोगोंने अर्जुनको चारोंओरसे घेरलिया ७ उनसब रथसवार बीरोंने युद्धमें उस असह्यकर्मी अर्जुनको बिचारकर उस पदातीसेही युद्धकिया ८ उन्होंने उस निवातकवचोंके संसप्तकोंके और जयद्रथके नाशकर्त्ता बीर अर्जुनको घायलकिया फिर हजार रथ और दशहजार घोड़ोंसे उस अर्जुनको घेरकर अत्यन्त प्रसन्न चित्त हुये ९ । १० हे कौरव युद्धमें सिन्धके राजा जयद्रथ के उस मारनेको स्मरण करते उनसब बीरोंने ११ बादलकी बर्षाकेसमान बाणोंकीबर्षाकरी उनबाणोंसे ढकाहुआ अर्जुनऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि बादलके मध्यमें सूर्य शोभित होताहै १२ हे भरतबंशीबाणों से ढकाहुआ वह अर्जुन ऐसा दिखाई दिया जैसे कि पिंजरेमें घूमनेवाला पक्षीहोताहै १३ फिर बाणोंसे अर्जुनके पीड़ामान होनेपर सबत्रिलोकी हाहाकार रूपहुई सूर्य्य की प्रभाजाती रही १४ इसके अनन्तर रोमांचका खड़ा करनेवाला बायुचला और एकहीसमयमें राहुने सूर्य्य और चंद्रमाको ग्रसा १५ हेराजा उल्का सूर्य्यको घायलकरके चारोंओरकोफैलगई इसीहेतुसे कैलासनाम बड़ापर्व्वतकंपायमान हुआ १६ भयभीत औरदुःख शोकसे युक्त सप्तऋषि और देवऋषियों नेभी अत्यन्त उष्णश्वासाओंको छोड़ा १७ तदनन्तर उल्का चन्द्रमंडलको चीरकर आकाशसे गिरी और सब दिशा भी बिपरीत रूपऔर सधूम होगईं १८ धुंधले और अरुण बर्णवाले इन्द्रधनुष औरबिजलीसे युक्तबादलोंने आकाशकोव्याप्तकरके मांस और रुधिरको बरसाया १९ हे भरतर्षभ उस बाणोंकी बर्षा

से वीर अर्जुनके ढकजानेपर ऐसा वृत्तान्त हुआ यहबड़ा आश्चर्य्य साहुआ २० उस बाणजालसे सबओरको ढकजानेवाले उस अर्जुन के मोहसे गांडीवधनुष गिरपड़ा औरहाथसे हस्तत्राणभी गिरपड़ा २१ तबसिंधु देशियोंने शीघ्रही उस मोहयुक्त अचेत महारथी पर बाणजालोंकोछोड़ा २२ इसके पीछेचित्तसेभयभीत देवता अर्जुनको अचेत जानकर उसकीशान्ती करने वालेहुये २३ फिर सबदेवऋषि सप्तर्षि और महर्षियोंने बुद्धिमान् अर्जुनकी पूर्ण विजयका जय किया २४ हे राजाफिर देवताओंसे अर्जुन तेजप्रकाशमान होनेपर वहमहाअस्त्रज्ञ बुद्धिमान् अर्जुन युद्धभूमिमें पर्व्वतके समान खड़ा- हुआ २५ और शीघ्रही अपने धनुषको खेंचा उसका बड़ाभारी शब्द बारंबार यन्त्रके समान हुआ २६ फिर उससमर्थ अर्जुनने धनुषसे बाणोंकी बर्षाको शत्रुओंके ऊपर ऐसे बरसाया जैसे कि इन्द्रजलकी बर्षाको करताहै २७ इसके पीछे वहसब सिंधुदेशी शूरबीर अपने२ राजाओं समेत बाणोंसे ढकेहुये ऐसेदिखाई नहीं दिये जैसेकि टी- ड़ियोंसे युक्त वृक्ष अदृष्टहोतेहैं सबलोग भयसेपीड़ित होकर भागे बहुतसे शोकसे दुःखीलोगोंनेनेत्रोंसे अश्रुपात किया और शोकभी किया २८।२९ हेनरोत्तमराजा जनमेजयवहपराक्रमीअर्जुनअलात- चक्र के समान उन सब सिंधुदेशियों के चारोंओर को घूमा और बाणजालोंसे ढकदिया ३० उसशत्रुहन्ता अर्जुनने बज्रधारी इन्द्र के समान उस बाणजालको जोकि इन्द्रजालके समानथा सबदिशाओं में फैलाया ३१ वह कौरव्य अर्जुन उस मेघजालरूपी सेनाको बाणोंसे चीरकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि शीतऋतुमें कुहरको काटकर सूर्य्यशोभित होताहै ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेसैंधवयुद्धे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि इसकेअनन्तर युद्धमें निर्भय गांडीवधनुषधारी शूर अर्जुन युद्धके लिये सन्मुख नियत हिमालय पर्व्वतके समान

शोभायमान हुआ १ हे भरतवंशी वह सिन्धुदेशी शूरबीर फिर भी नियतहुये और बड़े क्रोधित होकर बाणोंकी वर्षाको छोड़ा २ महाबाहु अर्जुनने हंसकर उनफिर सन्मुख होनेवाले मरणकी इच्छावाले शूरबीरोंसे मधुर भाषणसे यह बचनकहा कि बड़ीसामर्थ्यसेयुद्धकरो मेरे विजय करनेमें उपायकरो ३ सबकर्मोंको करो तुमको बड़ाभय उत्पन्न हुआहै मैं इस बाणबन्धन को हटाकर सबसे युद्धकरूंगा ४ युद्धमें प्रवृत्त होकर नियत होजाओ मैं तुम्हारे अभिमानोंको दूरकरूंगा तब कौरव अर्जुनक्रोधसे इतना कहकर उस बड़े भाईके बचन को स्मरण करके कि हे तात बिजयाभिलाषी क्षत्री युद्धमें न मारने चाहियें५।६ औरमहात्मा धर्मराजनेयहभीसमझायाहैकिबिजयकरना चाहिये तब उसपुरुषोत्तम अर्जुनने यहबिचारकियाकि मुझसे महाराज युधिष्ठिरने ऐसा कहाहै कि राजा लोगोंको न मारना चाहिये धर्मराजका यहशुभ बचन कैसे मिथ्या होगा ७।८ राजालोग न मारेजायं और राजायुधिष्ठिरकीआज्ञामानीजाय तब उस धर्मज्ञपुरुषोत्तम अर्जुनने ऐसाबिचारकर उनयुद्धमें दुर्मदसिन्धु देशियोंसे यह बचन कहाकि मैं तुम्हारी वृद्धिको कहताहूंकि मैं तुमसब नियतोंको नहीं मारूंगा६।१०युद्धमें पराजितहोकर जो पुरुषकहैगा कि मैंतेरा हूं उसकोनहीं मारूंगा इसमेरे बचनकोसुनकर अपनी कुशलबिचारो ११ उसके बिपरीतकर्मीहोनेपर तुम आपत्तिमें फंसकर मुझसेपीड़ित होगे उनबीरोंसे ऐसाकहकर अत्यन्त क्रोधयुक्त कौरवोत्तमअर्जुन१२ उन अत्यन्तक्रोधभरे विजयके अभिलाषी सिन्धुदेशियोंके साथयुद्ध करनेलगाहेराजातबसिन्धुदेशियोंने टेढ़ेपर्ववाले एकलाखबाणअर्जुन परछोड़े उसअर्जुनने धनुषसे निकलनेवाले निर्दयी बिषैलेसर्पकीसमानबाणोंको१३।१४अपनेतीक्ष्णबाणोंसेमध्यहीमेंकाटा उनतेजधार बाणोंकोशीघ्रकाटकर१५ युद्धमें प्रत्येकको तीक्ष्णबाणोंसे छेदाइसके पीछेसिन्धुदेशी राजाओंनेमरेहुये जयद्रथको स्मरणकरके फिर प्रास औरशक्तियोंको अर्जुनपरफेंका१६ महाबली अर्जुनने उन सबकेसंकल्पोंको निष्फल किया १७ तब पांडव उनसबको मध्यमेंही काटकर

गर्जा उसीप्रकार उन बिजयाभिलाषी आतेहुये शूरबीरोंके शिरोंको भी टेढ़ेपर्बवाले भल्लोंसे गिराया फिरभी उनभागते सन्मुखदौड़ते १८।१६ और लौटते शूरबीरोंके शब्दपूर्ण समुद्र के समान हुये तब बड़े तेजस्वी अर्जुनसेघायल उन लोगोंने पराक्रम और प्रसन्नताके समान अर्जुनसे युद्धकिया फिर वह लोग युद्धभूमि में अर्जुन के टेढ़े पर्बवालेबाणोंसे२०।२१बहुधामरेअचेतम्लान सवारी औरसेनावाले हुये तबधृतराष्ट्रकीदुःशलानाम पुत्री उनसबकोपरिश्रमसे पीड़ामान जानकर २२ अपनेपौत्र सुरतके पुत्रबीर बालकको लेकर रथकी सवारी से चली २३और सब जीवोंकी शान्तीके अर्थ पांडव अर्जुनके पासगई और अर्जुनके पास जाकर बड़े शब्द से रोनेलगी प्रभु अर्जुननेभी उसको देखकर धनुषको रखदिया और धनुषको छोड़कर विधिके अनुसार अपनी बहिनसे कहा २४। २५ कि क्याकरूं तब उसने उत्तरदिया कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन तेरे भानजेका यह पुत्रबालक २६ तुझको नमस्कार करताहै हे पुरुषोत्तम तुमइसको देखो तब इस प्रकार कहेहुये अर्जुन ने उसके पिताका वृत्तान्त पूछा २७ कि वह कहांहै फिर दुःशलाने कहा कि पिताके शोकसे दुःखी और अचेततासे पीड़ामान इसका पिता२८ बीरजैसे किमृत्यु बशहुआ उसको तुम मुझसे सुनो हे निष्पाप वह प्रथम युद्धमें तेरे हाथसे माराहुआ अपने पिताको सुनकर २९ औरतुझको यज्ञके घोड़े के पीछे आयाहुआ सुनकर पिताके शोक रूपी रोगसे पीड़ितहोकर अपने प्राणोंका त्यागकिया ३० हे निष्पाप अर्जुन आया इसप्रकार तेरे नामको सुनतेही अचेततासे पीड़ामान मेरा पुत्र पृथ्वीपर गिरा और मरा ३१ हे प्रभुवहां उस गिरेहुये को देखकर और उसके पुत्रको लेकर अबशरणकी इच्छासेतेरे पासआईहूं ३२ उसधृतराष्ट्र की पुत्रीने इसप्रकार के बचनोंको कहकर पीड़ित शब्दोंको किया और महादुःखीने उसनीचाशिर करनेवाले अर्जुनसे यह बचनकहा ३३ हेधर्मज्ञ अर्जुन अपनी बहिन और भानजेके पुत्रको देखो और करुणा करने के योग्यहो ३४ उस दुर्योधन और अभागे जयद्रथ

को बिस्मरण करके दयाकरो जैसे कि अभिमन्युका पुत्रशत्रुओंके बीरोंका नाश करनेवाला परीक्षित उत्पन्न हुआहै ३५ उसीप्रकार सुरसासे यह मेरा पौत्र बीर उत्पन्न हुआहै हे नरोत्तममैं उसकोले-कर सब शूरबीरोंकी शान्तीके लिये तेरे पास आई हूं ३६ इस मेरे बचनकोसुन हे महाबाहु उस अभागेका यह पौत्र आयाहै ३७ इस हेतुसे तुम इसबालकपर कृपाकरने को योग्यहो हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले यह बालक शान्तीके लिये शिरसे प्रसन्न करके ३८ तुम से प्रार्थना करताहै कि हे महाबाहु अर्जुन शान्तीको प्राप्त होजाओ हे धर्मज्ञ अर्जुन इस मृतक बान्धववाले अज्ञान बालकके ऊपर ३६ कृपाकरो क्रोधके बशीभूत मतहो इसके उसनीचनिर्दयीबड़े अपराधी पितामहको बिस्मरण करके ४० कृपाकरने के योग्यहो इसप्रकार दुःशलाके करुणा बिलाप करनेपर ४१ दुःखशोकसे पीड़ामानक्षत्री धर्मकी निन्दा करतेहुये अर्जुनने राजा धृतराष्ट्र और देवीगान्धारी को स्मरण करके यह कहा कि ४२ मैंने जिस क्षत्रीधर्मके कारण से सबबांधव यमलोकमें पहुंचाये उसको धिक्कारहोय इसप्रकारके अनेकविश्वासित बचन कहकर अर्जुनने कृपाकरी ४३ और बहुत प्रसन्नतासे उससे मिलकर उसको घरमें भेजदिया ४४ शुभमुखी दुःशलाभी उनशूरबीरोंको युद्धसे हटाकर और अच्छीरीतिसेपूजकर घरको गई ४५ वह अर्जुन इस प्रकार से उन सिन्धुदेशी बीरोंको बिजय करके उस स्वेच्छानुसार बिचरते और दौड़नेवाले घोड़ेके पीछेदौड़ा ४६ इसके अनन्तर वह बीर विधिके अनुसार उसघोड़ेके पीछे ऐसे चला जैसे कि पिनाक धनुषधारी देवता आकाशमें मृग रूपी यज्ञके पीछे चलेथे ४७ वह घोड़ा अर्जुनके कर्मकी वृद्धि करता इच्छा और अभीष्ट के अनुसार क्रमपूर्वक उन २ देशोंमें घूमा हे पुरुषोत्तम वह इस प्रकारसे घूमता हुआ घोड़ा अर्जुन समेत राजा मणिपुरके देशमें आया ४८।४६॥

इतिश्रीमन्महाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेसैंधवपराजयोनामअष्ट सप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि राजा बभ्रुवाहन आयेहुये पिताको सुनकर बड़ी नम्रता पूर्व्वक नगरसे निकला जिसकेअग्रवर्त्ती ब्राह्मण लोग और धनथा क्षत्री धर्मको स्मरण करते उस बुद्धिमान् अर्जुनने इस प्रकारसे आयेहुये राजा बभ्रुवाहनको प्रसन्न नहींकिया१।२उसक्रोध युक्त धर्मात्मा अर्जुनने कहाकि यहतेराकर्म अयोग्य नहींहै तू क्षत्री धर्मसे रहितहै ३ हेपुत्र युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञके रक्षाकरने वाले और देशकी सीमापर मुझ आनेवालेसे युद्ध क्योंनहीं किया४ तुझ दुर्बुद्धी क्षत्री धर्मसे रहितको धिक्कारहै जोयुद्धके निमित्त सन्नद्ध मुझ आनेवाले को सामधर्मसेही लिया हे दुर्बुद्धी नीच मनुष्य जो शस्त्र से रहित मैं तुझसे मिलतातो यह तेराकर्म योग्यथा पतिसे कहेहुये उसबचनको जानकर सर्पकीपुत्री५।६।७उलूपी उसबचनको नसह-ती पृथ्वीको चीरकर पासआई और हेराजा वहां आकर उसने नी-चाशिर कियेहुये बिचार करतेहुये अपने पुत्रको युद्धाभिलाषी अ-पने पितासे बारंबार धिक्कार युक्त देखा इसके पीछे उस प्रसन्नाङ्ग सर्पकी पुत्री उलूपीने उस धर्ममें सावधान अपने पुत्रसेयह धर्मरूप बचन कहाकि हेपुत्र तुम मुझ सर्पकी पुत्री उलूपीको अपनीमाताजा नो८।९।१०पिताका कहनाकरो तेराबड़ाधर्महोगा तूइसयुद्धदुर्मदअप नेपिता अर्जुनसे युद्धकर११यह इसीरीतिसे तुझपरनिस्सन्देह प्रसन्न होगा हे भरतर्षभ इसप्रकार माता से दुर्मन्त्रित महातेजस्वी राजा बभ्रुवाहनने १२ युद्धके निमित्त बिचारकिया सुबर्णका कवच और सूर्य्य की समान प्रकाशमान शिरस्त्राणको शरीरमें शोभित करके सैकड़ों उत्तम तूणीरोंसे युक्त उस उत्तम रथपर चढ़ा जोकि सब युद्धके सामानोंसे युक्त और मनके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त १३।१४ चक्रादिक सामानों समेत शोभायमान होकर सुबर्ण के भूषणोंसे अलंकृतथा वह राजा बभ्रुवाहन अत्यंत पूजित सुबर्ण की सिंह ध्वजा को ऊंचा करके १५ और अर्जुन को शत्रुमानकर

यात्रा करनेवालाहुआ इसके पीछे उस बीरने समीप आकर अर्जुन से रक्षित उस यज्ञके घोड़ेको १६ उन मनुष्योंसे पकड़वाया जोकि अश्वशिक्षा में कुशलथे उस प्रसन्नचित्त पृथ्वीपर नियत अर्जुनने पकड़ेहुये घोड़े को देखकर १७ युद्धमें रथारूढ़ अपने पुत्रको रोका वहां उस बीर राजाने उस बीर अर्जुनके तीक्ष्ण और विषैले सर्पके समान बाणोंके समूहोंसे पीड़ितकिया उन प्रीतिमान दोनों पिता पुत्रोंका बड़ायुद्ध बहुत बढ़कर देवासुरोंके युद्धके समान हुआ उसहंसतेहुये बभ्रुबाहननेनरोत्तमअर्जुनको ठेढ़ेपर्ववालेबाणसे यत्रुस्थानपर घायल किया वह बाण पुंखसमेत उसके यत्रुस्थानमें ऐसे समागया जैसेकि बामीमें सर्प समाजाताहै १८। १९। २० २१ वह अर्जुन को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके बाणसेअत्यन्तपीड़ामानबुद्धिमानअर्जुन उत्तमधनुषकासहारा लेकर हार्दाकाशनिवासी ईश्वरमें प्रवेश होकर मृतकके समान होगया २२ फिर उस महा प्रतापी इन्द्रके पुत्र पुरुषोत्तम अर्जुनने सचेतता को पाकर पुत्रकी प्रशंसा करके यह बचन कहा हेचित्राङ्गदाकेपुत्र महाबाहु प्यारेपुत्र धन्यहैधन्यहै तेरे कुलकेसमान कर्मको देखकरमें प्रसन्नहूं २३।२४ अबमें तुझपर बाणोंकोछोड़ताहूं हेपुत्रयुद्धमें नियत होजाओ वह शत्रुओंका नाशकरनेवाला इसप्रकारसे कहकर नाराचों की बर्षा करनेलगा २५ उस राजाने गांडीव धनुषसे छोड़े हुये बज्र बिजलीके समान प्रकाशित सब नाराचोंको अपने भल्लोंसे टुकड़े २ करदिया २६ अर्जुनने दिव्य बाणोंसे उसकीध्वजाको जोकि स्वर्णमयी और सुबर्णके तालवृक्षके समानथी रथसे काटकर गिरादिया २७ हेशत्रुओंकेजीतनेवाले राजाजनमेजय हंसतेहुये अर्जुनने उसके वह घोड़े जोकि बड़ेऊंचे और शीघ्रगामीथे उनको निर्जीवकिया २८ उस अत्यन्त क्रोधयुक्त राजानेरथसे उतरकर पदाती होकर अपने पिता अर्जुनसे युद्धकिया २९ उस बज्रधारीके पुत्र पांडवों में श्रेष्ठपुत्र के पराक्रमसे प्रसन्न अर्जुनने अपने पुत्रको अत्यन्त पीड़ामानकिया ३० पिताको बिमुख मानतेहुये उस पराक्रमी बभ्रुवाहनने विषैले

उन्नासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि राजा बभ्रुबाहन आयेहुये पिताको सुनकर बड़ी नम्रता पूर्व्वक नगरसे निकला जिसकेअग्रवर्त्ती ब्राह्मण लोग और धनथा क्षत्री धर्मको स्मरण करते उस बुद्धिमान् अर्जुनने इस प्रकारसे आयेहुये राजा बभ्रुबाहनको प्रसन्न नहींकिया१।२उसक्रोध युक्त धर्मात्मा अर्जुनने कहाकि यहतेराकर्म अयोग्य नहींहै तू क्षत्री धर्मसे रहितहै ३ हेपुत्र युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञके रक्षाकरने वाले और देशकी सीमापर मुझ आनेवालेसे युद्ध क्योंनहीं किया४ तुझ दुर्बुद्धी क्षत्री धर्मसे रहितको धिक्कारहै जोयुद्धके निमित्त सन्नद्ध मुझ आनेवाले को सामधर्मसेही लिया हे दुर्बुद्धी नीच मनुष्य जो शस्त्र से रहित मैं तुझसे मिलतातो यह तेराकर्म योग्यथा पतिसे कहेहुये उसवचनको जानकर सर्पकीपुत्री५।६।७उलूपी उसवचनको न सह-ती पृथ्वीको चीरकर पासआई और हेराजा वहां आकर उसने नी-चाशिर कियेहुये बिचार करतेहुये अपने पुत्रको युद्धाभिलाषी अ-पने पितासे बारंबार धिक्कार युक्त देखा इसके पीछे उस प्रसन्नाङ्गी सर्पकी पुत्री उलूपीने उस धर्ममें सावधान अपने पुत्रसेयह धर्मरूप बचन कहाकि हेपुत्र तुम मुझ सर्पकी पुत्री उलूपीको अपनीमाताजा नो८।९।१०पिताका कहनाकरो तेराबड़ाधर्महोगा तू इसयुद्धदुर्मद अप नेपिता अर्जुनसे युद्धकर११यह इसीरीतिसे तुझपरनिस्सन्देह प्रसन्न होगा हे भरतर्षभ इसप्रकार माता से दुर्मन्त्रित महातेजस्वी राजा बभ्रुबाहनने १२ युद्धके निमित्त बिचारकिया सुबर्णका कवच और सूर्य्य की समान प्रकाशमान शिरस्त्राणको शरीरमें शोभित करके सैकड़ों उत्तम तूणीरोंसे युक्त उस उत्तम रथपर चढ़ा जोकि सब युद्धके सामानोंसे युक्त और मनके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त १३।१४ चक्रादिक सामानों समेत शोभायमान होकर सुबर्ण के भूषणोंसे अलंकृतथा वह राजा बभ्रुबाहन अत्यंत पूजित सुबर्ण की सिंह ध्वजा को ऊंचा करके १५ और अर्जुन को शत्रुमानकर

यात्रा करनेवालाहुआ इसके पीछे उस बीरने समीप आकर अर्जुन से रक्षित उस यज्ञके घोड़ेको १६ उन मनुष्योंसे पकड़वाया जोकि अश्वशिक्षा में कुशलथे उस प्रसन्नचित्त पृथ्वीपर नियत अर्जुनने पकड़ेहुये घोड़ेको देखकर १७ युद्धमें रथारूढ़ अपने पुत्रको रोका वहां उस बीर राजाने उस बीर अर्जुनके तीक्ष्ण और विषैले सर्पके समान बाणोंके समूहोंसे पीड़ितकिया उन प्रीतिमान दोनों पिता पुत्रोंका बड़ायुद्ध बहुत बढ़कर देवासुरोंके युद्धके समान हुआ उसहंसतेहुये बभ्रुबाहननेनरोत्तमअर्जुनको टेढ़ेपर्ववालेबाणसे यत्रुस्थानपर घायल किया वह बाण पुंखसमेत उसके यत्रुस्थानमें ऐसे समागया जैसेकि बामीमें सर्प समाजाताहै १८। १६। २० २१ वह अर्जुन को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके बाणसेअत्यन्तपीड़ामानबुद्धिमानअर्जुन उत्तमधनुषकासहारा लेकर हार्दाकाशनिवासी ईश्वरमें प्रवेश होकर मृतकके समान होगया २२ फिर उस महा प्रतापी इन्द्रके पुत्र पुरुषोत्तम अर्जुनने सचेतता को पाकर पुत्रकी प्रशंसा करके यह बचन कहा हेचित्राङ्गदाकेपुत्र महाबाहु प्यारेपुत्र धन्यहैधन्यहै तेरे कुलकेसमान कर्मको देखकरमें प्रसन्नहूं २३।२४ अबमें तुझपर बाणोंकोछोड़ताहूं हेपुत्रयुद्धमें नियत होजाओ वह शत्रुओंका नाशकरनेवाला इसप्रकारसे कहकर नाराचों की वर्षा करनेलगा २५ उस राजाने गांडीव धनुषसे छोड़े हुये बज्र बिजलीके समान प्रकाशित सब नाराचोंको अपने भल्लोंसे टुकड़े २ करदिया २६ अर्जुनने दिव्य बाणोंसे उसकीध्वजाको जोकि स्वर्णमयी और सुवर्णके तालवृक्षके समानथी रथसे काटकर गिरादिया २७ हेशत्रुओंकेजीतनेवाले राजाजनमेजय हंसतेहुये अर्जुनने उसके वह घोड़े जोकि बड़ेऊंचे और शीघ्रगामीथे उनको निर्जीवकिया २८ उस अत्यन्त क्रोधयुक्त राजानेरथसे उतरकर पदाती होकर अपने पिता अर्जुनसे युद्धकिया २६ उस बज्रधारीके पुत्र पांडवों में श्रेष्ठपुत्र के पराक्रमसे प्रसन्न अर्जुनने अपने पुत्रको अत्यन्त पीड़ामानकिया ३० पिताको बिमुख मानतेहुये उस पराक्रमी बभ्रुबाहनने विषैले

सर्पकी समान बाणोंसे पिताको फिर पीड़ामानकिया ३१ इसकेपीछे उस बभ्रुबाहनने बालकपन से सुन्दरपुंखवाले तीक्ष्णबाणोंके द्वारा अर्जुनको हृदयपर कठिन घायलकिया ३२ हे राजा वह अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न करनेवाला बाण मर्मस्थलको काटकर अर्जुन केशरीर में प्रवेश करगया उस पुत्रपर अत्यन्त क्रोधयुक्त वह कौरवनन्दन ३३ अर्जुन मोहसे पीड़ामान अचेतहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर उस कौरवोंके धुरन्धरबीर के गिरने पर ३४ उस चित्रांगदाके पुत्रने भी अचेतताको पाया, अर्थात् युद्धमें परिश्रमकरके औरपिताको मृतक हुआ देखकर ३५ पहलेही अर्जुन के बाण समूहोंसे अत्यंत घायल वह राजाभी युद्धमें पृथ्वीका सहारा लेकर गिरपड़ा ३६ पतिको मृतक और पुत्रको पृथ्वीपर गिराहुआ देखकर बड़ी शीघ्रतासे चित्रांगदा युद्धभूमिमें आई ३७ शोकसे अत्यंतदुखी रुदनकरती अत्यंत कम्पायमान बभ्रु बाहनकी माता ने मृतक पतिको देखा ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणि अश्वानुसारे अर्जुनपराजयेएकोनाशी तितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर वह कमल लोचनाभी बहुत प्रकारका बिलाप करके दुखसे पीड़ित और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी १ उस दिव्यरूपरखने वाली देवीने सचेतताकोपाकर उस सर्पकी पुत्री उलूपीसे यह बचनकहा २ कि हे उलूपी तेरेकारण मेरे पुत्रके बाणसे युद्धमें मृतक शयन करने वाले मेरे पतिको देख ३ निश्चय करके तू धर्मज्ञोंमें श्रेष्ठ होकर पतिव्रताहै जो तेरे कारणसे युद्धमेंमराहुआ यहतेरापति पृथ्वीपरगिरा हुआहै ४ अबजो तेरीबुद्धि से यह अर्जुन यद्यपिअपराधीभीहै तौभीइसको क्षमाकर औरइसको सजीवकर ५ हेश्रेष्ठ शुभस्त्री निश्चय करके तुम धर्मकी जाननेवाली और तीनों लोकोंमें प्रसिद्धहो जो पुत्रके हाथ से पतिको मरवाकर शोचनहीं करतीहो ६ हे सर्पनन्दिनी मैं अपने मरेहुये पुत्र को नहीं

शोचतीहूं मैंपतिही कोशोचतीहूं जिसका कि यह अतिथि कियागया है ७ तबउस यशवन्तीने सर्पकी पुत्रीसे इसप्रकार कहकर पतिके पास जाकर यह कहा ८ कि हे प्यारे उठो तुम युधिष्ठिर के और मेरे प्रियहो हे महाबाहु यह तेरा घोड़ामैंने छोड़ दियाहै ९ हे प्रभु निश्चयकरके तुमको इसधर्मराजकेयज्ञके घोड़ेकेपीछे चलनाउचित है सोतुम इसपृथ्वीपर क्योंसोतेहो १० हे कौरव नन्दन मेरेऔरकौरवोंके प्राणतेरे आधीनहैं सो दूसरेके प्राणदाता होकर तुमने किस हेतुसे अपने प्राणोंको त्यागकिया ११ फिर चित्राङ्गदाने उलूपी सेकहा कि हे उलूपी इसपृथ्वीपर पड़ेहुये पतिको देखो इस पुत्रको उत्साह देकर और पतिको मरवाकर शोच नहीं करतीहै १२ चाहे मृत्यु बश होकर यह बालक पृथ्वीपर शयनकरे परंतु यह रक्तनेत्र रखनेवाला बिजयी अर्जुन जोउठे १३ हे सौभाग्यवती मनुष्योंकी बहुतसी स्त्रियोंका होना पाप नहींहै परंतु यहदोष स्त्रियोंका होता है तेरी बुद्धि ऐसी मतहोय १४ ईश्वरने इसमित्रताको प्राचीनऔर अबिनाशी कियाहै तुम मित्रताको अच्छे प्रकारसे जानो तेरेमिलापसत्यहोंय १५ जोतू अबइस मेरेपतिको पुत्रसे मरवाकर मुझको जीवता नहीं दिखावेगी तोमैं अबअपने जीवनकोत्यागकरूंगी १६ हे देबी सोमैं अपनेपुत्र औरपतिसे रहित दुःखसे संयुक्त होकरयहां हीं तेरे देखते शरीर त्यागनेकी इच्छासे अपना खाना पीना त्याग करूंगी १७ हेराजा वहचित्राङ्गदा अपनीसौत उलूपीको इसप्रकार की बातैं कहकर शरीर त्यागनेकी इच्छा से आसनपर बिराजमान होकर मौनहोगई १८ वैशंपायनबोले कि इसकेअनन्तर वह दुखी पुत्रकी इच्छावान् बैराग्यवान् चित्राङ्गदा बहुतबिलापकरके पतिके चरणोंको पकड़कर स्वासलेतीहुई बैठगई १९ इसकेपीछे उस राजा बभ्रुबाहन ने चेतको पाकर और युद्ध भूमिमें अपनी माताको देख करकहा २० किइससे अधिक कौनसा दुःखहै जो सुख से वृद्धिमान मेरीमाता पृथ्वीपर गिरेहुये मृतक बीर पति के पास शयन करती है २१ औरयुद्धमें मेरे हाथसे मृतक इसशस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें

शत्रुओंके नाशकरनेवाले अर्जुनको देखतीहै हाय मरना बड़ाकठिन है २२आश्चर्य्यकी बातहै कि इस महाबाहु मरेहुये अपने पतिको देखनेवाली इसदेवीका हृदय बड़ाकठोर औरदृढ़है जो नहीं फटता है २३ कालके बिना मनुष्यका मरना कठिन मानताहूं जिस स्थान परकि मेरी माता और मैं जीवनसे पृथक् नहींहोते हाय२ इसमरे हुये कौरवबीर अर्जुनके स्वर्णमयी कवचको धिक्कारहै कि मुझ पुत्र के हाथसे मराहुआ पृथ्वीपर दीखता है२४।२५हेब्राह्मणलोगो मुझ पुत्रसेमारेहुये औरबीर शय्यापर शयन करनेवाले मेरेबीर पिताको पृथ्वीपर देखो हे ब्राह्मण वर्य्य लोगो उपदेशकरो अबयहांमुझ निर्दयी पापी और युद्धभूमिमें पिताके मारनेवालेका क्या प्रायश्चित्त है२६।२७हेद्विजवर्य्यो अर्जुनके औरघोड़ेकेपीछेचलनेवालेजोलोग मरनेसेबचरहेहैं वह युद्धेच्छाकी शांतीकरतेहैं जो यहयुद्धमें मेरेहाथ सेमारागया२८ अबपिताकोमारकर इसअपने पिताका शिर कपाल धारण करनेवाले और उसचर्मसे युक्तशरीर मुझनिर्दयीके बारहबर्ष कठिनतासे कटनेवालेहैं क्योंकि अपने पिताको मारकर हत्यारेपने के सिवाय अबमेरा दूसराकोई प्रायश्चित्त नहींहै२६।३०हे सर्पराज की पुत्री मेरेहाथसे मरेहुये अपने पतिको देखो अब मैंने युद्धमें अर्जुनको मारकरतेरा अभीष्ट कियाहै ३१ सोमैं अब पितृलोकको जाऊंगा हे मंगलरूप मैं आत्मासे आत्माके धारण करनेको समर्थ नहींहूं३२हेदेवी मातासो तुम अर्जुनके और मेरे मरनेसे प्रसन्नहो मैं सत्यतासे आत्माकी शपथ खाताहूं ३३ हेमहाराज इसके पीछे दुःखशोकसे पीड़ित उस राजाने यहकहकर आचमन करके कष्टसे यहबचनकहा ३४ हेसर्पिणीमाता सबचरस्थावर जंगम जीवोंसमेत तुम मेरे सत्यसत्य वचनोंको सुनो जो कदाचित् मेरा नरोत्तमपिता अर्जुन नहींउठताहै तोमैं इसी युद्धभूमिमें अपनेशरीरको सुखाऊंगा ३५।३६पिताको मारकर मेरा किसी प्रकारसे प्रायश्चित्त नहीं होसक्ता निश्चयकरके गुरूके मारनेसे पीड़ामान मैं शरीरको त्यागकरूंगा ३७ बीर क्षत्रीको मारकर सौगौदान करके पापसे निवृत्त होताहै

परन्तु इसप्रकार पिताको मारकर मेरा प्रायश्चित्त बड़ाघोरहै ३८ यह मेरा पिता पांडव अर्जुन अनुपम महातेजस्वी और धर्मात्मा है उस मुझ अपराधीका प्रायश्चित्त कैसे होसक्ताहै ३६ हेराजा जनमेजय अर्जुनका वह बड़ापुत्र राजा बभ्रुबाहन इसप्रकार कहकर आचमन करके मौनहुआ और शरीरत्याग पर्य्यंत के लिये खानपान त्याग बैठा ४० वैशंपायन बोले तब पुत्रत्वभावके शोकसे पूर्ण शत्रुओंका विजय करनेवाला राजा बभ्रुबाहन और उसकी माताके भोजनपान त्यागनेपर ४१ उलूपीने सजीवनमणिको स्मरण किया तब सर्पोंके जीवनका हेतु वहमणि वर्त्तमान हुई ४२ हेकौरव सर्पराजकी पुत्री उस उलूपीने उस मणिकोलेकर सेनाके लोगोंकेचित्तोंका प्रसन्न करनेवाला यह बचनकहा ४३ हेपुत्र उठ शोचमतकर यह अर्जुन तुमने विजय नहीं किया यह मनुष्य तो क्या इन्द्रादिक देवताओंसेभी अजेयहै४४ अब मैंने तेरा यशमान् पुरुषोत्तम पिताके प्रिय करनेके निमित्त यह मोहिनीनाम माया दिखलाईहै ४५ हेराजा युद्धभूमिमें युद्ध करनेवाले तुझ पुत्रकी परीक्षा लेनाचाहता यह शत्रुओंका मर्द्दन करनेवालावीर कौरव अर्जुनयहां आयाहै४६ हेपुत्र इसलिये मैंने तुझ को युद्धके लिये प्रेरणाकरीथी हेसमर्थपुत्र तू अपने थोड़ेसे पापको मत ध्यानकर ४७ हे पुत्र यह महात्मा ऋषि प्राचीन होकर सदैव नियत और अविनाशीहै इन्द्रभी युद्धमें इसके विजय करनेको समर्थ नहीं है ४८ हे राजा मैंने यह दिव्य मणि मंगाईहै जो कि सदैव मरे हुये सर्पराजोंको सजीव करती है ४६ हेसमर्थ तुम इसको अपने पिता की छातीपर नियतकरो तब तुम अपने पिता पांडव अर्जुनको जीवताहुआ देखोगे ५० तब इस प्रकार आज्ञप्त हुये उस बड़ेतेजस्वी निष्पापराजाने पितात्वभावकी प्रीतिसे उस मणिको अर्जुन की छातीपर नियत किया ५१ उसमणिके रखने से सजीव होनेवाला वह स्वच्छ रक्त नेत्र रखनेवाला प्रभु बीर अर्जुन बड़े बिलम्बतक शयन करनेवाले के समान उठबैठा ५२ बभ्रुबाहनने उस उठेहुये सचेत सावधान महात्मा

प्राणधारी अपने पिताको देखकर दण्डवत्करी ५३ हे समर्थ फिर उस समर्थ शोभायमान के उठने पर इन्द्रने पवित्र और दिव्यपुष्पोंको बरसाया ५४ बादलके समान शब्दायमान बिना बजाये दुन्दुभियां बजनेलगीं और आकाश में बहुतभारी धन्य २ काशब्द हुआ ५५ स्थिर स्वभाववाले महाबाहु अर्जुनने उठकर बभ्रुबाहन से मिलकर मस्तक पर सूंघा ५६ और कुछ दूर इसकी माताको शोक के पंजेमें फंसी हुई उलूपीके साथ नियत देखा फिर अर्जुनने पूछा५७ कि हे शत्रुओंके नाश करनेवाले यह युद्धभूमि आनन्दशोक और आश्चर्य्य युक्त होने वाला दिखाई देताहै यह क्याबात है जो तुम जानतेहो तोमुझसे वर्णन करो ५८ तेरी माता किस निमित्तइस युद्धभूमिमें आई और सर्पराज की पुत्री उलूपी यहां क्यों आई ५६ मैं जानताहूं कि तुमने मेरे कहनेसे यह युद्धकिया है स्त्रियोंके आने का कारण जानना चाहताहूं ६० तब इस प्रकारकी अर्जुनकी बातोंको सुनकर बुद्धिमान् राजा बभ्रुबाहन ने शिरसे प्रसन्न करके अर्जुनसे कहा कि इस बातको आप उलूपीसे पूछिये ६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेअर्जुनप्रत्युज्जीवनेअशीतितमो ऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हे कौरवीय कुलकी प्रसन्न करनेवाली उलूपी युद्धभूमि में तेरे और राजा बभ्रुबाहनकी माताके आनेका क्याप्रयोजनहै १ हेचपलापाङ्गी सर्पकी पुत्रीक्या तुम इस राजाके कुशलकी चाहनेवालीहो अथवा मेरे शुभको चाहतीहो २ हेप्रियदर्शन सुन्दरी क्यामैंने वाइस बभ्रुबाहनने अज्ञानतासे तेराकोई अप्रिय कर्म कियाहै ३अथवा तेरी सौत चित्रबाहनकी पुत्री राजपुत्री सुन्दरी चित्राङ्गदा तेरा कोई अपराध तो नहीं करतीहै ४ हंसती हुई सर्पराजकी कन्याने उसको उत्तर दिया कि नतो तुमने मेरा अपराध किया और न बभ्रुबाहन मेराकोई अपराध करताहै ५ उसीप्रकार इसकी

यह माताभी जो कि दासीके समान नियतहै मेरा किसी प्रकारभी अपराधनहीं करतीहै अब जैसे कि यह सबकर्म मैंने कियाहै उसको सुनो ६ हेसमर्थ अर्जुन तुमको मुझपर क्रोध न करना चाहिये मैं तुमको शिरसे प्रसन्नकरतीहूं मैंने आपकेअभीष्टके निमित्त यह सब कर्म कियाथा ७ हे महाबाहु अर्जुन अबजो मूलहेतुहै उसकोयथार्थ-तापूर्वक ब्यौरे समेत सुनो हेस्वामी जो तुमने महाभारत के युद्धमें राजाभीष्मको अधर्मसे मारा ८ उसका यह प्रायश्चित्त कियाहै हेबीर तुमने सन्मुख लड़नेवाला भीष्मपितामह नहींमारा ६ तुमने शिखंडी के पक्षमेंहोकर उससे युद्धमें प्रवृत्तहुये भीष्मकोमाराहै जोतुमउसका प्रायश्चित्तकियेबिना इसजीवनकोत्यागकरोगे १० तोउसपाप कर्मसे अवश्यनर्कमेंगिरोगे इसलिये यहप्रायश्चित्त बिचारकियाहै जिसको कितुमने अपनेपुत्रसे प्राप्तकियाहै ११ हे बड़ेबुद्धिमान् संसारके पो-षण पालनकरनेवाले अर्जुनपूर्वसमयमें गंगाजीकेतटपर बसुओंने शापदियाथा उसको मैंने बसुओंसे सुना था और उन्होंने कहाथा अर्थात् हे राजा भीष्मके मरनेपर बसुदेवताओंने गंगा के तटपर आकर १२ स्नानपूर्वक महानदी श्री गंगाजी से मिलकर उस के संमतसे यहभयकारी बचन कहाथा कि १३ हे भाविनी अर्जुन से युद्ध न करता दूसरेके सन्मुखयह शन्तनुका पुत्रभीष्म अर्जुनकेहाथ से मारागयाहै इसकारण अबहम १४ इसबहानेसे अर्जुनको शाप देतेहैं तबउस गंगादेवीनेकहा कि ऐसाहीहोय तबमैंअपने स्थानमें प्रवेश करके और पितासे कहकर ब्याकुलचित्तहुई १५ मेरेपिताने भी उसको सुनकर बड़ी ब्याकुलताको पाया मेरे पिताने बसुओंके पासजाकर तेरेनिमित्त १६ बारंबार प्रसन्नकरके उनसे प्रार्थनाकरी तब उन्होंने यहबचन कहाकि हेमहाभाग उस अर्जुनका तरुणपुत्र मणिपुरका राजाहै १७ वह युद्धभूमिमें नियत होकर बाणोंसे इस को पृथ्वीपर गिरावेगा हेनागेन्द्र ऐसाहोने से वहशाप से निवृत्त होगा १८ फिरवह बसुदेवताओंसे बिदाहोकर आया और यहसब वृत्तान्त उसने मुझसेकहा उसको सुनकर मैंने तुमको उस शापसे

निवृत्तकियाहै १६ देवराजभी तुझकोयुद्धोंमेंपराजयनहीं करसक्ताहै पुत्र आत्मारूपहै इसीहेतुसे उससे पराजय हुआहै २० हेप्रभु मेरा दोषनहीं है अथवा आप किसप्रकारसे मानते हैं यहबात सुनकर प्रसन्नचित्त अर्जुनने कहा २१ कि हेदेवी यहसब जो तुमने किया है वह सब मेरा प्रियकरहै तबउस अर्जुनने यहकहकर चित्रांगदा और उलूपीके सुनतेहुये राजा बभ्रुवाहन से यहबचन कहा कि हे राजाचैत्र महीनेकी पूर्णमासीको युधिष्ठिरका अश्वमेध होगा २२ हेपुत्र तुम अपनी दोनोंमाता और मन्त्रियोंसमेत वहांजाना अर्जुन की इसआज्ञाको सुनकर नेत्रोंमें जल भरकर राजाबभ्रुवाहन ने पितासे यहबचनकहा २३ कि हेधर्मज्ञ मैं आपकी आज्ञासे अश्व-मेधनाम महायज्ञमें जाऊंगा और ब्राह्मणों का परोसनेवाला बनूंगा २४ हे धर्म्मज्ञ तुम मेरे अनुग्रहकेलिये अपनी दोनों भार्य्याओं समेत अपनेनगरमें प्रवेशकरिये इसमें आपकिसीबातका बिचार न करें २५ हे बिजयशालियोंमें श्रेष्ठ प्रभु यहांअपनेभवनमें एकरात्रि सुखसे निवासकरके फिरघोड़ेकी अनुगामिता करनेकोयोग्यहो२६ तबपुत्रके इसप्रकारके बचनसुनकरमन्दमुसकानकरते बानरध्वजा-धारी अर्जुनने राजाबभ्रुवाहन को उत्तरदिया २७ हेमहाबाहु तुझे बिदितहै कि जैसे मैं यज्ञके निमित्त दीक्षितकियागयाहूं हे आयत-नेत्रपुत्र तबतक तेरेनगरमें प्रवेशनहीं करूंगा २८ हे नरोत्तम यह यज्ञका घोड़ा अपनी इच्छाके अनुसार चलताहै तेरा कल्याण होय मेरानिवास संभव नहीं है अब जाऊंगा २९ फिरउससे श्रेष्ठ बिधि पूर्वक पूजित और दोनोंस्त्रियों से बिदाहोकर वहभरतर्षभ इन्द्रका पुत्र चल दिया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअश्वानुसारेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले हेराजा वहघोड़ा समुद्र पर्य्यन्त इस पृथ्वीपरघूम करउस ओरको लौटाजिधर कीओर हस्तिनापुरथा १ फिर घोड़े के

पीछे चलताहुआ अर्जुनभी लौटा तब ईश्वरकी इच्छासे राजगृह नामोनगरको पाया २ हेप्रभु क्षत्रीधर्ममें नियत उसबीर सहदेवके पुत्रने उससमीप नियतहुये अर्जुनको देखकर युद्धकेनिमित्त बुलाया इसके पीछे रथधनुष बाण और हस्तत्राण धारी वह पदाती राजा मेघसिन्ध नगरसे बाहर निकलकर उस अर्जुनकेसन्मुखगया ३।४ हे महाराज महातेजस्वी मेघसिन्धने अर्जुनको पाकर लड़कपन और अज्ञानतासे यह कहा ५ कि हे भरतबंशी यह स्त्रियोंके मध्यमें नियत करके क्याघुमाया जाताहै मैं इसघोड़ेकोहरूंगा तुम इसके छुटानेमें उपायकरो ६ जो तुम युद्धमें मेरे वृद्धोंसे शिक्षा पानेवाले नहींहुयेहो तोमैं तेरा आतिथ्यकरूंगा तू प्रहारकर औरमैंभी प्रहार करताहूं७इसप्रकारके बचनसुनकर हंसते हुये अर्जुनने उसकोउत्तर दियाकि बिघ्नकर्त्तालोगमुझसे हटानेके योग्यहोतेहैं मेरा यहनियत ब्रतहै ८ हे राजानिश्चय करके मेरे बड़ेभाईनेभी उसको जानाहै सामर्थ्यके अनुसार प्रहारकर अभीमेरा क्रोधबर्त्तमान नहींहै ९ इस प्रकार कहतेहुये हजारों बाणछोड़ते राजामगधने प्रथम अर्जुन पर ऐसे प्रहारकिया जैसे कि हजारनेत्र रखनेवालाइन्द्र जलकी बर्षाको छोड़ताहै १० हे भरतर्षभ इसके पीछेशूर अर्जुनने गांडीव धनुषके चलाये हुये बाणोंसे शत्रुके बाणसमूहोंको निष्फल किया ११ उस बानर ध्वजाधारीने उसके बाणोंको निष्फल करके सर्पोंके समानप्र काशमानमुखवालेबाणोंकोछोड़ा१२ध्वजा, पताका, रथकादण्ड, यन्त्र, घोड़ेऔरअन्यअन्य रथके अंगोंपर बाणोंकोछोड़ा परन्तु राजामगध औरसारथी पर नहीं छोड़े सब्यसाची अर्जुनसेभी रक्षितशरीर और अपने पराक्रमको मानते उस राजामगधने बाणोंको छोड़ा १३।१४ इसकेपीछे राजामगध से अत्यन्त घायल अर्जुन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बसन्तऋतुमें फूलाहुआ पलाशवृक्षहोताहै १५हे जन मेजय उस बिना घायल हुये राजामगधने अर्जुनपर प्रहार किया इसीहेतुसे वह राजा उसलोकबीर अर्जुनके सन्मुख नियतरहा१६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने बड़े क्लिष्ट धनुष को खैंचकर घोड़ों

को निर्जीवकरके सारथी का शिरकाटा १७ और उसके बड़े अपूर्व धनुषको भी क्षुरनाम बाणसे काटा और इसके हस्तत्राण और पताकासमेत ध्वजाको भी गिराया १८ घोड़े धनुष और सारथीसे रहित व्याकुलचित्त तीव्रता से युक्त वह राजा गदा को लेकर अर्जुन के सन्मुख दौड़ा तब अर्जुनने उसशीघ्रतासे आनेवाले राजाकी स्वर्णमयी गदा को उन बहुत बाणोंसे अनेक खण्ड करदिये जो कि गृद्ध पक्षसे संयुक्तथीं १६।२० जिसके मणिबंधनखुलगये वह खंडितगदा पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ी जैसे कि कांचली से रहित सर्पिणी गिरती है वानरध्वजाधारी अर्जुनने उसरथ धनुष और गदा से रहित राजा से मधुर भाषणके साथ यहबचनकहा कि २१।२२ हेराजा यहक्षत्री धर्म दिखलाया यही बहुतहै हेपुत्र जावो युद्धमें तुझबालकका यही कर्म बहुतहै २३ हे राजा युधिष्ठिरकी यह आज्ञाहै कि राजालोग न मारना चाहिये इसीहेतु से अपराधी होकर भी तुम इसबड़ेयुद्ध में जीवतेहो २४ तब राजा मगधने अपने को निषेध किया हुआ मानकर हाथ जोड़कर उसके पास आकर उसकी प्रतिष्ठाकरी और कहा आपका कहना सत्य है २५ आपको भलाहोय मैं तुमसे पराजितहूं मैं तुम से अब लड़ने को उत्साह नहीं करता हूं अबआपकी जो आज्ञा होय सो कहिये और उसको कियाहुआही जानों २६ अर्जुनने उसको बिश्वास देकर फिर यहबचनकहा कि चैत्रकीपूर्णमासीको हमारे राजाके यज्ञमें आपको आनायोग्यहै २७ इसप्रकार आज्ञा पाकर उसहसदेवके पुत्रने बहुत अच्छा कहकर अंगीकार किया और घोड़े समेत शूरबीर अर्जुनको बिधिपूर्वक पूजनकिया २८ इसके पीछे वह घोड़ा फिर अपनी इच्छाके अनुसार चला फिरवह समुद्रके किनारे पर बंग, पौण्ड्र, और कौशल देशों में गया २६ अर्जुनने जहां तहां गांडीव धनुषसे म्लेच्छोंकी बहुत सेनाओंको बिजयकिया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेमागधपराजयेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

—※—

तिरासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे राजा राजामगध से पूजित पांडव अर्जुनने दक्षिणदिशामें नियत होकर उस घोड़ेको चलाया१इसकेपीछे उस स्वेच्छाचारी घोड़ेनेघूमकर चन्देरी देशियोंकी शुक्तिनाम सुन्दरपुरी को पाया २ तबवहां वह बड़ापराक्रमी अर्जुन उस शिशुपालकेपुत्र शरभसे युद्धकेद्वारा पूजितहुआ ३ हेराजा तब वह पूजित श्रेष्ठघोड़ा काशी, अंग, कौशल, किरात, और तंगण देशोंको गया ४ वह कुन्ती का पुत्र अर्जुन न्यायके अनुसार पूजालेकर दशार्णदेशोंको गया ५ वहां पराक्रमी शत्रुओंका पराजय करनेवाला चित्रांगद नाम राजा था उसके साथउस अर्जुनका युद्ध अत्यन्त भयकारी हुआ६ पुरुषोत्तम अर्जुन उसकोभी आधीन करके निषादोंके राजा एकलव्य नाम राजाके देशोंमें गया ७ तब एकलव्यके पुत्रने युद्धके साथ उसको लिया वहां उसने निषादोंके साथ युद्धकिया वह युद्धभी रोमहर्षण करनेवालाथा ८ इसके पीछे युद्धोंमें अजेय निर्भय अर्जुनने यज्ञके बिघ्नके लिये सन्मुख आनेवाले उस निषादको युद्धमें बिजयकिया ९ हेराजा वह इन्द्रका पुत्र उस निषादके पुत्रको बिजय कर और उससे पूजितहोकर दक्षिणी समुद्रकोगया१० वहांभी अर्जुनकायुद्ध द्रविड़, अन्ध्र, माहिषक, कोल्लगिरि निवासियोंके साथ हुआ ११ अर्जुन साधारणतासे उनकोभी बिजय करके आधीन न होनेवाले घोड़ेके साथ सुराष्ट्र देशोंके सन्मुख गया १२ गोकर्णको पाकर प्रभासक्षेत्रकोभी गया इसके पीछे युधिष्ठिर के उस शोभायमान यज्ञके घोड़ेने वृष्णी बीरोंसे रक्षित सुन्दर द्वारकाको पाया यादवोंके बालक उस श्रेष्ठ घोड़ेको पकड़कर चलेगये १३ । १४ हे राजा तब राजा उग्रसेनने उनको निषेधकिया तब वृष्णी और अंधकबंशियोंके स्वामी उग्रसेनने १५ अर्जुनके मामा बसुदेवजी समेत पुरसे बाहर निकलकर दोनों बिधिपर्व्वक अर्जुनसे मिलकर १६ बड़ी पूजासमेत अर्जुनके सन्मुख नियतहुये फिर उनसेभी बिदाहो

कर अर्जुन उधरको चला जिधर घोड़ा गया १७ फिर वह अलंकृत घोड़ा क्रमपूर्व्वक पश्चिम देशोंको चला फिर पंचनद अर्थात् पंजाब देशमेंगया १८ हेकौरव तब वहघोड़ा वहांसेभीचलकर इच्छाकेअनु सारगान्धारदेशकोगया जिसका कि अनुगामीअर्जुनथा फिरप्राचीन शत्रुताकेसमान कर्मकर्त्ता गान्धार देशके राजा शकुनीके पुत्रकेसाथ युद्धहुआ वह युद्धभी भयका उत्पन्न करनेवालाथा १६ । २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअश्वानुसारेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि गांधार देशियोंका महारथी शकुनीका पुत्र बीर घोड़े हाथी और रथसे संयुक्त पताका ध्वजा ध्वजाकी माला रखनेवाली बड़ी सेनासे व्याप्त अर्जुनके सन्मुखचला राजाशकुनी के मरण को नसहते १।२ धनुष पकड़नेवाले वह शूरबीर सब मिल कर अर्जुनके सन्मुखगये उसअजेय धर्मात्मा अर्जुनने उनसे युधि-ष्ठिर का बचन कहा परन्तु उन्होंने अपने कुशल रहनेका युधि-ष्ठिर का बचन स्वीकार नहींकिया मधुर बाणोके साथ अर्जुनसे रुकेहुये क्रोधयुक्त वहलोग ३।४ घोड़ेको घेरकरचले इसी हेतुसेअ-र्जुन क्रोधयुक्त हुआ तदनन्तर पांडव अर्जुन ने साधारण रीतिके द्वारा धनुषसे छोड़े हुये प्रकाशमान् नोकवाले क्षुरनाम बाणों से उन्होंके शिरोंको काटा हे महाराज बाणोंकी बर्षासे अत्यन्त पीड़ा-मान और अर्जुनके हाथसे घायल वह सेनाकेलोग भयभीत होकर घोड़ेको छोड़कर लौटे उन गांधारियोंसे रुकेहुये तेजस्वी अर्जुनने भी५।६।७नाम लेलेकर उनसबके शिरोंको गिराया युद्धभूमिमेंचा-रोंओरसे गांधारियों के मारे जानेसे उस शकुनी के बेटेने अर्जुन कोरोका अर्जुनने उस युद्ध करनेवाले क्षत्रीधर्ममें नियत राजासे कहा ८।६ कि राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासेमैं किसी राजाको मारना नहीं चाहता हेबीर तुम युद्धको त्यागो अबतेरी पराजय नहोय तब इसप्रकार शिक्षित होकर भी अज्ञानता से कर्म करने वाले उस

राजाने उस बचनको भी तिरस्कार करके इन्द्रके समान कर्मी अर्जुनको बाणोंसे ढकदिया १०।११बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने अर्धचन्द्र नाम बाणसे उसके शिरस्त्राणको ऐसे गिराया जैसे कि जयद्रथ का शिर गिराया था १२ उनसब गान्धारीयोंने उस कर्मको देखकर आश्चर्य्य किया और यह जाना कि उस इच्छावान् अर्जुनने राजा को नहीं मारा १३ भागने में प्रवृत्तचित्त गान्धार देशी राजाका पुत्र नीच मृगोंके समान भयभीत होकर सेनाके लोगों समेत चल दिया १४ वहां अर्जुनने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे शीघ्रही उन चारों ओर घूमनेवालोंके शिरोंकोकाटा १५ कितनेही मनुष्योंने अर्जुनके हाथसे चलायमान गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये बड़े बाणोंसे काटीहुई बड़ी भुजाको नहींजाना १६ जिसके मनुष्य हाथी घोड़े भ्रांतीसे युक्तथे वह भागीहुई सेना गिरी और बहुतसी सेना मृतक और आपत्ति युक्तहोकर लौटी १७उस उत्तम कर्मी बीरके आगे गिरेहुये शत्रुओंमें से कोई शत्रुऐसानहीं दिखाई दिया जो कि उस अर्जुनको सहसंके १८ इसके पीछे गांधारके राजाकी माता जिसके अग्र-गामी वृद्ध मन्त्रीथे उत्तम अर्थको आगे करके नगरके बाहरनिकली १६उसने सावधान और युद्धमें दुर्मद पुत्रको रोका और उसअर्जुन को जिसके आगे सब कर्म साधारणहैं प्रसन्नकिया २० प्रभु अ-र्जुनने उसको पूजकर कृपाकरी और शकुनीके पुत्रकोभी विश्वास कराके यह बचन कहा २१ हे महाबाहु मेरा अभीष्ट नहींथा जो तुमने सन्मुख लड़नेका बिचारकिया हे नाश करनेवाले निष्पाप तुम मेरेभाई हो २२ हेराजा मैंने गांधारी माताको स्मरण करके धृतराष्ट्र केहेतुसे तुमको नहींमारा इसी कारणसे तुम जीवते हो तेरे साथीही मारेगये २३ ऐसी दशावाला तूमतहो अपने चित्तसे शत्रुता दूरकरो तेरी बुद्धि ऐसी मत हो तुम चैत्र महीनेकी पूर्णमासीको हमारे राजाके अश्वमेध यज्ञमें जाना २४॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

—※—

पच्चासीवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि ऐसाबचन अर्जुन कहकर स्वेच्छाचारी घोड़े के पीछेचला फिरघोड़ा हस्तिनापुरकी ओर लौटा १ युधिष्ठिर ने दूतकेद्वारा उसलौटेहुये अर्जुनको सुना वह अर्जुनको कुशल मंगल पूर्वक सुनकर प्रसन्न हुआ २ तब युधिष्ठिर गान्धार और अन्य २ देशोंमें अर्जुनके उसकर्मको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३ हे कौरव उसीसमय पर धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ महातेजस्वी धर्मराज युधिष्ठिरने माघके शुभपक्षकी द्वादशी और पुष्य नक्षत्रको पाकर ४ भीमसेन नकुल सहदेव इनसब भाइयोंको बुलाकर उस महाबक्ता ने उस प्रहारकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ भीमसेनको समयपर सावधान करके यह बचनकहा कि ५ । ६ हे भीमसेन यहतेरा छोटाभाई अर्जुन घोड़ेके साथ ऐसेआताहै जैसे कि अर्जुनके साथी दूतोंने मुझसे कहाहै ७ यह समय सन्मुखआया और घोड़ाआताहै हेभीमसेन यह माघकी पूर्णमासीहै आजसे एकमहीना शेषरहाहै ८ इसहेतुसे वेद में पूर्णज्ञानी पंडित ब्राह्मणजायँ और अश्वमेधकी सिद्धीके निमित्त यज्ञ करनेकेयोग्य देशकोदेखें ९ इसप्रकारसे आज्ञादियेहुयेउसभीम सेनने राजाकी आज्ञाको किया और आयेहुये अर्जुन को सुनकर प्रसन्नहुआ १० इसकेपीछे वह भीमसेन यज्ञ कर्मों में कुशल और सावधान ब्राह्मणोंको आगेकरके पूर्ण बुद्धिमान् कारीगरोंको साथ में लेकर यात्राका करनेवाला हुआ ११ भीमसेनने बिधिके अनुसार उस यज्ञभूमिको नपवाया जोकि बहुतसे स्थानोंसे युक्त और शोभायमानथी और जिसमें बाजारके मार्ग वर्त्तमानथे उसभूमिको बिधिपूर्वक सैकड़ों मन्दिरोंसे युक्त उत्तम मणियों से जटित सुबर्ण और मणियोंसे अलंकृत करवाया १२ सुबर्ण से खचित स्तंभ और बड़े तोरणको अर्थात् स्तंभ के ऊपर सिंहाकार काष्ठ को बनवाया और यज्ञके स्थानोंपर शुद्धसुबर्णकोजड़वाकर १३ । १४ फिर धर्मात्माने नाना प्रकारके देशोंसे आनेवाले राजाओंके निवासस्थानोंको जहां

तहांबिधिपूर्बक बनवाया१५ अर्थात् उसकुन्तीके पुत्रने नानादेशों से आनेवाले ब्राह्मणोंके स्थानोंको बिधिपूर्बक बनवाया वह अनेकप्रकारकेथे १६ हेमहाबाहु यहसब स्थान तैयार करवा के राजाकी आज्ञासे दूतोंको समर्थ राजाओंके पास भेजा १७ हेबड़े साधुराजा जनमेजय दूतों के पहुंचतेही वह राजालोग युधिष्ठिरकी प्रसन्नता के अर्थ उसके अभीष्ट प्रिय रत्न स्त्री घोड़े और धनुषआदिक शस्त्रों को लेकरआये १८ उन सुन्दर निवासस्थानोंमें प्रवेशकरतेहुये उन राजाओंके शब्द स्वर्गको ऐसे स्पर्श करनेवाले हुये जैसे कि गर्जते हुये समुद्रके शब्द स्वर्गके स्पर्श करनेवाले होतेहैं १६ राजा युधिष्ठिरने उन आनेवाले राजाओंकेनिमित्त खाने पीनेकीबस्तु और शय्याआदिक दिव्यपदार्थोंकी आज्ञादी २० उसभरतर्षभ धर्मराजने घोड़े आदिकेलिये नानाप्रकारकी शालाओंको जोकि धानतृण और गोरससे युक्तथीं बतलाईं २१ इसीप्रकार उस बुद्धिमान् धर्मराज के बड़े यज्ञमें बहुतसे ब्रह्मवादी मुनिलोगोंके समूह आये २२ हेराजा वहांपर जो महाउत्तम ब्राह्मणथे वह अपने शिष्यों समेतआये २३ युधिष्ठिरने उनको बड़े आदर सत्कार के साथ अभ्युत्थान पूर्व्वक प्रीतिके साथ लिया महातेजस्वी युधिष्ठिर दंभको त्यागकर आपही निवासस्थानों तक उनके साथ गया २४ इसके पीछे कारीगर और जोअन्य२ प्रकारके शिल्प बिद्याके लोग वहां बर्त्तमान थेउन्हों ने सब यज्ञ बिधिको बनाकर धर्मराजसे निवेदन किया २५ आलस्यसे रहित प्रतिष्ठा युक्त राजा युधिष्ठिर उस सबको तैयार सुन कर भाइयों समेत बहुत प्रसन्नचित्त हुआ २६ बैशंपायन बोले कि उस यज्ञके जारीहोनेपर बार्त्तालापमें सावधान परस्पर बिजयाभिलाषी हेतुबादी ब्राह्मणोंने अर्थात् न्यायशास्त्रवालोंने बहुतसे हेतु बादोंको बर्णन किया २७ हेभरतवंशी सब राजाओंने भीमसेनकी रचीहुई उस उत्तम यज्ञविधिको देखाजोकि देवेन्द्रकी यज्ञकी समान थी२८उन्होंने जहांपरसुबर्णके तोरणोंकी और बहुतसे शय्याआसन बिहारोंकी जो कि मनुष्यों के समूहोंसे युक्तथे देखा राजाओंने घट,

पात्र, कढ़ाव, कलश, बर्द्धमानक इत्यादि किसी सामानकोभी बिनासुबर्णका नहीं देखा २९। ३० शास्त्रके अनुसार उन यज्ञस्तंभोंको देखा जोकि काष्ठसे निर्मित सुबर्णसे खचित और अलंकृत बड़ेप्रकाशमान् बिधिपूर्व्वक बनायेथे ३१ हे समर्थ वहां राजाओंने उन सब बिषयोंको भी बर्त्तमान देखा जोकि जल और स्थलमें उत्पन्न होनेवालेथे ३२। ३३ गौ भैंस वृद्धस्त्रियां जलजीव पशु पक्षी जरायुज अंडज स्वेदज और उद्भिज्ज अर्थात् पृथ्वी से उत्पन्न औषधी पर्व्वत और अनूप देशोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकोभी राजाओंने देखा३४ इसप्रकार राजाओंने पशु गोधन और धान्यसे प्रसन्न सब यज्ञशालाको देखकर बड़े आश्चर्य्यको पाया ३५ ब्राह्मणोंके और वैश्योंके वह निवासस्थान बहुत स्वच्छ खानेपीनेकी बस्तु और धनोंसे पूर्ण थे वहां भोजन करनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणोंका एकलक्ष संख्या पूर्ण होनेपर ३६ बादलकेसमान शब्दायमान दुन्दुभी बारंबार बजाईगईं और प्रत्येक दिनके बर्त्तमान होनेपर प्रतिक्षण शब्द करनेवाली हुईं ३७ बुद्धिमान् धर्मराजका वह यज्ञ इसप्रकार जारी और बर्त्तमानहुआ हेराजा मनुष्योंने भोजनकी बस्तुओंके ढेर ३८ दहीके कुंड और घृतकेहृददेखे हेराजा नानादेशोंसेयुक्त सम्पूर्णजंबूद्वीप ३९ उस राजाके महायज्ञ में एकत्र बर्त्तमान दिखाईपड़ा हे भरतर्षभ जहां तहांसे मनुष्योंकी हजारों जातें ४० बहुतसे पात्रोंको लेकर वहांगये उन सब मालाधारी और बहुत स्वच्छ मणि कुंडल रखनेवालोंने ४१ उनसैकड़ों और हजारों ब्राह्मणोंके आगे नानाप्रकारके खाने पीनेके पदार्थों को परोसा जोमनुष्य कि इसकार्य्यपर नियतथे उन्होंने राजाओं के योग्य भोजनोंकी बस्तुओंको ब्राह्मणोंके आगे परोसा ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणियुधिष्ठिरअश्वमेधेपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५॥

छियासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि राजायुधिष्ठिरने आयेहुये वेदपाठी ब्राह्मणों

को और पृथ्वीपति राजाओंको देखकर भीमसेनसे कहा किजो यह पृथ्वीपति राजालोग पास आयेहैं उन्होंका पूजाकरना योग्य है क्योंकि सब राजालोग पूजनके योग्य हैं ।१।२ यशवान् महाराजसे आज्ञा दियेहुये उस महातेजस्वी पाण्डव भीमसेनने नकुल सहदेव समेत उसी प्रकारसे किया ३ इसके पीछे सब जीवधारियों में श्रेष्ठ गोविन्दजी बलदेवजीको आगेकरके सात्यकी, प्रद्युम्न, गद, निशठ, साम्ब, कृतबर्मा इत्यादिक सब वृष्णियों समेत धर्मराजके पास आये ।४।५ महारथी भीमसेनने इन्होंकोभी उत्तमपूजाकरी वह सब रत्नोंसेपूर्ण अपने २ निवासस्थानोंकोगये ६ मधुसूदन श्रीकृष्णजीने कथाके अन्तपर बहुतसे संग्रामोंसे कर्षितहोना अर्जुनका वर्णन किया ७ धर्मराज कुन्ती पुत्र युधिष्ठिरने उस इन्द्र के पुत्र अर्जुनसे बारंबारपूछा और जगत्पतिने उसको अच्छोरीतिसे वर्णनकिया ८ हेराजाएक द्वारकाबासी बड़ा विश्वस्थ मनुष्य आयाथा जिसने कि बहुतयुद्धोंसे कर्षित उस अर्जुनको देखाथा ९ हे प्रभु उसने महाबाहु अर्जुनको समीपही आनेवाला मुझसे कहा हे युधिष्ठिर तुम अश्वमेधकी सिद्धीकेलिये करनेकेयोग्य कर्मोंकोकरो १० इसप्रकार के बचनसुनकर धर्मराज युधिष्ठिरनेउनको उत्तर दिया कि हेलक्ष्मी पति वह अर्जुन प्रारब्धसेकुशल पूर्बक आताहै ११ हेयादवनन्दन पांडवी सेनाके स्वामी उस अर्जुनने जो आप के पास समाचार भेजे हैं वह मैं आपसे जानना चाहताहूं १२ तब धर्मराजके इसप्रकार पूछने पर बड़ेबक्ता श्रीकृष्णजीने धर्मराज युधिष्ठिरसे यह बचन कहा१३ कि हे महाराज अर्जुनके बचनको स्मरण करतेहुये मनुष्यने यह आनकर कहा कि हेश्रीकृष्ण और युधिष्ठिर समय पर यह मेरा बचन कहनेके योग्यहै १४ हे कौरवोत्तम सब राजालोग आवेंगे उन आनेवाले राजाओंकी बड़ीपूजा करनी चाहिये यह हमकोउचितहै १५ हेबड़ाई देनेवाले उस राजायुधिष्ठिरको इसमेरे बचनसे विदित करना योग्यहै कि कोईनाश उत्पन्न करनेवालाकर्म न होय जोकि राजसूय यज्ञमें राजाओंके मध्य पूजनमें हुआथा १६

राजा उसके करनेको योग्यहै आपभी उसको अंगीकारकरैं हेराजा यह प्रजालोग राजाओंकी बिरुद्धता और शत्रुता को नहींदेखैं १७ हेराजा युधिष्ठिर उस मनुष्यने अर्जुनके इस दूसरे बचन कोभी कहाहै उसकोभी मुझसे सुनो १८ कि मेराप्यारा पुत्र बड़ातेजस्वी बभ्रुबाहन नाम मणिपुरका राजाभी हमारे यज्ञमें आवेगा १६ आप उसको मेरेअभीष्ट और प्रियकेलिये उसको बिधिपूर्व्वक पूजन करें हेप्रभु वह सदैव मेराभक्त और प्रीतिमानहै २० धर्मराज युधिष्ठिरने उसके इस बचनको सुनकर उसके इस बचनकी प्रशंसा करके यह बचन कहा २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणियुधिष्ठिरअश्वमेधेषडशीतितमोऽध्यायः८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हेप्रभु श्रीकृष्ण मैंने यहप्रिय बचनसुना जिसके आप कहने को योग्यहो वह पवित्र अमृत रस मेरे चित्तको प्रसन्न करताहै १ हेइन्द्रियों के स्वामी निश्चय करके अर्जुन के बहुतसे युद्ध जहांतहां राजाओंके साथहुये और मैंनेभी उनको सुनाहै २क्या कारणहै कि जोवह अत्यन्त बिजयी बुद्धिमान् अर्जुन सदैव सुखसे रहितहै यहबात मेरे मनको खेदित करतीहै ३ हेजनार्द्दन मैं उसबिजयके अभ्यासी अर्जुनको एकान्त में शोचताहूं वह पांडुनन्दन बारंबार अत्यन्त दुःखोंका पानेवालाहै ४ सब शुभ चिह्नोंसे शोभित उसके शरीरमें कौनसा चिह्न अप्रियहै हेश्रीकृष्णजी जिसके कारणसेकि वह दुःखको भोगताहै५ वह कुन्तीनन्दन बारंबार दुःखपानेवालाहै और मैं उस अर्जुनके अंगोंमें कोई दोषका चिह्न नहींदेखताहूं जो यह बातमेरे सुनने के योग्यहोय तो आप उसके कहनेको योग्य हैं ६ इस बातको सुनकर इन्द्रियों केस्वामी यादवोंके वृद्धिकर्त्ता बिष्णुजीने बहुत बड़े उत्तरको बिचार करके राजासे यह बचन कहा ७ हेराजा मैं इस पुरुषोत्तमके किसी अंगको मिलाहुआ अप्रकटनहीं देखताहूं सिवाय इसके कि इस नरोत्तम के दोनों पिण्डिक

नियत संख्यासे अधिक हैं ८ वह पुरुषोत्तम उनदोनों अंगोंके कार
णसे सदैव बिदेशोंकी यात्रा करताहै इसके सिवाय किसी ऐसेदूसरे
चिह्नको नहींदेखताहूं जिससे कि यहदुःखका भागीहोय हेप्रभु जन-
नमेजय इस प्रकारके श्रीकृष्णजी के बचनको सुनकर पुरुषोत्तमधर्म
राजने उत्तरदिया कि यह इसीप्रकार है ९ कृष्णा द्रौपदीने गुणमें
दोष लगानेवाले श्रीकृष्णजीको तिरछा देखा केशीदैत्यके नाशक
मित्रके मित्र इन्द्रियोंके स्वामी साक्षात् अर्जुनके समान श्रीकृष्ण
जीने उसकी उस प्रार्थनाको स्वीकार किया अर्थात् दोष प्रकटकर-
नेसे मौनता धारण करलीनी वहांपर कौरव याचक ब्राह्मण और
भीमसेनादिक पांडव १० । ११ अर्जुनकी उस बिचित्र और शुभ
कथाको सुनकर प्रसन्न हुये अर्जुनकी कथाके बर्णनकरतेही समय
में १२ महात्मा अर्जुनकीआज्ञासे दूतआया उस बुद्धिमान्ने समीप
आकर युधिष्ठिरको नमस्कार करके पासआनेवाले नरोत्तमअर्जुन
को बर्णनकिया तब उसको सुनकर प्रसन्नताके अश्रुओंसे ब्याकुल
युधिष्ठिरने १३ । १४ इस शुभ वृत्तान्तके बदले में उसको बहुतसा
धनदिया फिर दूसरे दिन कौरवोंके धुरंधर नरोत्तमके आनेपर बड़ा
वृद्धिकारी शब्द हुआ फिर समीप आनेवाले उसअर्जुनके घोड़ोंकी
उठाई धूलऐसे शोभायमानहुई १५ जैसे कि उच्चैश्रवा की होतीहै
वहां अर्जुनने मनुष्योंके आनन्द दायक बचनोंको सुना १६ कि
वह अर्जुन प्रारब्धसे कुशल पूर्व्वक है राजा युधिष्ठिर प्रारब्धी है
अर्जुनके सिवाय कौनसावीर राजाओंको बिजयकर संपूर्ण पृथ्वीको
जीतकर १७ इस उत्तम घोड़ेको घुमाकर फिर लौटकर आसक्ता
है जो सगर आदिक महात्मा पूर्व्वसमय में हुयेथे १८ हमने कभी
उनकाभी ऐसा कर्मनहीं सुना अब आगे भविष्यतकाल में दूसरे
राजालोग इसकर्मको नहीं करेंगे १९ । २० जिसको कि हेकौरव
कुलभूषण तुमने कियाहै धर्मात्मा अर्जुन इस प्रकारसे कहने
वाले उन मनुष्योंकी बार्त्तालापोंको जो कि कानोंको सुखदेनेवाली
थीं २१ । २२ सुनता हुआ यज्ञशालामें पहुंचा तब मन्त्रियों समेत

राजा युधिष्ठिर और यदुनन्दन श्रीकृष्णजी धृतराष्ट्रको आगे करके अगमानी लेनेको गये फिर अर्जुन वहां आकर पिताके और बुद्धिमान् धर्मराजकेचरणोंको दंडवत्करके२३।२४ और भीमसेनादिक भाइयोंको अच्छीरीतिसे पूजकर केशवजीसे मिलाउन·सबसेमिलकर और उनसे पूजित होकर उस महाबाहुने उनको बिधिपूर्बक पूजकर २५ ऐसे बिश्रामकिया जैसे कि पारजानेवाला दूसरे किनारेको पाकर बिश्रामलेता है उसी समय पर वह बुद्धिमान् राजा बभ्रुबाहन २६ दोनों माताओं समेत कौरवोंके पासआया वहांउस महाबाहुने वृद्ध कौरवों को और अन्य राजाओंको बिधिपूर्वक नमस्कारकर २७ उनसे आशीर्बादलेकर अपनीदादी कुन्तीके महलोंमें प्रवेशकिया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिबभ्रुबाहनागमनेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७

अट्ठासीवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि उसमहाबाहुने पांडवों के महल में प्रवेश करके सुन्दर और मधुर बचनोंसे दादीको दंडवत्की १ इसकेपीछे देवी चित्राङ्गदा और उलूपी दोनों नम्रतापूर्वक कुन्ती और द्रौपदी के पासगईं २ सुभद्रादिक जो दूसरी कौरवोंकी स्त्रियांथीं उन के पासभी न्यायके अनुसार गईं हे राजा द्रौपदी सुभद्रा और जो अन्य २ यादवोंकी स्त्रियांथीं उन्होंने उनदोनोंको नानाप्रकारकेरत्न दिये अर्जुनके प्रियकरनेकी इच्छासे कुन्तीसे पूजित३।४ वहदोनों देवी बहुमूल्यवाले शयन आसनपर बैठगईं वह बड़ातेजस्वी और पूजित बभ्रुबाहन ५ बिधिकेअनुसार राजाधृतराष्ट्र के सन्मुखनियत हुआ अर्थात् नमस्कारादिककरी फिर महातेजस्वीने राजा युधिष्ठिर और भीमसेनादिक पांडवोंके ६ पासजाकर नम्रतासे दंडवत् की वह उन्होंसे प्रेमके साथ प्रेमपूर्बक मिलकर बिधिके अनुसार पूजितहुआ७उनप्रीतिमान् महारथियोंने उसको बहुतसा धनदिया इसी प्रकार राजा बभ्रुबाहन नम्रताके साथ उस चक्र गदाधारी

श्रीकृष्णजीके सन्मुख ८ ऐसेनियत हुआ जैसे कि प्रद्युम्नगोबिन्द-
जीकेपास नियत होताहै श्रीकृष्णजीने उसराजा को एकऐसारथ
दिया जोकि बहुमूल्य अथवा वृद्धोंके योग्य बड़ापूजित ६ सुवर्ण के
सामानों से अलंकृत और दिव्य घोड़ों से युक्त होकर अति उत्तमथा
धर्मराज भीमसेन और नकुल सहदेवनेभी पृथक् २ उसको धन
से सत्कार किया १० इसके पीछे वार्त्तालाप करने में सावधान
व्यास मुनिने तीसरेदिन युधिष्ठिर से मिलकर यह बचन कहा कि
अबसे लेकर पूजनकरो तेरेयज्ञके समयका मुहूर्त्त वर्त्तमान हुआ
याजक ब्राह्मणआज्ञाकरतेहैं ११।१२कि हे राजेन्द्रबहुतसेसोमयज्ञों
का समूह अथवा द्रव्यादिक से संयुक्त यह तेरायज्ञरचनाको प्राप्त
होय जोकि सुबर्णकी आधिक्यतासे भू सुबर्ण के नाम से बिख्यात
होय १३ हे महाराज यहां दक्षिणाको त्रिगुणित करो जिससे कि
तेरायज्ञ त्रिगुणताको पावे ब्राह्मणही इसमें कारणहैं हे राजायहां
तुमबहुत दक्षिणावाले तीन अश्वमेधोंको अच्छीरीतिसे प्राप्त करके
बिरादरी के मारने के पापोंको दूरकरोगे १४।१५ हे कौरवनन्दन
जो तुम अश्वमेधके अभृत स्नानको प्राप्त करोगे वह बड़ी पबि-
त्रताका करने वाला और उत्तमहै १६ बड़े बुद्धिमान् ब्यासजी से
आज्ञापाकर वह बड़ातेजस्वी धर्मात्मा युधिष्ठिर अश्वमेधकी प्राप्तिके
निमित्त दीक्षित हुआ १७ फिर उस महाबाहु राजाने उस महा
यज्ञ अश्वमेध को बहुत भोजनकी बस्तु समेत बड़ी दक्षिणारखने
वाला और सब अभीष्ट गुणोंसे संयुक्त किया १८ हे राजा वहां
सर्वज्ञ वेदपाठी चारों ओर घूमनेवाले याजक ब्राह्मणोंने वेदोक्तकर्मों
को विधि के अनुसार किया १९ उन्हीं का वह कर्म जिसको कि
गुरू और साधुओंसे सीखाथाकुछभी नाशमान और वेदकेविपरीत
नहींहुआ बड़े उत्तम ब्राह्मणोंने बड़ी विधिसे योग्य कर्म को किया
२०हेराजा उन बड़ेसाधू ब्राह्मणोंने प्रबर्ग्यनाम धर्मको विधिके अनु
सारकरके अभिषव कोभी किया २१अर्थात् (सोमवल्लीको ओख-
लीमें साफ करना)हे राजा सोमपान करनेवालों में श्रेष्ठ और शास्त्र

के अनुसार कर्म करनेवाले उन ब्राह्मणोंने सोम बल्लीका रस निकाल कर फिरक्रम पूर्व्वक प्रातस्सवनादिक कर्म किया २२वहां कोईभी मनुष्य दुखीदरिद्री और निर्बलनथा २३ शत्रुओंके नाश कर्त्ता बड़े तेजस्वी भीमसेनने राजाकी आज्ञासे सदैव याचक लोगों को भोजन दिया संस्तर अर्थात् स्थंडिल रचनामें सावधानयाच कों ने प्रतिदिन शास्त्रके अनुसार सबकार्य्य किये २४।२५ यहां उस बुद्धिमानका कोई सदस्य ऐसानहीं हुआजोकि छओं अंगोंका ज्ञाता और वार्त्तालापमें सावधान नहोय और जिसका गुरूभी नहोय२६ हे भरतर्षभ इसकेपीछे स्तंभ खड़ेहोनेके समय पर याजकों नेबि-ल्व काष्ठके छःस्तंभ खदिर काष्ठके छःस्तंभ और उतने ही यूप पलाशके २७ देवदारुके दो स्तंभ और श्लेष्मान्तक का एक स्तंभ यह सबयुधिष्ठिरके यज्ञमें खड़ेकिये २८ हेभरतर्षभ उस भीमसेनने धर्मराजकी आज्ञासे दूसरे सुबर्णस्तंभोंकोशोभाके अर्थखड़ाकरवाया २९हेराजऋषि वह बस्त्रोंसे अलंकृत स्तम्भऐसेशोभायमान हुयेजैसे-कि सप्तऋषियों समेतदेवता महाइन्द्रके आगेपीछेशोभायमानहोते हैं ३०चयनके अर्थसुबर्णकी ईटंभी तैयार कीथीं वहां वह चयन ऐसा शोभायमानहुआ जैसा कि दक्ष प्रजापति काचयन शोभित हुआ था ३१उसका वहयज्ञ स्थान चार वेदी रखनेवालाथा और अठारहहाथ विस्तृत त्रिकोण गरुड़रूप स्वर्णमयी पक्ष रखनेवाला बनाथा ३२ इसके पीछे ज्ञानी ब्राह्मणोंने उस२ देवताका नामलेकर वह शास्त्र की विधिसे विचार कियेहुये पशु पक्षी भेटकिये ३३ शास्त्रमें पढ़े हुये जो उत्तम पशु पक्षी और जल के जीवहैं उनसबकोउस अग्नि चय कर्म में विचार किया ३४महात्मा युधिष्ठिरके यज्ञमें स्तंभों के समीप तीनसौ पशु जिनमें प्रथमरत्न घोड़ाथा विचार हुये ३५साक्षात देव ऋषियोंसे पूर्ण गन्धर्वों के गीत अप्सरा गणोंके नृत्यों से युक्तकिं पुरुषों समेत किन्नरोंसेशोभित और सिद्ध ब्राह्मणोंकेनिवासस्थानों से चारों ओरको घिराहुआ वह युधिष्ठिरका यज्ञशोभायमान हुआ उस यज्ञशालामें३६। ३७ब्यासजीकेशिष्यसर्बशास्त्रदर्शी यज्ञरचनामें

कुशलश्रेष्ठ ब्राह्मण सदैव नियत रहे यहां नारदजी महातेजस्वी तुंबुर विश्वावसु चित्रसेन और सरोदमें पूर्ण अन्य बहुतसे गन्धर्व नियत थे उन्होंने यज्ञकर्म के अवकाशों के समयमें उन ब्राह्मणों को प्रसन्न चित्त किया ३८। ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

नवासीवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि उत्तम ब्राह्मणोंने विधिके अनुसार दूसरे पशुओंको पकाकर शास्त्रके अनुसार उस घोड़ेका घातकिया १ हेराजा इसके पीछे याजकोंने घोड़ेको शास्त्रकी विधिसे मारकर विधिपूर्वक तीन कलाओंसे युक्त उस स्वच्छ चित्तवाली द्रौपदीको वहां बैठाया २ हेभरतर्षभ फिर सावधान ब्राह्मणोंने उस घोड़े के बपाको शास्त्र के अनुसार निकालकर विधि के अनुसार पकाया तब धर्मराजने अपने सबछोटे भाइयों समेत बपाके उस धुएंकी गन्धिको जोकि सब पापोंकी दूरकरनेवालीथी शास्त्रके अनुसार सूंघा और हेराजा उस घोड़ेके जो शेषबचेहुये अंगथे ३। ४। ५ उनसब अंगों को सब बुद्धिमान् ऋत्विजोंने शास्त्रकी विधिसे अग्निमें होमा इन्द्रके समान तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के उस यज्ञको इस रीतिसे नियत करके ६ शिष्यों समेत भगवान् व्यासजीने उस राजाको आशीर्बाद किया फिर युधिष्ठिरने विधिके अनुसार ब्राह्मणोंके अर्थ ७ हजार कोटि निष्कदिये और व्यासजीको पृथ्वीदीहेराजा सत्यवतीके पुत्रव्यासजीने पृथ्वी को ८ लेकर उस भरतर्षभ धर्मात्मा युधिष्ठिर से यह बचनकहा किहे बड़े साधूराजा युधिष्ठिर यहपृथ्वी आपकीहोय मैंने त्याग की ६ मुझको इसका मूल्य दीजिये क्योंकि ब्राह्मण धनके अभिलाषीहैं बड़े साहसी बुद्धिमान् युधिष्ठिरने भाइयों समेतमहात्मा राजाओंके मध्यमें उन ब्राह्मणोंसे कहा कि महायज्ञअश्वमेध यज्ञमें पृथ्वीही दक्षिणा कही है १०। ११ यह अर्जुन से विजयकी हुई पृथ्वीमैंने ऋत्विजोंको दानकीहै हे उत्तम बेदपाठियो मैं बनमें

प्रवेश करूंगा तुमइसपृथ्वी को बिभागकरो १२ तुम चातुर्होत्र के प्रमाणसे पृथ्वीके चार विभाग करके बांटलो हे बड़े साधू ब्राह्मण लोगो मैं ब्राह्मणों का धनलेना नहीं चाहताहूं १३ हे वेदपाठियो मेराऔरमेरेभाइयोंका यह सदैवचित्तहै उसके उसप्रकार कहनेपर सबभाई और द्रौपदीने कहा कि यह इसीप्रकारहै वह बचनरोमांचों काखड़ा करनेवालाहुआ हे भरतबंशी फिर पृथ्वी और आकाशके मध्यमें धन्यधन्य शब्दहुआ १४।१५ उसीप्रकार प्रशंसाकरनेवाले ब्राह्मणोंके समूहों के शब्दभी शोभायमानहुये तब व्यास और श्री-कृष्णजीने फिर युधिष्ठिरको समझाया १६ अर्थात् वेदपाठीब्राह्मणों के मध्यमें प्रशंसाकरते व्यास मुनिने यह बचन कहा कि आपने यह पृथ्वी मुझकोदी और मैं इसको लौटाकर तुमको देताहूं १७ इन ब्राह्मणोंके लिये सुवर्ण दीजिये पृथ्वी तेरीहोय बीर बासुदेव-जीने धर्मराज युधिष्ठिरसे यहकहा १८कि भगवान् व्यासजीनेजैसा कहाहै तुम उसी प्रकार करनेके योग्यहो इसप्रकार आज्ञादियेहुये उस प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने भाइयोंसमेत १९ यज्ञकी त्रिगुणितदक्षिणा दी जो कि असंख्यथी इस लोकमें इसको कोई दूसरा राजानहींक रेगा २० अर्थात् राजा मरुतके पीछे कर्मकर्त्ता युधिष्ठिरने जोकिया उसको आगेकोई राजा नहींकरेगा व्यास मुनिने उनरत्नोंकोलेकर २१ ऋत्विजोंको दिया और उन्होंने चारविभाग किये भाइयोंसमेत राजा युधिष्ठिर पृथ्वीका मूल्य उस सुवर्णको देकर २२ पापसेमुक्त और स्वर्गका बिजय करनेवाला होकर प्रसन्नहुआ इसीप्रकार उन ऋत्विज ब्राह्मणोंने उस असंख्य सुवर्णकेढेरको २३ प्रसन्नता और आनन्द पूर्वक ब्राह्मणोंको विभागकिया यज्ञके वाड़े में जोकुछसुव-र्ण भूषण २४ तोरण,यज्ञस्तंभ,घट और सुवर्णकी ईंटेंथीं उनसबको भी युधिष्ठिरकी आज्ञासे उन सबको विभाग किया २५ ब्राह्मणोंके पीछे क्षत्रियोंने धनकोलिया इसीप्रकार वैश्य और शूद्रोंके समूहोंने और अन्य म्लेच्छ जातोंनेभी उसधनको लिया २६ इसके पीछेबु-द्धिमान् धर्मराजके उसधनसे तृप्त होकर प्रसन्नतासे सबलोगअप-

नेरघरको गये २७ भगवान् व्यासजीने अपना भाग प्रतिष्ठा पूर्वक कुन्तीको दिया अर्थात् महातेजस्वी व्यासजीने सुवर्णका ढेरउसको दिया २८ उस प्रसन्नचित्त कुंतीने स्वसुरसे उसप्रीतिके भागको पाकर उस धनसे बहुत बड़ेबड़े पुरायके कामकिये २९ राजायुधिष्ठिर भाइयों समेत यज्ञको प्राप्त करके औभृत स्नानमें ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि देवताओंसे सेवित महाइन्द्र शोभितहोता है ३० हे महाराज इकट्ठे होनेवाले राजाओंसे घिरेहुये पांडवलोग ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि सब ग्रह नक्षत्रगणोंसे शोभित होतेहैं ३१ फिर राजाओंके निमित्तभी नानाप्रकारके रत्न हाथीघोड़े भूषण स्त्रियां वस्त्र और सुबर्ण दिया ३२ हेराजावह पांडव युधिष्ठिर राजमंडलमें उस असंख्य धनको देताहुआ कुबेर देवताकी समानशोभायमानहुआ३३ तब उसीप्रकार बीर राजाबभ्रुबाहनको बुलाकर बहुत सा धनदेकर घर जानेको बिदाकिया ३४ हेभरतर्षभ उसबुद्धिमान् युधिष्ठिरने बहिनकी प्रीतिसे उस दुःशलाके पौत्र बालकको उसके राज्यपर नियतकिया ३५ उस कौरवराज युधिष्ठिरने उन सबभाग पानेवाले और पूजित राजाओंको बिदाकिया ३६ हेमहाराज उस शत्रुबिजयी राजा युधिष्ठिरने भाइयों समेत उन महात्मा गोविन्दजी महाबली बलदेवजी और प्रद्युम्नादिक हजारोंवृष्णी बीरोंकोबिधिके अनुसार पूजकर बिदाकिया३७।३८बुद्धिमान् धर्मराजका वह यज्ञ इसप्रकारके धन रत्नोंके ढेर और भोजनोंके बड़ेश्पर्वताकार ढेरोंका रखनेवालाथा जिसमें सुरा और मैरेयनाम आशवोंके सागरथे ३९ हेभरतर्षभ जिस यज्ञमें घृतकी कीच रखनेवाले हृद और भोजनकी बस्तुओंके पर्वतथे और जिनमें रसोंकी कीचहोयऐसी नदियांथीं४० मनुष्योंने खांडव रागादिक भोजन कीबस्तुओंका तैयार होना और घात होतेहुये पशुओंका अन्त नजाना ४१ तब आशवोंके मदसे उन्मत्तरूप स्त्री पुरुषोंकी रखनेवाली वह यज्ञशाला मृदंग और शंखोंकी ध्वनियों से चित्तरोचक हुई ४२ दानकरो और दिनरात बिना रोकटोक श्रेष्ठ अन्नोंको भोजन करो इसशब्दसे युक्त प्रसन्न

चित्त हृष्टपुष्ट मनुष्योंसे पूर्ण बड़े उत्सव रूप उस जिवनार स्थान को नाना प्रकारके देशवासी मनुष्योंने कीर्त्तन किया ४३ तब वह भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर अभीष्टरत्न और और धनकी धाराओं सेबर्षा करने वाला होकर पापसेरहित मनोरथोंको सिद्ध करके नगर मेंप्रवेश करनेबाला हुआ ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वमेधसमाप्तिनामएकोननवतितमो ऽध्याय:८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

जनमेजय ने पूछा कि मेरे पितामह बुद्धिमान् धर्मराज केयज्ञमें जोकुछ अपूर्व और अद्भुत वृतान्त हुआ उसको आप मुझसे कहने को योग्यहैं १ वैशंपायन बोले हे प्रभु राजेन्द्र उस बड़े अपूर्व वृत्तांत को सुनो जोकि यहा यज्ञके अन्तमें हुआहै २ हे भरतबंशियोंमें बड़े साधू तब ऋषिजातवाले भाई बन्धु दुखी और दरिद्रियोंके तृप्तहोने और ३ सब दिशाओंमें बड़े भारी दानकी बिख्यात कीर्त्ति होनेपर धर्मराजके शिरपर पुष्पोंकी बर्षा होनेलगी ४उस समय नोलेनेत्र और सुबर्ण अर्द्धाङ्ग रखनेवाले एक नौलेनेबज्र और बिजलीकेसमान एक शब्द किया हे निष्पाप राजा जनमेजय ५ पशु पक्षियों को भयभीत करते उस बुद्धिमान् नौलेने एकबार अपने शब्दको करके मनुष्य बाणीमें कहा ६ हेराजाओ यह तुम्हारा यज्ञ उस ब्राह्मणके एक प्रस्थ परिमाण शक्तु दानके समान नहींहै जो कि कुरुक्षेत्र निवासी उंछवृती होकर दानका अभ्यासीथा७ हे राजा उसनौलेके शब्द और वार्त्ताको सुनकर उन सब ब्राह्मणोंने बड़े आश्चर्यकोपा- या ८ तब उन ब्राह्मणोंने उस नौलेसे समीप जाकर पूछा कि जिस यज्ञमें साधु लोगोंका मिलाप होताहै उसयज्ञमें तू कहांसे आयाहै९ तेरा उत्तम पराक्रम क्याहै कौन शास्त्र पढ़ाहै और किस शास्त्र का तुझको ज्ञानहैकौन इष्टदेवहै आपको हम कैसे जाने जो हमारे यज्ञ कीनिन्दा करतेहो १० सब शास्त्रोंको लोप न करके नानाप्रकारकी यज्ञ विधियोंसे कर्म किया गयाहै जो शास्त्र और न्यायके अनुसार

करना योग्यथा उसको उसी प्रकारसे कियाहै ११ इस यज्ञ में शास्त्रकी परिक्षा और विधिके अनुसार पूजनके योग्योंका पूजन किया गयाऔर मन्त्रकी आहुतियोंसे अग्निमें हवन किया और ईर्षा रहित होकर देनेके योग्य दान किया १२ यहां नानाप्रकारके दानों से ब्राह्मण तृप्तहुये क्षत्री लोगोंको उत्तम युद्धोंसे और पितामहा दिकोंको श्रेष्ठ श्राद्धोंसे तृप्तकिया १३ वैश्य लोग पालन करनेसे और स्त्रियां अपनेअभीष्ट पदार्थोंके मिलने प्रसन्न हुईं इसीप्रकार शूद्रलोग कृपा और पारितोषिकोंसे प्रसन्नहुये और साधारण मनुष्य देनेके योग्य शेष बचीहुईं अभीष्ट बस्तुओंसे तृप्तहुये१४।१५हमारे राजाकी बाह्याभ्यन्तरीय पबित्रतासे बिरादरीवाले और नाते रिश्तेदार प्रसन्नहुये देवता पबित्र हव्योंसे और शरणागत लोग रक्षाओं से तृप्तहुये १६ यहां जो तुमने जैसा जैसा देखा और सुनाहै उसको ब्राह्मणोंके मध्यमें सत्य२ बर्णनकरो १७ तुमश्रद्धाके अनुसार बचन कहनेवाले और बुद्धिमान् हो और दिब्यरूप धारण करतेहो अब तुमब्राह्मणोंसे मिलेहो इससे उसकेकहनेको योग्यहो उन ब्राह्मणोंके बचनोंको सुनकर और उनके बारंबार पूछने पर हंसतेहुये नौलेने उत्तर दिया हे ब्राह्मणलोगो मैंने अभिमान से यह बचन नहीं कहा है १८।१९ मैंने जो यह बचन कहा और तुमनेभी सुनाहै मैं यथार्थ कहताहूं कि यह तुम्हारा यज्ञ उसब्राह्मणके एकप्रस्थ सत्तू दानके समान नहींहै २० हे साधू ब्राह्मणो अब मुझको यह बात आप लोगोंसे अवश्यही कहना उचितहै तुम एकाग्रचित्त होकर उस सत्य बचनको मुझसे सुनों २१ मैंने कुरुक्षेत्र निवासी उंछवृती दानके अभ्यासी ब्राह्मणका जो अपूर्व्व और उत्तम वृत्तान्त देखा और समझा २२ और जिस कर्मसे उस ब्राह्मणने स्त्री पुत्र और पुत्रकी बधू समेत स्वर्गको पाया और जिस प्रकारसे यह मेराआधा शरीर सुवर्णका होगया २३ हे ब्राह्मणो न्यायके अनुसार उस बेदपाठी ब्राह्मण के उद्योगसे बहुत थोड़ेसे सत्तू दानके उत्तम फलको बर्णन करता हूं २४ किसी समय बहुतसे धर्मज्ञ लोगोंसे युक धर्म-

क्षेत्र कुरुक्षेत्रमें कोई उंछवृती ब्राह्मण कापोतीवृत्ति रखने वाला हुआ २५ वह हिंसासे रहित जितेन्द्री सुचाल रखनेवाला धर्मात्मा अपनी स्त्री पुत्र और पुत्र बधू समेत तपस्या में नियतथा २६ वह सुन्दरव्रतवालाब्राह्मण उनसबको साथलेकर छठवेंदिनसदैवभोजन किया करताथा परन्तु कभी २ छठवेंदिनभी उसकोभोजननहीं प्राप्त होता था २७ तब वह ब्राह्मण दूसरे छठवेंदिन भोजन करताथा हे राजा एक समय बड़ा दुर्भिक्ष होनेपर उस धर्मात्माको २८ उस नियत समय परभी भोजन नहींमिला तब औषधियोंसे रहित आश्रम होनेपर वह ब्राह्मण अकिंचन अर्थात् खाली हाथ होगया २६ प्रत्येक समयके वर्त्तमान होनेपर उसको भोजन नहीं मिलताथा इस हेतुसे वह सब क्षुधासे पीड़ित होकर वहांसे चलदिये ३० तब तपस्या में युक्त वह ब्राह्मण शुक्लपक्ष में मध्याह्नके समय अनाज के दानोंको इकट्ठा करता हुआ क्षुधासे पीड़ामान हुआ ३१ क्षुधा औरपरिश्रमसे युक्त उस ब्राह्मणने अपनी उंछको नहींपाया—अपने बाल बच्चोंसमेत क्षुधासे महादुखी प्राण उस उत्तमब्राह्मणने उस समयको ब्यतीतकिया फिर छठवेंदिनके नियत समय पर एक प्रस्थभर जव उसको प्राप्तहुये ३२।३३ उन तपस्वियोंने उसीएकप्रस्थ जवका सत्तू बनाया फिर जपादिक नित्य कर्म करनेवाले उन सब तपस्वियोंने बिधि पूर्ब्बक अग्नि में हवन कर ३४ एक २ ग्रास आपस में बिभाग किया उसी समय भोजनकी इच्छा करनेवाला कोई अतिथि ब्राह्मण उन तपस्वियों के पास आया ३५ वह उस आयेहुये अतिथिको देखकर प्रसन्न हुये और उन सबने अतिथिको नमस्कार पूर्ब्बक कुशल क्षेम पूछकर ३६ अत्यन्त पवित्र चित्त जितेन्द्री श्रद्धा और शान्तीसे युक्तदूसरेके गुणोंमें दोषनलगाने वाले क्रोध और ईर्षासे रहित ३७ अहंकार और ममताके बिना उन धर्मज्ञ ब्राह्मणोंने अपने गोत्रको ब्रह्मचर्य्य समेत उसके सन्मुख वर्णन करके ३८ उस क्षुधासे पीड़ामान अतिथिको अपनीकुटी में बुलालिया और कहाकि हे निष्पाप प्रभु ब्राह्मणतेरा भलाहोय

यह अर्घ्यपाद्यहै और यह आपका कुशासनहै ३९ और नियम से प्राप्तहुये यह पवित्र सत्तू हैं मेरेदिये हुये इन सत्तु ओंको अंगीकार करो ४० हे राजा इसप्रकार से कहेहुये उस ब्राह्मणने एककुड़व सत्तू लेकर खाया परन्तु उतने सत्तू से तृप्त नहीं हुआ ४१ उस-उंछवृत्ती ब्राह्मणने उस क्षुधायुक्त ब्राह्मणको देखकर आहार का बिचारांश किया कियह ब्राह्मण किस रीतिसे तृप्त होसक्ताहै ४२ तब उसकी स्त्रीने बचन कहा कि मेराभाग दीजिये जिससे कियह श्रेष्ठ ब्राह्मण तृप्तहोकर जाय ४३ उसबड़े साधू ब्राह्मणने इसप्रकार बार्त्ता करनेवाली उस पतिव्रता भार्य्याको क्षुधायुक्त जानकर उस के भागको देना अंगीकार नहीं किया इसके पीछे अपने बिचारसे उसको क्षुधासे पीड़ित दुर्बल शरीर वृद्ध तपस्विनी दुखियाजानते उस बुद्धिमान्उत्तमवेदपाठीने ४४।४५ उसकंपितत्वचा और अस्थि मात्रोंसे युक्त अपनी भार्य्यासे यह बचन कहा कि हेसुन्दरी कीट पतंग और मृगोंकीभी स्त्रियां ४६ रक्षा और पोषणके योग्यहैं तुम इसप्रकार कहनेकोयोग्य नहींहो स्त्री पर पुरुषको सदैव दयाकरनी योग्यहै वहस्त्री उस पुरुषसे रक्षित और पोषित होतीहै ४७ धर्म-कार्य्य, काम, अर्थ, वृद्धोंकीसेवा, सन्तान,कुल और अपना वा पितरोंका धर्म स्त्रियोंके आधीनहै जोपुरुष रक्षामें समर्थ नहींहै वह कर्मसे भर्य्याको नहींजानताहै ४८ और बड़ी अपकीर्त्तिको प्राप्त करताहै अथवा अपनी प्रकाशित शुभकीर्त्तिको नाश करनेवालाहै और उत्तम लोकोंको नहीं पाताहै इस प्रकारकी बातें सुनकर उस स्त्रीने उत्तरदिया कि हेब्राह्मण हमदोनोंके धर्म अर्थ समानहैं ४९ मुझपर प्रसन्न होकर और एकप्रस्थ सत्तूके इस चतुर्थांशको ग्रहण करो हेब्राह्मणों में श्रेष्ठ सत्य, प्रीति, धर्म और पतिव्रत नामगुणसे बिजय होनेवाला स्वर्ग ५० और पतिका बिश्वास यहसब स्त्रियोंका अभीष्टहै माताके रुधिर और पिताके वीर्यसे उत्पन्न पतिबड़ा देवता है ५१ स्त्रियोंको पतिकी प्रसन्नतासे सुख और प्रीतिपूर्वक स्नेह सेपुत्र फल प्राप्तहोताहै तुम पोषण करनेसे मेरे भर्त्ताहो और रक्षा

करनेसे पतिहो ५२ और पुत्रदेनेसे बरदाताहो इसहेतुसे मेरेसत्तूको लीजिये जबकि तुमभी वृद्ध निर्बल क्षुधासे पीड़ामान अत्यन्त पराक्रम हीन ५३ व्रतसे खेदित और कृषाङ्गहो उस स्त्रीसे इसप्रकारके बचनोंको सुनकर उसऋषिने सत्तूलेकर उसअतिथिसे यह वचन कहा ५४ कि हेबड़ेसाधू ब्राह्मण फिरतुम इन सत्तुओं कोलो ब्राह्मणने उनको लेकर और खाकर तृप्तीकोनहीं पाया ५५ उंछवृत्ती ब्राह्मण उसको देखकर शोच युक्त हुआ ५६ फिर पुत्रबोला हेबड़े साधू पिताआप इन सत्तुओंको लीजिये और ब्राह्मणकोदो मैं इसकोशुभ कर्म मानताहूं इसहेतुसे इसको करताहूं ५७ मुझको सदैव पूर्ण उपायोंके द्वारा आपकी सेवाकरनी उचितहै क्योंकि वृद्ध पिताका पालन करना साधुओंका अभीष्टहै ५८ हे ब्रह्मऋषि वृद्धावस्था में जोपालन करताहै यही पुत्रत्वभाव होनेका नियत फलहै औरयह सनातनश्रुतितीनोंलोकोंमेंप्रसिद्धहै ५९ केवलप्राणोंकीरक्षाकेद्वाराही तुमसे तप करना संभवहै प्राणही परमधर्महै जोकि जीवधारियों के शरीरमें नियतहै ६० पिताने कहाकि तू हजार बर्षकाभी होकर मेरी दृष्टिमें बालकही माना जायगा पितापुत्रको उत्पन्न करके उस पुत्रके द्वाराकृत कृत्य होजाताहै ६१ हेसमर्थ बेटा मैं यह जानताहूं कि बालकोंको क्षुधा बड़ीप्रबलहै मैंवृद्धहूं इससे क्षुधाको सहसक्ता हूं और हेपुत्र तुम बल वानहो ६२ हेपुत्र वृद्धावस्था और क्षुधा मुझकोपीड़ानहीं देतीहैं मैंनेबहुत कालतक तपकियाहै इससेमुझको मरनेसे भी भयनहींहै ६३ पुत्रनेकहा मैं आप काबेटाहूं बेटाबाप कीरक्षाकरनेसेही पुत्रकहाताहै वहबेटा अपनाही स्वरूपकहाजाता है इसीहेतुसे आपअपनीही आत्मासे रक्षाकरो ६४ पिताने कहा हे पुत्रतुम रूप, स्वभाव और जितेन्द्रीपनेसे मेरेसमानहो क्योंकिमैंने बहुधा परीक्षा करीहै इससे अबतेरे सत्तू लेताहूं ६५ तबउसप्रसन्नचित्त हंसतेहुये उत्तम ब्राह्मणने यहकहकर उनसत्तुओंको लेकरउस ब्राह्मणको दिया ६६ वहउन सत्तुओंकोभी खाकर तृप्तनहीं हुआ तबउस उंछवृत्ती धर्मात्मा ब्राह्मणने लज्जाको पाया ६७ फिरवहां

परनियत पतिव्रता अत्यन्त प्रसन्नचित्त पुत्रबधूने ब्राह्मण के प्रिय करनेकी इच्छासे अपनेसत्तू लेकर उसअपने ससुरसेयह बचनकहा कि हे वेदपाठी आपकी सन्तान से मेरी सन्तान होगी तुमइन मेरे सत्तुओंकोलेकर अतिथि ब्राह्मणकोदो ६८।६९ निश्चयकरके आपकी कृपासेमेरे अबिनाशीलोक वर्त्तमान हुये उनको पौत्रके द्वारापाताहै और जिन में जाकरफिर मनुष्य शोचनहीं करताहै ७० पुत्र अपने वृद्ध पितरोंको अऋण करताहै यहहम सुनते हैं निश्चय करकेपुत्र और पौत्रकेद्वारा साधूउत्तम लोकोंकोभोगताहै ७१।७२ ससुरनेकहा हेसुन्दरव्रत आचारवाली मैं तुझको हवा और धूपसेशुष्कांग रूपान्तर निर्बल और क्षुधासे व्याकुलचित्त देखकर किसप्रकार से धर्मकानाशकहोकर सत्तू को लेसकाहूं हेनेकचलन कल्याणिनि तुमको ऐसाकहना योग्यनहींहै ७३।७४ हेशुभवधू मैं तुझ व्रतकरनेवाली बाह्याभ्यन्तरीय पवित्रतासेयुक्त सुन्दर स्वभाववाली और तपसे संयुक्त और दुःखसे निर्बाह करनेवालीको किस प्रकार छठवें दिन परभी निराहार देखूंगा ७५ क्षुधासे पीड़ामान बालाश्री तुममुझसे सदैव रक्षाके योग्यहो तुमबान्धवोंको प्रसन्न करनेवाली और व्रत खिन्न चित्तहो ७६ बधूबोली तुममेरे गुरूकेभी गुरू देवताके भी देवता और सबसेपरे देवताहो हे प्रभुइस हेतुसे तुममेरे सत्तू को लो ७७ यहशरीर प्राण और धर्मगुरूकीही सेवाकेअर्थहै हेवेदपाठी हम आपकी कृपासे शुभलोकोंको पावेंगे ७८ हेब्राह्मण तुमने यह बिचार करके कियह पालनके योग्य दृढ़भक्ति रखनेवाली और परीक्षाके योग्यहै परीक्षा लेनेके लिये ऐसा कहा है तुमसत्तू लेने के योग्यहो ७९ ससुरबोला तुम पतिव्रता होकर सदैव इस श्रेष्ठ स्वभाव और चलनसे शोभापातीहो जोधर्मव्रतसे संयुक्त तुम गुरु वृत्तीकोही बिचारतीहो इसहेतुसे तुम्हारे भी सत्तूलूंगा हे महाभाग धर्मधारियोंमें श्रेष्ठबधू तुमसमझकर छलकरने के योग्य नहींहो यह कहकर उसके सत्तू लेकर ब्राह्मणको दिये ८०।८१ उस कर्मसे वह अतिथि ब्राह्मण उसमहात्मा साधुके ऊपर प्रसन्नहुआ और उसप्र-

सन्नचित्त श्रेष्ठबक्ताओंमें श्रेष्ठनर रूपधारी धर्मनेउस उत्तमब्राह्मणसे यहबचनकहाकिहे श्रेष्ठब्राह्मण न्यायसे इकट्ठे कियेहुये और धर्मसे सामर्थ्यकेअनुसार तेरेदियेहुये सिद्धदानसे८२।८३में बहुत प्रसन्नहूं आश्चर्यहै किस्वर्गमें स्वर्गबासियोंको तेरेदानकी प्रसिद्धी बिख्यातकी जातीहै ८४ आकाशसे गिरीहुई इसपुष्पोंकी बृष्टिको देखोदेवऋषि देवता गन्धर्व औरजो देवताओंके अग्रवर्तीहैं ८५ और देवदूत तेरी प्रशंसा करते हुयेनियत होकर दानसे आश्चर्ययुक्तहैं और जोब्रह्म-ऋषि विमानोंमेंबैठेहुये ब्रह्मलोकचारीहैं८६ वह तेरे दर्शनके अभि-लाषीहैं हेउत्तमब्राह्मण स्वर्ग लोककोजाओ पितृलोक लोकमें वर्त्त-मान सबपितरोंको तुमने उद्धारकिया ८७ और बहुत अगले पित्रों को तुमने अपनेब्रह्मचर्य दान यज्ञ तप औरशुद्धधर्मसे बहुत युगोंतक स्वर्गबासी किया इसहेतुसे तुम स्वर्गकोजाओ हेसुन्दर ब्रतजो तुम बड़ी श्रद्धासे युक्त तपस्या करतेहो ८८।८९ हेब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ इसी हेतुसे देवताभी तेरे दानसे प्रसन्नहुये जिस कारण से कि तुमने दुःख के समय परभी शुद्धचित्तीपनेसे यह सबदान किया उस कर्म से तुमनेस्वर्गको बिजय किया यह क्षुधा बुद्धिको नाशकरतीहै और धर्मबिधिको दूरकरतीहै९०।९१ क्षुधासे युक्तज्ञानभी धैर्यको त्याग करदेताहैजो मनुष्य क्षुधाको जीतताहै वह अवश्य स्वर्गको बिजय करताहै९२जबदानमें प्रीतिमान होताहै तब धर्म पीड़ा नहीं पाताहै तुमने अपने पुत्र और स्त्रीकी प्रीतिको बिचार न करके९३ धर्महीको बड़ाउत्तम जानकर अपनी क्षुधाकोध्याननहीं किया मनुष्यों की धन प्राप्ती बड़ी कठिनहै पात्रको दानदेना उससे बढ़करहै ९४ दानसे उत्तम फलहै उस्से बढ़करश्रद्धाहै और स्वर्गका द्वार अत्यन्तसूक्ष्महै वह मनुष्योंको मोहके कारण दिखाईनहीं पड़ताहै ९५ और स्वर्गके द्वारकीजो अर्गलाहै उसकाउत्पत्ति स्थान लोभहै वहअर्गला इन्द्रि-यों के विषयोंकी प्रीतिसे रक्षित और दुष्प्राप्यहै उसको वहमनुष्य देखतेहैं जोकि क्रोध और इन्द्रियोंकेजीतनेवाले ९६ ब्रह्मज्ञानीऔर सामर्थ्य के अनुसार दान करनेवालेहैं हजार देनेकी सामर्थ्य रखने

वाला सौ दे और सौकी सामर्थ रखनेवाला दश देवे ९७ और जो अपनी सामर्थ्यके अनुसार जलदान करे वह सब एकसेही फलवाले कहेजातेहैं हे वेदपाठी कुछ पासनरखनेवाले रन्तिदेवने पवित्र चित्तसे जलदान कियाथा इसी हेतुसे स्वर्गको गया हे तात बड़ेफ-ल देनेवालेदानोंसे वह धर्म वैसा प्रसन्न नहींहोता ९८।९९जैसाकि न्यायसे प्राप्त श्रद्धासे पवित्र सूक्ष्म दानोंसे वह धर्म प्रसन्नहोताहै राजा नृगने हजारों गोदान ब्राह्मणोंको दिये १०० उसने एक पर-लोक साधक गौको दानकरके नर्कको प्राप्तकिया सुन्दर व्रतवाला उसी नरका पुत्र राजा शैव्य अपने शरीरके मांसके दानसे १०१ शुभकर्म्मियोंकेलोकोंको पाकरस्वर्गमें आनन्द करताहै सत्पुरुषोंकी सामर्थ्यसे अच्छा इकट्ठा कियाहुआ धन १०२धर्मकीवृद्धिकाकारणहै मनुष्यों का ऐश्वर्य कारण नहीं है क्योंकि जैसा न्याय पूर्वक इकट्ठे कियेहुये धनके द्वारा फलमिलताहै वैसा नाना प्रकारके यज्ञोंसेभी नहीं मिलताहै क्रोध दानके फलका नाश करताहै लोभसे कोईभी स्वर्गको नहीं जाताहै १०३ । १०४ न्याय रूप आजीविका रख-नेवाला दानका जानने वाला मनुष्य तपके द्वारा स्वर्गको भोगताहै यह तेरा कर्म फल बड़ी दक्षिणा वाले बहुतसे राजसूय और अश्व-मेधोंके समान नहींहै किन्तु उनसेभी बहुत बड़ाहै तुमने प्रस्थभर सत्तूके दानसे वह अबिनाशी ब्रह्मलोक बिजय कियाहै जोकि रजो गुणसेरहितहै तुमसुखपूर्व्वक ब्रह्मलोककोजाओ हेश्रेष्ठब्राह्मणो तुम सबके लिये श्रेष्ठ और दिव्यबिमान सन्मुख बर्त्तमानहैं १०५।१०६ हेब्राह्मण मैं धर्महूं मुझको देखो और इच्छाके अनुसार बिमानों पर चढ़ो तुमने अपने शरीरको उद्धार किया तेरी शुभकीर्त्ति लोकमें नियतहै १०७ तुम अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रबधू समेत स्वर्गको जाओ धर्मकेइसबचनके कहनेसे वहब्राह्मण बिमानपर चढ़कर१०८ स्त्रीपुत्र और अपनी पुत्रबधू समेत स्वर्गको गया तब उस पुत्रस्त्री और पुत्रबधू समेत उस ब्राह्मणके स्वर्ग जानेपर मैं अपने बिलसे बाहर निकला और सत्तूकी सुगन्धि जलकी तरी दिव्य पुष्पोंके

मर्दन और साधुओंके उन सत्तुओंके कणकोंसे और उस ब्राह्मणके तपसे मेराशिर सुवर्णका हुआ १०९।११०।१११ हेब्राह्मणोउस सत्य संकल्प ब्राह्मणके सत्तू दानसे मेरा आधाशरीर सुवर्णका हो-गया ११२ उस बुद्धिमान्‌के तपसे इस बड़ेफलको देखो हेब्राह्मण लोगोमें प्रसन्नचित्त होकर यह इच्छा करके किमेरा यह शेषबचा हुआ आधा अंगभी सुवर्णका होजाय बारंबार तपोबन और यज्ञों में जाताहूं उसी प्रकार मैं इस बुद्धिमान् युधिष्ठिर के इस यज्ञको सुनकर११३।११४बड़ी आशासे यहां आयापरन्तु मेराशेष आधाअंग सुवर्णका नहींहुआ हेश्रेष्ठ ब्राह्मणो इसहेतुसे मैंने हंसकर यहबचन नहीं कहाहै ११५ यह यज्ञ किसी दशामेंभी उस एक प्रस्थभर सत्तू दानके समान नहींहै क्योंकि उस समय उन प्रस्थभर सत्तू के गुणोंसे मेरा आधा शरीर सुवर्णका हुआ ११६ इससे मेरेमतसे यह बड़ायज्ञ उस सत्तू दानके समान नहींहै वह नौला उस यज्ञमें उन सबब्राह्मणों से ऐसे २ बचन कहकर उनकी दृष्टियोंसे गुप्त होगया और वह ब्राह्मण अपने २ घरोंको गये ११७ वैशंपायन बोले हेशत्रु ओंके पुरोंके बिजय करनेवाले राजा जनमेजय उस बड़ेमहाअश्व-मेध यज्ञ में जोअद्भुत बृत्तान्त हुआ वह मैंने तुझसे कहा ११८ हे राजा तुमको यज्ञमें किसीप्रकारसेभी आश्चर्य्यन करनाचाहिये वह हजारोंकोटि ऋषिहैं जो तपके द्वारास्वर्गको गये११९ सबजीवमा-त्रोंसे शत्रुता न करना सन्तोष, सुस्वभाव,सत्यकथन,तप, इन्द्रियों का जीतना,सत्यता और दान यहसब समानहैं १२०॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिनकुलाख्यानेनवतितमोऽध्यायः ९०॥

इक्यानबेका अध्याय॥

जनमेजयनेकहाकि हेप्रभुराजा लोग यज्ञमें प्रवृत्तहैं महर्षी तपमेंप्र-वृत्तहैं वेदपाठीब्राह्मण शान्तीमेंनियतहैं औरइन्द्रियोंका जीतनावाह्या भ्यन्तरसें होताहै१इसहेतुसे इसलोकमें यज्ञकेफलोंके बराबरदूसरी बात नहीं दिखाईदेती यह मेरा मतहै और निस्सन्देह इसीप्रकार

काहै २ हे श्रेष्ठराजा अनेक राजाओंने बहुत२से उत्तम यज्ञोंसे पूज कर इसलोकमें बड़ी२शुभ कीर्त्ति योंकोप्राप्तकरके शरीर त्यागने के पीछेस्वर्गकोपाया महातेजस्वी सहस्रनेत्रधारी प्रभु देवराजने बड़ी दक्षिणावाले यज्ञोंसे देवताओंके संपूर्णराज्य कोपाया ३।४ जब भीमसेनसमेतअर्जुनको आगेरखनेवाला राजायुधिष्ठिर पराक्रमऔर ऐश्वर्य्यसे देवराजकेसमानहै ५ फिरकिस कारणसे उसनौलेने महात्माधर्मराजके उसमहाअश्वमेध यज्ञकीनिन्दाकरी ६ वैशम्पायन बोले कि हे भरतबंशी राजाजनमेजय यहां अब तुममुझसे यज्ञकी उत्तमरीति और फलोंको यथार्थतासे श्रवणकरो ७ पूर्वसमय में यज्ञ कर्मके बिस्तारपाने और इन्द्रके पूजनकरनेपर सब महर्षियोंने यज्ञ कर्ममेंप्रवृत्त ऋत्विजोंके मध्यमेंउसको बर्णनकियाहै गुणवान् हवन में अग्नि और देवताओंका आह्वानहोने और महर्षियों के नियत होनेपर उस पशुघातक्रियाके समयपर अत्यन्त प्रसन्न श्रेष्ठवेदज्ञसुंदर शब्द अव्यग्रचित्त तेजस्वी उत्तम अध्वर्य्य ब्राह्मणोंसे पशुओं के पकड़नेपर महर्षीलोग दयासेयुक्तहुये ८।९।१०।११ हेमहाराजउन तपोधन ऋषियोंने दुखीपशुओंको देखकर इन्द्रसे मिलकर कहा कि यहयज्ञबिधि शुभनहींहै१२ हेइन्द्रतुझधर्मके चाहनेवालेका यहबड़ा अज्ञानहैयज्ञमें पशुसमूहोंका माराजाना बिधिमें नहींदेखागया १३ हे प्रभुयह तेराप्रारम्भकर्म धर्मका नाशकरनेवालाहै क्योंकि हिन्सा धर्मनहीं कहाती है इससेयह यज्ञधर्मरूप नहींहै जो चाहताहै तो तू अपने यज्ञकोशास्त्रके अनुसारकर १४ हेसहस्राक्ष तीनबर्षके पुराने अन्नसे यज्ञकरो शास्त्रके अनुसार होनेवाले यज्ञसे तेराबड़ा धर्म होगा १५ हेइन्द्रयह बड़ाधर्महै और बड़ेगुण वा फलका उदयकरनेवालाहैतत्त्वदर्शी ऋषियों से उस बचन को सुनकर इन्द्रने अंगीकार नहींकियाऔरअहंकारसे मोहकेआधीनहुआ हेभरतवंशीउसइन्द्रयज्ञ में तपस्वियोंका बड़ा शास्त्रार्थ इसविषय में हुआ कि पशुओंसे यज्ञ करना चाहिये अथवा जव आदिक अन्नकी वस्तुओंसे करनायोग्यहै ववबाद करने से दुखितरूप उन तत्त्वदर्शी ऋषियोंने १६।१७।१८

इन्द्रसे मिलकर राजावसुसे पूछाकि हे महाभाग श्रेष्ठराजा यज्ञोंके विषयमें शास्त्रकी क्याआज्ञाहै औरकौन शास्त्रहै उत्तम पशुओंसेयज्ञ करनाचाहिये वा जवघृतादिकसे करनाउचितहै १६।२० राजा बसुने उनके उसबचनको सुनकर बिनाबलाबल बिचारे यह उत्तर दियाकि जो समयपर वर्त्तमानहोयउसीसे यज्ञकरनाचाहिये २१ वह चंदेरी देशोंका ईश्वर प्रभुराजा बसु इसप्रकारके बिपरीत प्रश्नको कहकर रसातलमें भेजागया २२ इसहेतुसे प्रभुस्वयंभू ब्रह्माजी के सिवाय किसी अकेले बहुत जाननेवाले को सन्देह स्थान में उत्तर देना न चाहिये २३ क्योंकि पापात्मा बुद्धिवाला मनुष्य जो दान देताहै वह सब बड़ेदानभीउसको तिरस्कारकरके नाशहोजातेहैं २४ उसअधर्म में प्रवृत्त दुर्बुद्धी अशुद्ध अन्तःकरण हिन्सा करनेवाले मनुष्य की अपकीर्त्ति दानसेहीदोनोंलोकोंमें होतीहै २५ जोधर्ममेंसन्देह करनेवाला अज्ञान मनुष्यअनीतिसे प्राप्तहुये धनको सदैव यज्ञोंमें व्यय करताहै वह धर्मकेफलको नहींपाताहै २६ जो पापात्मानीच पुरुष धर्मकेबेचनेवालेहैं और संसारके बिश्वासकेलिये वेदपाठी ब्राह्मणो के अर्थदानदेतेहैं और जो वेदपाठी पापकर्मसे धनको पाकरनिर्भय राग और मोहसेसंयुक्तहैं वह अन्तमें नर्कको पातेहैं २७।२८ धन के संचयमें प्रवृत्तचित्त मनुष्य भी लोभ और मोह के आधीन होता है और अपवित्र बुद्धिपापीसे सबजीव भयकरतेहैं जो मनुष्य इस प्रकार धनको पाकर मोहसे दानकरे अथवा यज्ञकरे वहपाप रूप धनकी आमदनीसे परलोकमें उसदानादिकके फलको नहींभोगता है२६।३० तपोधन धर्मके अभ्यासीमनुष्य अपनी सामर्थ्यके अनुसार इनमूल फल शाक जलादिककोपात्रकेअर्थ दानदेकर स्वर्गको जाते हैं ३१ धर्म,महायोग, दान, जीवोंपरदया, ब्रह्मचर्य्य,सत्यता, दया, धैर्य्य, शान्ती ३२ यहसब उसप्राचीन धर्मके मूलरूपही सुनेजाते हैं आगेके समयमें बिश्वामित्र आदिक राजाहुये ३३ बिश्वामित्र, असित, राजाजनक, कक्षसेन, अरष्टिसेन, राजा सिन्धुद्वीप, इत्यादिक अनेकराजाओंने परमसिद्धीको पाया राजाओंने और तपोधन

ब्राह्मणोंनेसत्यकर्म और न्यायसे प्राप्तहोनेवाले दानों से परमसिद्धी को पाया ३५ जो ब्राह्मणक्षत्री वैश्य और शूद्र तपमें आश्रितहैं वह दानधर्मकी अग्नि से पवित्र होनेवाले लोगस्वर्गको जातेहैं ३६॥

इति श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्व णिएकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

बानबेका अध्याय॥

जनमेजयने प्रश्न किया कि हे भगवन् जोधर्मसे प्राप्तहोनेवाले धन धामसेही स्वर्गहै तो इससबको आपमुझसे वर्णन कीजियेक्यों कि आपवर्णन करनेमें कुशलहैं १ हे ब्राह्मणउस उंछवृत्ती ब्राह्मण के सत्तू दानसेजो बड़ाफल उत्पन्नहुआ वह आपने मुझसे कहायह निस्सन्देह सत्यहै २ हे उत्तम ब्राह्मण सबयज्ञोंमें पूर्ण निश्चय कैसे होताहै इसको आप संपूर्णतासे कहनेके योग्यहैं ३ वैशंपायन बोले हे शत्रुबिजयी महाराज जनमेजय इसस्थानपर मैं इसप्राचीनइति हासको कहताहूं जोकि पूर्वसमय में अगस्त्य ऋषि के महायज्ञ में उत्पन्नहुआ ४ हे महाराज पूर्वसमयमेंवह महातेजस्वी सबजीवोंकी वृद्धिमें प्रवृत्त अगस्त्य ऋषि बारहवर्षकी दीक्षामें नियतहुये ५ महा- त्माके उस यज्ञमें वहलोग होताथे जोकि अग्नि रूप मूल फलों का आहार करनेवाले पत्थरपर कूटकर खानेवाले केवल चन्द्रमा की किरणोंके पानकरनेवाले ६ पूछकर लेनेवाले वैघसिक भोजन के पीछे खानेपीनेकी बस्तुओंके पात्रोंको खालीकरने वाले यती और संन्यासीथेवहइसयज्ञमें चारोंओरनियतहुये ७ वहसबप्रत्यक्षधर्मवाले क्रोध और इन्द्रियोंके जीतनेवाले जितेन्द्रीपनेमें नियतथेसबहिन्सा और छल आदिकसे रहित ८ सदैवपवित्र रीतिमें नियत और इन्द्रियोंसेभी अजितथे पूजन करतेहुये वहमहर्षी उस यज्ञमें नियत हुये ९ भगवान् ऋषिने उनखानेकी बस्तुओंको सामर्थ्यके अनुसार इकट्ठाकिया और जो योग्यरीतिथी वही उस समय उस महात्मा के यज्ञ में हुई १० उसी प्रकार बहुतसे मुनियोंने बड़े २ यज्ञ किये हे भरतर्षभ उस समय उस प्रकारका अगस्त्यजीका यज्ञवर्तमान

होनेपर इन्द्रनेबर्षा नहींकी ११ हेराजा इसी हेतुसे महात्मा अगस्त्य के यज्ञकर्मोंके अवकाशमें पवित्रात्मामुनियोंकी यहवार्त्तालापहुई १२मत्स-रतासेरहितहोकर यहयजमान अगस्त्यअन्नको देताहै और परजन्य मेघ बर्षाको नहीं करताहै फिर अन्न कैसेहोगा हे!ब्राह्मणों मुनिका यह यज्ञ बारह बर्षकाहै १३ देवता इन बारह बर्षोंमें बर्षा नहींकरे-गा आप इसको बिचार कर इस बुद्धिमान महा तपस्वी अगस्त्य महर्षीके ऊपर अनुग्रह करनेके योग्यहो १४ तबइस बचनके कहने पर उस प्रतापवान् अगस्त्यने १५ शिरसे मुनियोंको प्रसन्न करके यह बचन कहा कि जो इन्द्र बारहबर्ष तक बर्षा नहीं करेगा १६ तोमें बड़े ब्रतवाले दूसरे यज्ञोंको ध्येय द्रव्यसेही करूंगा अर्थात् सिद्ध द्रव्यके न होनेपर ध्यानमात्र सेही द्रव्योंको इकट्ठा करूंगा यह बीज मैंने बहुत बर्षोंके लिये जारी कियाहै १७।१८।१९ उसको बीजोंसे ही करूंगा इसमें बिघ्न नहींहोगा यह मेरायज्ञ किसी दशामेंभीनि-ष्फल नहीं होसक्ता २० देवता कैतो बर्षाही करेगा अथवा वह नहीं रहैगा अर्थात् नाशको प्राप्तहोगा २१ अथवा इन्द्र अपनी इच्छासे मेरी प्रार्थनाको नहीं करेगा तब मैं आप इन्द्र होजाऊंगा और सृ-ष्टिका जीवन करूंगा जो जैसे आहारवाला उत्पन्न हुआहै उसको वैसाही आहार मिलैगा २२ मैं बारंबार इससे अधिकभी करूंगा अब यहां सुबर्णादिक अन्यधनभी बर्त्तमान होयं २३ तीनों लोकोंमें जो पदार्थहैं वह अपने आपयहां आवो अप्सरावोंके दिव्यसमूहकिन्नरों समेत गंधर्बोंके समूह २४ बिश्वावसु आदिक जो अन्य २ गन्धर्बहैं वह सबभी मेरे यज्ञमें आकर बर्त्तमान होयं और उत्तर कौरवदेशों मेंजोकुछ धनबर्त्तमानहै २५ वहसब अपने आप इस यज्ञमें सन्मुख आकर बर्त्तमान होय स्वर्ग२की सभाऔर धर्मयह सब अपने आप बर्त्तमानहोयं २६ ऐसेकहनेपर उसप्रकाश अग्निके समान चित्तवाले अत्यन्त तेजस्वी अगस्त्यमुनिके तपसे वह सबहुआ २७ इसकेपीछे उनप्रसन्नचित्त मुनियोंने तपके बलकोदेखा और सब आश्चर्य्ययुक्त ऋषियोंने बड़े अर्थवाला यह बचनकहा २८ कि हमआपके बचन

से प्रसन्नहैं परन्तु आपके तपका नाशनहींचाहते हमउन यज्ञोंसेही प्रसन्नहैंऔर न्यायसेही २६ यज्ञदीक्षाहोम और जो दूसराप्रयोजन ढूंढ़तेहैं उसको चाहतेहैं हम न्यायसे भोजन इकट्ठा करनेवाले और अपने कर्म्मोंमें प्रवृत्तहैं ३० हम ब्रह्मचर्य्य और न्यायोंसे वेदोंकोचाहते हैं और न्यायसेही भविष्य कालको चाहते हमघरसे निकलेहैं ३१ और धर्मसेदेखोहुई रीतियोंसेतपकरेंगे आपका यज्ञपूर्णहै और आपकी बुद्धिहिन्सासे रहित है ३२ हे प्रभु तुम सदैव यज्ञों में अहिन्सा को वर्णनकरो हे उत्तम ब्राह्मण हम उससे प्रसन्न होंगे ३३ यज्ञके समाप्त होनेपर हमलोग इस यज्ञ शाला से जायंगे इसप्रकार उन ऋषियोंके वार्त्तालाप करनेपर बड़े तेजस्वी देवराजने ३४ उसके तपो बलको देखकर बर्षाकरी हे जन्मेजय बड़ा पराक्रमी परिजन्य देवता उस यज्ञके समाप्त होनेतक ३५ इच्छाके अनुसार बर्षाकरने वालाहुआ हे राजऋषि आप इन्द्रदेवताने बृहस्पतिजीको आगे करके समीप आकर उस अगस्त्य ऋषिको प्रसन्नकिया ३६।३७ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न अगस्त्य ऋषिने यज्ञके समाप्त होनेपर उन महा मुनियोंको विधिपूर्वक पूजनकरके बिदाकिया ३८ जनमेजयने प्रश्नकिया कि इस सुवर्णके शिर नौलेके रूपमें होकर किस देवताने यह मनुष्यके समान बचन कहाहै इसको आप मेरे पूछने से वर्णन कीजिये ३६ वैशंपायन बोले कि तुमनेप्रथम यहबात हम से न पूछी और न हमने आपसेवर्णनकिया यह नौलाहै और जिस रीतिसे उसका मनुष्यताका बचनहै उसको आप सुनिये ४० निश्चय करके पूर्व समयमें जमदग्निऋषिने श्राद्धका संकल्पकिया होमकी गौ उनके पासआई आपही उसको दुहा और दूधको दृढ़ और नवीन पवित्र पात्रमें रक्खा धर्मदेवताने क्रोधके रूपसेउसपात्र में प्रवेश किया ४१।४२ वह धर्म देवता उसश्रेष्ठ ऋषिकी परीक्षा लेनेका अभिलाषीथा कि यह अप्रिय करनेपर क्याकरेंगे यह बिचारकर उस धर्मने उस दूधकोपीलिया ४३ उस मुनिने उसक्रोध को जानकर उसपर क्रोध नहींकिया हेराजाफिर वह क्रोधब्राह्मण

मूर्ति में नियतहुआ४४उसके बिजय होनेपर उस अशांतचित्तने उस उत्तमभार्गवसेकहा ४५ हेश्रेष्ठ भार्गव लोकमें जोयह बार्तालाप परस्परहोतीहै कि भार्गव ब्राह्मण अत्यन्त क्रोधीहैं वह मिथ्याहैइसीसे मैंआपसे पराजय हुआहूं४६ अबमैं तुझशांतिरूप महात्माकेआधीन हूं हेसाधो मैं आपके तपसे डरताहूं हेप्रभु मुझपर कृपाकरो ४७ जमदग्निजी बोले हेक्रोध मैंने नेत्रोंसेतुमको देखा तुमयहांसे बिगतज्वर होकरजाओ क्योंकि इससमय तुमने मेरा अपमान नहींकिया मुझको क्रोधनहींहै ४८ मैंने जिनका नाम लेकर इस दूधका संकल्प कियाहै वह महाभाग पितृदेवताहैं उन्हींसे जाकर समझो ४९इस प्रकार के बचन सुनकर वह क्रोध महाभयभीत होकर उसी स्थानमें गुप्तहोगया और उसने पितरोंके शापसे नौलेके रूप कोपाया ५० उसने शापके दूरहोनेके निमित्त पितरोंको प्रसन्न किया तब उन्होंने उससे कहाकि तूधर्मको निन्दा करता हुआ शापसे छूटेगा ५१ उन पितरोंके इसबचनके कहनेपर यज्ञदेशऔर धर्मारण्योंमें दौड़ते और निन्दाकरते उस नकुलरूप क्रोधने उस यज्ञको पाया ५२ फिर वह क्रोध एकप्रस्थ परिमान सत्तू दानकी कथासे धर्मपुत्रकी निन्दाकरके उस शापसे निवृत्त हुआ क्योंकि युधिष्ठिरभी धर्मथा ५३ इसप्रकार उस महात्माके यज्ञमें यह चमत्कारी अद्भुत बातहुई फिर हमसब लोगोंके देखते हुये वह नौलाभी अन्तर्द्धान होगया ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिनकुलोपाख्यानेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

इति अश्वमेध पर्व्व समाप्तम् ॥

—*—

मुंशीनवलकिशोर के छापाखानेमें छापीगई
जनवरी सन् १८८९ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० योषिक व बिशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा येपर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्वमिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्के हैं कृपा करके भेजदेवैं तौ छापेजावें ॥

महाभारत बाल्मीक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषा में होगयाहै और आदि पर्व्व से लेके हरिवंश पर्य्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगयेहैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्ब्बविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेतारअपनी बुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्षहीहै किजबतक किसी पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनोंकेचितानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वबिद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्यय कर फ़र्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह बिचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है॥
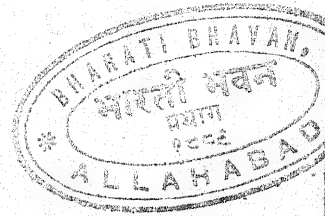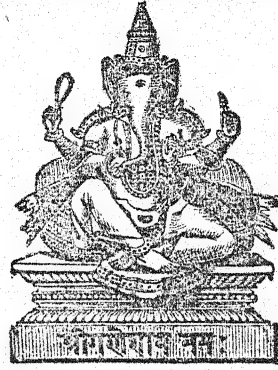
महाभारत भाषा

आश्रमवास व मुशल व महाप्रस्थान व स्वर्गारोहणपर्व

जिसमें

युधिष्ठिरादि पांचो पांडवोंका आश्रममें वासकरने पश्चात् छत्तीसवां वर्ष वर्त्तमान होनेपर अपशकुन दृष्टिआना व यदुवंशियों को मदोन्मत्तहो परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्र के पैरमें जरानाम केवट को बाणमारना व श्रीकृष्ण बलदेव को परम धामजाना व युधिष्ठिरादि पांचोपांडवोंको महाप्रस्थान यात्रा कर स्वर्गगमन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८८६ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखो है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेख़ाने में छपी थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२)थे जैसा कारख़ानेकादस्तूरहै ॥ अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व ॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व्व (५)उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व्व (९)शल्यपर्व्व (१०)सौप्तिकपर्व्व (११) योषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४)शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व (१५) आश्रमबासिकपर्व्व (१६) मुसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

अथ महाभारत भाषा आश्रमवास पर्व्वका सूचीपत्र ॥

इतिमहाभारत भाषा आश्रमबासका सूचीपत्र समाप्त ॥

महाभारतभाषा आश्रमबास पर्व्व॥

—·—※—·—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराध्यमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन बिभूष्यतेभूतलमध्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंआश्रमवासपर्व्वभाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ आश्रमबासपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्री गणेशजीको नमस्कार श्री नारायण नरोत्तम और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहासको बर्णन करताहूं १ पूर्वमें अंग उपाङ्गों समेत ब्रह्मबिद्याको समाप्त कियाउसमें भोगके त्यागनेके द्वारा बनबासियोंको समदमआदिक की प्राप्ति होतीहै उसको धृतराष्ट्र का आचारदिखलानेसे प्रकट करतेऔर उससे प्राप्तहोनेके योग्य जीवईश्वरकेतत्त्वको अपूर्वचमत्कारोंके दर्शन द्वारा सिद्ध करते कथाको प्रारंभकरते हैं जन्मेजय ने पूछा कि मेरे पितामह महात्मा पांडवोंनेराज्यकोपाकर उस महाराज

महात्मा धृतराष्ट्र से किस प्रकारका उपकार पूर्वक वर्त्ताविकया १ जिसकेपुत्र और मन्त्री मारेगये वह रक्षाका आश्रय न रखने-वाला ऐश्वर्य्यसे रहित राजाधृतराष्ट्र और यशस्विनी गान्धारी किस दशावालेहुये २ वह मेरे पूर्व पितामह पांडव कितने समय तक राज्यपर नियतरहे इसको आप मुझसे कहनेको योग्यहैं ३ वैशंपायनवोले कि जिनके शत्रुमारे गये उन महात्मा पांडवों ने राज्यकोपाकर धृतराष्ट्र को अग्रवर्त्ती करके सब पृथ्वीकापालन पोषण किया ४ हे कौरवोत्तम वह संजय बुद्धिमान युयुत्सु और दासी पुत्र बिदुर उस धृतराष्ट्र के पास वर्त्तमान होकर सेवाकरने-वालेहुये ५ पांडवोंने पन्द्रहबर्षतक सब राज्यके कार्य्य उसराजा धृतराष्ट्र से पूछे और उसकी ही आज्ञानुसार सब किये ६ धर्म-राजकी आज्ञामें नियत उन वीरोंने सदैव उनके पासजाकर च-रणोंको दण्डवत करके उस राजाको प्रतिदिन हाजिरी दी ७ मस्तकपर सूंघेहुये उन पांडवों ने सब राज्यके कार्य्य किये और कुन्तीभी गान्धारीके पास वर्त्तमान रहकर आज्ञानुसारिणी रही द्रौपदी सुभद्रा और पांडवोंकी अन्य सब स्त्रियोंने विधि पूर्व्वक उन दोनों सासससुरके साथ अच्छा वर्त्ताविकया ८।९ युधिष्ठिरने राजाओंके योग्य बहुमूल्य वस्त्र भूषण पलँग और नानाप्रकारके भक्ष्य भोज्यके सब पदार्थ १० धृतराष्ट्र को भेट किये उसी प्रकार कुन्तीने भी गान्धारी के साथ गुरुवृत्ती को वर्त्ताविकया ११ हे-कौरव बिदुर संजय और युयुत्सूने उसवृद्ध राजाकी उपासनाकरी जिसके कि सब पुत्र मारेगयेथे १२ और वह जो द्रोणाचार्य्यके साले ब्राह्मणोंमें उत्तम बड़े धनुषधारी कृपाचार्य्यजी उस राजाके साथ प्रीति करनेवालेहुये १३ देवता ऋषि पितृ और राक्षसोंकी कथा कहते पुराण ऋषि भगवान व्यासजीने भी सदैव राजाकी समीपता करी १४ फिर धृतराष्ट्र की आज्ञानुसार बिदुरजीने उन कर्मोंको कराया जो कि धर्म व्यवहारसेसंयुक्तथे १५ बिदुरजीकी श्रेष्ठ नीतिसे इस धृतराष्ट्र के बहुतसे अभीष्ट कार्य्य थोड़ेही धनके

द्वारासामन्तोंसे प्राप्तहोते थे राजा धृतराष्ट्रने कारागृह निवासियों का बंधमोक्ष और मारनेके योग्य मनुष्यों को छोड़ा परन्तु राजा युधिष्ठिरनेकभी कुछनहींकिया१६।१७ फिर कौरवराज महातेज-स्वी युधिष्ठिरने बिहार यात्राओंमें सब अभीष्ट पदार्थ राजाधृत-राष्ट्रके भेट किये १८ आरालक अर्थात शाकादिक बनानेवाले सूपकारअर्थात रसोई बनानेवाले रागखांडूकअर्थात सोंठशर्करासे युक्त यूप बनानेवाले आदिकलोग राजाधृतराष्ट्र के पास पूर्व्वकेही समानंनियत हुये १९ पांडवोंने बहुमूल्य वस्त्र और नानाप्रकारकी फूलमाला न्यायकेअनुसार प्रतिदिन नवीन२धृतराष्ट्रकोभेटकरीं२० मैरेयनाम आशव मांस मत्स्य खाने पीनेकी बस्तु और अपूर्व२ प्रकारके भोजन प्रथमही के समान उसराजाको निवेदन किये २१ जो राजा लोग जहां तहांसे आये वह सब पूर्वकेही समान कौर-वेन्द्र धृतराष्ट्र के पास वर्त्तमान हुये २२ कुन्ती द्रौपदी यशस्विनी सुभद्रा नागकन्या उलूपी देवी चित्राङ्गदा २३ धृष्टकेतुकी बहिन और जरासन्धकी पुत्री आदिक और इनके सिवाय अन्य बहुत सी स्त्रियां २४ यह सब सेवा करनेवाली होकर उसगान्धारी के पास वर्त्तमानहुईं इस निमित्त ऐसी सेवाकरी कियह पुत्रोंसे रहित धृतराष्ट्र किसी प्रकार कादुःख नपावे २५ युधिष्ठिरने भी सदैव अपने भाइयों को यही आज्ञादी तबभीमसेनके सिवाय तीनों पा-राडवों ने इसप्रकार धर्म्मराज के सार्थक वचन को सुनकर २६ अधिकतासे उपकार किया उसबीर भीमसेन के हृदयसे वह बात दूरनहीं होतीथी जो कि धृतराष्ट्र की दुर्मतिसे द्यूतके द्वारा उत्पन्न हुईथी २७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि इसप्रकार पाराडवों से पूजित ऋषियों के साथ बैठे हुये उसराजा धृतराष्ट्र ने पूर्वकेही समान बिहार

किया १ उस कौरवने ब्राह्मणों के देनेके योग्य देवपूजा आदिक दीं राजायुधिष्ठिरने उस सबकोभी बिधिके अनुसार उपस्थित किया तब उस दयावानप्रीतिमान धर्मराज राजा युधिष्ठिरने भाइयों और मन्त्रियों से यह बचन कहा २।३ कि यहराजाधृतराष्ट्र मुझसे और आपलोगोंसे पूजनकरनेके योग्यहै जो मनुष्य धृतराष्ट्र की आज्ञामें नियत रहताहै वह मेरा प्यारा है उसके बिपरीतकर्म करनेवाला मनुष्य मेरा बिरोधीहोकरदण्डके योग्य होगा पुत्रोंके श्राद्ध कर्ममें ४।५ और सबज्ञातिबांधववानातेदारोंके श्राद्धमें जितने कर्म करने की इसकी इच्छाहोय वह सब इसको दो इसके पीछे उसबड़े साहसी राजा धृतराष्ट्र ने ६ ब्राह्मणों के अर्थ उनकी योग्यताके अनुसार बहुतसा धन दिया धर्मराज भीमसेन अर्जुन और नकुल सहदेवने भी ७ उसका प्रियकरने की इच्छासे उसकी सब प्रकारकी आज्ञाओंको किया पुत्र पौत्रोंके मरनेसे पीड़ामान वह वृद्ध राजा ८ किसी प्रकारसेभी हमारे शरीरों से उत्पन्न हुये शोकसे नहीं मरे इस बातको बिचारकर उन्होंने बड़ी रक्षाकरी कि उस जीवते पुत्रवाले कौरव बीरका जितना सुखथा ९ उस से भी अधिक अन्य २ भोगोंको प्राप्तकरे वह सब पाण्डव इस निश्चयवालेहुये इसी हेतुसेउसप्रकार स्नेहभाव रखनेवाले वह पांचों भाई पाण्डव सब मिलकर १० अच्छीरीति से धृतराष्ट्र की आज्ञा में नियतहुये धृतराष्ट्र भी उन सबको नम्रता युक्त नियम में नियत ११ औरशिष्यताकी रीतिसेयुक्त देखकर गुरूकेसमान वर्त्ताव करनेवालाहुआ उसगांधारीनेभी पुत्रोंके अनेक प्रकारके श्राद्ध में १२ वेद पाठी ब्राह्मणोंको अभीष्ट वस्तुओंको देखकर अऋणताप्राप्तकी इसप्रकार धर्म धारियों में श्रेष्ठ बुद्धिमान युधिष्ठिरने भाइयों समेत होकर उसराजाका पूजन किया १३ वैशंपायन बोले कि इसके पीछे उस महातेजस्वी कौरव कुलके पोषण करनेवाले वृद्ध राजा धृतराष्ट्र ने पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर में कोई अप्रिय बातनहीं देखी १४ महात्मा पांडवों के शुभरीति कर्मों

होनेपर वह अम्बिका का पुत्र राजा धृतराष्ट्र प्रसन्नहुआ १५सौ-
बलकी पुत्री गान्धारी भी उस पुत्रशोकको दूरकरके सदैव ऐसी
प्रीतिमान हुई जैसेकि अपनेपुत्रोंपर होतीथी १६कौरवोंके पोषण
करने वाले पराक्रमी राजा युधिष्ठिर ने राजा धृतराष्ट्रके अभीष्ट
होकिये १७ हेमहाराज जन्मेजय राजा धृतराष्ट्र और तपस्विनी
गान्धारी यह दोनों जो कुछ छोटा बड़ा कार्य्य कहतेथे शत्रुओं
के नाश करनेवाले पांडवोंके धुरंधर राजा युधिष्ठिरने उसके ब-
चनोंकी प्रशंसा करके उस२ कार्य्यको किया १८।१९ वहराजा
उसके उसचलनसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ और दुर्मतिबुद्धी अपनेपुत्र
दुर्योधन को स्मरण करके पश्चात्ताप करनेवालाहुआ प्रातःका-
लके समय उठकर स्नान जपादिक से निवृत्त वह राजा धृतराष्ट्र
सदैव पांडवोंको यह आशीर्वाद दियाकरताथा कि युद्धोंमें इनकी
विजयहोय २०।२१ उसराजाने ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके
और अग्निमें हवन करके पाण्डवोंकी दीर्घायुको चाहा २२उस
समय उस राजा धृतराष्ट्र ने पांडवों से जैसी प्रसन्नता को पाया
वैसी कभी अपने पुत्रोंसे नहीं पाईथी २३ और वह जैसाकि ब्रा-
ह्मण और क्षत्रियोंका प्याराथा वैसाही वैश्य और शूद्रोंके भी
समूहोंका प्याराथा २४ उस समय जोकुछ धृतराष्ट्र के पुत्रोंनेपाप
कियेथे उन पापोंको हृदय में धारणन करके वह राजा युधिष्ठिर
उस राजा धृतराष्ट्र का आज्ञा कारी हुआ २५ जोकोई मनुष्य उस
राजा धृतराष्ट्र का अप्रिय काम करताथा वह बुद्धिमान युधिष्ठिर
की शत्रुताको प्राप्तकरताथा २६ किसी मनुष्यनेभी युधिष्ठिर के
भयसे राजा धृतराष्ट्र और दुर्योधनके बुरेकर्मोंको नहींकहा २७ हे
शत्रुंजय वह गान्धारी और बिदुर उस महाराज युधिष्ठिरके बा-
ह्याभ्यन्तरीय धैर्य और पवित्रतासे प्रसन्न हुये परन्तु भीमसेनके
गुणोंसे नहीं प्रसन्न हुये २८ निश्चय करनेवाला धर्मपुत्रभी उस
राजा धृतराष्ट्रके अनुसार कर्म करनेवाला हुआ और धृतराष्ट्र को
देखकर सदैव चित्तसे दुखीहोताथा २९ वह शत्रुओंका विजयक-

रने वाला हृदयसे हाराहुआ धृतराष्ट्र उस अपने आज्ञाकारीधर्म पुत्रराजा युधिष्ठिरके समान कर्मकरने वाला हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि सम्पूर्ण राज्यमें सब मनुष्योंने राजा युधिष्ठिर और दुर्योधनके पिताकी प्रीतिमें अन्तर नहीं देखा १ जब जबवह कौरव राजाधृतराष्ट्र अपने दुर्बुद्धी पुत्रको यादकरता था उस उससमयपर हृदयसे भीमसेनको गालियां दियाकरता था २ हेराजा उसीप्रकार भीमसेनने भी सदैव बिरुद्ध चित्तसे राजाधृतराष्ट्र को नहींसहा ३ भीमसेनने इसके गुप्त अप्रिय कर्मकिये और राज्यसेवकोंके द्वारा इसकी आज्ञाओंको भी बिपरीत किया ४ फिर उसके दुराचार और बुरे चलनोंको स्मरण करते भीमसेनने सुहृद जनोंके मध्य में भुजाका शब्दकिया ५ क्रोधयुक्त अशांत चित्त भीमसेन ने अपने शत्रुदुर्योधन कर्ण और दुश्शासन को याद करके धृतराष्ट्र और गान्धारीके सुनतेहुये ६ इस कठोर वचनको कहाकि मुझपरिघ के समान भुजा रखनेवालेने अन्धे राजाके सबपुत्र ७ जोकि नानाप्रकारके शस्त्रोंसे लड़नेवालेथे उनको परलोकमें पहुंचाया यहमेरी दोनोंभुजा परिघरूप महादुर्जय हैं ८ जिनदोनों भुजाओंके मध्यकोपाकर धृतराष्ट्र के पुत्रोंकानाश हुआवहमेरी भुजापूजनेके योग्य चन्दनसे चर्चितहैं९ जिनकेद्वारा दुर्योधन पुत्र और बान्धवों समेत नाशकियागया हेराजा ऐसे २ अनेकवचन बाणरूप उसने कहे १० भीमसेनके उनवचनों को सुन कर धृतराष्ट्रने बैराग्यको पाया उस बुद्धिमान समयकी लौटपौट की जाननेवाली ११ सर्वधर्मज्ञगान्धारीने उनअप्रियवचनोंकोसुना और पन्द्रहवांवर्षव्यतीत होनेपर १२ भीमसेनके वचनरूपीवाणों से पीड़ामान राजा धृतराष्ट्र ने बैराग्यको पाया परन्तु कुन्ती के पुत्रराजा युधिष्ठिरने उसको नहींजाना १३अर्जुनकुन्ती यशस्विनी

द्रौपदी और धर्मज्ञनकुल और सहदेव उसराजाके चित्तकीइच्छा के समान कर्मकरने वालेहुये १४ राजाके चित्तकी रक्षाकरते हुये उनलोगोंने कुछअप्रिय कभीनहींकहा फिर धृतराष्ट्र ने अपनेभाई बन्धुनातेदारआदिकका अच्छीरीतिसेपूजनकिया १५ और अश्रु को नेत्रोंमें भरकर बड़े शोकयुक्त होकर उनसे यहबचनकहा कि यह आपको बिदितहै कि जिसप्रकारसे कौरवोंका नाशहुआ १६ कौरवोंने उससब नाशको मेरेही अपराधसे जानाहै जो मुझ नि-र्बुद्धीने उस दुर्बुद्धी बिरादरीके भयके वृद्धिकरनेवाले दुर्योधन को कौरवीय राज्यपर अभिषेक कराया १७ जो मैंने बासुदेवजी के उनसार्थक बचनोंको नहींसहा कि अच्छाहोगा कि यह दुर्बुद्धी पापी दुर्योधन मन्त्रियोंसमेत बन्धनमें कियाजाय १८ और बिदुर भीष्म द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्य नाम ज्ञानियों नेभी मुझपुत्र की प्रीतिमें फंसेहुयेसे अनेक हितकारी बचन कहे १९ और प्र-त्येक स्थानोंमें महात्मा व्यास संजय और गान्धारीनेभी मुझको समझाया वहीबातें अबमुझको दुखदायीहोकर पश्चात्तापकराती हैं २० जोमैंनेबापदादोंकी यहप्रकाशमान सम्पत्ति महात्मापांडवों को नहींदी यहबात मुझको दुखदेतीहै २१ उस दुखदायी दुरा चारी सबराजाओंके होनेवाले नाशको जानकर श्री कृष्णजीने इसराज्यके बिभाग होजानेको बहुत कल्याण रूपमाना २२ सो मैं इनभूत कालके शूलरूपी अपनेकियेहुये हजारोंदोषोंको अपने हृदयमें धारण करताहूं २३ अबपन्द्रहवें बर्षमें अधिकतर देखता हूं इसहेतुसे मैं दुर्बुद्धी इसपापकीशुद्धीके लियेनियम करनेवाला हूं २४ चौथेदिन और कभी २ आठवें दिनभी इतनाही भोजन करताहूं जिससे कि केवल क्षुधाव्यथाबन्द होय और शरीर बना रहै गान्धारी उसमेरे ब्रतको जानतीहै २५ सबभाई बन्धुनातेदार युधिष्ठिरके भयसे यही जानते हैं कि यह सदैव आहार करताहै क्योंकि मेरे भूखे रहनेको सुनकर वह पांडव युधिष्ठिर अत्य-न्त शोचयुक्त होताहै २६ मैं जप में प्रवृत्त होकर नियमके बहाने

से पृथ्वीपर मृगचर्मके आसनोंपर सोताहूं और इसीप्रकार यशस्विनी गांधारी भी सोतीहै २७ जिनदेशनोंके युद्धमें मुख नमोड़नेवाले सौपुत्रमारेगये मैं उनका शोचनहीं करताहूं क्योंकि उसको क्षत्रीधर्मजानाहै२८ कौरव धृतराष्ट्र ने यह कहकर धर्मराजसे कहा किहेकुन्तीकेपुत्र तेराकल्याणहो तुममेरे इसवचनको समझो २९ हेपुत्र तुझसे सेवाकियाहुआ मैंसुखसे ठहराहुआहूं और बारंबार बड़े२दानऔर श्राद्धभी मैंनेकिये ३० हेपुत्र मैंने बलके समान बड़ा सुकृत प्राप्तकियाहै यह गांधारी जिसके सौपुत्र मारेगये हैं धैर्य्यसेमेरी ओरको देखतीहै ३१ द्रौपदी के अप्रिय करनेवाले और तेरा ऐश्वर्य्य हरनेवाले वह सब निर्दयी व्यतीत हुये और युद्धमें अपने धर्मसे मारेगये ३२ हे कौरवनन्दन उन्हेंांके विषयमें प्रायश्चित्तादिक कर्मोंको नहीं देखताहूं क्योंकि सन्मुख युद्धकरनेवाले वहसब शस्त्रोंसे विजयकियेहुये लोकोंकोगये ३३ हे राजेंद्र अबअपना और गांधारीका हित करनेवाला पवित्र कर्म करनेके योग्यहै तुमउसकी आज्ञादेनेको योग्यहो ३४ तुम धर्म्म धारियोंमें श्रेष्ठ और सदैव धर्मवत्सल हो प्राणियोंके राजा औरगुरुहो इसलिये मैं इसको कहताहूं ३५ हे वीरतेरी आज्ञानुसार मैं वनोंमें निवास करूंगा हे राजाइस गांधारी समेत मैं चीर वल्कलधारी होजाऊं ३६ हे भरतर्षभ तात युधिष्ठिर मैं तुझको आशीर्वाददेता हुआ वनचारी होऊंगा हमारे कुलमें वृद्धावस्थामें ऐसे वनवास करना सबको योग्यहै ३७ कि अवस्थाके अन्तपर अपने पुत्रोंको ऐश्वर्य्यदेकर वनकोजायँ हेराजा वहां जाकरमैं वायुभक्षी अथवा निराहार होकर भी निवास करता ३८ इस अपनी पत्नी समेत उत्तमतपको करूंगा हेवीरपुत्र तुमभी तपस्यासे फलपानेवाले होगे क्योंकि राजाहो और राजालोग प्रजाके शुभाशुभ कर्मके फलके भागीहैं ३९ युधिष्ठिरने कहा हेराजा आपके इसप्रकार दुखी होनेपर राज्यसे मुझको आनन्द नहीं होताहै मुझ अत्यन्त दुर्बुद्धी अचेत और राज्यमें प्रवृत्तचित्तको धिक्कारहै४० जो भाइयों समेत

मैं इसदुखसे पीड़ामान व्रतकरनेसे अत्यन्त दुर्बल और सुधाकेजीत-
नेवाले पृथ्वीपर सोने वाले को नहीं जानता ४१ पश्चात्तापहै कि
मैं अज्ञानी तुझ गंभीर बुद्धीवालेसे ठगागया जो प्रथम मुझको
विश्वास देकर इसदुखको भोगतेहो ४२ हे राजा मुझको राज्य,
भोग, यज्ञ और सुखसे क्याप्रयोजनहै जिसमेरे आपबरीकेदुःखनेइन
दुःखोंको पाया ४३ हे राजा तुझ दुखियाके इस बचनसे सम्पूर्ण
राज्यसमेत अपनीआत्माकोभी पीड़ामान जानताहूं ४४ आपपिता
हो आपमाता हो आप हमारे परमगुरुहो आपसे पृथक् होकर
हम कहांठहरेंगे ४५ हेराजाओंमेंबड़ेसाधू आपका और सपुत्र युयु-
त्सुहै हे महाराज वहराजा होय अथवा आपजिस किसी अन्य
कोचाहतेहो वहराजा कियाजाय४६मैं बनकोजाऊंगा आपराज्य
में राजशासन करो फिर आपमुझ अपकीर्त्तिसे भस्महोनेवालेको
भस्म करनेके योग्य नहीं हो ४७ मैं राजा नहींहूं आप राजाहो मैं
आपसे सनाथहूं मैं कैसे तुझ धर्मज्ञगुरुके आज्ञा देनेको उत्साह
करसक्ताहूं ४८ हे निष्पाप हमारे हृदयमें दुर्य्योधनकी ओरसेकुछ
भी क्रोधनहींहै वह उसी प्रकार होनहारथा हम और अन्य सब
मोहमें अचेत होगये ४९ हम आपके वैसेही पुत्रहैं जैसे कि दुर्यो-
धनादिकथे गान्धारी औरकुन्तीमें किसीप्रकारका भी भेदनहींहै
यह मेरामतहै ५० हे राजेन्द्रजो आप मुझको छोड़कर जाओगे
तो शपथ से कहताहूं कि मैं आपके पीछे २ चलूंगा ५१ धन से
पूर्ण सागररूप मेखला रखनेवाली यह पृथ्वी मुझ आपसेजुदेकी
प्रसन्नता करनेवाली नहींहोगी ५२ हे राजेन्द्र यह सब आपकाहै
मैं आपको शिरसे प्रसन्न करताहूं हम आपके आधीनहैं आपके
चित्तका संताप दूरहोय ५३ हे राजा मैं मानताहूं कि तुमने होन-
हारको प्राप्तकिया मैं प्रारब्धसे आपकी सेवाकरके चित्तके ताप
को दूरकरूंगा ५४ धृतराष्ट्र बोले हे कौरवनन्दन प्रभु युधिष्ठिर
मेरा चित्त तपमें प्रवृत्तहै और बनमें जाना हमारे कुलके योग्यहै
५५ हे पुत्रमैंने बहुत कालतक निवास किया और तुमनेभी मुद्दत

२७ सेवाकरी हे राजा तुम मुझ वृद्धको आज्ञादेनेके योग्यहो ५६ वैशंपायन बोले कि उस कंपायमान और आशीर्वाद देनेकेलिये अंजुली करनेवाले राजा धृतराष्ट्र ने धर्मराजसे यह कहकर ५७ महारथी कृपाचार्य्य और संजय से भी यह बचन कहा कि मैं आप दोनोंके द्वारा राजा युधिष्ठिरको समझाया चाहताहूं ५८ बड़ी अवस्थासे और वर्त्तालाप करनेसे यह मेरा चित्तम्लान होताहै और मुख सूखाजाताहै५९ उस धर्मात्मा वृद्ध और बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र ने यह कहकर अकस्मात निर्जीवके समान होकर गान्धारीका सहारालिया ६० शत्रुओंके विजय करनेवाले राजा युधिष्ठिरने उस अचेत बैठेहुये राजाको देखकर बड़ी कठिनपीड़ा को पाया ६१ युधिष्ठिर बोले कि जिसका बल पराक्रम साठ हजार हाथीके समानथा वह राजाधृतराष्ट्र स्त्रीका सहारा लेकर शयन करताहै ६२ जिसने पूर्व्व समय में भीमसेनकी वह असल धातुलोहेकी मूर्त्तिको चूर्णकरडाला वह अबला स्त्री के आश्रयमें हुआ ६३ मुझ धर्मसे अज्ञानको धिक्कारहोय मेरीबुद्धि और ज्ञान को धिक्कारहोय जिसके कारणसे यह राजा इस दशाके अयोग्य होकर शयनकरताहै ६४ मैं भी इसीकेसमान उपवासकरूंगा जैसा कि यह मेरा गुरु करताहै अर्थात जो राजा धृतराष्ट्र और यह यशस्विनी गान्धारी भोजन नहीं करतेहैं तो मैं भी भोजन नहीं करूंगा ६५ वैशंपायनबोले हे राजाजन्मेजय इसकेअनन्तर धर्मज्ञ राजायुधिष्ठिरने शीतलजल और हाथसे उसकी छाती और मुख को बड़े धीरेपनेसे स्पर्शकिया ६६ राजा युधिष्ठिरके उसहाथके स्पर्शसे जो कि रत्न औषधियों से युक्त पवित्र और सुगन्धित था उसराजा धृतराष्ट्रने सचेतताको पाया ६७ धृतराष्ट्र बोले हे कमल लोचन पांडव फिर तुम हाथसे मुझको स्पर्शकरके मिलो मैं तेरे अत्यंत स्पर्शसे सजीव होताहूं ६८ हे राजामैं हाथोंसे तुमको स्पर्श करता और तेरे मस्तक को सूंघना चाहताहूं इसमें मेरा बड़ा आनन्दहै ६९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ अब आहार न करनेवालेका यह

आठवांदिनहै जिसके कारणसे अधिक चेष्टाकरनेको समर्थ नहीं हूं ७० तुझ से प्रार्थना करनेवाले मैंने यह कठिन परिश्रम किया है हे तात इसी हेतुसे निर्बल चित्त होकर अचेतके समान होगया हूं ७१ हे कौरव कुलके उद्धारकरनेवाले समर्थ युधिष्ठिर मैं मानताहूं कि अमृत रसकी समान इसतेरे हाथकेस्पर्शको पाकर सजीव होगयाहूं ७२ वैशंपायनबोलेहे भरतवंशी ताऊके इसप्रकार के कहेहुये बचनों को सुनकर युधिष्ठिर ने पितापनेकी प्रीतिसे उसके सब अंगोंको बड़े धीरेपनेसे स्पर्शकिया ७३ फिर राजा धृतराष्ट्र ने प्राणोंको पाकर युधिष्ठिरको भुजाओं से अपनी बगलमें लेकर मस्तकपरसूंघा ७४ फिर अत्यन्त दुःखी होकरवह बिदुरादिक रोदन करनेलगे औरबड़े दुःखसे राजायुधिष्ठिरको कुछनहीं कहा ७५ हे राजा चित्तमें कठिन दुःखपानेवाली धर्मज्ञ गान्धारी ने उन दुखोंको सहा और कहा कि इसप्रकार से दुखी नहोना चाहिये ७६ कुन्ती समेत अत्यन्त दुखीदूसरी सबस्त्रियाँ अश्रुओंसे नेत्रोंको पूर्ण करके उसको घेरकरचारों ओरको नियतहुईं ७७ इसके पीछे धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिरसे फिर यह बचन कहा कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठराजा युधिष्ठिर मुझको आज्ञादो मैं तपकरूंगा ७८ हे तात मुझ बारम्बार वार्त्तालाप करनेवालेका चित्त भयभीत होकर उचाटन होताहै हे पुत्र अब इसके पीछे तुम मुझको दुःख देनेके योग्य नहींहो ७९ उस युधिष्ठिरसे उसकौरवेन्द्रके इस प्रकार कहनेपर सबजीवधारियों के बड़े दुःखकारी शब्द उत्पन्न हुये ८० धर्म्म पुत्र युधिष्ठिर ने इसदशाके अयोग्य बिपरीत रूप दुर्बल ब्रतसे अत्यन्तक्षीण केवल अस्थिचर्मसे युक्तशरीर महाप्रभु अपने ताऊकोदेखकर और शोकजन्य अश्रुपातोंको करके फिर यह बचनकहा ८१ । ८२ हे परन्तप नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र मैं उतना अपने जीवन और संपूर्ण पृथ्वीके राज्यको नहीं चाहताहूं जितनाकि आपका प्रियकरना चाहताहूं ८३ जोमैं पोषण के योग्यहूं और आपका प्याराभीहूं तो भोजन कीजिये इसकेपीछे

आपकी दूसरी बातोंकोजानूंगा और सुनूंगा ८४ तब महातेजस्वी धृतराष्ट्र ने कहा हे बेटा मैं चाहताहूं कि मैं तेरी आज्ञासे भोजन करूं ८५ युधिष्ठिरसे महाराज धृतराष्ट्र के इसप्रकार कहने पर सत्यवतीकेपुत्र व्यासऋषिने सन्मुख आकर यह बचनकहा ८६ ॥

श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआश्रमबासकेपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हे महाबाहु कौरवनन्दन युधिष्ठिर महातेजस्वी धृतराष्ट्रनेजैसाकहा उसमेंकिसीप्रकारका बिचारन करता हुआ तू उसकोकर १ यह राजावृद्धहै मुख्यकर इसके पुत्रमारे गये यह ऐसेऐसे दुःखोंके भोगनेको नहीं सहसकेगा यह मेरामत है २ हेमहाराज यह ज्ञानवान् दयालुचित्त भाग्यवान् गान्धारी भी अपने पुत्रोंके कठिन शोकोंको बड़े धैर्य्यसेसहतीहै ३ मैं भीतुम से यही कहताहूं तुम मेरा बचनकरोकि तुम इसको आज्ञादोनहीं तो यहयहांही व्यर्थमरजायगा४यह राजाप्राचीनराज ऋषियोंकी की गतियोंकोपावेगा अवस्थाके अन्तपर सबराजऋषियोंकाबनबास होताहै ५ वैशंपायनबोले तब अपूर्वकर्मी व्याससे इसप्रकार शिक्षा पानेवाले उस महातेजस्वी धर्म्मराज ने महामुनिको उत्तर दिया ६ कि भगवानही हमारे बड़ेहैं भगवानही हमारे गुरुहैं भगवानही इसराज्य और कुलके रक्षाश्रयहो ७ मैं आपका पुत्रहूं हेभगवान आपही मेरे पिता राजा और गुरुहो पिताकी आज्ञा पर चलनेवालाही मनुष्य धर्म्मसेपुत्रहोताहै ८ वैशंपायन बोले इस प्रकार कहेहुये उस वेदज्ञोंमें श्रेष्ठ महातेजस्वी महा कबिव्यासजीने उस युधिष्ठिर से फिर बचनकहा ९ हे महाबाहु यह इसीप्रकारहै जैसा कि आपकहतेहो परन्तु इसराजानेवृद्धावस्थाकोपाया और उपनिषद मत में नियतहै १० सो मेरी और तेरी दोनोंकी आज्ञा पाकर यह राजा अपने चित्तके अभीष्टकोकरो तुम इसके बिघ्न कर्त्ता मतहो ११ हे युधिष्ठिर राजऋषियोंकापरमधर्म यहीहै कि

युद्धमें अथवा बनमेंबिधिकेअनुसारही अपना शरीर त्यागकरे १२ हेराजेन्द्र यह राजाधृतराष्ट्र तेरे उस पिताराजापांडुसे पूजनकिया जाताथा जो कि शिष्यताकी रीतिसे इस धृतराष्ट्रको अपने गुरुके समान उपासना करताथा १३ आपलोगोंने रत्नों के पहाड़ोंसेशो-भायमान दक्षिणावाले यज्ञोंसे पूजनकिया पृथ्वीको भोगा और प्रजाका पालनकिया १४ तेरे बनवासीहोनेपर इसधृतराष्ट्र ने पुत्र की स्वाधीनता में नियत होकर इस बड़े राज्य को तेरहबर्षतक भोगा और नानाप्रकारका धन दानकिया१५ हे निष्पाप नरोत्तम भृत्यादिकों समेत तुमने गुरुसेवासे राजाधृतराष्ट्र और यशस्विनी गान्धारी आराधन किये १६ हे राजा अब अपने ताऊको आज्ञा करो क्योंकि तपकरनेका इसका समयहै इसकी कोई अल्पमृत्यु भी वर्त्तमान नहींहै१७ वैशंपायन बोले कि इतना बचनकह राजा को आशीर्व्वाद देकर और राजा युधिष्ठिरसे यह कहवाकर कि ऐसाही होगा ब्यासजी बनको चलेगये १८ वैशंपायनबोले तब भगवान् ब्यासजी के चलेजानेपर झुकेहुये राजा युधिष्ठिरने वृद्ध ताऊसे यह बचन कहा १९ कि भगवान् ब्यासजीने जो कहा और जो आपकी भी चित्तकी इच्छाहै और जिसप्रकार बड़ेधनुषधारी कृपाचार्य बिदुर युयुत्सु और संजयनेभीकहाहै मैं शीघ्रही इसको करूंगा इसकुलकी वृद्धि चाहनेवाले आपसबलोग मुझसे पूजनके योग्यहैं २० ।२१हे राजा शिरसे झुकाहुआ मैं आपसे यह प्रार्थना करताहूं कि जबतक आप आश्रम को न जायँ तबतक आहार पानादिक करना चाहिये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४

पांचवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि राजा युधिष्ठिरसे बिदा किये हुये प्रताप-वान् राजा धृतराष्ट्र जिसके पीछेको और गान्धारीथी अपने महल को गये १ जैसे कि वृद्ध गजराज होता है उसीप्रकार

शिथिलेन्द्री बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र बड़े कष्टसे पैरोंको उठातेहुये चले २ ज्ञानी विदुर सूतसंजय, और वह बड़े धनुषधारी शारद्वत कृपाचार्य भी उसकेपीछे२चले ३ हे राजा तब उसने महल में प्रवेश कर दिनकेप्रथमभाग को संध्यादिक क्रियाकोकरके और उत्तम ब्राह्मणोंको तृप्त करके भोजन किया ४ हे भरतवंशी सेवकोंकी सेवासे पूजित धर्म्मज्ञ सावधान चित्त गांधारीने भी कुन्ती और सब बंधुओं समेत भोजनकिया ५ भोजन करनेवाले उन सब विदुर आदिक पांडवोंने उसभोजनसे निवृत्तहुये राजाधृतराष्ट्रको हाज़िरीदी ६ हे महाराज इसकेपीछे पास बैठेहुये युधिष्ठिर की पृष्ठपर हाथसे स्पर्शकरके धृतराष्ट्रने यह वचनकहा ७ हे राजर्षभ कौरवनन्दनजिसमें धर्म मुख्यताभेहै उसआठअंग अर्थात् स्वामीआमात्यादिकसे युक्त राज्यके मध्यमें तुमको सब दशामें सावधानी करनी उचितहै ८ हे महाराज पांडवनन्दन युधिष्ठिर वह रक्षा राजधर्म्म से होनी संभवहै तुम बुद्धिमान् हो उसको समझो ९ हे युधिष्ठिर तुम सदैव उनकी उपासना करो जोविद्यासे वृद्धहैं वह जो २ आज्ञा करें उसकोसुनो और बिनाविचार कियेही उसको करो १० हे राजा प्रातःकाल उठकर उनको बुद्धिके अनुसार पूजनकर कर्मका समय होनेपर अपने कार्य्यको उनसेपूछो हेराजा तुझ इच्छावान् सफलकर्मोंसे पूजित होकर वह करनेके योग्य कर्मको कहेंगे हे भरतवंशी वह धर्म सबदशामें तेरे अभीष्टका देनेवालाहै ११।१२ सबइंद्रियोंको घोड़ेकी समान रक्षाकरो वहतेरे मनोरथ सिद्धकरने के कर्मोंको ऐसेकरें जैसे कि रक्षित धन १३ बापदादों,से प्राप्त छल हीन पवित्रजनस,भिक्षायुक्त ,पवित्र मंत्रियोंको सब अधिकारोंपर नियतकरो १४ शत्रुओंसे परोक्ष होकर तुम उन दूतोंसे समाचार मँगवावो जोकि बहुतप्रकारसे परीक्षा कियेहुये और अपनेदेशके वासीहोयँ १५ तेरानगर सब दिशाओंमें दृढ़प्राकार तोरण और नगर के बाहरीद्वार से युक्त अट्टाट्टालकों से सम्बन्धित अर्थात् उत्तमस्थानों समेत श्रेष्ठ रीतिसे रक्षितहोय १६ उसके सब बड़े २

द्दारसबदोषोंसेरहित सबओरसे शोभायमान रचना और उपायोंसे रक्षितहोय कुल और स्वभावमें परीक्षाकियेहुये मनुष्योंसे तेरेराज्य केकार्य्य शोभाको पावें हे भरतवंशी भोजनादिकमें सदैव अपना शरीररक्षाकेयोग्यहै १७।१८ विश्वासित और वृद्धपुरुषोंकेआधीन तेरी स्त्रियां बिहार भोजन और पुष्पशय्याआदिकोंपर निवास करनेके समयभी अच्छीरक्षितहोंय १९ हे युधिष्ठिर सुन्दरस्वभाव युक्त ज्ञानी और कुलीन ब्राह्मणों को मन्त्रीबनावो जो ब्राह्मण पंडित विद्यावान् शान्त प्रकृति कुलीन धर्म अर्थ में सावधान और सत्यवक्ताहोंय तुम उनके साथ सलाहकरो बहुतसे मनुष्यों से मतकरो —किसी बहानेसे सबमंत्रियों समेत अच्छेसुरक्षित विचारालय में अथवा किसीस्थलमें नियत होकर प्रत्येककेसाथ सलाह करो २०।२१।२२ वृक्षादिकोंसे रहितवनमेंसलाहकरोपरंतु किसीदशामें भी रात्रिके समय सलाह मतकरो बन्दर पक्षी और जो मनुष्य दूतहैं अथवा जो विक्षिप्त और कुटिल मनहैं यह सब सलाहकरनेके स्थानमें न बुलाने चाहियेंराजाओंकेमन्त्रभेद मेंजो दोषहोतेहैं वह किसीप्रकार सेभी दूरनहीं होसक्तेयहमेरामतहैतुम मन्त्रियों के मंडलमें मंत्रभेद के दोषोंको वर्णन करो २३।२४।२५ हे शत्रुओंके विजय करनेवाले राजा युधिष्ठिर मंत्र भेद न होने में जो गुण हैं उनको बारम्बार वर्णन करो पुरवासी और देश वासियोंकेशौचाशौच जैसे विदितहोंय हेराजा उसीप्रकारकरना चाहिये हे कौरव तेराव्यवहार अर्थात् मुकद्दमोंका फैसला सदैव विश्वासित सेवकलोगोंकी आधीनता में नियतहोंय हे भरतवंशी युधिष्ठिर तेरेकार्यकर्त्ता न्यायके अनुसार अपराधके परिमाणको जानके अपराधियोंपर दंड नियतकरें २६ । २७ आदानी, अर्थात् रिशवतलेनेवाले दूसरेकी स्त्रीसे,कुकर्मकरनेवाले २८ कठिनदंडको उत्तमजाननेवाले अधिकारी हाकिम,न्यायविरुद्ध, अर्थात् कानून से विपरीत वार्त्तालाप करनेवाले अपकीर्त्ति,देनेवालेआदिलुब्ध, लोभीधनहर्त्ता अर्थात् चोर, बिनाध्यानकिये कर्मकरनेमें प्रवृत्त २९

सभा और विहार स्थानके बिगाड़नेवाले और वर्णों के बिगाड़ने वाले यह सबमनुष्य देशकालकेसमान हिरण्यदंड अर्थात् जुर्माना और मारनेकेदंडसे संयुक्त करनेयोग्यहैं ३० प्रातःकालही उनको देखो जो तेरे खजानेके रक्षकहैं फिर भोजनकरो और पोशाक आदिकसे अलंकृत शरीरको करो ३१ इसकेपीछे सबको प्रसन्न करतेहुये तुम सेनाके लोगोंको सदैव देखाकरो। तेरेदूत और चर अर्थात् जासूसोंके देखनेकासमय प्रदोषकालहोय ३२ सदैवरात्रि केपिछलेपहरमें तेरेकार्यार्थका निर्णयहोय मध्यरात्रिमेंतेराविहार होय ३३ हे भरतर्षभ करनेके योग्य कर्मोंकेसबसमय युक्ति और उपायोंसे प्राप्तहैं हे बड़ीदक्षिणा देनेवाले उसीप्रकार राज्यकी पोशाकोंसे अलंकृत होकर समयपर अपने राज्य सिंहासन पर बैठो ३४ हे तात राज्यके कार्य्यों का क्रम और अवकाश सदैव चक्रके समान दृष्ट पड़ताहै हे महाराज तुम सदैव न्याय के अनु- सार नानाप्रकार के खजानेके इकट्ठे करनेका उपाय करो ३५ और विपरीतकर्म को त्यागकरो हे राजा जो मनुष्य राजाओं के छिद्रचाहनेवाले और शत्रुहैं उनको दूतों के द्वारा जानकर ३६ उनको विश्वासित मनुष्योंके द्वारा दूरसेही मरवावो हे कौरव तुम कर्मको देखकर सेवकोंको नियतकरो ३७ जो अधिकारी न्याय से कर्मकरनेवाले हैं उनसे राज्यके कार्य्यों को पूरा करवावो हे तात तेरी सेनाका अधिपति दृढ़व्रत रखनेवाला ३८ शूर दुःखों का सहनेवाला शुभचिन्तक और भक्तमनुष्य होय हे पांडव सब देशवासी कारीगर आदिक तेरेकर्मों को शीघ्रता पूर्वक अपने धनके समानकरें हे युधिष्ठिर अपने नौकरचाकर और शत्रुओंमें अपना और शत्रुका छिद्र ३९ । ४० तुमको सदैव देखना योग्य है अपने कर्मों में उपाय करनेवाले देशवासी शुभचिन्तक मनु- ष्य४१उचित उपायों के द्वारा तुमसे चेटी के समान रक्षा और कृपाकरनेके योग्य हैं हे राजा ज्ञानी राजाको गुण ग्राही मनुष्यों का गुण प्रकट करना उचितहै पर्व्वतके समान अपने कर्म

पर उनलोगोंका नियत करना तुमको उचित है ४२। ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः५॥

छठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे भरतर्षभ अपने और शत्रुओंके सबमंडल अर्थात अपने और शत्रुओंके मित्रादिक और मध्यस्थ व उदासीनोंके मंडलोंको जानों १ हेशत्रुओंके विजय करनेवाले अपने शत्रुकी और उत्पन्न जो शत्रुके मित्रादिक चारराजाहैं उनकोभी जानोमित्र और मित्रका मित्रभी तुमको जाननायोग्यहै हे कौरव्य उसीप्रकार मन्त्रीदेश नानाप्रकारके गढ़और सेनाभी जाननेके योग्यहैं क्योंकिउन्हेंका विरोधादिकइच्छाके समान होताहै २।३ हेकुन्तीकेपुत्रराजाओं केविषयरूपी वहविरोधादिक बारहहैं हेप्रभुमन्त्रिप्रधानगुण बहत्तरहैं ४ नीतिकेपूर्ण ज्ञातालोगोंने इसकोसंडलकहाहै उनमेंराज्यकीरक्षाके छः उपाय नियतहैं उसकोभी समझनाबहुतयोग्यहै ५ हे कौरवोंमेंबड़े साधू महाबाहु वृद्धि क्षय और स्थान उनबहत्तर गुणोंके द्वाराजाननेके योग्यहैं फिर राज्यकी रक्षासे उत्पन्नहुये उपायोंसे छःगुण जाननेकेयोग्यहैं ६ जबअपनापक्षप्रबलऔरशत्रुका पक्षनिर्बलहै तबशत्रुओंसे विरोधकरके राजाविजय करनेकेयोग्यहै ७ जबशत्रु प्रबलहै और अपना पक्ष निर्बलहै तब निर्बल बुद्धिमान राजा शत्रुओंसे सन्धिकरे इसी प्रकार द्रव्योंका बहुत समूहसंचय करनायोग्यहै हे भरतबंशी जब चढ़ाईके लिये समर्थहोयतब थोड़ेही समयमें ८।९ सबकर्म पूरेकरनेके योग्यहोते हैं वहराजा अपने निवास सेही उसको विचारे हे भरतबंशी शत्रुकोवहपृथ्वी देनीचाहिये जिसमें कि बहुतसा पैदावारी होयऔरा पसन्धिमें सावधान राजा शत्रुसे नीचेलिखी हुईबस्तुओंको लेवे सुबर्णादि, बहुतसी धातुऔर युद्धमेंनाश हुयेअपनेमित्र हाथीऔर घोड़ोंका बदलालेवे १०।११ हे भरतर्षभ सन्धिके विश्वासके लिये शत्रुकेराजकुमारको अपनेपास ठहरावे हेपुत्रइसके विपरीत कर्म

करनाउसकोवृद्धि दायकनहींहै अर्थात् किसी आपत्ति में फंसाता है१२उपाय समेत सलाहका जाननेवाला राजाउसप्राप्तहुई आपत्ति कोभी दूरकरनेका उपायकरे हेराजेंद्रप्रजाके मध्यमें जोअन्धेबधिर मूकादिकहैं राजाउनका पोषणकरे १३ बड़ाबलवान् राजा क्रम क्रमसे अथवा एकही समयमें सबनिग्रह करे औरअपने राज्यकी रक्षाकरनेवाले राजाकोउपाय पूर्व्वक शत्रुओंको पीड़ादेना पकड़ लेना और खजानेकी बरबादी करना योग्यहै वृद्धिके चाहनेवालेराजाके आश्रितहोनेवाले शूरवीर मारनेके योग्यनहींहैं१४। १५ हेकुन्तीकेपुत्र जोराजासंपूर्ण पृथ्वीभरको बिजयकिया चाहताहै वहअपने शरणागतोंको नहींमारे तुममंत्रियों समेत शत्रुओं के समूहोंके परस्पर बिरोधी करनेमें उपायोंको करो १६ इसी प्रकार उत्तमकर्म्मियोंका पोषण और अपराधियोंके दण्डदेनेसेप्रबन्धकरो बलवान् राजाकीओरसे निर्बल शत्रुभी उपेक्षा करनेके योग्यनहींहै१७ हेराजेंद्र तुमबेत वृक्षकीरीतिपर नियतहोकरनिवासकरो जोबलवान् राजातुझ निर्बलके सन्मुखआवे १८ तोतुमक्रमपूर्व्वक सामादिक उपायोंके द्वारा उसकोलौटाओ सन्धि करने में समर्थन होनेवाला राजा मन्त्री १९ खजाना पुरबासी सेनाओर जो उसके हितकारीहैं उनके साथयुद्धकेलिये प्रस्थानकरे उनसब के नहोनेपरकेवल शरीरहीसे युद्धकेलिये नियत होय इसरीतिसे शरीरत्यागनेसे देहकी मुक्तिहोतीहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोलेहेराजाओं में बड़ेसाधू युधिष्ठिर इसस्थान परसन्धि और विग्रहकोभी बिचारो जिस के उत्पत्ति स्थानदो हैं अर्थात् शत्रुका बलवान् वा निर्बलहोना और नाना प्रकार के उपायों समेत अनेकरीतें रखनेवाले हैं १ हे कौरव तुमनियत होकरअपने बलाबलकी बिचारकर शत्रुओंका सेवनकरो जबशत्रु प्रसन्न और

बलपराक्रम रखनेवाली सेनाका रखने वालाहै तबबुद्धिमान राजा बिजयके उपायोंको बिचारे २ हेराजेन्द्र शत्रुके समीप वर्त्तमान होनेके समय बिपरीत कर्मकिया जाताहै और युद्धकेसमय शत्रुसे पृथक्होजाय फिर शत्रुओंके दुःख,बिरोध,अपनीओरका आकर्षण,भयदिखाना और युद्धमें उसकीसेनाका नाशकरावे ३।४ शास्त्र में कुशल चढ़ाई करनेवाला राजाअपनी और शत्रुकी तीनप्रकार की सामर्थ्यको बिचारकरे ५ हेभरतबंशी उत्साह प्रभुशक्ति और मन्त्र शक्तिसे संयुक्त राजा चढ़ाई करे इनके बिपरीत चढ़ाई को नकरे ६ हेसमर्थ वहराजा धनबल, मित्रबल, अटवीबल, भृतबल और श्रेणीबलको साथमें रक्खे ७ हेराजा उनसबमें धनबल और मित्रबिशेष कहाताहै श्रेणीबल और भृतबल यहदोनों मेरेमत में समानहैं ८ हेराजाइसीप्रकार दूतबलभी परस्पर समानहैंवहनाना प्रकारका बलबहुत समयोंमें प्रत्येक समयके वर्त्तमान होनेपरराजा को जानना योग्यहै ९ हेराजा बहुतरूप रखनेवाली आपत्ति जाननेके योग्य हैं हेकौरव्य राजाओंकी जो वह आपत्ति प्रकट होतीहैं उनको पृथक् २ श्रवणकरो आपत्तियों का होना बहुत प्रकारकाहै राजा उनको सदैवसामादिक उपायोंसे बिचारे १०।११ हेपरन्तप वहराजा सेना, सत्पुरुष, देशकाल और अपने गुणोंसे युक्तहोकर यात्राकरे १२ हेपांडव राज्यकी वृद्धिमें प्रवृत्त बलवान् प्रसन्न और पराक्रमी सेनाका रखनेवाला राजा शिशिरआदिक ऋतुओंमें भी चढ़ाईकरे १३ राजाशत्रुओं के नाशकरने के लिये उस नदीको जारीकरे जिसमें तृण पाषाणहैं हाथी और रथ प्रवाहहैं ध्वजारूप वृक्षों से युक्त किनाराहै पदाती और हाथियों से बहुत कीचकी रखनेवाली है.१४ हेभरतबंशी फिर समय के अनुसार शकट पद्म और बज्रनाम ब्यूहोंको अलंकृत करे हे प्रभु जिसशास्त्रको शुक्रजी जानतेहैं उसमें यहसब कहाहै १५ दूत के द्वारा शत्रुकी सेनाको जानकर और अपनी सेना को देखकर अपनी पृथ्वी और शत्रुकी पृथ्वीपर युद्धकरे १६ राजा अपनी

सेनाको प्रसन्नकरै और बलवान् मनुष्योंको अधि कारी अफसर नियत करे वहांअपने मौके को जानकर साम आदिक उपायोंके द्वारा कर्मका प्रारंभकरे १७ हेमहाराज यहां सब दशामें अपने शरीर की रक्षाकरे और इस लोक परलोक में अपना परम कल्याण करना उचितहै १८ हेमहाराज राजा इसकर्मको अच्छी रीतिसेकरके धर्मसे प्रजापालन करताहुआ शरीर त्यागनेके पीछे स्वर्गको पाताहै १९ हे कौरवनन्दन तुमको दोनों लोकोंकी प्राप्ती के लिये सदैव इसप्रकारसे वह कर्म करनाउचितहै जोकि प्रजाकी वृद्धिका करने वालाहै २० हेभरतर्षभ भीष्म श्रीकृष्ण और बिदुरने सब प्रकारसे तुमको समझायाहै मुझकोभी तेरी प्रीतिसे अवश्य कहना योग्यहै २१ हेबड़ी दक्षिणा देनेवाले इस सबको न्यायके अनुसार करो उस प्रकारसे प्रजाके प्यारे होकर तुमस्वर्ग में सुख पाओगे २२ जो राजा हजार अश्वमेधसे पूजन करे और धर्मसे प्रजाका पालनहीं करे और जो धर्मसे प्रजापालन करे अश्वमेध नहींकरे उनका फलसमान होताहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले हेराजा जैसा आपने मुझसेकहाहै मैं उसीप्रकार से करूंगा हेराजाओंमें श्रेष्ठ मैं फिरभी आपकी शिक्षाओंके सुनने के योग्यहूं भीष्मजीके स्वर्ग में जाने और श्रीकृष्ण बिदुर संजयके यहांसे चले जानेपर दूसरा कौन मुझे शिक्षाकरनेके योग्यहै १।२ हेराजा अब मेरी वृद्धिमें नियत होकर आप जो२ मुझको शिक्षा-करतेहो मैं उसकोकरूंगा आप निवृत्ति मार्गको नियतहो ३ वैशं-पायन बोले हेभरतर्षभ बुद्धिमान धर्मराज युधिष्ठिर से इसप्रकार कहेहुये उस राजर्षिने युधिष्ठिर को आज्ञा देनाचाहा ४ हेबेटा तूकुछ काल शान्तहो मेरी थकावटभी बड़ी प्रबलहै यह कहकर राजा गान्धारीके भवन में चलागया ५ समयकी जानने वालीधर्म

की करने वाली देवी गान्धारी ने उस आसन पर वर्त्तमान प्रजा-पतिके समान अपने पतिसे समय पर यह बचनकहाहै कि आप-को व्यास महर्षीने आप आकर आज्ञादीहै सोतुम युधिष्ठिरकी सलाहसे कबवनको जाओगे ७ धृतराष्ट्रने कहा हेगान्धारी मुझको आप महात्मा पिताने आकर आज्ञादीहै थोड़ेही समयमें युधिष्ठिर केसम्मतसे बनको जाऊंगा ८ मैं उस समयतक उनदुर्मति द्यूतखेलने वाले सब पुत्रोंका श्राद्धादिक करना चाहताहूं यह कहकर अपने-महल में सब नौकर चाकर और प्रजाको वर्त्तमान करके ९ धृत-राष्ट्रने धर्मराजके पास दूतको भेजा उसने उसकी आज्ञाके अनुसार सब सामान राजाके समीप लाकर बर्त्तमान किया १० इसकेपीछे कुरुजांगल देशी प्रसन्नचित्त ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र वर्त्त-मान हुये ११ तब राजाने उस अन्तःपुर से बाहर निकलकर उन सब मनुष्य और सब राज्यके नौकर चाकरोंको देखा १२ अर्थात् इकट्ठे होनेवाले उन पुरबासी और देश बासियों को देखा हेराजा उन सब समेत अपने इष्टमित्र नातेदारों को और बहुत प्रकारके देशोंसे आनेवाले ब्राह्मणोंको देखकर बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रने यहकहा १३।१४ कि आप और कौरवलोग बहुत काल तक साथमें रहे परस्पर शुभ चिन्तक और परस्पर की वृद्धिमें प्रवृत्तहो १५ अब मैं इससमयकी वर्त्तमानतामें जो कहूं आपलोगों को उसीप्रकारसे करना उचितहै मेरा बचन विचार करने के योग्य नहींहै १६ ब्यास ऋषि और राजायुधिष्ठिर की सलाह से मेरा विचार गान्धारी समेत बनजानेकाहै १७ आप भी मुझको बिना विचारकिये बनजाने की आज्ञा दो और हमारी तुम्हारी जो यह प्राचीनप्रीतिहै १८ वैसीप्रीति अन्यदेशों में किसी दूसरे राजाकीनहींहै यहमेरासिद्धान्तहै मैं इस वृद्धावस्थासे थकगयाहूं और पुत्रोंसे भी रहितहूं १९ और गान्धारी समेत व्रतों करके दुर्बल शरीरहूं हे निष्पापलोगो मैंने युधिष्ठिरके राज्यके नियत होनेपर बड़ा सुखपाया है २० हे साधूलोगो मैं मानताहूं कि यह

सुख दुर्योधनके भी ऐश्वर्यसे अधिकहै परन्तु मुझअन्धे वृद्ध और सन्तान रहित की सिवाय बनजाने के दूसरी गतिनहींहै २१ हे भागवान् लोगो इससे आपलोग भी मुझको आज्ञादेने के योग्य हो हेभरतर्षभ उन सब कुरुजांगल देशियोंने उसके उस वचनको सुनकर नेत्रोंमें आंसुओंको भरकर बड़ी डीग मारकर रोनाप्रारंभ किया फिर महातेजस्वी धृतराष्ट्रने उन कुछ कहनेवाले शोकयुक्त सब मनुष्यों से यहकहा २२।२३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि राजा शान्तनुने इसपृथ्वीको विधिके अनुसार पालन पोषण और रक्षणकिया उसीप्रकार भीष्मजी से रक्षित राजाविचित्रवीर्य्य ने भी तुम्हारा पोषणकिया १ और वहबात भी निस्संदेह सबको प्रकटहै कि जैसा मेराभाई पांडु तुम सब लोगोंका प्यारा था २ उसनेभी विधिके अनुसार रक्षा और पोषणकिया उसकोजानतेहो और हेनिष्पापो मैंनेभी आपलोगों की अच्छी सेवाकरी ३ अथवा नहींकरी हेभाग्यवानों तुम सावधान लोगोंको वह क्षमाकरना योग्यहै जब दुर्योधनने इसनिष्कंटक राज्यको भोगा ४ वहां भी उसदुर्बुद्धी अभागेने तुम्हारा कोई अपराध तो नहींकिया उस दुर्मतिके अपराध राजाओं के अपमान ५ और अपने करेहुये अन्यायसे यह बड़ाभारी युद्धहुआ सो मैंने यह शुभकर्म वा अशुभकर्म किया ६ उसको तुमलोगों को हृदयमें धारण नहीं करना चाहिये मैंने यही अंजुली बांधी है मैं वृद्धहूं नाशवान् सन्तानहूं दुखीहूं ७ प्रथम राजाओंकापुत्रहूं इससे मुझको विचारकर बनजानेकी आज्ञादो और महादुखी नाशमान सन्तान वृद्धा तपस्विनी ८ पुत्रोंके शोकसे पीड़ामान गांधारी मेरे साथमें तुमसे प्रार्थना करतीहै कि हम दोनोंको मृतकहुये पुत्र और वृद्धजानकर ९ आज्ञादो तुम्हारा भलाहोय हमतुम्हारीशर-

गाहैं कि यह कुन्तीका पुत्र कौरव राजायुधिष्ठिर १० आनन्दके-
और आपत्तिके दोनों समयोंमें तुमसबसे देखनेकेयोग्यहै वहकभी
आपत्ति को नहीं पावेगा ११ इसके वह चारोंऔर भाई मन्त्री हैं
जो कि बडेतेजस्वी लोकपालों के समान सब धर्म अर्थको देखने
वालेहैं जैसेकि सब जीवों समेत जगतके स्वामी भगवान ब्रह्माजी
पोषणाकरतेहैं उसीप्रकार यहमहातेजस्वी युधिष्ठिर आपकापालन
करेगा१२।१३मुझको अवश्य कहनायोग्यहै इसीहेतुसेतुमसे कह-
ताहूं कि मैंने यह धरोहडरूप युधिष्ठिरआप सबको सिपुर्दकिया
है १४ मैंने आपलोगोंकोभी इस बीरके धरोहड रूप कियाहै मेरे
उन पुत्रोंसे जो कुछ आपका अपराधबनाहै अथवा मेरे अन्य २
नातेदारोंने जो तुम्हारा अपराध कियाहै उसको आपलोगक्षमा
करने के योग्यहो आप लोगोंने पूर्व्व कभी किसी दशामें भी
मुझपर क्रोधनहीं कियाहै अत्यन्त गुरुभक्तरूप आप लोगोंसेयह
मेरी प्रार्थनाहै कि मैं गान्धारी समेत उन बुद्धिसे व्याकुल लोभी-
स्वेच्छाचारी पुत्रोंके कारणसे तुम सबसे प्रार्थना करताहूं१५।१६।
१७उसके इस वचनको सुनकर नेत्रोंसे अश्रुपात युक्त उन पुरवासी
और देशवासियोंने कुछनहींकहा और एकने दूसरे कोदेखा १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि हेकौरव उसवृद्ध राजासे कहेहुये वह पुर-
बासी और देशवासी अचेतोंके समान होगये १ उन मौन और
अश्रुपात करनेवाले लोगोंसे राजा धृतराष्ट्रने फिर यह बचन कहा
कि हे बड़े साधूलोगो इस धर्म पत्नी समेत मुझ नानाप्रकार के
करुणा और बिलाप करनेवाले नाशमान सन्तान वृद्ध राजाको
जानेकेलिये आज्ञादो २। ३ हे धर्मज्ञलोगो आप पिता व्यासजी
और धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिरने वनमें निवास करनेके निमित्त आ-
ज्ञादीहै ४ हे निष्पापो सोमैं बारंबार शिरसे झुकताहूं कि गा-

न्धारी समेत मुझको आज्ञादो ५ वैशंपायनबोले कि इकट्ठेहोने-वाले वह सब कुरुजांगल देशी उस धृतराष्ट्रके उन करुणा युक्त वचनों को सुनकर रुदन करनेलगे ६ शोकसे दुखी वह लोग दा-हिने हाथों से मुखोंको ढककर एक मुहूर्त्ततक माता पिताके समान रोदन करनेवाले हुये ७ वह धृतराष्ट्रके वियोग से उत्पन्न दुखको शून्य हृदयों में धारण करके अचेतोंकी समान होगयेतब उन्होंने राजा धृतराष्ट्र के वियोग जन्य दुःखको सहकर धीरे २ अपने २ मतोंको वर्णन किया ८। ९ हेराजा इसके अनन्तर वह सब परस्पर सलाह करके और अपने सबवचनोंको एकब्राह्मण में नियत करके राजाको उत्तर देनेवालेहुये १० हे राजा फिर अच्छा आचरण रखनेवाला वेदपाठी सबका अंगीकृत अपने नि-यत कर्म में सावधान बहुत ऋचा जाननेवाले शांबनाम ब्राह्मणने कहना प्रारंभ किया ११ हे महाराज उससभाको पूजकर और प्रसन्न करके उसतत्काल उत्तर देनेवाले बुद्धिमान वेदपाठी ब्राह्मणने राजासे कहा १२ हेवीर राजा धृतराष्ट्र इन सब मनु-ष्योंके सबवचनमेरे सिपुर्द हुयेहैं मैं उनको कहताहूं आप उनको सुनिये १३ हेराजेंद्र जैसाआपने कहावह सब निस्सन्देह उसी प्र-कार काहै इससें कोईबात मिथ्या नहींहै हमारी मित्रतापरस्पर है १४ इसवंशके राजाओंमें कभीकोई ऐसाराजा नहींहुआहै जो प्रजाका दुखदायी होकर अप्रिय हुआहोय १५ आप हम को मातापिता और भाईके समान पालन करतेहो राजादुर्योधननेभी कोई अयोग्य कर्म नहीं किया १६ हेमहाराज सत्यवती के पुत्र धर्मात्मा व्यासमुनि जैसाकहतेहैंआपउसी प्रकारकरें हमारीबुद्धि से वहीबड़ा कर्महै १७ हेराजा आपके सैकड़ों गुणोंसे संयुक्तआप से जुदे होकर हमलोग बहुत कालतक शोक से पूर्णरहेंगे १८ हे राजाजैसे कि हमराजाशान्तनु चित्रांगद और भीष्मकी सामर्थ्य से रक्षित आपके पिता विचित्रवीर्य्यसे रक्षितहुये १९ और आप केस्मरण करने समेत राजा पांडुसे पोषण कियेगये उसीप्रकार

राजा दुर्य्योधन सेभीरक्षित होकरपोषण पानेवालेहुये २० हेराजा आपके पुत्रदुर्य्योधननेथोड़ासाभी अप्रियनहींकिया और हमलोगों नेभी उसराजासे विश्वासकिया जैसा कि पितामें करतेहैं २१ हम जैसे अच्छीरीति से रहतेथे वहसब आपको बिदितहै हेराजाउसी प्रकार धैर्य्यमान बुद्धिमान राजायुधिष्ठिर से पोषण कियेहुये हम लोगहजारोंवर्षतक सुखपावेंगे यहबड़ीदक्षिणादेनेवाला धर्मात्मा युधिष्ठिर नीचेलिखेहुये राजाओंकी रीतियोंपरचलताहै अर्थात् जैसे आपके वृद्ध पवित्रकर्मी प्राचीन राजऋषि कुरु, संवरण, बुद्धिमान भरतादिकथे उसीप्रकार २२।२३। २४ हे महाराज इस राजामेंभी कोईजरासीभी अयोग्य बात कहनेको नहींहै और इस बिरादरीके नाश दुर्य्योधनके विषयमें जो कहा जाताहै २५।२६ हे कौरवनन्दन उस विषयमें आपकोभी समझाऊंगा वह दुर्य्योधन का कर्मनहींहै और न वह आपकी ओरसे किया गयाहै और न वहकर्ण और शकुनिसे कियागयाहै जो कौरवोंने नाशको पाया उसको हम होनहार और ईश्वरकीइच्छा जानतेहैं उसका रोकना असंभव है क्योंकि उपायों से भावीका रोकना असंभव है २७।२८ हे महाराज अठारह अक्षौहिणी सेना इकट्ठीहुई और अठारहही दिनके मध्यमें कौरवोंके इन उत्तम शूरबीरोंके हाथोंसे मारीगई उनके नाम भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्यादिक, महात्माकर्ण, बीरसात्यकी, धृष्टद्युम्न २९। ३० भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव नाम चारोंपांडव हेराजा होनहारकी प्रबलताके बिना किसी दूसरे से यह बिनाश नहींहुआ ३१ क्षत्रीको मुख्य करके युद्धके समय अवश्यही नाशकरना योग्य और क्षत्रीबांधवों को युद्धमें मरनाही योग्यहै ३२ विद्या पराक्रम और भुजबल से युक्त उनपुरुषों के हाथसे यह संपूर्ण पृथ्वीके लोगघोड़े रथ और हाथियों समेत नाश कियेगये ३३ महात्मा राजाओंके मरनेमें आपकापुत्र कारण नहीं है न आप सेनाके लोग न शकुनि और न कर्णहै ३४ जो श्रेष्ठ कौरव और हजारों राजा मारेगये उसको होनहार से

कियाहुआ मानों इसमें कौनक्या कहनेके योग्यहै ३५ आप इस संपूर्ण जगतके प्रभुऔर गुरुहो इसीहेतुसे हमआपके पुत्रकोधर्म्म-ज्ञजानतेहैं ३६ वहराजाअपने साथियोंसमेत बीरलोकोंको पावै औरऋषियोंसे आज्ञाहोकर सुखसे स्वर्गमें आनन्दकरै ३७ आप धर्म में स्थितिको करकेसब धर्मऔर वेदोंके पुण्यको प्राप्तकरोगे आप अच्छीरीतिसे श्रेष्ठव्रतकरनेवालेहो आपकी ओरसे हमको पांडवोंपर दृष्टिकरनेवाला करनावृथाहै क्योंकिजबवह स्वर्गकी भी रक्षाकरनेको समर्थ हैं फिर इस पृथ्वीकी रक्षाकरना उनको कितनी बड़ीबातहै ३८।३९ हे कौरवकुलमें श्रेष्ठबुद्धिमान् धृतराष्ट्र सब प्रजासुख दुःखोंमें उनपांडवोंके साथीहोगी क्योंकि वह सब पांडवसुन्दर स्वभावरूप भूषणोंसे अलंकृत हैं ४० यहराजा युधि-ष्ठिर ब्राह्मणों के देनेके योग्य देवपूजा आदिक और बहिन बेटीको देनेके योग्य भरत आदिक और पूर्वके राजाओंके दिये हुये दानोंको नियतरखताहै ४१ यहबड़ा साहसी दूरदर्शी राजा युधिष्ठिर मृदुलस्वभाव इंद्रियोंका जीतनेवाला सदैव कुबेरकेसमान होकर बड़ेकुलीन बुद्धिमान् सन्धीरखने वालाहै ४२ फिरयहभर-तर्षभ सबका मित्रदयावान् पवित्र और बुद्धिमानहै सीधी दृष्टिसे देखताहै और पुत्रकी समान हमको पालताहै ४३ हेराजर्षि उसी प्रकार भीम और अर्जुन आदिकधर्म पुत्रके सत्संगसे इन मनुष्योंका अप्रिय नहींकरेंगे ४४ हे कौरव्य वहपुरवासियोंकी बृद्धिमेंप्र-वृत्त पराक्रमी महात्मा पांडवमृदुस्वभाव वालोंमें मृदु और तीक्ष्ण स्वभाववाले मनुष्योंमें विषधरसर्पके समानहैं ४५ इससमयकुन्ती द्रौपदी उलूपी औरसुभद्रा किसीदशामेंभी अप्रियनहीं करेंगी आपने जोयहप्रीति करीऔर युधिष्ठिरने जोउसकी वृद्धिकी उसको पुरवासी औरदेशवासी कभीनहींभूलेंगे ४६।४७ महारथी कुन्तीके पुत्र धर्मात्मा होकर अधर्मियोंकाभी पालनकरेंगे ४८ हेराजासो तुमयुधिष्ठिरकी ओरसेचित्तके खेदकोदूरकरके धर्मसंबन्धी कर्मोंकोकरो हेपुरुषोत्तम तुमको नमस्कारहै ४९ वैशंपायन बोले कि

उनसब मनुष्योंने उसके उसधर्मरूप औरगुणोंसे वचनोंकी बहुत प्रशंसाकरके उसको स्वीकार किया ५० तबधृतराष्ट्र ने उसवचन को बारंबार प्रशंसाकरके धीरेधीरे उनसब सेवकलोग और प्रजा आदिकोंको बिदाकिया ५१ हे भरतर्षभ उनसे अच्छीरीतिसे पूजित कल्याणरूपनेत्रोंसे देखेहुये हाथजोड़ेहुये उसधृतराष्ट्र ने उस सबजन समूहोंका पूजन किया ५२ फिरगान्धारी समेतनिजभवन में प्रवेशकिया और रात्रिके व्यतीतहोनेपर जोकियाउसकोआगेकहतेहैं ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर रात्रि व्यतीत होनेपर अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्रने बिदुरजी को युधिष्ठिरके स्थान पर भेजा १ सब बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महातेजस्वी उस बिदुरने उसधृतराष्ट्रकी आज्ञा से उस धर्मसे अच्युत राजा युधिष्ठिरसे यहबचन कहा २ कि हेराजा बनबास करनेकेलिये दीक्षितमहाराजा धृतराष्ट्र इससमीपहीवर्त्तमान कार्त्तिकी पूर्णमासी को बनमें जायगा ३ हेकौरव कुलभूषण वह कुछ अपना प्रयोजन चाहताहै और नीचे लिखे हुये मनुष्यों का श्राद्ध किया चाहता है महात्मा भीष्म ४ द्रोणाचार्य्य,सोमदत्त,बुद्धिमान बाह्लीक सब पुत्र और जो अन्य२ नाते रिश्तेदार मारेगये और जोतुम अंगीकार करतेहो तोराजा जयद्रथ काभी श्राद्ध करना चाहते हैं बिदुरजी के इस बचनको सुनकर प्रसन्न होकर युधिष्ठिरने ५।६ औरपांडवअर्जुनने उस बचनकी प्रशंसाकरी तबकठिन क्रोधयुक्त और दुर्योधनके कर्मको स्मरण करते महातेजस्वी भीमसेनने बिदुरजीके उसबचनको अंगीकार नहीं किया अर्जुन ने भीमसेन के उस चित्तके बिचारको जानकर ७। ८ और कुछ झुककर उस नरोत्तमसे यह बचन कहाकि हेभीमसेन बनके निवास करनेको दीक्षित हमारा वृद्धताऊ राजाधृतराष्ट्र ९ सब

नाते रिश्तेदारों का श्राद्ध किया चाहताहै हेमहाबाहु आपके पराक्रमसे उपार्जित हुये धनको भीष्मादिक के श्राद्ध में देनाचाहताहै १० आप उसको आज्ञा देनेको योग्यहो हेवीर अब वह राजा धृतराष्ट्र प्रारब्धसे प्रार्थना करताहै ११ जिसकी कि पूर्वसमय में हम प्रार्थना करतेथे समयकी विपरीतिताको देखो कि अन्य लोगोंके हाथसे जिसके पुत्रादिक मारेगये वह राजा धृतराष्ट्र संपूर्ण पृथ्वीका स्वामी होकर १२ बनको जानाचाहता है हेपुरुषोत्तम अब धनदेनेके सिवाय तेरा दूसरा बिचार मतहो १३ हेमहाबाहु इसके विशेष जोकोई कामहोगा वह महा अधर्म रूप और अपकीर्त्ति का देनेवाला होगा अपने बड़ेभाई राजा युधिष्ठिरकी शिक्षालो १४ हेभरतर्षभ तुम देनेके योग्यहो लेनेके योग्य नहींहो धर्मराजने भी इस प्रकारसे कहनेवाले अर्जुनकी प्रशंसा करी १५ तब क्रोधयुक्त भीमसेनने यह बचन कहाकि हेराजा हम भीष्मजी का श्राद्ध करेंगे १६ राजा सोमदत्त, भूरिश्रवा, राजर्षि बाह्लीक, महात्मा द्रोणाचार्य्य १७ और अन्य २ सब नातेदारोंका श्राद्धकरेंगे कुन्ती कर्णका श्राद्ध करेगी हेपुरुषोत्तम वह राजा धृतराष्ट्र श्राद्ध नकरे १८ यह मेरामतहै कि हमारे शत्रु प्रसन्न न होंय दुर्योधनादिक सब भाइयोंको कठिनदुःख प्राप्तहोय जिन कुलकलंकियों से यह संपूर्ण पृथ्वी के लोगों का नाश हुआ तुम बारह वर्षकी भूतता १९। २० और द्रौपदीका शोक बढ़ाने वाले महाकठिन गुप्त निवासका दुःख भूलकरके कैसे मौनहो तब राजाधृतराष्ट्र की प्रीति कहांथी जबकि उसने हमारा तिरस्कार कियाथा २१ काले मृग चर्म से गुप्त शरीर भूषण वस्त्रों से रहित द्रौपदी समेत तुम राजाके पासगये २२ तब द्रोणाचार्य्य भीष्म और सोमदत्त कहांथे जहां तुमने तेरह वर्षतक बनमेंबनके फल मूलोंसेही अपनानिर्बाह किया २३ तब ताऊ तुमको पितापनेकी प्रीतिसे नहीं देखता था हे राजा क्या आपने उनबातोंको विस्मरण करदिया जो इस कुल कलंकी २४ दुर्बुद्धीने विदुरजीसे पूछाथा कि द्यूतमें क्याजीता यह

भीमसेनके बचन सुनकर घुडकतेहुये कुन्तीकेपुत्र राजा युधिष्ठिर ने भीमसेनसे कहा कि अब मौनहोना चाहिये २५॥

इति श्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिएकादशोऽध्याय: ११॥

बारहवां अध्याय॥

अर्जुनबोले हे भीमसेन तुममेरे बड़े भाई और गुरुहो इसहेतुसे मैं दूसरी बात कहनेको साहस नहीं करसक्ता राजऋषि धृतराष्ट्र सब दशामें हमको पूजनके योग्यहैं १ मर्य्यादापर चलनेवाले साधु श्रेष्ठ लोग दूसरेके अपराधोंको स्मरण नहीं करते हैं किन्तु उनके उपकारोंको याद करते हैं २ कुन्तीके पुत्र धर्मात्मा युधि-ष्ठिरने उस महात्मा अर्जुन के बचनको सुनकर बिदुरजीसे कहा कि हे बिदुरजी आपमेरे बचनसे राजा धृतराष्ट्रको यहबचनकहो कि वह जितने धन से पुत्रोंका श्राद्धकरना चाहताहै मैं उतनाही देताहूं ३।४ कृतकृत्यकर्म भीष्मादिक सबनाते रिश्तेदारों के श्राद्ध को मेरे खजानेसेदो और भीमसेन चित्तसे दुखीनहोय ५ बैशंपायन बोले कि धर्मराजने यहकहकर उस अर्जुनकी प्रशंसा करी फिर भीमसेनने तिरछी निगाह से अर्जुनकी ओर देखा ६ फिर उस बुद्धिमान् युधिष्ठिर ने बिदुरजीसे यह बचनकहा कि वहराजा धृतराष्ट्र भीमसेन के ऊपर क्रोध करनेको योग्य नहीं हैं ७ यह बुद्धिमान भीमसेन बर्षा बरफ और घामादिक अनेक प्रकार के दुक्खोंसे बनमें दुखितहुआथा वहसब आप जानतेहैं ८ हेभरतर्षभ आप मेरे बचनसे राजा धृतराष्ट्र से कहो कि जो २ उनको इच्छा है वह सब मेरे खजानेसे लो यह अत्यन्त दुखी भीमसेन जो ईर्षा से क्रोध करता है उसको दिलमें कभी न शोचना चाहिये ऐसा आपको समझनायोग्यहै ९।१० जोकुछ धनमेराहै और अर्जुनके घरमें है उसका स्वामी महाराजहै उसराजाको इसप्रकारसे सम-झाना योग्यहै कि अब वह राजा बेदपाठी ब्राह्मणों को दानकरे और चित्तकी इच्छानुसार खर्चकरे और अपने पुत्र बांधवों की

अक्षणताको पाओ ११।१२ हेराजा यह मेरा शरीर और सब धन भीआपकेआधीनहै उसको निस्संदेह अपनाही जानिये १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि राजासे इसप्रकार कहेहुये बुद्धिमानों में श्रेष्ठ विदुरजीने धृतराष्ट्रके पासजाकर इसप्रकार बड़ा सार्थकशब्द कहा १कि हेराजा आपका बचन प्रारंभसेही राजा युधिष्ठिरको सुनाया उस बड़े तेजस्वीने सुनकर आपके बचनकी प्रशंसाकरी२ महातपस्वी अर्जुन घरों को और उसके घरमें जो धनहै उसको और शुद्ध प्राणोंको भी आपकी भेट करताहै ३ हे राजऋषि आपका पुत्र धर्मराज भी राज्य प्राण धन और जो २ अन्यप्रकार की वस्तु हैं उन सबको आपकी भेट करता है ४ बहुत दुःखों को स्मरण करके श्वासलेते महाबाहु भीमसेन ने दुःख से अंगीकार किया ५ हे राजा वह महाबाहु भीमसेन उस धर्मके अभ्यासी राजायुधिष्ठिर और अर्जुनसे शिक्षा दिया गया और आपकी आज्ञापालनमें भी नियतकियागया धर्मराजनेआपसेकहाहै कि भीमसेनने उसशत्रुताको स्मरणकरके जोन्यायकेविपरीतबार्त्तालाप करीथीआपको उसपरक्रोध न करना चाहिये ६।७ हेराजाक्षत्रियोंका यहधर्म ऐसाहीहै यह भीमसेनयुद्ध औरक्षत्रीधर्म में प्रवृत्त है अर्जुनने बारम्बार भीमसेनके विषयमें कहाहै कि हे राजा मैं प्रार्थनाकरताहूं कि प्रसन्न हूजिये यहांहमारा जो धनहै उसकेआप स्वामीहैं ८ ९ हेभरतबंशी राजाधृतराष्ट्र आप उसधनको जितनाचाहतेहो उतनादान करो तुमइस राज्यकेऔर प्राणोंकेभी स्वामीहो१०वह कौरवोत्तम यहांसे रत्न गौ दासी दास भेड़ बकरी आदिको ब्राह्मणोंके देनेके योग्य देवपूजा आदिक और पुत्रोंके श्राद्धादिकोंमें ब्राह्मणोंके अर्थदानकरो हेराजा तुमजहां तहांदीन अन्धे औरदुखीलोगोंकोभी११।१२बहुतसी खानेपीनेकी वस्तुओं

से पूर्णसभा अर्थात गरीबखाने बिदुरजीके द्वारावनवाओ गौओं की जलप्रपा अर्थात प्याऊ और नाना प्रकारके अन्य पुरायार्थ कार्योंकोभी करो १३ राजा युधिष्ठिर और पांडव अर्जुनने मुझसे यहबारंबार कहाहै कि यहांजो२करनायोग्यहै उसको बहुतशीघ्रतासे आपकरनेको योग्यहैं१४हे जनमेजय बिदुरजीके इसप्रकार से कहनेपर धृतराष्ट्रने उनपांडवोंको आशीर्वाददेकर कार्त्तिकमहीनेकी पूर्णमासी के दिन महादान करने का चित्तसे बिचार किया १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले हेराजा बिदुरसे इसप्रकार कहेहुये राजाधृतराष्ट्र युधिष्ठिर और अर्जुनके कर्मपर प्रसन्नहुये१इसके पीछेभीष्मपितामह और अपने सब पुत्र इष्ट मित्र नातेदार आदिकों के निमित्त ऋषियों में श्रेष्ठ श्राद्धके योग्य हजारों ब्राह्मणों को बिचारकर२ खाने पीनेकी वस्तुओं को तैयार कराके सवारी पोशाक सुवर्ण मणि रत्न दासी दास भेड़ बकरी ३ पट वस्त्र ऊर्णवस्त्रादिक गांव, क्षेत्र, भेड़,बकरी, और भूषणोंसे अलंकृत हाथी घोड़े कन्या और श्रेष्ठ स्त्रियोंको वर्त्तमानकरके ४ उस श्रेष्ठ राजाने नामलेलेकर सब के निमित्त श्राद्ध दान दिया द्रोणाचार्य्य भीष्मपितामह सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ आदिक सब नातेदार और राजादुर्योधन आदिक सब पुत्रोंका पृथक् २ नामोच्चारण करके श्राद्ध किया तब बहुत धनकी दक्षिणा रखनेवाला और अनेक धन रत्नोंकेसमूहोंसे संपूर्ण वह श्राद्धयज्ञ युधिष्ठिरकी सलाहसे जारीहुआ जिसमें सांख्यक और लिखनेवाले लोगोंने युधिष्ठिरकी आज्ञा से बारंबार उसराजासेपूछा है।७।८ कि आप आज्ञा दीजिये कि इन ब्राह्मणों को क्या दान कियाजाय वहसबयहां वर्त्तमानहैं तब आज्ञाहोनेपर दान कियागया बुद्धिमान राजायुधिष्ठिरकीआज्ञा से सौरुपयेदेने

के स्थानपर हजार और हजारके स्थान में दशहजार दानदिये जातेथे ६।१० इसप्रकार धनरूपी धाराओं से वर्षा करनेवाले उस राजरूपी बादलने वेदपाठी ब्राह्मणोंको ऐसे तृप्त किया जैसे कि वर्षाकरनेवाला बादल खेतीको तृप्तकरताहै ११ हे बड़े बुद्धिमान् जनमेजय इसके पीछे उसश्राद्ध यज्ञमें राजाधृतराष्ट्रने सबवर्णोंको भोजनमें खानेपीने कीवस्तु और रसोंके समूहोंसे तृप्तकिया १२ बस्त्रधन और रत्नोंकी लहर रखनेवाले मृदंगों से शब्दायमान गौ घोड़ेरूप मगरोंकी लौटपौट से युक्तरत्नोंकी बड़ीखान रखने वाले १३ माफकियेहुये गांवरूप डीपों समेत मणि सुवर्णरूपीजलसेपूर्ण धृतराष्ट्ररूप नौकासे संयुक्त उसमहासागरनेजगतको ब्याप्तकिया १४ हेमहाराज इसप्रकार अपनेपुत्र पौत्र पितर और गांधारी समेत अपनेभी श्राद्धादिकोंको किया १५ जबवह बहुतदानों को देताहुआ थकगया तब उसराजाने दानयज्ञकोसमाप्तकिया १६ इस प्रकार उसराजा धृतराष्ट्रने बड़ा दानयज्ञ किया जोकि नट नर्त्तकोंके गान नृत्योंसे और बाजों से युक्त और बहुतसी खाने पीनेकी बस्तुओं समेत दक्षिणारखने वालाथा १७ हेभरतर्षभ इस प्रकार राजा धृतराष्ट्र दशदिन तक दान देकर पुत्र पौत्रोंसेअऋणी होगया १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्वणिचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसके अनन्तर प्रातःकाल के समय बनबास में समय पानेवाले बुद्धिमान् अम्बिका के पुत्रधृतराष्ट्रनेवीरपांडवों को बुलाकर १ गान्धारी समेत होकर बिधिपूर्व्वक उनकोआशीर्वादिया कार्त्तिककी पूर्णमासीकी ब्राह्मणोंसेइष्टीयज्ञकराके २ अग्निहोत्रको आगे करके बल्कल और मृगचर्मों से अलंकृत शरीर बांधवों से घिरेहुये राजा धृतराष्ट्र भवनसे बाहर निकले ३ तब कौरव और पांडवोंकी स्त्रियां और जो कौरव बंशीअन्य २

स्त्रियांथीं उनके बड़े शब्दराजा धृतराष्ट्र के बनजानेके समयहुये४ फिर वह नरेन्द्र राजा धृतराष्ट्र खील और बिचित्र पुष्पोंसेउसघर कोपूजकर और सेवकोंके समूहों को पारतोषिक आदिसेप्रसन्न करके और उनको बिदाकरके यात्रा करनेवाला हुआ ५ इसके पीछे हाथजोड़ अश्रुओंसे युक्त गद्गदकण्ठ राजा युधिष्ठिर उच्च स्वरसे बड़े शब्दको करके अपने साधुतासे बोले कि कहां जाते हो यह कहकर शोकसे पृथ्वीपर गिरपड़े ६ उस प्रकार कठिन दुःखसे संतप्त बारंबार श्वासाओंको लेता भरतर्षभ अर्जुन युधिष्ठिर सेबोलाकि ऐसा मतकरो यहकहकर और पकड़कर बड़े दुःखो के समान पीड़ामान हुआ ७ बीर भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, बिदुर, संजय, युयुत्सु, कृपाचार्य्य, धौम्य, और अश्रुओंसे गद्गद कण्ठ बहुतसे अन्य २ ब्राह्मणभी उसके पीछे चले ८ कुन्ती और कन्धेपर हाथको सहती नेत्रबांधेहुये गान्धारीभी साथचली प्रसन्न चित्त धृतराष्ट्र गान्धारीके कन्धेपर हाथरखकर चलदिये ९ उ-सीप्रकार कृष्णाद्रौपदी, सुभद्रा, बालक पुत्ररखनेवाली उत्तरा, उलू-पी चित्राङ्गदा, और जो२ अन्यस्त्रियांथीं वह सबभी अपने बन्धु-जनोंके साथ राजा धृतराष्ट्रके साथचलीं १० हे राजा तब उन दुःखसे रोनेवाली स्त्रियोंके शब्द कुररीनाम पक्षिणी के समान उच्चस्वरसे प्रकट हुये उसके पीछे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों की स्त्रियां चारोंओर से दौड़ीं ११ हे राजा उसके यात्रा करने पर हस्तिनापुर में पुरबासियों का समूह ऐसे दुःखी हुआ जैसे कि पूर्व्वसमय में द्यूतहोने के समय पांडवों के बन जानेपर कौर-वीय सभाको दुःख उत्पन्न हुआथा १२ हे नरेन्द्र उस नगर में जिन स्त्रियोंने कभी चन्द्रमा और सूर्य्यको भी नहीं देखाथा वह स्त्रियां कौरवेन्द्र धृतराष्ट्रके बन जानेपर शोकसे पीड़ामान होकर राजमार्गपर आ पहुंचीं १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५॥

———

सोलहवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे राजा इसकेपीछे महलोंकी अटारियोंपर और पृथ्वीपर स्त्रीपुरुषोंके बहुतबड़े शब्दहुये १ वह कम्पायमान हाथ जोड़हुये बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र उन स्त्री पुरुषोंके जमघट रखनेवाले राजमार्ग की बड़ी कठिनतासे हस्तिनापुरके बर्द्धमान नाम द्वारमें होकर बाहर निकला उसने उन मनुष्योंके समूहोंको बारम्बार बिदाकिया २। ३ बिदुरजी और गोलगणाके पुत्र महा आमात्य सूत संजयने राजाकेसाथ बन जानेका समयजाना ४ राजाधृतराष्ट्रने महारथी कृपाचार्य्य और युयुत्सुको युधिष्ठिरके सुपुर्द करके लौटाया ५ तब पुरबासियों के समूहोंके लौटनेपर धृतराष्ट्रकी आज्ञानुसार राजा युधिष्ठिरने स्त्रियों समेत लौटना चाहा ६ उसने उस बनको जानेवाली कुन्तीसे यह बचनकहा कि मैं राजाके साथ जाऊंगा आप लौटिये ७ हे रानी बधुओं समेत तुम नगरजानेको योग्यहो तपस्वियोंके ब्रतमें निश्चय करनेवाला यह धर्मात्मा राजा बनकोजाय ८ तब धर्मराजसे इसप्रकार कही हुई अश्रुओंसे ब्याकुलनेत्र कुन्ती गान्धारीको पकड़कर चलीगई अर्थात् लौटनेको अंगीकार नहींकिया ९ कुन्तीबोली हे महाराज कहीं सहदेवके पोषणमें भूलमत करना हेराजा यह सदैव मुझसे और तुझसे प्रीति रखनेवालाहै १० युद्धोंमें मुखन फेरनेवाले कर्ण को सदैव स्मरण करना उससमय वहबीर युद्धमें दुर्बुद्धितासे मारा गया ११ निश्चय करके मुझ अभागिनी का हृदय कठोरहै जो सूर्यसेउत्पन्न अपनेपुत्रको मुझ न देखनेवालीकायहहृदय सौटुकड़े नहीं होताहै १२ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले ऐसीदशामें मुझसे क्या करना संभवहै यह मेरा बड़ा अपराधहै कि इस अपनेसूर्य्य पुत्रको मैंने प्रकट नहींकिया १३ हे शत्रुओंके मारनेवाले बीर युधिष्ठिर भाइयों समेत तुम उस सूर्य्य पुत्रके निमित्त उत्तम दान दो १४ हे शत्रु संहारी तुमको सदैव द्रौपदीके प्रिय करनेमें प्रवृत्त

होना योग्य है हे कौरवों के उद्धार करनेवाले यह भीमसेन अर्जुन नकुल १५ तुमसे विश्वासयुक्त होकर पोषण करने को योग्यहैं हे युधिष्ठिर अब तेरे ऊपर कुलकाभार नियतहै और मैं धूल मट्टीसे लिप्तशरीर तापसीरूप होकर अपने सासससुरके चरणोंकीसेवा करतीहुई गान्धारीके साथवन में निवास करूंगी १६ वैशंपायन बोले कि इसप्रकार आज्ञापानेवाले धर्मात्मा बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरने भाइयोंसमेत व्याकुलहोकर और कुछनहींकिया फिर वह दुःखी और चिन्तासे शोकयुक्त धर्मराज युधिष्ठिर एकमुहूर्त्तध्यान करकेमातासेबोला १७।१८ तुमने यह क्या निश्चयकियाहै तुमको ऐसा कहनायोग्य नहींहै मैं तुमको आज्ञानहींदेताहूं क्योंकि तुम कृपाकरनेके योग्यहो १९ हे प्रियदर्शन तुम पूर्व्वसमय में शत्रुकी सन्मुखतामें उत्सुक हमलोगोंको प्रतीकारके बचनोंसे उत्साहदिलाकर अब हमारे त्यागकरनेके योग्य नहींहो २० मैंने नरोत्तम बासुदेवजीसे आपकेबिचारको सुनकर और राजाओंको मारकर इसराज्यकोपायाहै२१वह आपकी बुद्धिकहांहै जो अब आपकी यह बुद्धिहै जिसको कि अभी मैंनेसुना क्षत्रीधर्म में नियतहोनेका उपदेशकरके अब उससे पृथक् करनाचाहतीहो २२ हे यशावन्ती तुम इन पुत्र बधुओंको और हमसमेत सबराज्यको छोड़कर किस प्रकारसे इस दुर्गम्यवनमें निवास करोगी अब मुझपर आपप्रसन्न होजावो २३युधिष्ठिरके इनबचनोंको जोकि नेत्रोंके जलसे मधुर और अज्ञात प्रयोजन वालेथे सुनतीहुई अश्रुओंसे पूर्ण वह कुन्ती चलदी तब भीमसेनने उससे यहकहा २४हे कुन्ती जब पुत्रसे विजय कियाहुआ यहराज्यभोगनेके योग्यहै और राजधर्म्म प्राप्तकरनेके योग्यहै तब तुमको ऐसीबुद्धिकहांसे उत्पन्न हुईहै २५ पूर्वसमयमें हमलोगोंको तुमने संसारके नाशके हेतु रूप क्योंकिये और अब किसहेतु से हमको त्यागकरके किसनिमित्तसे बनकोजाना चाहतीहो २६ आप हम बालकों को और शोक दुःख से पूर्ण दोनों माद्री के पुत्रों को बनसे नगरमेंक्यों लाई २७ हे यशावन्ती माता

प्रसन्न हूजिये अब तुम बनको मतजावो हे माता कुछ कालतक पराक्रमसे इकट्ठे कियेहुये युधिष्ठिर के शुद्ध धनको भोगो बनमें निवास करनेकेलिये निश्चय करलेनेवाली वह प्रीतिमान कुन्ती शीघ्रतासेचली और बहुतप्रकारके बिलापकरनेवाले पुत्रोंकेबचनों को नहीं अंगीकारकिया २८।२९ तब बिपरीतरूपरोतीहुई द्रौपदी सुभद्रासमेत उस बनबासकेलिये जानेवाली कुन्तीकेपीछे चली ३० बनबासका निश्चय करनेवाली बड़ीबुद्धिमान अपने सब पुत्रोंको बारम्बार देखती और रोतीहुई वह कुन्ती चलदीनी ३१ पांडव अपनी सबस्त्रियों और सेवकोंसमेत उसके पीछेचले फिर उसने अपने नेत्रोंके जलको रोककर पुत्रोंसे यह बचनकहा३२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

कुन्तीबोली हे बीरपांडवो यहऐसाहीहै जैसा कि तुम कहतेहो हे राजाओ मैंने पूर्वसमयमें तुम पीड़ामानोंके साहसोंकी वृद्धिकी१ द्यूतखेलनेमें राज्यहारजानेवाले सुखसेरहित और बिरादरीवालों से पराजित तुम लोगों को साहसदिया २ हे पुरुषोत्तमो मैंने यह शोचकर कि पांडुकी सन्तान किसीप्रकारसे नाशको न पावे और तुम्हारी शुभकीर्त्तिका क्षय न होय इसहेतुसे तुमको क्षत्रीधर्म पर प्रवृत्त किया ३ तुम सब इन्द्रके समान और देवताओंके समतुल्य पराक्रमी हो दूसरोंका मुख देखनेवाली न होजाऊं इसप्रकारका बिचारकर मैंने वह कर्मकिया ४ धर्मधारियोंमेंश्रेष्ठ इन्द्रकीसमान तुम राजालोग किसप्रकारसे दुःखी न होते यह बिचारकर तुम सबको साहस दिलवाया ५ दशहजार हाथी के समान बिख्यात पराक्रमी यह भीमसेन नाशको नहीं पावे यह शोचकर मैंने सदैव उत्साहदिलाया ६ उसीप्रकार यह भीमसेनसे छोटा इन्द्रके समान अर्जुन नाशको न पावे यह शोचकर उत्साह दिलाया ७ इसी प्रकार यह दोनोंगुरुभक्त नकुल और सहदेव किसीप्रकारसे क्षुधा

से पीड़ित न होय यहशोचकर मैंने उत्साह दिलाया ८ यह बड़ी श्यामा दीर्घ नेत्रवाली द्रौपदी सभाके मध्यमें निरर्त्थक दुःखित न होय यहशोचकर वह कर्मकिया ९ हे भीमसेन जब दुश्शासन ने अज्ञानतासे तुम्हारेदेखते इसद्यूतमेंहारीहुई अपवित्र केलेकेसमान कम्पायमान रजस्वला द्रौपदी को १० दासीके समानखेंचा तबहीं मुझको बिदित होगयाथा कि यह घराना नाश होनेवालाहै ११ जबहीं नाथको चाहनेवाली द्रौपदीने कुररीकेसमान बिलापकिया तब मेरे सशुर आदिक कौरवलोग ब्याकुल हुये १२ हे राजा जब इसद्रौपदीकी चोटीको उसपापीदुश्शासनने पकड़ाथा उसीसमयमें अचेत होगईथी १३ तब मैंने तुम्हारा तेज बढ़ानेके लिये उनप्रती-कार अर्थात् बदलेके बचनोंसे तुमको उत्साह दिलाया हे पुत्र इन सब बातोंकोजानो १४ पांडुका यहराजा और बंशमें मेरे पुत्रोंको प्राप्त होकर किसी प्रकारसे नाश न होय इसहेतुसे हे पुत्रो मैंने तुमको उत्साह दिलाया १५ हे कौरवो जिनराजाओंके कारणसे कुलकानाशहोताहै वह राजालोग अपने पुत्रपौत्रोंसमेत शुभलोकों को नहीं पाते हैं १६ हे पुत्रो मैंने पूर्व्व समय में अपने पतिके बड़े२ राजफलों को भोगा है बड़े दानदिये और बिधिपूर्व्वक अमृतपान किया १७ मैंने अपने फलके बदलेकेलिये उनबचनों से बासुदेवजी को नहीं चलायमान किया वह कर्म्म मैंने केवल बंशकी रक्षाके निमित्त किया १८ हे पुत्रलोगो मैं पुत्रोंसे बिजय कियेहुये लोकों को नहींचाहतीहूं १९ हे धर्मराज मैं अपने तपकेद्वारा अपने पतिके शुभलोकों को चाहतीहूं हे युधिष्ठिर मैं इनबनबासी सास ससुरकी सेवाकरके तपसे अपने शरीरको शुष्क करूंगी २० हे कौरवोत्तम तुम भीमसेनादिकों समेतलौटो तेरी बुद्धि धर्म्ममें नियत होय और तेरा चित्त उत्साह युक्त होय २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७॥

—※—

अठारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे राजाओं में श्रेष्ठ वह निष्पाप लज्जायुक्त पांडव कुन्तीका बचन सुनकर द्रौपदी समेत लौटे १ इसके अनंतर इसप्रकार जानेवाली उस कुन्तीको देखकर रुदन करनेवाली सब स्त्रियोंके बड़े शब्दहुये २ तब पांडव राजाकीपरिक्रमा और दंडवत करके कुन्तीकोभी न लौटाकर आपलौटआये ३ फिर महातपस्वी अंबिकाके पुत्र धृतराष्ट्र ने गांधारी और बिदुरको प्रत्यक्ष सन्मुख और खड़ा करके यह बचन कहा ४ कि बहुत श्रेष्ठहै कि युधिष्ठिरकी माता देवी लौटजाय क्योंकि जैसा युधिष्ठिरने कहाहै वह सबसत्यहै कौनसी स्त्रीपुत्रोंके इस बड़े फलरखनेवाले महाऐश्वर्यको त्यागकर अज्ञानोंके समान पुत्रोंको तर्क करके दुर्गम्य बनकोजातीहै ५।६ अब इसराज्यमेंनियतहोकरकुन्तीको बड़ीतपस्याकरना और बड़े दान ब्रतादिकोंकाकरना संभवहै मेरे बचनकोसुनो ७ हेधर्मज्ञ गान्धारी मैं इसबधूकी सेवासे बहुत प्रसन्नहूं इसलिये तुम इसको आज्ञादेने के योग्यहो ८ राजाके ऐसे बचन सुनकर गान्धारीने राजाका वह सब बचन और मुख्यता से युक्त अपना बचन उस कुन्तीसे कहा ९ परन्तु वह गान्धारी उसधर्म में प्रवृत्तचित्त पतिव्रता और बनबासके निमित्त निश्चयविचार नियतकरलेनेवाली कुन्तीके लौटानेको समर्थनहोंहुई १० तब कौरवीय स्त्रियां उसके उस निश्चय और दृढ़ बुद्धीपने को जानकर और लौटे हुये पांडवोंको देखकर रोदन करनेलगीं ११ तब बड़ा बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र उन पांडवों समेत सब बधू स्त्रियोंके लौट जानेपर बनको गया १२ उससमय अत्यन्त दुःखी और दुःखशोकसे पूर्ण वह सब पांडव स्त्रियों समेत सवारियोंके द्वारा अपने नगरमें आये १३ वह हस्तिनापुर नगर बालक बृद्ध और स्त्रियों समेत अप्रसन्न उत्साह से रहित के समान होगया १४ कुन्तीसे रहित सब पांडव उत्साह सेरहित बिनाक्रोध बड़े दुःखसेऐसे पीड़ामानहुये जैसे कि माताओं

से पृथक् बछड़े दुःखी और हिरासा होतेहैं १५ प्रभुधृतराष्ट्रने उस दिन बहुतचलकर गंगाजीके तटपर निवास किया १६ उस तपो वनमें जहांतहां वेदपारग ऋषियोंसे न्याय के अनुसार प्रकटहोने वाली अग्नियां शोभायमानहुईं १७ तबवह वृद्धराजाभी अग्निका प्रकटकरनेवालाहुआ हे भरतवंशी वहां जाकर उसराजाने अग्नि योंकी उपासनाकर विधिपूर्व्वक हवनकरके संध्यामें वर्त्तमानहुये सूर्य्यका उपस्थानकिया उसीप्रकार बिदुर और संजयने उस कौरव बीरराजाकी शय्याको कुशाओंसे तैयारकिया और उसी के पास गान्धारीकीभी शय्या बनाई—साधु ब्रतमें नियतयुधिष्ठिरकी माता कुन्ती गान्धारी के पासही सुखपूर्व्वक कुशासनपर बैठगई और बिदुर आदिक सब उनके पास बैठगये १८।१९।२०।२१ और जो याचक और ब्राह्मण साथमें थे वह भी अपने २ योग्य स्थानोंमें बैठगये उन्होंकी वह प्रीतिबढ़ानेवाली रात्रि ब्राह्मीनाम हुई जिसमें उत्तम ब्राह्मण पढ़ते थे और अग्नियां प्रकाशमानथीं फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दिनके पूर्व्वाह्न कालकी क्रिया संध्यादिकसे निबृत्तहो २२।२३ वह सब विधिके अनुसार अग्नि में हवनकर ब्रतकरनेवाले होकर उत्तरकी ओरको देखते क्रमपूर्वक चले २४ पुरवासी और देशवासियोंसे शोचित और आप शोचने वाले उनलोगोंका निवास प्रथम दिनमें बड़ा दुःखरूप हुआ २५॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि फिर बिदुरजीके मतमें नियत राजायुधिष्ठिरने श्रीगंगाजीके तटपर पवित्रलोगों के योग्यमहापवित्रस्थान पर निवास किया १ हे भरतर्षभ वहांबनवासी ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और शूद्रोंके बहुत समूह इसके पास आकर वर्त्तमान हुये उन्होंसे व्याप्त उस राजाने कथाओं के द्वारा उनको प्रसन्न करके और विधिके अनुसार पूजकर शिष्यों समेत बिदा किया २।३ फिर

उस राजाने सायंकाल के समय श्रीगंगाजी पर जाकर यशावन्ती गांधारी समेत विधि पूर्वक शौचक्रिया करके स्नानादिक किया ४ और बिदुर आदिक अन्य सबलोगोंने पृथक् २ तीर्थों पर स्नान करके सब जपादिक क्रियाओं को किया ५ हे राजा फिर कुन्ती उस स्नान कियेहुये वृद्ध सशुर और गांधारी को गंगा के किनारे पर लाई ६ वहां राजाके याचक लोगोंने वेदी तय्यारकरी तब उस सत्यसंकल्प राजाने उस वेदीपर अग्नि में हवनकिया ७ फिर वह नियमवान जितेन्द्री वृद्ध राजा धृतराष्ट्र अपने साथियों समेत गंगाकिनारेसे कुरुक्षेत्रको गया ८ उस बुद्धिमान राजाने वहांपर आश्रममें पहुंचकर शतयूपनाम राजऋषि कोपाया ९ हे शत्रुओंके जीतनेवाले वह राजऋषि केकयदेशोंका बड़ा राजाथा वह अपने पुत्रको राज्यदेकर बनबासीहुआ यह राजा धृतराष्ट्र उसके साथ व्यास आश्रम में गया वहां राजऋषि शतयूपने इस धृतराष्ट्रको विधिके अनुसार उपदेशकिया १०।११ तब उस कौरवनन्दन राजाधृतराष्ट्रने वहां दीक्षाको पाकर शतयूप के आश्रममें निवासकिया १२ हे महाराज तब बड़ेबुद्धिमान राजऋषिने व्यासजीकी सलाहसे बनबास संबंधी सब विधियोंको उस राजाके सन्मुख बर्णनकिया १३ तब उस बड़े साहसी राजाधृतराष्ट्रने इसप्रकार अपने समेत उन सब साथियों को तपसे संयुक्त किया १४ हे महाराज उसीप्रकार बल्कल मृगचर्म्म धारण करने वाली देवीगांधारी कुन्ती समेत राजाकेही समान ब्रत करनेवाली हुई हे राजा वह दोनों कर्म मन चक्षु और बाणीकेद्वारा इन्द्रियों केसमूह को रोककर उत्तम तपमें नियत हुईं १५।१६ जिसके शरीर में केवल अस्थि और चर्म शेष रहगया मांस शुष्क होगया उस जटा मृगचर्मधारी बल्कलसे गुप्तशरीर मोहसे रहित राजा ने वहां महर्षी के समान कठिन तपस्या को किया १७ तब धर्म अर्थ के ज्ञाता बुद्धिके स्वामी श्रेष्ठ घोर तपस्वी बाह्याभ्यन्तर से जितेन्द्री दुर्बलांग बल्कल चीरधारी बिदुरजीने संजय

समेत होकर उस राजा और गान्धारी की सेवाकरी १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनबोले कि फिर मुनियोंमें श्रेष्ठमहातपस्वी नीचेलिखे-हुये ऋषि राजाको देखनेकेनिमित्तआये नारद,पर्वत,देवलशिष्यों समेत व्यासजी,अन्य बहुतसे ज्ञानी सिद्ध वृद्ध और बड़ा धर्मात्मा राजऋषि शतयूप२हे महाराज कुन्तीने विधिके अनुसार उनका पूजनकिया वह तपस्वी भी उसकी सेवासेप्रसन्नहुये ३ हेतात वहां महात्मा राजा धृतराष्ट्र को प्रसन्नचित्त करते हुये उन महर्षियों ने धर्मरूपकथावर्णनकी ४ फिर सब वृत्तान्तोंके प्रत्यक्ष देखनेवाले देवऋषि नारदजीनेकिसीकथाके मध्यमें इसकथाकोवर्णनकिया५ नारदजीबोले कि शतयूपका पितामह श्रीमान् सहस्रचित्य नाम केकय देशियोंका राजाथा जो कि सब ओरसे निर्भयथा ६ वह धर्मात्माराजा सहस्रचित्य अपने बड़े पुत्र धर्मात्माके आधीन राज्य को करके वनमें यात्रा करनेवालाहुआ ७ उस महातेजस्वी राजाने प्रकाशमान तपके फलको पाकर इन्द्रलोकको पाया ८ हेराजा प्रथममहाइन्द्रके भवनमें जातेहुये मैंने वह राजा बहुतबार देखाजि-सकेपाप तपकेद्वाराभस्महोगये ९ उसीप्रकार भगदत्त का पितामह राजा शैलालय तपकेही बलसे महेन्द्र भवनकोगया १० हेराजेन्द्र उसीप्रकार वज्रधारीके समान राजा प्रसध्र,हुआ वह भी तपहीके द्वारा यहांसे स्वर्गकोगया ११ हेराजा इसी वनमें मांधाताके पुत्र राजा पुरुकुत्सने भी बड़ी सिद्धीको पाया १२ नदियोंमें श्रेष्ठ नदी नर्मदा जिसकी भार्य्याहुई वहराजा भी इसवनमें तपको तपकर स्वर्गकोगया १३ हेराजा राजाशशलोमा बड़ा धर्मात्माहुआ उसने इस वनमें अच्छे प्रकारसे तपस्या को करके स्वर्गको पाया १४ हेराजा तुमभी व्यासजीकी कृपासे इस दुष्प्राप्य तपोवनको पा-कर उत्तम गतिको पावोगे १५ और तपस्याके अनन्तर लक्ष्मीसे

संयुक्तहोकर गान्धारी समेत उन महात्माओं की गतिको पावोगे २६ हे महाराज इन्द्रके सन्मुख वर्त्तमान राजा पांडु सदैव तेरा स्मरण करताहै वह सदैव तुमको कल्याणसे युक्त करेगा२७ यह तेरी बधू यशवन्ती कुन्ती भी तेरी और गांधारीकी सेवासे पति की सालोक्यताको पावेगी १८ जोकि युधिष्ठिरकी माताहै और वह युधिष्ठिर सनातन धर्महै हेराजा हम दिव्यनेत्रोंसे इसबातको देखतेहैं १९ कि बिदुर इसमहात्मा युधिष्ठिरके रूपमें प्रवेशकरेगा और संजय उसके ध्यानसे स्वर्गकोजायगा २० वैशंपायनबोले कि महात्मा धृतराष्ट्र अपनी पत्नी समेत इस वर्णनको सुनकर प्रसन्न हुआ फिर उस बुद्धिमानने नारदजीके बचनोंकी प्रशंसा करके उनकी बड़ी पूजाकरी २१ हेराजा फिर सब ब्राह्मणोंके समूहोंने नारदजीका अत्यन्त पूजनकिया तब वह नारदजी राजा धृतराष्ट्र की प्रीतिसे बारंबार प्रसन्नहुये २२ वैशंपायनबोले कि बड़ेसाधू ब्राह्मणोंने नारदजीके बचनों की स्तुतिकरी तब राजऋषि शत-यूपने नारदजीसे यह बचन कहा २३ हे महातेजस्वी बड़ी कृपाहै कि भगवानकी ओरसे इस कौरवराज धृतराष्ट्र समेत इसके सब मनुष्योंकी और मेरी श्रद्धावृद्धि करीगई २४ हे लोकपूजित देव-ऋषि इस राजा धृतराष्ट्र की ओरसे कुछ प्रार्थना करनेकी इच्छा है उसको आपमुझसे सुनिये २५ आप दिव्यनेत्रोंके द्वारा सबमूल वृत्तान्तों के ज्ञाताहो हे ब्रह्मऋषि योगसे संयुक्त होकर आप मनुष्योंकी उन गतियोंको देखतेहो जो कि नानाप्रकार की हैं २६ हे महामुनि तुमने राजाओं की गति महाइन्द्र की सालो-क्यता वर्णन करी परन्तु तुमने इसराजाके लोक वर्णन नहीं किये २७ हे प्रभु मैं इस राजा का स्थान भी सुना चाहताहूं कि वह कैसाहै और तुमने कबदेखाहै उसको मूलसमेत मुझसे कहो २८ उसके इसप्रकारसे पूछनेपर दिव्यदर्शी महातपस्वी नारदजीने सभामें बैठकर सबका चित्त विनोदक वचनकहा २९ नारदजी बोले हेराजऋषि मैंने दैवइच्छा से इन्द्रलोक में जाकर

वहांपर शचीपति इन्द्र और राजा पांडुकोदेखा ३० हेराजा वहां पर इसकी उस कठिन तपस्याका प्रसंगहुआ जिसको कि यह तपताहै ३१ वहां मैंने निज इन्द्रके मुखसे यहसुना कि इसराजाकी अवस्थाके तीनबर्ष बाकीहैं ३२ फिर यह राजा धृतराष्ट्र गान्धारी समेत कुबेरके लोकको जायगा राजाओंकेराजा कुबेरजीसेसत्कार पाकर ३३ तपसे भस्मीभूत पापहोके प्रारब्धवान् दिव्य भूषणोंसे अलंकृत यह धर्म्मात्मा ऋषिपुत्र उस स्वेच्छाचारी बिमानकी सवारीसे ३४ अपनीप्रीति और अनुरागकेसाथ देवता गन्धर्ब और राक्षसोंके लोकोंमें घूमेगा जो आपने मुझसे पूछाहै ३५ इसीसेमैंने देवताओंकी इसबड़ी गुप्तबार्त्ताको अत्यन्त प्रीतिपूर्वक तुमसेबर्णन किया आपलोग शास्त्ररूप धन रखनेवाले और तपसे पापोंके सुखानेवाले हैं ३६ वैशम्पायन बोले कि वह राजा धृतराष्ट्र और सब ब्राह्मणलोग देवऋषि के मधुर और प्रिय बचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहुये ३७ सिद्धगतिमें प्राप्त वह ऋषि इसप्रकार से कथाओंके द्वारा धृतराष्ट्र को बिश्वासयुक्त करके अपनी इच्छाके अनुसारचलेगये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिविंशतितमोऽध्यायः२० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हेराजा राजाधृतराष्ट्र के बनकोजानेपर दुःख शोकसेसंयुक्तपांडव माताकेशोकसेब्याप्तहुये १ वहां राजाधृतराष्ट्र केबिषयमें बार्त्तालाप करनेवाले ब्राह्मण और सब पुरबासी उस राजाको शोचतेहुये निवासकरनेलगे २ किवह वृद्धराजा निर्जन बनमेंकिस प्रकारसे निवासकरताहै वह सौभाग्यवती गान्धारी और कुन्तीकैसे निवासकरतीहैं ३ वह सुखके योग्य महादुःखी मृतकपुत्रवाला अंधाराजऋषि उसबमहाबन कोपाकर किसदशामें प्राप्तहोगा ४ पुत्रोंकोनदेखती कुन्तीने बड़ाकठिन कर्मकिया जिसने राजलक्ष्मीको त्यागकरके बनबासको अंगीकारकिया ५ भाईकी

सेवाकरनेवाला ज्ञानीविदुर कौनसीदशामेंहै और स्वामीका शुभ चिन्तकबहुबुद्धिमान् संजयकैसेप्रकारसेहै ६ वहपुरवासीबालबच्चों समेत इनसबकेशोकोंसेदुखितहुये और परस्पर मिलकरजहांतहां वार्त्तालाप करनेलगे ७ अत्यन्तशोकयुक्त वहसब पांडववृद्ध माता को शोचतेबहुत थोड़े समयतक पुरमेंबास करने वालेहुये ८ उसी प्रकारमृतकपुत्रवालेवृद्ध ताऊ राजाधृतराष्ट्र, सौभाग्यवतीगांधारी और बुद्धिमान विदुरजीकाभी शोचकिया ६ तब उन्होंका शोच करनेवाले इनपांडवोंकी प्रीति उस राज्यवेदपाठ और स्त्रियोंपर नहींहुई १० बिरादरी वालोंके उसघोरनाश को बारंबार स्मरण करते और राजाकोशोचते पांडवोंने बड़ेवैराग्यकोपाया ११ सेना मुखपरबालक अभिमन्युकानाशयुद्धमें न भागनेवालेबीर कर्णका मरना १२ उसीप्रकार द्रौपदीकेपुत्र और अन्यनातेदारोंकेमरनेको स्मरणकरते वहबीर शोक युक्तहुये १३ हे भरतवंशी वीरो और रत्नोंसेरहित पृथ्वीको सदैवशोचते हुये उन पांडवोंने शान्ती को नहींपाया १४ तबपुत्रोंसेरहितद्रौपदी और सुभद्रादोनोंदेवीअप्रसन्नों के समान अधिक प्रसन्नतासेयुक्तनहींहुई १५ आपके उनपूर्वपिता महाओंने उत्तराकेपुत्रआपकेपिता परीक्षितको देखकर प्राणोंको धारण किया १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासिकेपर्व्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि माताको प्रसन्नकरनेवाले वह बीर पुरुषो-त्तम पांडव इसप्रकार माताकोस्मरण करतेअत्यन्त दुःखीहुये १ जो पूर्वसमय में राज्यके कार्य्यों में सदैवप्रवृत्तथे उन्होंने फिर उस राजधानी में बैठकर राज्यके कार्य्यों को अच्छे प्रकार से नहीं किया २ शोकसेयुक्त उनलोगोंने किसी वस्तुको भी स्वीकारनहीं किया और सम्मुख कियेहुये उन्होंने किसीकी वार्त्तालापको भी स्वीकार नहीं किया ३ शोक के कारण विज्ञान से रहित और

गंभीरतामें सागरके समानवह अजेयवीर पांडव अचेतोंके समान होगये ४ फिर उनपांडवोंने माताकीचिन्ताकरी कि वह अत्यन्त दुर्बल शरीरवाली कुन्ती किस प्रकारसे दोनोंवृद्धसास सुसरोंकी सेवा करतीहै ५ मृतकपुत्रवाला और आश्रयस्थान न रखनेवाला वह अकेला राजा अपनी पत्नीसमेत हिंसस्वापद जीवोंके निवास स्थान बनमें कैसे निवास करताहै ६ वह भागवन्ती मृतकबान्धव-वाली देवी गांधारी निर्जन बनमें किसप्रकारसे अपने अन्धेपति के पास रहतीहै ७ तब इसप्रकार कहनेवाले उन पांडवों को शोच उत्पन्न हुआ और धृतराष्ट्र के देखने की इच्छासे बनजाने का विचार हुआ तबसहदेवने राजाको दण्डवत करके यह बचन कहा कि बड़ी प्रसन्नता का स्थानहै मैंने बन जानेके विषयमें आपका हृदय देखा ८९ हेराजेन्द्र मैं आपकी वृद्धतासे शीघ्रबन जानेके विषयमें आपसे कहनेको समर्थ नहीं हुआ वहीबात अब प्रत्यक्षहुई १० मैं प्रारब्धसे उसकुन्तीको देखूंगा जोकि तपस्विनी तापसी जटासेयुक्त वृद्धाकाश कुशाओंसे घायलशरीर और सास सुसरकी सेवामें प्रवृत्तहोगी ११ महलोंकी अटारीमें बड़ीहोनेवाली अत्यन्तसुख भागीमाताको जोकि बनमें अत्यन्त दुखी और थकी हुई है कबदेखूंगा १२ हेभरतर्षभ निश्चय करके मनुष्योंकेकर्मा-दिकोंके फल बिनाशमान हैं जिस स्थानपर कि राजपुत्री कुन्ती बनमें महादुखीहोकर निवासकरतीहै १३ स्त्रियोंमें श्रेष्ठदेवीद्रौपदी ने सहदेवका बचन सुनकर राजाको नमस्कार और पूजनकर के कहा १४ हेराजामैं उसदेवीको कबदेखूंगी जोवह कुन्ती जीव-तीहोगी तोनिश्चय करकेवह जीवतीहुई मुझपर प्रीतिकरेगी १५ हे राजेंद्र सदैव आपकाभी बिचारहोय और आपकाचित्त धर्ममें प्रवृत्तहोय जोअब तुमहमको कल्याणसे संयुक्त करोगे १६ हेम-हाराज तुमइन बधुओंको जोकि कुन्तीगांधारी औरसुसरके दर्श-नकी इच्छा रखतीहैं हमसे आगेनियत जानो हे भरतर्षभ देवीद्रौ-पदीके ऐसेबचनको सुनकर उसराजाने सबसेनाके प्रधान लोगोंको

बुलाकरयहआज्ञाकरीकि १७।१८ बहुत रथहाथीरखनेवालीमेरी सेना को सन्नद्धकरो कि मैं बनमें निवास करनेवाले राजाधृतराष्ट्र को देखूंगा १९ फिरराजाने महलोंके सेवक लोगोंको आज्ञाकरी किमेरी नाना प्रकारकी सबसवारी औरहज़ारों पालकियेंकोतैयारकरो २० छकड़े,दूकाने,खज़ाने,कारीगर,खज़ानेके नौकरचाकरकुरुक्षेत्रके आश्रमकोचलो २१ जोकोई पुरवासी राजाकोदेखना चाहताहै वहभी अच्छे प्रकारसे सावधान होकरचले २२ रसोइयां और रसोई खानेके प्रबन्धक सब रसोईखाना औरनानाप्रकारकेमेरेभक्ष्य भोज्योंको छकड़ोंपर लादकरलेचलो और प्रातःकालकेसमय हमारी यात्राकरनेकी नगरमें प्रसिद्धीकरो बिलम्ब मतकरो अबमार्गमें भी नानाप्रकारके निवास स्थानबनाओ २३। २४ हेराजा वहराजा युधिष्ठिर इसप्रकारसे आज्ञादेकरप्रातःकाल के समय भाइयों समेत यात्रा करनेवाला हुआ जिसके अग्रभागमें स्त्री और वृद्ध मनुष्यथे २५ वह राजा नगरसे बाहर पांचदिनतक मनुष्योंके समूहोंकी प्रतीक्षा करताहुआ निवासीरहा फिर बनको गया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिद्वाविंशो ऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसकेअनन्तर भरतवंशियों में बड़े साधू युधिष्ठिरने लोकपालोंके समान अर्जुन आदिक बीरोंसे रक्षितसबप्रजा प्रकोष्ठि तिसे यह आज्ञाकरी १ कि सबलोग घोड़ोंको जोड़ २ कर तैयार होंय हे भरतर्षभ इस आज्ञाको सुनतेही घोड़के तैयारकरने सवारोंके तैयारी करनेके बड़े शब्दहुये २ कोई तो रथकीसवारीसेचले कोई प्रकाशित अग्निके समान सुवर्णके रथोंकी सवारीसेचले ३ हे राजाइसीप्रकार बहुतसेलोग गजेन्द्रोंकी सवारी से चले कोई ऊंटोंकी सवारीसे चले और इसीप्रकार नखर और प्रासले युद्धकरनेवाले बहुतसेमनुष्य पद्यातोहीचलेऔर पुरवासी

देशवासी धृतराष्ट्रके दर्शनकीअभिलाषासे बहुतप्रकारकी सवारियों पर सवारहोकर युधिष्ठिरकेपीछे २ चले और वह सेनाध्यक्ष गौतम कृपाचार्य भी राजाकीआज्ञानुसार सबसेनाको साथलेकर आश्रमको चले५।६इसकेपीछे ब्राह्मणोंसे युक्त बहुतसे सूत मागध और बन्दियोंसे अस्तुतिमान ७ मस्तकपर पांडुवर्ण छत्रसे शोभित कौरवराज युधिष्ठिर बड़ी रथों की सेना समेत चले ८ जिसका कि कर्मभयकारीहै वह वायुकापुत्र भीमसेन उनहाथियोंसे व्याप्त होकर चला जो कि सजेहुये यन्त्र और धनुष आदिकसे युक्त और पर्व्वताकार थे ९ उसीप्रकार पोशाक आदिसे अच्छे अलंकृत सजीहुई ध्वजा और कवच रखनेवाले तीव्रगामी घोड़ोंपर सवार दोनों नकुल और सहदेव भी चले १० जितेन्द्री महातेजस्वी अर्जुन रथकी सवारीसे राजाके पीछेचला वह रथ दिव्य श्वेत घोड़ोंसे युक्त और सूर्य्यके समानतेजस्वी था ११ अन्तःपुरके सेवक लोगोंसे रक्षित पालकीमें सवारहुई द्रौपदी आदिक स्त्रियोंके समूहभी असंख्य धनको दानकरतीहुई चलीं१२ हेभरतर्षभ उससमय वह पांडवीसेना रथहाथीघोड़ोंसे वृद्धियुक्त बांसुरी और वीणाओंसे शब्दायमान होकर महा शोभायमानहुई १३ हेराजा वह श्रेष्ठ कौरवलोग क्रीड़ाके योग्य नदी और सरोवरों के तटों पर निवास करके क्रमपूर्व्वक चले १४ महातेजस्वी युयुत्सु और धौम्य पुरोहितने युधिष्ठिर की आज्ञासे नगरकी रक्षाकरी १५ फिर राजा युधिष्ठिर कुरुक्षेत्रमें पहुंचे वहां महापवित्र यमुनानदी को क्रम पूर्व्वक उतरकर १६ उसराजाने दूरसेही उस बुद्धिमान् राजऋषि शतयूप और धृतराष्ट्र के आश्रम को देखा १७ हे भरतर्षभ इसके पीछे उन सब मनुष्योंने अत्यन्त प्रसन्नचित्त बड़े शब्दोंसे शब्दायमान करते उस बनमें प्रवेशकिया १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणित्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि फिरवह नम्रतायुक्त पांडव दूरसे उतरकर पैदलहोकर राजाके आश्रममेंगये १ वहसब सेनाकेलोग देशवासी और उत्तम कौरवोंकी स्त्रियां पैदलही उनके पीछेचलीं २ वहां जाकर उन पांडवोंने धृतराष्ट्र के आश्रमको देखा जो कि मनुष्योंसे रहित मृग समूहोंसे व्याप्त और केलोंके वनोंसे शोभाय-मान था ३ फिर व्रतमें सावधान प्रथमके तपस्वी लोग आये हुये पांडवों के देखने को वहां आये ४ तब अश्रुओं से पूर्णनेत्र होकर राजायुधिष्ठिरने उनसे पूछा कि यह हमारा ताऊ कौरववंश का पोषण करनेवाला कहां गया ५ हे राजा तब उनसबमुनियोंने उस-से यह वचन कहा कि यमुनाजीमें स्नान करने और पुष्पों समेत जलघटलानेकोगयाहै ६ तब वह पैदल पांडव उनकेबताये हुयेमार्ग से वहां को शीघ्रचलेऔर उनसबको थोड़ीही दूरपरदेखा ७ फिर ताऊ के दर्शनों केअभिलाषी वह पांडव बड़ी शीघ्रतासेचले और सहदेव कुन्तीकोऔर बड़ीतीव्रतासे दौड़ा ८ वह बुद्धिमान्माताके चरणोंका स्पर्शकरता बड़े स्वरसे रोदन करनेलगा अश्रुपातों से युक्त मुख उस कुन्तीनेभी अपने प्रिय पुत्रको देखा ९ भुजाओं से पुत्रको मिलकर और उठाकर इस सन्मुख नियत सहदेवको गा-न्धारीसेकहा १० इसकेपीछेकुन्ती राजायुधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन और नकुलको देखकर बड़ीशीघ्रतासे सन्मुख गई ११ वह कुन्ती उन दोनों सास सुसरोंको खेंचती उन मृतपुत्रवाले दोनोंकी पुत्रयों के आगे चलतीथी वह सब पांडव उसको देखकर पृथ्वीपर गिर पड़े १२ बुद्धिमान प्रभु राजा धृतराष्ट्रने उनको शब्द और स्पर्श सेजानके अच्छेप्रकार विश्वास दिया १३ फिर वह महात्मा पांडव आंसुओं को डालकर राजाधृतराष्ट्र गान्धारी और अपनी माता कुन्तीकेपास विधिकेअनुसार नियत हुये अर्थात दण्डवतकरी १४ तब सचेतहोकर मातासेविश्वासयुक्त उन पांडवोंनेसबकेजलकलशों

को आपलेलिया १५ तब उसीप्रकार से नरोत्तमों की पत्नियों ने अन्य राजाओंकी स्त्रियोंने और पुरबासी देशबासी आदिक स्त्री पुरुषोंनेभी उस राजाको देखा १६ उस राजा युधिष्ठिरने उन सब मनुष्यों को नाम और गोत्र से राजाधृतराष्ट्र के सन्मुख विदित किया और उसने उनका सत्कार किया १७ उनसे घिरेहुये और प्रसन्नता के अश्रुपातों से युक्त राजाधृतराष्ट्र ने अपनेको घरमेंही ऐसा वर्त्तमानसा माना जैसे कि पूर्व्व समय में हस्तिनापुरकेमध्यमें वर्त्तमानथा १८ द्रौपदी आदिक बधुओंसे दण्डवत कियाहुआ वह बुद्धिमान धृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्तीसमेत प्रसन्नहुआ १९ फिर उस आश्रममें चलागया जो कि सिद्ध चारणोंसे सेवित और देख-नेवाले मनुष्यों से ऐसे पूर्णथा जैसे कि तारागणों से आकाश पूर्ण होताहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

।पच्चीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि हेभरतर्षभ तब उस राजा धृतराष्ट्र ने उन कमल लोचन नरोत्तम पांचों भाइयों समेत आश्रम में निवास किया १ कौरवपति के पुत्र बड़े बक्षस्थल रखनेवाले पांडवों के देखनेको बहुतप्रकार के देशोंसे आनेवाले महाभाग तपस्वियों के साथ आसनोंपर बैठे२ वह बोले कि हम जानना चाहतेहैं कि इन में कौनसे युधिष्ठिर हैं भीमसेन अर्ज्जुन और नकुल सहदेव कौनसे हैं और यशवन्ती द्रौपदी कौनसी है ३ तब सूत संजयने उन सब पांडवोंको—और द्रौपदीको आदि लेकर सब कौरवों की स्त्रियों को उन तपस्वियोंके सन्मुख वर्णनकिया ४ संजयने कहा कि जो यह शुद्ध जाम्बूनद सुवर्णके समान गोरा शरीर महासिंह के समान उच्चशरीर सुन्दर नासिका और बड़े आयत रक्तनेत्र रखनेवालाहै यह कौरव राज युधिष्ठिर है ५ यह मतवाले गजेन्द्र के समान चलनेवाला तप्त शुद्ध सुवर्णके समान गौर वर्ण बड़े लम्बस्कन्ध

और भुजाओं का रखनेवाला यह भीमसेन है इसको देखो ६ इसके समीपमें जो यह बड़ाधनुषधारी श्यामवर्ण तरुणगजेन्द्रकी समान शोभायमान सिंहके समान ऊंचे कन्धेरखनेवाला गजखेल के समान गवन करनेवाला और कमलके समान बड़े दिव्य नेत्र रखनेवालाहैयहवीर अर्जुनहै७कुन्तीके सन्मुख यहांबैठेहुएरूपमहा- इन्द्रके समान पुरुषोत्तम नकुल और सहदेव हैं स्वरूप बल और सुन्दर स्वभावमें जिनके समान इस सब नरलोकमें कोई नहींहै ८ फिर यहकमल के समान दीर्घनेत्र कुछ मध्यदशाको स्पर्शकरने- वाली नीले कमल के समान तेजस्विनी सुरदेवी के तुल्य द्रौपदी साक्षात् स्वरूप धारण करनेवाली लक्ष्मीके समान नियतहै ९ हे ब्राह्मण लोगो इसके समीपमें जो यहउत्तम सुवर्णकेसमान तेज- वान् चन्द्रमाकी किरणों के समान रूपवाली मध्यमें नियतहै वह उस अनुपम चक्रधारी श्रीकृष्णजीकी बहिनहै १० यह जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्णके समान गौरांगसर्पराजकी कन्या उलूपी अर्जुन की भार्याहै जो यह उत्तम मधुपपुष्पके समान शरीर रखनेवाली राजकन्या चित्राङ्गदाहै यह भी अर्जुन की भार्याहै ११ यहबड़े नीले कमल दलके समान वर्ण रखनेवाली उसराजाचमूपतिकी बहिन है जिसराजाने सदैव श्रीकृष्णजीसे ईर्षाकरी यहभीमसेनकी उत्तम पटरानीहै१२यहचंपकवृक्षकेपत्रऔर पुष्पकेसमानगोरी औरजरासंध नामसेविख्यात मगधदेशके राजाकीपुत्रीहै यह माद्रीके छोटेपुत्र सहदेवकीभार्याहै १३ जो यह कमलके समान श्यामवर्णानियतहै और जिसकेसमान पूर्वमेंभी कोई पृथ्वीपर नहींहुई यह कमलके समान दीर्घ नेत्रवाली स्त्री माद्रीके बड़े पुत्र नकुलकी भार्याहै १४ यह राजा बिराटकी पुत्री तपायेहुये सुवर्णके समान गोरी अपने पुत्रके साथ नियतहै यह अभिमन्यु की भार्य्याहै जो कि युद्धमें रथसे विहीन होकर रथसवार द्रोणाचार्य्यादिकोंके हाथसेमारा गया १५ यह श्वेत ओढ़नी रखनेवालीं राजपत्नी इसवृद्धराजा धृतराष्ट्र और गांधारीकी पुत्रवधूहैं जो कि संख्यामें सौसेअधिक

हैं और जिसकेपुत्र और पति वीरोंके हाथोंसेमारेगये १६ ब्राह्मण भावसे सत्य बुद्धि शुद्ध सतोगुण युक्त यह सब राजपत्नी मुख्यता पूर्वक आपसे वर्णनकरीं १६। १७ वैशंपायनबोलेकिहेकौरवोंमें श्रेष्ठ वह राजा धृतराष्ट्र इसप्रकार उन राजकुमारों से मिला और सब तपस्वियोंके चलेजानेपर उसने कुशलक्षेमको पूछा १८ सवा रियोंको छोड़कर उस आश्रम मंडलसे पृथक् सेनाके मनुष्यों के नियत होने और स्त्री बालक वृद्धोंके अच्छेप्रकारसे बैठ जानेपर योग्यताके समान सबसे कुशल क्षेमको पूछा १९॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेमहाबाहुयुधिष्ठिर तुम सब भाई पुरवासी और देशवासियों समेत कुशल पूर्वक हो १ हे राजाजो तेरे आश्रयसे अपनी जीविका करतेहैं वह मंत्री नौकरचाकर और तेरेगुरु भी नीरोगहैं २ वह प्रजालोग भी तेरे देशमें नीरोगता पूर्वक निर्भय होकर निवासकरतेहैं क्या तुम राजऋषियोंसे कियेहुये शुभफल देनेवाले प्राचीन व्यवहारोंपर चलते हो क्या न्याय पूर्व्वक तेरे खजाने पूर्णहोतेहैं शत्रु मित्र और उदासीन राजाओंमें उचितकर्म और व्यवहारोंकोवर्त्तताहै३।४ हे भरतर्षभ क्या तुमअग्रहारोंसेयुक्त दानों समेत ब्राह्मणोंका दर्शन करतेहो वह तेरे सुन्दरस्वभावसे प्रसन्न होतेहैं ५ शत्रुभी तेरेउत्तमस्वभावसे प्रसन्नहैं फिर पुरवासी और राज्यके सेवक आदि और नातेरिश्तेदार क्योंन प्रसन्नहोंगे हे राजेन्द्र श्रद्धावान् तुम क्या देवता पितरोंको पूजतेहो ६ यह भरतवंशी क्यातुमखानेपीनेकीवस्तुओंसे अतिथियोंको पूजतेहो क्या तेरे वेदपाठी ब्राह्मण नीतिमार्ग और अपनेकर्ममें प्रवृत्तहैं ७ बाल बच्चेवाले क्षत्री वैश्य और शूद्र भी अपनी रीतियोंपर नियतहैं क्यातेरे बालक, स्त्री और वृद्धनहीं शोचते और प्रार्थना

करतेहैं ८ हे नरोत्तम क्या तेरेघरमें बहिन बेटी और बधू आदि पूजित्तहैं हे महाराज क्या यह राजऋषिवंश तुम्हराजाको पाकर उचितरीतिपर नियतहै ९ और तुम्हारी अपकीर्त्तितो नहींहोतीहै वैशंपायन बोले कि उसज्ञानी न्याय पूर्व्वक वार्त्तालापमें कुशल राजा युधिष्ठिरने इसप्रकार से पूछनेवाले उसराजाधृतराष्ट्रसे कुशल क्षेम पूर्व्वक यह वचन कहा १० युधिष्ठिरने कहा हे राजा क्या आपका तप वृद्धिको पाताहै और आपको वाह्याभ्यन्तरसे जितेन्द्रीपन प्राप्तहै और सेवा करनेवाली यह मेरी माता थकावट से रहितहै ११ हे राजा इसका बनवास सफल होगा यह मेरीताई शीतवायु और मार्गचलने से दुर्बल शरीर १२ घोरतपसेयुक्त देवी गान्धारी अपने उन मृतक पुत्रोंको तो नहीं शोचतीहै जोकिबड़े पराक्रमी और क्षत्रीधर्म में नियतथे १३ क्या वह सदैवहम पापियों को शापतो नहीं देतीहै हे राजा वह विदुरजी कहांहैं हम उनको देखेंगे वहसंजय कुशलसे होकर तपमें नियतहै १४ वैशंपायन बोले इसप्रकारके युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर धृतराष्ट्रने राजा युधिष्ठिर को उत्तरदिया कि हे पुत्रविदुर कुशलसेहै और घोरतप में नियतहै १५ वह वायुभक्षी निराहार दुर्बल शरीर हड्डियों से तना हुआ विदुर इस निर्जनबनमें कभी२ किसीब्राह्मणकोदिखाई पड़ताहै १६ उसके इसप्रकार वार्त्ताकरते जटाधारी बैठामुखदुर्बल शरीरनंगा बनकी धूलीसे लिप्तांग मलिन शरीर १७ विदुरदूर से ही दिखाई पड़ा तब राजासे सबने कहा कि हे राजा वह विदुर आश्रमकी ओर दृष्टि को करता अकस्मात लौटाहै १८ अकेला राजा युधिष्ठिर घोरबनमें प्रवेशकरनेवाले उस विदुरके पीछेदौड़ा जोकि कहीं दिखाई देताथा और कहींदृष्टिसे गुप्तहोजाता था१९ वहां जाकर राजाने कहा हे विदुरजी मैं आपका प्यारा राजायुधिष्ठिरहूं इसप्रकार कहता हुआ राजा युधिष्ठिर उपाय पूर्व्वक उसकेपीछे दौड़ा२० फिर वनकेमध्यमें एकान्त स्थानमें वह बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ विदुरजी किसीवृक्षका आश्रय लेकर नियतहुये २१

बड़े बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरने उस अत्यन्त दुर्बल और केवल स्वरूपसेही विदित होनेवाले बड़े बुद्धिमान् विदुरजीको पहचाना २२ और कहाकि मैं युधिष्ठिरहूं राजा विदुरजी के कान में यह बचन कहकर आगे नियत हुआ और उनको प्रणामकिया २३ फिर उसनेनेत्रों को फैलाकर राजाको देखा दृष्टिमें कुशल बुद्धिमान् विदुरजीने उसमें दृष्टि लगाकर २४ अंगों से अंगों में प्रवेश करके प्राणोंको प्राणोंमें और इन्द्रियोंको इन्द्रियों मेंप्रवेशकिया २५ तेजसे अग्निरूप विदुरजीने योगबलमें नियत होकर धर्मराज राजायुधिष्ठिरकेशरीरमें प्रवेशकिया तब धर्मराजयुधिष्ठिरनेविदुर जीके शरीरको उसीप्रकार नेत्र खुलेहुये वृक्षके आश्रयसे नियत निश्चेष्टरूपदेखा २६।२७ तबमहातेजस्वी धर्मराजने अपनेकोबहुत गुना बलवान्माना हेराजाफिर उसमहातेजस्वी विद्यावान् पांडवने अपने उनसबप्राणयोग और धर्मोंकोस्मरणकिया जैसेकिव्यासजी नेकहाथा २८।२९तबबुद्धिमान्धर्मराजइसकेसंस्कार और दाहकरने काअभिलाषीहुआ तब आकाशवाणीने कहा किहेराजा यहविदुर नाम तुमको दाह न करनाचाहिये यहां इसीप्रकार इसकोछोड़ो यही सनातन धर्महै ३०। ३१ हे भरतवंशी इसके लोक सन्तानक नास होंगे इसने संन्यास धर्मको प्राप्तकिया हे शत्रुओंके जीतने वाले यह विदुरशोचनेके योग्य नहींहै ३२ फिर इसप्रकारसे कहे हुये उस धर्मराजने लौटकर उस सब वृत्तांतको राजा धृतराष्ट्र के सन्मुख वर्णनकिया ३३ तब वहतेजस्वी राजाधृतराष्ट्र और भीमसेनादिक पांडवों समेत सब मनुष्य अत्यन्त आश्चर्य युक्तहुये ३४ राजाने उसकोसुनकर और प्रसन्नहोकर धर्मपुत्रसे यहवचनकहा कि यह मेरे जल फल और मूलको लीजिये ३५ हे राजा मनुष्य जिस खाने पीनेकी वस्तुको अपने पास रखताहै उसको अतिथि भी उसी सामानवाला होताहै ३६ यह सुनकर धर्मराजने राजासे कहा कि यथार्थहै ३७ और सबछोटे भाइयों समेत राजाके दिये हुये फल मूलों को भोजन किया इसके पीछे वृक्षों के मूलोंपर

निवास करनेवाले और फल मूल जल भोजन करनेवाले वह सब उस रात्रिको वहांहीं बसे ३८ ॥

श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआश्रमवासकेपर्व्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि हे राजा इसकेपीछे इनपवित्रकर्मी पांडवों की वह कल्याणरूप नक्षत्रोंसेयुक्त रात्रि उसी आश्रम में व्यतीत हुई १ फिर वहांपर उन्होंकी वह कथाहुई जो कि धर्म्म अर्थ का लक्षण रखनेवाली विचित्र पदों से युक्त और नानाप्रकार की श्रुतियोंसे संयुक्तथीं २ हे राजा तब पाण्डवों में बहुमूल्यवाले शयनों को त्याग करके माताके चारोंओर पृथ्वीपरही शयन किया ३ बड़े साहसी राजाधृतराष्ट्र ने जो आहार किया उसी आहार के करने वाले वह नरवीर उस रात्रिमें स्थितहुये रात्रि व्यतीतहोनेपर दिनके पूर्व्वाह्न कालके जपादिकसे निवृत्तहोकर राजायुधिष्ठिर ने भाइयों समेत आश्रम मण्डल को देखा ४।५ रानी आदिक स्त्रियों और दास दासी पुरोहित समेत वह राजा युधिष्ठिर राजाधृतराष्ट्र की आज्ञा से सुख पूर्व्वक इच्छानुसार विहार करनेवालाहुआ ६वहां उन वेदियोंको देखा जिनपरअग्नि अच्छे प्रकार से प्रकाशितथीं और उन अग्नियों के पास अभि-षेक और होम करनेवाले मुनि नियतथे ७ मुनियोंके समूहोंकी वह वेदियां वन फूलों के ढेर और ऊंचे उठे हुये घृतके धुएं समेत ब्राह्मय शरीरसे संयुक्तथीं ८ हेप्रभु जहां तहां निर्भय मृगोंके यूथ और शब्दगानेवाले निर्भय नीलकंठादिक पक्षियोंकेकेका शब्द और दात्यूहनाम पक्षियोंके शब्दकरण और चित्तकीसुखदाईको किलाओंकी कूहवाणी सेयुक्त थी १० वेदपाठकरनेवाले फलमूला हारी महर्षियों के शब्दसे सो कहींकहीं अलंकृत और शोभाय-मान था ११ हे राजा फिर उसराजाने वहां उनतपस्वियोंके निमित्त भेटकरीं सुवर्णके कलश तांबेकेघट १२ मृगचर्म, छत्र, कंबल,

स्रुक, स्तम्ब, कमंडल, स्थाली, पिठर १३ लोहेकेपात्र, नानाप्रकार के पात्र, हे भरतवंशी राजा जनमेजय जो जो साधू जितनाचाहता था और जो अन्यप्रकारकेपात्रथे वह भी दिये १४ इसप्रकार वह संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी धर्मात्मा राजायुधिष्ठिर आश्रम मंडलमें घूमकर उससर्वधनको बांटकर फिर लौटकरआया १५ तबजपादिकसे निवृत्त सबधन महाराजा धृतराष्ट्र को गान्धारी समेतबैठा हुआ देखा १६ धर्मात्मा युधिष्ठिरने शिष्य के समान झुकी हुई समीपमें नियत सुकर्मियोंके आचरणोंसेयुक्त अपनीकुन्तीमाताको देखा १७ वह उस राजा की प्रतिष्ठा करके अपना नाम सुनाकर बैठने की आज्ञापाकर कुशासनपर बैठगया १८ हे भरतर्षभ भीमसेनादिक पांडव भी दंडवतकरके चरणछूकर राजाकीआज्ञासे बैठ गये १९ उन पांडवोंके मध्यवर्त्ती होकर वह राजा धृतराष्ट्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि ब्राह्मणोंकी लक्ष्मीको धारण करते बृहस्पतिजी देवताओं के मध्यमें शोभायमान होते हैं २० उसरीतिसे उनके बैठ जानेपर शतयूप आदिक कुरुक्षेत्र निवासी राजऋषि और महर्षिलोग वहां आये २१ देवऋषियों के समूहों से सेवित शिष्योंसमेत महातेजस्वी भगवान व्यासऋषिनेभी आकर राजा को दर्शनदिया फिर उस राजाधृतराष्ट्र और पराक्रमी युधिष्ठिर और भीमसेनादिकोंने उठकर ऋषियोंको दण्डवत की २२।२३ फिर शतयूप आदिक से व्याप्त और मिले हुये व्यासजी ने राजाधृतराष्ट्र से कहाकि बैठो २४ तब व्यास उस उत्तम कुशासनपर जोकि मृगचर्म से युक्त उनके निमित्त विचार किया गया था बैठगये २५ व्यासजी की आज्ञानुसार बड़ेतेजस्वी वह सबश्रेष्ठ ब्राह्मण चारोंओर बिस्तरोंपर बैठगये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

——*——

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर महात्मा पाण्डवों के अच्छे प्रकार बैठजानेपर सत्यवतीके पुत्र व्यासजी ने यह बचन कहा १ कि हे वीर राजाधृतराष्ट्र क्या तेरा तप होताहै और तेरा मन बनवासमें प्रसन्न होताहै २ हे निष्पाप राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके नाशसे उत्पन्न शोक तो तेरे हृदय में नहीं है और तेरे सब ज्ञान शुद्ध हैं ३ क्या तुम बुद्धिको दृढ करके बनवासकी रीतिपर प्रसन्न होते हो और गान्धारी बधू तो शोकसे पूर्ण नहीं होती ४ यह बड़े ज्ञानवाली बुद्धिमान् धर्म्म अर्थ की ज्ञाता उत्पत्ति नाशकी मुख्यता को जाननेवाली शोच तो नहीं करती है और हे राजा अहंकार से रहित यह कुन्ती तुम्हारी सेवा करती है जो कि अपने पुत्रों को छोड़कर गुरुकी सेवामें तत्परहै ५।६ क्या यह बड़ मन और बुद्धि का रखनेवाला धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेवभी विश्वासयुक्त धैर्यवालेहैं ७ क्यातुम इनको देखकर प्रसन्नहोतेहो क्यातेराचित्तनिर्मलहै हेराजा क्यातुमज्ञानी और शुद्ध चित्तहो ८ हे भरतवंशी महाराजा धृतराष्ट्र यह तीन बातें सबजीवों मेंश्रेष्ठहैं शत्रुता न करना, सत्यता, क्रोध न करना ९ हे भरतर्षभ क्या बनबाससे तेरामोह नहींहै और मूलफलादिक भोजनकी बस्तु तेरे आधीनहैं क्याब्रतभी होताहै १० हे राजेन्द्र इसविधिसे उसबड़े महात्मा और बुद्धिमान् धर्मावतार बिदुरका लयहोना भी तुमको बिदित है ११ बड़े बुद्धिमान् महायोगी महात्मा मनके जीतनेवाले धर्मने मांडव्यऋषिके शापसे बिदुर शरीरको पायाथा १२ देवताओंमें बृहस्पति असुरोंमें शुक्र उसप्रकारके बुद्धिमान् नहींहैं जैसा कि वह बिदुर बुद्धिमानथा १३ तब वह बहुतकालसे इकट्ठाकिया हुआ सनातन धर्म तपोबलको व्यय करके मांडव्यऋषि के शाप सेपराजय हुआ १४ पूर्वसमयमें ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार वह बड़ा बुद्धिमान् निज बलसे राजा बिचित्रवीर्य्य के क्षेत्रमें मुझसे उत्पन्न

हुआ १५ हे महाराज वह देवताओं का भी देवता सनातन तेरा भाई था परिडतोंने मनसे ध्यान करने केद्वारा जिसको धर्म जाना १६ जो तपसे युक्त सनातन धर्म सत्यता और बाह्याभ्यन्तर से इन्द्रीजित होकर दान और अहिन्साके द्वारा अच्छीवृद्धि को देताहै जिसज्ञानी बड़े बुद्धिमान के योगबलसे कौरवराजयुधिष्ठिर उत्पन्न हुआ यह साक्षात धर्महीहै १७। १८ जैसे कि अग्नि और वायुसर्वत्रहैं और जिसप्रकार जल पृथ्वी और आकाश सबस्थानोंपर वर्त्तमानहैं उसीप्रकार धर्मभी इसलोक और परलोकमें नियतहै १९ हे राजेन्द्र सब स्थावर जंगम जगत को व्याप्त करके सर्वत्रवर्त्तमान वह धर्म उनको दिखाई देताहैजोकि देवताओं के भी देवता और सब पापोंसे रहित होकर सिद्ध हैं २० जो धर्महै वह बिदुरहै जो बिदुरहै वह युधिष्ठिर है हे राजा वह धर्मका अवतार पांडव तेरे प्रत्यक्षमें सेवक के समान वर्त्तमानहै २१ वह बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महात्मा तेराभाई इस महात्मायुधिष्ठिर को देखकर और बड़ेयोग से युक्त होकर इसमें प्रवेश करगया २२ हे भरतर्षभ तुम को भी थोड़ेहीसमयमें कल्याण से युक्त करूंगा हे पुत्र सन्देह निवृत्तकरनेकेलिये मुझको आयाही जानाकरो २३ पूर्वसमय में जो तपरूप फलवाला अपूर्वकर्म जो लोकमें कहीं किसी ऋषि और महर्षियोंसे नहीं कियागया वह तुमको दिखलाताहूं २४हे निष्पाप राजाधृतराष्ट्र तुम मुझसे कौनसा अभीष्ट देखना सुनना और प्राप्त करना अथवा पूछना चाहते हो मैं उसको अवश्य करूंगा २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय॥

जनमेजयने पूछा कि कुन्ती बधूसेयुक्त भार्य्यासमेत नरोत्तम राजाधृतराष्ट्र के बनवासी होने १ बिदुरजी के सिद्ध और धर्मराजमें प्रवेशकरने और आश्रम मंडल में सब पांडवों के नियत होनेपर २ बड़े तेजस्वी व्यास महर्षि ने जो वह वचनकहा कि मैं

अपूर्व कर्मकरूंगा उसको मुझसे कहिये ३ तब वह धर्मसे अच्युत कौरव राजा युधिष्ठिर कितने समयतक अपने सब साथियोंसमेत आप वहां निवासी हुआ ४ हे प्रभु वहां महात्मा पांडव सेना और स्त्रियोंसमेत किस आहारसे निवासीहुआ हे निष्पाप उसको मुझसे कहो ५ वैशम्पायनबोले कि हे राजा उस राजाधृतराष्ट्रकीआज्ञानुसार वह पांडव विश्राम करके नानाप्रकारकी खाने पीनेकी वस्तुओंको भोजन करतेथे ६ हे निष्पाप उन लोगोंने सेना और स्त्रियों समेत एक महीना बनमें बिहारकिया फिर वहां व्यासजी आये उनका वृत्तान्त मैंने तुझसेकहा ७ हे राजा कथाओंकेद्वारा राजाके सन्मुख व्यासजीके पास उन सबके नियत होनेपर अन्य अन्य मुनिलोगभी आये ८ महातपस्वी देवल, पर्वत, नारद, बिश्वावसु, तुम्बुरु, चित्रसेन—हे भरतबंशी ९ तब धृतराष्ट्रसे आज्ञापायेहुये महातपस्वी कौरवराज युधिष्ठिरने न्यायके अनुसार उन्हों का पूजनकिया १० फिर वह सब युधिष्ठिर से पूजा पाकर उन आसनोंपर बैठगये जोकि पवित्र श्रेष्ठ और मोरपक्षियोंके परोंसे संयुक्तथे ११ हे कौरववहां उनकेबैठजानेपर वह बड़ाबुद्धिमानराजा धृतराष्ट्र पांडवोंके मध्यवर्त्ती होकर बैठगया १२ फिर गान्धारी द्रौपदी कुन्ती सुभद्रा और अन्यश्स्त्रियां सब मिलकरबैठगईं १३ हे राजा वहां उन्होंकी वह कथादिव्य और धर्मसेसम्बन्ध रखने वालीहुई जो कि प्राचीनऋषियोंकीकथा देवता और असुरोंके वृत्तान्तों से संयुक्त थीं १४ इसके अनन्तर उस सब वेदज्ञोंमें उत्तम बक्ताओंमेंश्रेष्ठ महाप्रीतिमान व्यासजीने कथाकेअंतपर उसबुद्धिरूपी नेत्ररखनेवाले राजाधृतराष्ट्रसे फिरवहवचनकहा १५ कि हे राजेंद्र मुझकोविदितहै कि पुत्रशोकसेतुमजलतेहुयेकेहृदयमें जो कहनेकीइच्छाहै १६ और गांधारीकेहृदयमें जो दुःख सदैव नियतहै १७ और हे महाराज कुंती और द्रौपदीके हृदयमें जो खेद वर्त्तमानहै और श्रीकृष्णजीकीबहिन सुभद्रा पुत्रके नाशसे उत्पन्न जिस कठिन दुःखको रखती है वह भी मुझको विदित है १८हे

कौरवनंदनधृतराष्ट्र इसीहेतुसेमैं तुमसबकेइससंयोगकोसुनकर १९ सन्देह दूर करनेको आयाहूं अब यह देवता गन्धर्व्व और सब महर्षी २० लोग मेरे उस तपोबलको देखो जोकि बहुत कालसे इकट्ठाकियाहै हे महाराज अब तुम जो २कहो उस२ तेरी प्रार्थना को पूराकरूं२१ मैं वरदेनेको समर्थहूं मेरे तपकेफलको देखो बड़े तपस्वी व्यासजीकेइसप्रकारकेबचनोंकोसुनकर उसराजेन्द्रने २२ एक मुहूर्त्त बिचार करके कहना प्रारम्भ किया मैं धन्यहूं कृत-कृत्यहूं जो आपने मेरेऊपर कृपाकी मेराजीवन सफल है जो अब यहां मेरा संयोग आपसरीखे साधुओंकेसाथ हुआहै अबमैं आप महात्माकी कृपासे अभीष्ट गतिकोभी प्राप्तकरूंगा २३।२४हे तपो-धन ऋषियोजो मैं आपसरीखे ब्रह्मरूपोंसे मिला मैं आपकेदर्शनों सेही निस्सन्देह पवित्र हुआ २५ हे निष्पाप ऋषियो परलोक सेभी मुझको भय वर्त्तमान नहींहै परन्तु मुझलोभीका और पुत्रों के स्मरण करनेवाले का मन उस दुर्बुद्धी अभागे दुर्य्योधन के अन्यायोंसे सदैव दुःखपाताहै जिस पापबुद्धीसे यह पांडव छलेगये २६।२७ और जिसकेकारणसे यह सब संसारकेलोग घोड़े हाथि-यों समेत नाशहुये नानाप्रकारके देशोंकेस्वामी राजालोग २८मेरे पुत्रके निमित्त आकर कालके आधीनहुये यह सब शूर अपने वृद्धोंको स्त्रियोंको और मनसे प्यारे प्राणोंको २९ त्यागकरके यमलोककोगये हेब्राह्मणजोकि युद्धमेंमित्रकेलियेमारेगये उनकी कौनगतिहै ३० इसीप्रकार मेरे उनपुत्रपौत्रों की कौनगति होगी जोकि युद्धमें मारेगये शान्तनुकेपुत्र बड़ेपराक्रमी भीष्मजीको ३१ और ब्राह्मणों में बड़े साधू द्रोणाचार्य्य को मरवाकर मेरा चित्त अत्यन्त दुःखपाताहै ३२ पृथ्वीके राज्य के चाहनेवाले, मित्रों के शत्रुमेरे अज्ञानी पुत्रसे, यह प्रकाशितवंश विनाश कियागया इस सबको स्मरण करके अहर्निश जलता ३३ दुःख और शोकसे घायलहोकर शान्तीको नहींपाताहूं मुझ पिताके शोचसे युक्तको शान्ती वर्त्तमाननहींहै ३४ वैशम्पायनबोले हे जनमेजय उस राज-

ऋषिके बहुत प्रकारके विलापको सुनकर गान्धारीकाशोक फिर नवीन होगया ३५ कुन्ती द्रौपदी सुभद्रा और धृतराष्ट्रकी सब बधू आदि स्त्री पुरुषोंका शोक फिर नवीन कियागया ३६ पुत्रशोक से व्याकुल हाथजोड़कर खड़ीहोकर गान्धारीने ससुरसे यह वचन कहा३७ कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ प्रभु व्यासजी मृतकपुत्रोंको शोचते हुये इस राजाके सोलहवर्ष व्यतीतहुये परन्तु इसकी शान्ती नहीं होतीहै ३८ हे महामुनि पुत्रशोकसे पूर्ण बारम्बार श्वासलेता यह राजा धृतराष्ट्र सब रात्रियों में नहीं सोताहै ३९ तुम तपके बलसे दूसरे लोकोंके उत्पन्नकरनेकोभी समर्थहो फिरपरलोकमेंवर्त्तमान राजाकेपुत्रोंके दिखाने को क्यों न समर्थहोगे ४० सबपुत्र बधुओंमें बड़ीप्यारी यह कृष्णा द्रौपदी जिसके पुत्र और भाई आदिक मारे गयेअत्यन्त शोचकरतीहै४१इसीप्रकार कल्याणवचनरखनेवाली श्रीकृष्णकी बहिन प्रीतिमान सुभद्रा अभिमन्युके मरनेसे अत्यन्त शोचकरतीहै ४२ भूरिश्रवाकी अत्यन्त अंगीकृत यह प्रीतिमान भार्य्या पतिके शोकसे अत्यन्त पीड़ामान होकर अधिकयता से शोचकरतीहै ४३ जिसका ससुर बुद्धिमान कौरवबाल्हीक बड़े युद्ध में मारागया और पिता समेत सोमदत्तभी मारागया ४४ आपके इसबड़ेबुद्धिमान धृतराष्ट्रके युद्धमेंमुख न मोड़नेवाले सौपुत्र युद्धभूमि में मारेगये ४५ उनकी यह सौभार्य्या दुःख और शोकसे व्यथित बारम्बार मेरे और राजाके शोककी बढ़ानेवालीहैं४६हे महामुनि वह सब उसबड़े शोकके शब्दों समेत मेरेपास वर्त्तमान रहतीहैं जो शूर महात्मा महारथी मेरे ससुर ४७ सोमदत्त आदिक हैं हे प्रभु उनकी कौनगतिहै हे ब्राह्मणोत्तम यह राजा आपकीकृपासेशोक से निवृत्तहोय ४८ और इसीप्रकार मैं और आपकी यह कुन्ती बधू विनाशोक होंगी गान्धारी के इसप्रकार कहनेपर व्रतसे रूपांतर कुन्तीने४९ उस गुप्त जन्मलेनेवाले सूर्य्यके समान तेजस्वी पुत्र कर्णको स्मरणकिया दूरकीबातें सुनने और देखनेवाले वर दाता व्यासऋषिने ५० उस अर्जुनकी माता देवीको महादुःखी

देखा तब व्यासजीने उससे कहा कि तुझको जिसबातका पूछना है ५१ और तेरे मनमें वर्त्तमानहै हे महाभाग तुम उसकोपूछो तब प्राचीन वृत्तांतको प्रकट करते लज्जायुक्त कुन्तीने शिरसे प्रणाम करके ससुरसे यह बचनकहा ५२ । ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकोनत्रिंशोऽध्यायः२९ ॥

तीसवां अध्याय॥

कुन्तीबोली हे भगवन आप मेरे ससुरहोकर देवताके भी देवता हो सो हे मेरे बड़े देवता तुम मेरी सत्यबार्त्ताको सुनो१तपस्वी क्रोधी दुर्बासानाम ब्राह्मण मेरे पिताकेयहां भिक्षा करनेके लिये सन्मुख आये २ निरपराधिनी मैंने अपने चित्तकी बाह्याभ्यन्तर की पवित्रता से और अवगुणोंके त्यागनेसे उनको प्रसन्नकिया कभी क्रोध के स्थान पर क्रोधित नहीं हुई ३ वह अच्छा पूजित अत्यन्त प्रसन्न चित्त मुनि मुझको वरदेनेवाला हुआ उसने मुझसे यह बचन कहा कि तुझको अवश्य बरलेनाचाहिये ४ इसकेपीछे मैंने शापके भयसे उस ब्राह्मण से कहा कि जैसा आप चाहते हैं वैसाही होय तब उस ब्राह्मणने फिर मुझसे कहा ५ हे शुभमुखी कल्याणी तू धर्मकीमाताहोगी और जिन२ देवताओंको बुलावे-गी वह सब देवता तेरे आधीनहोंगे ६ ब्राह्मण यहकहकर अन्त-र्द्धान हुआ तब मैं आश्चर्य्य युक्तहुई सत्यदशाओं में स्मरण शक्ती का नाश नहीं होताहै ७ फिर महलकी अटारीपर चढ़ीहुई उदय हुये सूर्य्यको देखकर मैंने ऋषिके उस बचन को स्मरण करके इच्छाकरी ८ उसमें दोषको न जानती लड़कपनसेनियतहुई इसके पीछे सहस्रांशु सूर्य्य देवता अपने शरीर के दोभाग करके एक शरीरसे आकाश में और दूसरे शरीर से पृथ्वीपर आकर मेरे सन्मुख वर्त्तमानहुये उन्होंने एक शरीरसे तो लोकोंको प्रकाशित किया और दूसरे शरीरसे मेरे पास आये ९ । १० मेरे पास आकर मुझ कंपायमानसे कहा कि बरमांगो मैंने उनको शिर से प्रणाम

करके कहा कि जाइये ११ उस तीक्ष्णांशुसूर्य्यने मुझसे कहा कि मेरा निरर्थक बुलाना योग्य नहींहै मैं तुझको और उस ब्राह्मण को भस्म करूंगा जिसने कि तुझको वरदिया है १२ फिर उस अभीष्ट करनेवाले ब्राह्मणको शापसे रक्षा करनेकेलिये मैंने सूर्य्य देवतासे कहा कि हे देवता मेरापुत्र तेरे समानहोय १३ फिरसूर्य्य ने तेजसे मुझमें प्रवेशकरके और मुझको मोहित करके कहाकि तेरापुत्र होगा यह कहकर स्वर्गको चलेगये १४ फिर महलों के भीतर पितासे गुप्त वृत्तान्त करनेवाली मैंने गुप्त जन्म लेनेवाले अपने बालक कर्ण को जलमें छुड़वादिया १५ फिर उस देवताकी कृपासे मैं कन्याहोगई हे वेदपाठी जिसप्रकार उस ऋषिने मुझसे कहाथा १६ मुझ अज्ञानीस्त्री से वह जानाहुआपुत्रभी त्यागकिया गया वह बात मुझको जलातीहै यह पापहोय वा न होय परन्तु मैंने उसको प्रकट करदिया हे भगवन् आप उसके दिखलाने की अभिलाषा को पूर्णकरो १७।१८ हे निष्पाप श्रेष्ठ मुनि इसराजाके हृदयमें जो इच्छानियतहै वह आपको विदित है यह राजा अभी उस अभिलाष को पावै १९ इसप्रकार के कुन्तीके वचन सुनकर वेदज्ञों में श्रेष्ठ व्यासजीने उत्तरदिया कि अच्छायह सब प्राप्तहोने के योग्यहै और यह इसीप्रकार है जैसा कि तुमने मुझसे कहा है २० तेरा अपराध नहींहुआ क्योंकि तू कन्याभावमेंथी ऐश्वर्य्य-मान देवता शरीरोंमें प्रवेश करतेहैं २१ वह देवताओं के समूहहैं जो कि संकल्प दृष्टि स्पर्श वाणी और भोग इन पांचों प्रकारोंसे सन्तानोंको उत्पन्न करतेहैं २२ हेकुन्ती तुझ मनुष्यजन्ममें नियत होनेवाली का मोह करना उचित नहीं है तेरे मनका सन्ताप दूर होय २३ बलवानों के सब कर्म्म शुभ फलदायी हैं बलवानों का सब पवित्रहै सामर्थ्यवानोंकाही सब धर्म्महै पराक्रमियोंकाही सब निजधनहै २४॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्वणित्रिंशोऽध्यायः ३०॥

———❋———

इकतीसवां अध्याय ॥

व्यासजीबोले कि हे कल्याणी गान्धारी तू पुत्र भाई बान्धवों को पिताओं समेत ऐसेदेखेगी जैसे कि रात्रिव्यतीत होनेसे सोकर उठनेवालोंकोदेखतेहैं १ कुन्तीकर्णको सुभद्रा अभिमन्युको द्रौपदी पांचों पुत्र पिता आदि अपने सब भाइयोंको देखेगी २ प्रथमही मेरे हृदयमें यह निश्चय नियतहुआथा जब कि मुझसे राजाधृत-राष्ट्र कुन्ती और तुमने कहाथा ३ वह सब नरोत्तम क्षत्रीधर्म्ममें नियत महात्मा तेरे शोच करनेके योग्य नहींहैं क्योंकि उन सब गुणोंसेयुक्तहोकर उनसबनेमरणकोपाया २ हेनिर्दोष वह देवकार्य उसीप्रकार से अवश्य होनहार था इसीहेतुसे देवताओं के सब अंशोंने पृथ्वीतलपर अवतार लियाथा ४।५ उनगन्धर्व्व अप्सरा पिशाच गुह्यक राक्षस पवित्र मनुष्य गुद्धदेवऋषि ६ देवतादानव और निर्मल देवऋषियोंने अवतार लिया उन्होंनेही कुरुक्षेत्रकी युद्धभूमि में मरणको पाया ७ धृतराष्ट्र नामसे प्रसिद्धजो बुद्धिमान् गन्धर्वराजहै वही धृतराष्ट्र नरलोकमें तेरापतिहै ८ पांडुको मरु-द्गणसेजानो जो कि श्रेष्ठतमहोकर धर्मसे कभी च्युतनहींहोताथा बिदुर और राजा युधिष्ठिर धर्मकेअंशसे उत्पन्न हुये जानो ९ भी-मसेन वायुगणसे जानो हेशुभदर्शन तुमदुर्योधनको कलियुगजानो शकुनीको द्वापर और दुश्शासनादिकोंको राक्षसजानो और इस पांडव अर्जुनको नररूप ऋषिजानो १०।११ श्रीकृष्णकोनारायण नकुल सहदेव को अश्विनीकुमार जानो और हे सुन्दरी अपनेदो शरीरोंसे संसारका प्रकाश करनेवाला कर्णको सूर्य्यरूपजानो १२ जोकि वह पाण्डव प्रसन्नताका उत्पन्न करनेवाला उत्पन्न हुआ वह पांडव अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु छः महारथियोंके हाथसेमारा गया वह चन्द्रमा था अपने योगसेही दो रूपवाला होगया था १३।१४ जो धृष्टद्युम्न द्रौपदीके साथ अग्निसे उत्पन्न हुआ उस-को अग्निका शुभभाग जानो और शिखण्डी को राक्षसजानो १५

द्रोणाचार्य्यको वृहस्पति का अंश और अश्वत्थामा को रुद्रसे उत्पन्न जानो गंगाजी के पुत्र भीष्म को मनुष्य शरीर प्राप्त करने वाला वसुदेवताजानो १६हे महाज्ञानी सुन्दरी इसप्रकार यह देवता मनुष्यशरीरोंको प्राप्तकरके कार्य्यके समाप्तहोनेपर स्वर्गकोगये१७ परलोकके भयसे सबके हृदय में जो यह दुःख बहुतकालसे नियत है अब मैं उसको निवृत्त करूंगा १८ आप सबलोग मिलकर गंगा जीके तटपर चलो वहां तुम उन सबलोगोंको देखोगे जो इसयुद्ध-भूमिमें मरेहैं १९ वैशम्पायन बोले कि सबलोग व्यासजीके इस वचनको सुनकर बड़े सिंहनाद करतेहुये श्रीगंगाजीके सन्मुख च-ले २० धृतराष्ट्र अपने मन्त्री, पांचों पाण्डव, श्रेष्ठमुनि और आये हुये गन्धर्वों समेत यात्रा करनेवालेहुये २१ फिर सब मनुष्यों के समूहने क्रमसे श्रीगंगाजी को प्राप्तहोकर सबने प्रीति और सुख पूर्व्वक निवास किया २२ उस बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्रने जिसके अग्रभाग में स्त्री और वृद्धलोगथे पांडव आदि सब साथियों समेत अभीष्ट स्थानपर निवासकिया २३ मृतक राजाओं के देखने के अभिलाषी रात्रिकी बाट देखते उनलोगोंका वह दिन सौवर्ष के समान व्यतीत हुआ २४ जब सूर्य्य देवता पर्वतों में श्रेष्ठ पवित्र अ-स्ताचल को गये तब अभिषेक करनेवाले उनलोगोंनेसंध्याआदिक कर्मोंको किया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि फिर सायंकाल की संध्या करनेवाले वह सब जो कि वहां आयेथे रात्रिके प्रारम्भमें व्यासजीके पासगये १ तब धर्मात्मा पवित्रात्मा राजा धृतराष्ट्र पांडव और उन ऋषियों समेत व्यासजीके पास बैठगये २ और गान्धारी समेत स्त्रियांभी बैठगईं पुरवासी और देशवासी सब मनुष्यभी अवस्था के क्रमसे यथायोग्य स्थानोंपर बैठगये ३ फिर महातेजस्वी महामुनिव्यास

जीने श्रीगंगाजीके पवित्र जलमें प्रवेश करके सब लोगोंका आ-ह्वान किया ४ पांडव और कौरवें के जो जो शूरवीर युद्धकरने-वालेथे वह सब और बहुत प्रकारके देशोंमें रहनेवाले महाभाग राजा लोगों का ५ ऐसा कठिन शब्द जलके पास हुआ जैसे कि प्रथम कौरवीय और पांडवीय सेनाओं में हुयेथे ६ इसकेपीछेवह सब राजालोग जिनके अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्यथे सेना समेत जलसे बाहर निकले ७ दोनोंराजा बिराट और द्रुपद अपने पुत्र और सेना समेत बाहरनिकले द्रौपदीकेपुत्र, अभिमन्यु, घटो-त्कचराक्षस ८ कर्ण, दुर्य्योधन, महारथी शकुनी, दुश्शासन आ-दिक धृतराष्ट्र के महाबलीपुत्र, जरासन्धकेपुत्र भगदत्त, पराक्रमी जलसिन्ध, भूरिश्रवा, शलशल्य, अपने छोटेभाइयों समेत वृषसेन ९ १० राजपौत्र लक्ष्मण, धृष्टद्युम्नकापुत्र, शिखण्डीके सबपुत्र, छोटे भाइयों समेत धृष्टकेतु ११ अचल, वृषक, अलायुधराक्षस, सोम दत्त, बाह्लीक, राजाचेकितान १२ यह सब और अन्य २ बहुत से राजालोग जोकि आधिक्यतासे वर्णन नहींकियेगये वह सब तेजोमय शरीर धारणकियेहुये जलसे बाहर निकले १३ जिस बीरकी जो २ पोशाक ध्वजा और जो २ सवारीथीं उनसब चि-ह्नोंसमेत वह सब राजा दिखाईपड़े १४ वह सब दिव्यपोशाक और प्रकाशमान कुण्डलोंसे अलंकृतथे और सबलोग शत्रुता अहं-कार क्रोध और ईर्षासे रहितथे जिनके आगे गन्धर्व गानकरतेथे और जो बन्दीजनों से स्तुतिमान दिव्यमाला और पोशाकों से अलंकृत और अप्सरा गणोंसेयुक्तथे १५।१६ हे राजा तब प्रसन्न चित्त व्यासमुनिने अपने तपोबलसे धृतराष्ट्र को दिव्यनेत्रदिये १७ दिव्यज्ञान और बलसेयुक्त यशवन्ती गान्धारीने उनसब पुत्रोंको और जो अन्य लोग उस युद्धमें मारेगये उन सबकोभी देखा १८ आँखोंके बन्द न करनेवाले आश्चर्य युक्त उनसब मनुष्योंने उस अपूर्व ध्यानसेपड़े रोमांचखड़ेकरनेवालेअद्भुत वृत्तान्तको देखा १९ स्त्री पुरुषोंसे पूर्णबड़े उत्सवरूप अद्भुत चमत्कारकाऐसे देखा जैसे

कि कपड़ेपर खिँचेहुये चित्रको देखतेहैं २० हे भरतर्षभ वह धृत-
राष्ट्र उस मुनिकी कृपासे उन सबको अपने दिव्यनेत्रोंसे देखकर
बहुत प्रसन्नहुआ २१॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वात्रिंशतितमोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर क्रोध ईर्षा और पापोंसे
रहित वह सब पुरुषोत्तम परस्परमें मिले ब्रह्मऋषि व्यासजी से
नियतकीहुई शुभ और उत्तम विधिमें नियतहोकर सब स्त्री पुरुष
ऐसे प्रसन्नचित्तथे जैसे कि देवलोकमें देवता प्रसन्नहोतेहैं १।२ हे
राजा पिता पुत्रसे स्त्रियां पतियोंसे भाई भाइयोंसे मित्र मित्रों
से स्नेहपूर्व्वक मिले ३ पाण्डव बड़ी प्रसन्नता समेत उस बड़े
धनुषधारी कर्ण अभिमन्यु और सब द्रौपदी के पुत्रों से अच्छी
रीति से मिले ४ हे राजा फिर वह प्रीतिमान पाण्डव कर्ण
के साथ मिलकर भाईपनेकी प्रीतिमें नियतहुये ५ हे भरतर्षभ
वह शूरवीर और अहंकारसे रहित क्षत्री व्यास मुनिकी कृपासे
इसप्रकार परस्परमें मिलकर ६ शत्रुताको त्यागकरके मित्रता में
नियतहुये हेराजा इसप्रकारसे सब पुरुषोत्तम कौरव और अन्य२
राजालोग भी बांधवोंके समूह और पुत्रोंसे अच्छीरीति करके
मिले इसरीतिसे उनप्रसन्नचित्त राजाओंने उससब रात्रिमें बिहार
करके ७।८ पूर्ण आनन्द और विश्वासयुक्तता से उसस्थान को
स्वर्ग भवनकी समानजाना हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ वहां परस्पर
मिलनेवाले उन शूरवीरोंका शोकभय व्याकुलता अप्रीति और
अपकीर्त्ति यहसब नहींहुये ९ पिताआदिक भाई पति और पुत्रों
से मिलनेवाली उनस्त्रियोंने १० बड़े आनन्दको पाकर दुखको
त्यागकिया वह बीर और वह सबस्त्रियां एकरात्रि बिहारकर-
के ११ परस्पर मिलकर और एक२कोपूछकर जैसे आयेथे उसी
प्रकार चलेगये इसके पीछे उस श्रेष्ठ मुनिने उनसब लोगोंको

विदाकिया १२ फिर वह सब महात्मा पवित्र नदी गंगाजीमें प्रवेश करके सबके देखतेहुये एक क्षणमेंही अन्तर्द्धान होगये १३ रथ ध्वजाओंसमेत अपने २ लोकोंको चलेगये कोई देवलोकको और कोई ब्रह्मलोक को चलेगये १४ कोई वरुणलोकको कोई कुबेर-लोकको और कितनेही राजाओंने यमलोक को पाया १५ कोई राक्षस और पिशाचोंके लोकको कितनेही उत्तर कौरव देशोंको गये कितनेही विचित्रगति वाले महात्मा राजा लोग देवताओं समेत जिनलोकोंको पाकर १६ सवारी और साथियों समेत आयेथे वह भी चलेगये उन सबके चलेजानेपर जलमें नियत १७ धर्मके अभ्यासी महातेजस्वी कौरवोंके हितकारी महामुनिने उन सब क्षत्रियाओं से जिनके कि स्वामीमारेगये थे यह वचन कहा १८ कि जो जो उत्तमस्त्रियां अपने पतियोंके लोकों को चाहतीहैं वह सावधान होकर शीघ्रही गंगाजल में प्रवेश करें १९ इसकेपीछे उनकेवचनको सुनकर श्रद्धामान उत्तम स्त्रियां ससुरसे पूछकर गंगाजलमें प्रवेशितहुईं २० हेराजा तब मनुष्य शरीरको त्यागकर वह पतिव्रता स्त्रियां अपने २ पतियोंसेजा मिलीं २१ इस क्रमसे मनुष्य शरीर को त्याग उनसब पतिव्रता क्षत्रियाओंने गंगाजलमें प्रवेश करके पतियोंकी सालोक्यता को पाया २२ वह इसप्रकार दिव्यरूप और दिव्य भूषणोंसे अलंकृत दिव्य माला और वैसीही पोशाक धारण करनेवाली हुईं जैसे कि उनके पतिथे २३ सुन्दर स्वभावों से युक्त थकावटसे रहित सब गुणोंसे संयुक्त विमानों में नियत उन सब स्त्रियोंने अपने २ स्थानोंको पाया २४ उससमय पर जिसजिसकी जो २ इच्छाहुई वरदाता धर्मवत्सल व्यासजीने उसउसकी इच्छाको पूराकिया २५ नाना प्रकारके देशोंमें वर्त्तमान मनुष्य भी उनराजाओं के फिर आगमनको सुनकर प्रसन्न हुये २६ जो मनुष्य प्रियलोगों समेत इनके मिलापको अच्छेप्रकारसे सुनताहै वह इसलोक और पर-लोकमें सदैव अभीष्टोंको प्राप्त करताहै २७ धर्मके ज्ञाताओंमें श्रेष्ठ

जो ज्ञानी पुरुष इस कथाको सुनाता है २८ वह इस लोकमें शुभ-कीर्त्तिवान्होकर परलोकमें शुभगतिको पाताहै हे भरतबंशी वेद पाठी अथवा जपमें प्रवृत्त तपसे युक्त २९ साधुओंके आचार और इन्द्रीजित दानकेद्वारा पापोंसे मुक्त सत्यवक्ता पवित्र शान्तहिन्सा और मिथ्या से पृथक् ३०। ३१ ईश्वर और परलोक को माननेवाले श्रद्धामान धैर्य्यवान् यहसब लोग इसअद्भुत वृत्तान्तको सुनकर परमगतिको पावेंगे ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणित्रयस्त्रिन्शोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सूतपुत्रनेकहा कि तब बुद्धिमान् राजाजनमेजय सब पितामहाओंके इसआवागमन को सुनकर प्रसन्नहुआ १ और प्रसन्नहोकर राजाने राजाओंके दुबाराआनेके बिषयमें प्रश्न कियाकि शरीर त्यागनेवाले पुरुषोंका दर्शन दूसरी बार उसीरूपसे कैसेहोताहै २ इतनी बातको सुनकर वहबक्ताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण व्यासके शिष्य प्रतापवान् बैशंपायनने फिरभी राजाजनमेजय को उत्तर दिया ३ हेराजा बिनाभोग सब देव मनुष्यादिकजीवोंके कर्मोंका नाशनहीं है और सबशरीर और रूपउनकर्मोंसे उत्पन्नहैं ४ प्राणियोंका स्वामी जो ईश्वरहै उसकी शरणतासे हार्दाकाशमें नियत पुत्र पित्रादिक अबिनाशी होतेहैं उनअबिनाशी शरीरोंका संग बिना शवान् शरीरोंकेसाथ संसारदशामें होताहै और जबवहअबिनाशी शरीर बिनाशवान् शरीरसे जुदेहोतेहैं तब उनका नाशनहींहोता५ जो निवृत्ति नाम कर्महै वह सत्य और श्रेष्ठ ऊपर लिखेहुये फल को प्राप्त करताहै और प्रवृत्ति कर्महै उनसे मिलकर आत्मासुख दुःखादिको भोगता है ६ इसप्रकार अपने स्वरूप में नियत क्षेत्रज्ञ आत्मभाव कर्म्मसे निश्चय करके नाशके योग्य नहीं है जैसे कि हमारे शरीरों का यह आत्मानाम प्रतिबिम्ब जीवात्मा दर्पण की काई आदिक दशाको नहीं प्राप्तकरता है अर्थात उसकेनाशसे

नाश नहीं होताहै इसप्रकार क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका आत्मभाव भी जानना योग्यहै ७ जब तक शरीरका उत्पन्न करनेवाला कर्म्म भोगसे समाप्त नहींहोताहै तबतक उसमें आत्माका अध्यासहै जो मनुष्यलोक में कर्म्मों से क्षीण होताहै वह आत्मा रूप होताहै ८ अनात्मा रूप इन्द्री आदिक बहुत प्रकार इस शरीरको पाकर शरीररूप हुयेहैं जो योगी उन इन्द्रियादिकों को शरीरसे पृथक् जानतेहैं उनकी बुद्धिसे वह सब आत्मारूप होनेसे अविनाशी होते हैं ९ अश्वमेधयज्ञमें घोड़ा मारनेके विषय में यह श्रुतिहै कि उस घोड़े के नेत्र सूर्य्य में और प्राणहवा में लय होते हैं इसीप्रकार शरीर धारियोंके वह प्राण दूसरे लोकमें भी अविनाशीहोतेहैं यह निश्चयहै १० हेराजा जो तेरा इसमें अभीष्टहै तो मैं इसतेरे सुख-दायीको कहूंगा तुमने यज्ञ रचना में वह देवयान मार्ग्ग सुने— अर्थात् ज्ञानमें तेरा अधिकार नहींहै इससे तुम उपासना के साथ कर्मको प्राप्तकरके देवयान मार्गमें आश्रयलो यह तेरे योग्यहै ११ जिस समय तुमने यज्ञकिया था उससमय देवतालोग तेरे मित्र होगये थे जब देवता संयुक्तहुये तब वह जीवोंकीलोक प्राप्तीमें ईश्वर हैं १२ इसीहेतुसे अविनाशी जीवात्मा यज्ञकरके अभीष्ट जीवनमुक्तीकोप्राप्तहोतेहैं यज्ञ न करनेवाले अन्यजीव उसगतिको नहीं पातेहैं अब डेढ़ श्लोकमें ज्ञाननिष्ठा को वर्णन करतेहैं जो पुरुष इस पंचभूतात्मक देववर्ग और आत्माके अविनाशी होने पर १३ इसजीवात्माके बहुतसे रूपांतरोंको देखताहै वह निरर्थक बुद्धिवाला है और पुत्रादि के शरीर नाशहोनेमें जो शोच करता है वह अज्ञानहै यह मेरा आशयहै १४ जो मनुष्य स्त्री आदिके वियोगमें दोष देखनेवालाहै वह उनके संयोगको त्यागकरे क्योंकि असंग आत्मामें अनात्माका योगनहींहै और बिनायोगके वियोग क्याहोगा और पृथ्वीपर प्यारे के वियोगहीसे दुख उत्पन्नहोता है १५ जिसने ज्ञाननिष्ठाको प्राप्तनहींकिया और केवल जीवईश्वर की भिन्नताका जाननेवाला होकर शरीरके अभिमानसे उपासना

के द्वारा पृथक्है वहयोगी सगुण ब्रह्म होकर और बुद्धिसे निर्वि-
शेष ज्ञानको पाकर मोह अर्थात् मिथ्या ज्ञानसे मुक्त होताहै १६
अब उसमुक्तिका लक्षण कहतेहैं जो दृष्टिसेगुप्त शुद्धचैतन्य ब्रह्म है
उससे प्रकटहुआ और फिर उसी में लयहुआ इसीहेतुसे मैं उसको
नहीं जानताहूं क्योंकि वहबुद्धिइन्द्री और मनसेभी परेहै और वह
मुझको नहीं जानताहै क्योंकि वहकारण रूपनहींहै फिरकहौकि
तुम उसप्रकारकेक्योंनहीं होतेहोइसका यह उत्तरहै कि मुझ को
वैराग्य नहींहै अर्थात् वैराग्यही मोक्षका साधनहैं १७ यह अस्व-
तन्त्र जीवात्मा जिस २ शरीरसे जो २ कर्म करताहैउसउस शरीर
से अवश्य उसकर्मफलको भोगता है मनके पापको मनहीसे पाता
है और शरीरके पापको शरीरसेही पाताहै तात्पर्य्य यह है कि
शरीर वाणी और चित्तकी चंचलताको त्याग करके प्राणों का
निरोध करे १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे राजा जनमेजय राजा धृतराष्ट्रने पुत्रोंकोचक्षु
हीनता से पूर्वसें न देखकर और अब व्यासजीकी कृपा से दिव्य
चक्षुके द्वारा सुन्दर रूपपुत्रोंके दर्शनको पाया १ उसनरोत्तमराजाने
राजधर्म ब्रह्मउपनिषद और निश्चयात्मक बुद्धिको प्राप्तकिया २
महाज्ञानी विदुरने तपके बलसे सिद्धीको पाया और फिर धृतराष्ट्र
ने तपस्वी व्यासजीको पाकर सिद्धी प्राप्तकी ३ जनमेजयने प्रश्न
किया कि जो वरदाता व्यासजी मेरे पिताका भी वैसाही दर्शन
करावें जैसाकि उसकारूप वेषाक और दशाथी वहीअबभीहोय
तबमैं आपके सबवर्णनपर श्रद्धाकरूं ४ मेराअभीष्टसिद्धहोय और
निश्चय करनेवाला मैं अपने मनोरथ को पाऊं उस उत्तम ऋषि
की कृपासे मेराअभीष्ट मनोरथ प्राप्तहोय ५ तब सूतपुत्रने कहाकि
उसराजाके इस वचनके कहनेपर बुद्धिमान प्रतापवान व्यास-

जीने कृपाकरी और परीक्षित को आह्वान किया ६ फिर राजा जनमेजयने उसरूपऔर अपनी पूर्व्वदशा समेत स्वर्ग से आनेवाले श्रीमान् अपनेपिता परीक्षितको देखा ७ महात्मा शमीकऋषि और उसके पुत्र शृङ्गीऋषि को और जो राजाकेमन्त्रीलोगथे उन सबको देखा फिर उसराजाजनमेजयने यज्ञके औभृतस्नानकेसमय अपने पिताकोदेखा तब बहुत प्रसन्न होकर स्नानकिया उससमय राजाने स्नान करके आस्तीक ब्राह्मण से यह वचनकहा कि हे आस्तीक यह मेरा यज्ञ नानाप्रकार का रखनेवालाहै यहमेरामत है ८।९।१० इसहेतुसे कि जो मेरे शोकका मूल रूप यह पिता यहांआयाहै आस्तीकने कहा हे कौरवोत्तम जिसयज्ञमें यहतपके भंडाररूप प्राचीन ऋषि व्यासजी हैं उस यज्ञ करनेवालेके दोनों लोकबिजयहैं११ हे पांडवनंदन तुमने बिचित्र कथासुनी सर्प भस्म किये और पिता की पदवी को प्राप्त किया १२ हे राजा तेरी सत्यता से किसी प्रकार करके तक्षक सर्प बचा सब ऋषि पूजन कियेगये और पिताका भी दर्शनकिया १३ इसपापनाशक इति-हासकोसुनकर बहुत बड़ा धर्मप्राप्तकिया और बडेलोगोंकेदर्शनसे हृदयकी गांठखुलगई १४ जो धर्ममें पक्ष नियतकरनेवालेहैं और श्रेष्ठ चलन में प्रीति करनेवालेहैं जिनको कि देखकर पाप दूर होताहै उनके अर्थनमस्कार करनाचाहिये १५ सूतपुत्रने कहा कि राजा जनमेजयने उस उत्तम ब्राह्मण से यह सब सुनकर बारंबार सत्कार पूर्वक उस ऋषिका पूजन किया १६ हेबड़े साधू उसधर्मज्ञ राजाने बनवासकी शेषकथा हुई कभी उस धर्म्म से च्युत न होने-वाले वैशंपायन ऋषिसे पूछी १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणि पंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

जनमेजयनेपूछा कि राजा धृतराष्ट्र और राजा युधिष्ठिरने पुत्र पौत्रोंको उनके साथियों समेत देखकर क्या किया १ वैशम्पायन

बोले कि वह राजऋषि राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंका अपूर्वदर्शनकरके शोकसे निवृत्तहोकर फिर आश्रममें आया २ और अन्य सब लोग और वह महर्षी धृतराष्ट्र से पूछकर इच्छाके अनुसार चले गये ३ फिर महात्मा पाण्डव जिनके कि साथमें बहुतथोड़े सेना के मनुष्यथे स्त्रियों समेत उस महात्मा राजाके पासगये ४ लोक पूजित बुद्धिमान ब्रह्मऋषि व्यासजीने उस आश्रमके स्थानमें वर्त्त-मान धृतराष्ट्र से यह बचन कहा ५ कि हे महाबाहु कौरवनन्दन धृतराष्ट्र तुमने उन ऋषियोंके सुनते नानाप्रकारकी कथाओंको सुना जोकि ज्ञानमें वृद्ध पवित्रकर्मी महावृद्ध कुलके प्राचीन और वेदान्त धर्म्मके ज्ञाताहैं ६ । ७ तुम शोकमें चित्त मतकरो क्योंकि बुद्धिमान लोग होनहारमें दुखी नहीं होतेहैं तुमने देवताके समान दर्शन रखने वाले नारदजीसे देवताओंके गुप्त वृत्तान्त सुने ८ जो कि शस्त्रोंसे पवित्र होगये थे इस निमित्त उन्होंने क्षत्री धर्मसेउस शुभगतिकोपाया तुमने अपने पुत्र जिसप्रकारकेदेखे वह सब उसी प्रकारसे इच्छानुसार बिहार करने वालेहैं ९ यहबुद्धिमानयुधिष्ठिर सब भाई स्त्री और सुहृदजनों समेत आपकी सेवामें वर्त्तमानहै १० इसको बिदा करो और यह जाकर अपने राज्यशास नादिक कर्म करे इनलोगोंको बनमें रहतेहुये कुछ ऊपर एक महीना व्यतीत हुआ ११ हे कौरवकुलके उद्धार करनेवाले राजा धृतराष्ट्र यह राज्यपद बहुत शत्रु रखनेवालाहोकर सदैवउपायोंसे रक्षाकरनेके योग्यहै १२ बड़े तेजस्वी व्यासजी से इसप्रकार समझायेहुये बड़े बक्ता राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिरको बुलाकर यहबचन कहा १३ हे अजातशत्रु तेराकल्याण होय तुम सब भाइयों समेत मेरे बचन को सुनों हे राजातेरी कृपासे शोकहमको पीड़ा नहीं देताहै १४ हे ज्ञानीपुत्र तुझ प्रियकर्मी नाथके साथहोकर इसप्रकार रमताहूं जैसे कि हस्तिनापुरमें रमताथा १५ तुझसेही पुत्रभावके फलको पाया तुझमें मेरी बड़ी प्रीति है हे महाबाहु मेरा क्रोध नहींहै हे पुत्रजाओ अबबिलम्ब न करो १६ यहां आपलोगोंको देखकर मेरे

तपकी हानिहोती है क्योंकि मैंने तुझतपसे संयुक्त को देखकर विश्वासकोप्राप्तकिया १७ इसीप्रकार यहतेरीदोनोंमातासूखेपत्तों को खाकर मेरे समान व्रत करनेवालीहैं हे पुत्र यह दोनोंबहुत कालतक नहीं जीवेंगी १८ मैंने व्यासजीके तपोबल और तुम्हारे मिलाप से दूसरे लोकमें वर्त्तमान दुर्योधनादिक पुत्र भी देखे १९ हे निष्पाप मेरे जीवन का प्रयोजन प्राप्तहुआ अब मैं उग्र तपमें अच्छीरीतिसे नियतहूंगा तुम मुझको आज्ञादेने को योग्यहो २० अब पिण्डकीर्त्ति और यह वंशतुझसे नियतहै हे वीर बेटा अब जावो अथवा प्रातःकाल जावो बिलम्बन करो २१ हे भरतर्षभ तुमनेबहुतसी राजनीतिसुनीहै इससेमैं उपदेशके योग्यनहींदेखता हूं हे समर्थ तुमने मेरीबड़ी सेवाकी २२ वैशंपायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र के इसबचनको सुनकर युधिष्ठिरने कहाकि हेधर्मज्ञआप मुझनिरपराधीके त्यागनेको योग्यनहींहो २३ हे सावधानव्रतवाले मेरे भाइयोंसमेत सबसाथी चलेजायँमैं आपके और अपनी दोनों माताओंके साथरहूंगा २४ फिरगान्धारीने उससे कहाकिहे बेटा इसप्रकार मतकरो सुनोयह कौरव कुल और मेरे सहुरकापिण्ड तेरे आधीनहै २५ हे बेटाजावो इतनाही बहुतहै हम तुमसेपूजित हुये हे बेटा राजाने जो तुमसे कहावह पिताकी आज्ञाभी तुमको करनी चाहिये २६ वैशंपायन बोलेकि गान्धारीसे इसप्रकार कहे हुये युधिष्ठिर ने प्रीतिके जलोंसे पूर्णदोनों नेत्रोंको पोंछकररोती हुई कुन्तीसे यहकहा २७ किराजा धृतराष्ट्रऔर यशावन्तीगांधारी मुझको बिदाकरतेहैं आपमें चित्त लगानेवाला महादुःखीमैं कैसे जाऊंगा २८ हे धर्मचारिणीमैं तेरेतपके बिघ्न करनेमें प्रवृत्तनहीं हूं क्योंकि तपसे बढ़कर कोई बातनहींहै तपसेही मोक्षको पाता है २९ हे माता पूर्वकेसमान अबमेरी बुद्धिभी राज्यमें प्रवृत्त नहीं है और मेराचित्तभी तपमें प्रवृत्तहै ३० हेकल्याणी पूर्वकेराजाओं से रहित यह संपूर्ण पृथ्वीमेरे आनन्दकी देनेवाली नहींहै हमारे बान्धवनाशहुये हमाराबलपराक्रम पूर्वकेसमाननहींहै३१ पांचाल-

देशी अत्यन्त नाशयुक्त हुये कथामात्र बाक़ीहै हे कल्याणी उनके बंशकाचलानेवाला किसीकोनहीं देखताहूं ३२ वहसबयुद्धभूमिमें द्रोणाचार्यसेभस्मकियेगये और शेषबचेहुये रात्रिकेसमयअश्वत्थामाकेहाथसे मारेगये ३३ चंदेरीदेशी और मत्स्यदेशी भी मारेगये हमनेजिनको प्रथमनेत्रोंसेदेखा उनमेंसे केवलयादवोंका समूहबासुदेवजीकेबांधवभाईहोनेसे शेषबचाहुआहै ३४ आपकोदेखकर धर्म के निमित्त नियतहोना चाहताहूं राज्यकेनिमित्त नियतनहींहुआ चाहताहूं हमसबकोतुम कल्याणकारी नेत्रोंसेदेखो हमलोगोंको आपकादर्शनबड़ादुष्प्राप्यहै ३५ राजाधृतराष्ट्रमहाअसह्यउग्रतपको प्रारंभकरेंगे उसबातकोसुनकर सेनाके बीरोंके प्रधान बीरसहदेव ने ३६ अश्रुओंसे व्याकुलनेत्र होकर युधिष्ठिरसे यह बचनकहा कि हेभरतर्षभ मैं माताओंके त्यागमें उत्साह नहीं करताहूं ३७ हेप्रभु आपशीघ्र जाइयेमैं तपको करूंगा मैं यहांही तपसे अपने शरीर को शुष्क करूंगा ३८ राजाधृतराष्ट्र और इनदोनों माताओं की चरणसेवामें प्रवृत्तरहूंगा फिरकुन्तीनेउसबीरसहदेवसेमिलकर यह बचनकहा हे पुत्रजावो ऐसामतकहो तुममेरी आज्ञाकोकरो ३९ हे बेटातुम्हारे आगम कल्याणरूपहों तुमस्थिरचित्तहो ४० तुम्हारे यहां इसप्रकार निवास करनेसे हमारे तपकी बड़ीरोक होगीतेरी स्नेहफांसीमें फंसकर मेराउत्तमतप नाशहो जायगा ४१ हे समर्थ पुत्र इसीहेतुसे तुमजावो हमारी आयुर्दाथोड़ीहीबाकीहै हे राजेन्द्र इसप्रकारके कुन्तीके अनेक प्रकारके बचनोंसे ४२ सहदेव और मुख्यकरराजा युधिष्ठिरका चित्तस्थिर हुआ फिर राजाधृतराष्ट्र और उनमाताओंसे आज्ञालेकर उनपांडवोंने४३ धृतराष्ट्रकोदण्डवतकरके पूछना प्रारंभकिया युधिष्ठिर ने कहा हे राजा आपके आशीर्व्वाद युक्त होकर हम राजधानी को जायँगे तुमसे आज्ञा पापों से रहित होकर हम जायँगे ४४ महात्मा राजासे कहे हुये इसराजऋषि धृतराष्ट्रने कौरव युधिष्ठिरको प्रसन्न करके आज्ञा दी ४५ राजा नें उस बलवानों में श्रेष्ठ भीमसेनको विश्वासित

किया और उसबुद्धिमान् पराक्रमीनेभी उनको अच्छेप्रकारदण्ड-वत करी ४६ उस कौरव धृतराष्ट्र ने अर्जुन समेत नकुल सहदेवसे भी मिलकर बहुत प्रसन्न करके उनको आज्ञादी ४७ गान्धारीसे आज्ञप्त और चरणोंको दण्डवतकरनेवाले मातासे सूंघेहुयेमस्तक उनपांडवोंनेराजाधृतराष्ट्र की परिक्रमाकरी ४८ जैसेकिस्तन्यपान से रोकनेमें बछड़े होतेहैं उसीप्रकार वारंवार देखते हुये उनसबने परिक्रमा करी ४९ फिर द्रौपदी आदिक सब कौरवीय स्त्रियां न्यायसेससुरमें भक्तिको नियतकरके सासको प्रणाम करकेचलीं दोनोंसासोंसे आज्ञप्त और मिलकर आशीर्वादोंको लेकर बहुत शिक्षाओंको पाकर वह द्रौपदी आदिक अपने पतियोंके साथ चलीं ५०।५१ फिर रथजोड़नेवाले सूत व कारतेऊंट और हींसते हुये घोड़ोंकेभी शब्द प्रकटहुये ५२ फिर राजायुधिष्ठिर स्त्री सेना के लोग और बांधवों समेत वहांसे हस्तिनापुर नगरमें आया ५३

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिषड्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले हे राजा हस्तिनापुर नगरमें पांडवोंके दोवर्ष व्यतीत होनेपर देवऋषि नारदजी राजायुधिष्ठिरके पास आये १ वक्ताओंमें श्रेष्ठकौरव राज बीरयुधिष्ठिरने उनको पूजकर फिर उस आसनपर बैठेहुये विप्रवर्य्य मुनिसे यह बचनकहा २ कि मैं सन्मुख नियत होनेवाले आपभगवान्को बहुतकालसे नहींदेखता हूं हे वेदपाठी क्या आपका कल्याणहै अथवा कल्याण सन्मुख हुआहै ३ कौन देशतुमने देखेहैं आपकी जो आज्ञाहोय उसको मैं करूं हेश्रेष्ठ ब्राह्मण आप हमारी परमगतिहो इससे वर्णनकी जिये ४ नारदजीबोले हेराजा मैंने तुमको बहुत दिनमें देखाहैमैं तपोवनसे आयाहूं मैंने गंगाजी समेत बहुतसे तीर्थ देखे ५ युधि-ष्ठिर बोले कि अब गंगाके तटपर रहनेवाले मनुष्य मुझसे कहते हैं कि महात्मा धृतराष्ट्र बड़े तप में नियतहैं ६ वहां वह धृतराष्ट्र

गान्धारी कुन्ती और सूतसंजयको आपने देखा होगा वहसब बहुत प्रसन्नहैं ७ हे भगवन् अब वह मेरेताऊ राजाधृतराष्ट्र कैसेप्रकारसेहैं इसकोमैं सुनना चाहताहूं जोआपने उस राजाको देखाहै तोउसकी कुशलक्षेम वर्णन कीजिये ८ नारदजीबोले हे महाराज तुम स्थिर चित्तहोकर उस वृत्तांतको सुनो जैसाकि मैंने तपोवन में देखा और सुनाहै ९ हे कौरवनन्दन राजायुधिष्ठिर बनवाससे आपके लौट आनेपर तेराताऊ धृतराष्ट्र कुरुक्षेत्रसे हरद्वारको गया १० वह बुद्धिमान धृतराष्ट्र गांधारी बधकुन्ती सूतसंजयऔर याजक ब्राह्मणों समेत अग्निहोत्रसे युक्त हरद्वार में पहुंचा ११ वह तपोधन रखनेवाला तेराताऊ कठिनतपस्यामें नियत मुखमें वीटा अर्थात् बीड़ाको रखकर वायुभक्षी मुनि हुआहै १२ बनमें सबमुनियोंसे पूजित महातपस्वी वह धृतराष्ट्र जिसके शरीरमेंअस्थिचर्महीं बाकीथे छःमहीनेतक ब्रतकरनेवाला हुआ १३ हे भरतवंशी वह गांधारी केवल जलका आहार करनेवाली और कुंती एकमहीने पीछे भोजन करनेवाली होगई है और संजयने छठवें दिनभोजन करनेसे अपने समयको व्यतीत किया १४ हे प्रभु याजकब्राह्मणोंने उस बनमें राजा के समक्षऔर परोक्षमें बिधिपूर्वक अग्निमें हवनकिया १५ फिरवहराजास्थानसे रहित होकर बनचारी हुआ वह दोनोंदेवी और संजयभी उसके पीछे हुये १६ हेराजावह संजय समभूमि वा असमभूमिमेंराजाका मार्गदर्शक और निर्दोष कुन्ती उस गांधारीकी मार्गदर्शक हुईहै १७ फिरकभी वह बड़ासाधू बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रकुछ गंगाकेपास गंगाजीमें स्नानकरके आश्रमको ओरचला १८ वायु प्रकट हुई और दावानल नाम प्रचंड अग्निउत्पन्नहुई उसनेचारोंओरसे उस सबबनको घेरकरके भस्म करदिया १९ चारोंओर मृगोंके झुंड और सर्पोंके भस्म होने और तड़ागादिकोंमें शूकरोंके आश्रित होने २० उस बनके जलजाने और महादुःखके वर्त्तमान होनेसे आहार न करनेसेनिर्बल और चेष्टासे रहित २१वहराजा धृतराष्ट्र

और अत्यन्त दुर्बल वह आपकी दोनोंमाता वहां से हटजाने को समर्थ नहींहुईं फिर उस विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्रने समीपआनेवाली अग्निको ज्ञानसे जानकर २२ सूत संजयसे यह बचन कहा कि हेसंजय तुम वहांही लेजावो जहांपर कि तुमको अग्निनहीं भस्म करसके २३ यहां अग्निसे संयुक्तहोकर हमसब परमगतिको पावेंगे तबवक्ताओंमें श्रेष्ठ महाब्याकुल संजयने उस राजासेकहाकि २४ हेराजावृथाअग्निसे भस्महोकर यहआपकी मृत्यु अप्रिय होगी और अग्निसे बचने का भी कोई उपाय नहीं देखताहूं २५ अब यहां जो करनेके योग्य करना उचितहै उसके करनेमें बिलम्बनकरनाचाहिये संजयसे इसबचनकोसुनकर राजा ने फिर यहबचनकहा कि अपने आप घरसे निकलनेवाले हमसब की यह मृत्यु अनुपकारी नहींहै जल, अग्नि, वायु, और अनसन-ब्रत २६।२७ यहसब कर्म तपस्वीलोगोंके प्रशंसनीय होतेहैं हे संजय जावो देरनकरो तब राजाधृतराष्ट्र संजयसे यहकहकर औरचित्त को समाधीमें नियत करके २८ गान्धारी और कुन्तीसमेत पूर्वा-भिमुखहोकर बैठगया फिर उसको उसप्रकार देखकर परिक्रमा कर २९ बुद्धिमान संजयने उससेकहा हे प्रभुआत्माको परमात्मा में लय करो उस बुद्धिमान ऋषि के पुत्र राजाने उसके उस बचनको किया ३० तब इन्द्री समूहोंको रोककर काष्ठके समान हुआ और महाभागगांधारी और आपकी माताकुन्ती ३१ और आपका ताऊ राजा धृतराष्ट्र यह तीनों दावानल नाम अग्नि में संयुक्तहुये और सूत संजय उस दावानलसे पृथक् होगया ३२ मैंने गंगा तटपर उससंजयको तपस्वियोंमें बैठाहुआदेखा वहबुद्धिमान तेजस्वी संजय यह सब वृत्तांत वर्णन करके और उनऋषियोंसे पूछकर ३३ हिमालय पर्वतको गया हे राजा इसप्रकार उस बड़े साहसी कौरवराज धृतराष्ट्र ३४ और तेरी दोनों माता गांधारी और कुन्तीने मृत्युको पाया हे भरतबंशी दैवइच्छासे जलतेहुये मैंने राजाकाशरीर ३५ और उनदोनोंदेवियोंके शरीरदेखे फिर

तपोधन ऋषि राजाधृतराष्ट्रकी उसमृत्युको सुनकर उसतपोवनमें आये उन्होंने उनकी गतियोंका शोच नहीं किया हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर वहां मैंने यहसब वृत्तांतसुनाहै३६। ३७ कि इसप्रकारसे राजा धृतराष्ट्र और वह दोनों देवी जलकर भस्म होगईं हेराजा शोचन करनाचाहिये उसराजा ने ३८ और गांधारी समेत तेरी माता कुन्तीने अपने आपहीअग्निसंयोगको पाया वैशंपायनबोले कि धृतराष्ट्रके इस स्वर्गयात्राकोसुनकर उन सबमहात्मा पांडवों को बड़ाशोक उत्पन्न हुआ ३९ हेमहाराज तब राजाकी इसगति को सुनकर स्त्रियोंके और पुरबासियोंकेबड़े दुःखकेशब्द उत्पन्न हुये ४० हायधिक्कार है हमको इसप्रकार पुकारकर अत्यन्त दुःखी और ऊंचीभुजारखनेवाला राजायुधिष्ठिर माताकोस्मरण करताहुआ रोदन करनेलगा ४१ और भीमसेनादिक सबभाई भी रोनेलगे हे महाराज तब उसदशावाली कुन्तीकोसुनकर स्त्रियोंके महलोंमें बड़ेरोनेकेशब्दहुये उनसबने इसप्रकार भस्महोनेवालेउस वृद्धराजाको जिसके कि पुत्र मारेगयेथे ४२। ४३ और यशावन्ती गांधारीको शोचा हे भरतवंशी एक मुहूर्त्तमेंही उस शब्दके फिर होनेपर ४४ धर्म्मराजने धैर्य्य से नेत्रोंके आंसुओंको रोककर यह बचनकहा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मण हम बांधवलोगोंके नियतहोते बन मेंउस घोरतपमें नियत महात्मा धृतराष्ट्र की अनाथके समान इस प्रकार मृत्युहोनेपर १ ज्ञातहोताहै किपुरुषोंकी गति बड़ीकठिन-तासे जानीजातीहै यहमेरामतहै जिस स्थानपर यह राजाधृतराष्ट्र उसबनकी अग्निसे भस्महुआ २ जिस बाहुशालीकेसौपुत्र श्रीमान् थे वह साठहजार हाथीके समान पराक्रमी राजाबनकी अग्निसे भस्महोगया ३ पूर्व्वसमयमें उत्तम स्त्रियों ने तालब्रतनाम पंखोंसे

जिसकी हवाकरी अब दावानलसे घिरेहुये उसराजाकी वायुगृद्ध पक्षियों ने करी ४ जो शयनस्थान से सूत और मागधों के द्वारा जगायाजाताथा वह राजा मुझपापीके कर्म्मोंसे पृथ्वीपर शयन करताहै ५ इसप्रकार पतिब्रतमेंनियत पतिलोकमें वर्त्तमान यशवन्ती असंतान गांधारीको नहींशोचताहूं ६ कुन्तीकोही शोचता हूं जिसने कि पुत्रोंके बड़े प्रकाशमान और वृद्धियुक्त ऐश्वर्य्यको छोड़कर बनबासको स्वीकार किया ७ हमारे इस राज्यको बल पराक्रमको औरक्षत्री धर्मकोधिक्कारहै जिसके कारण हममृतक रूपहोकर जीवते हैं ८ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ तम नारदजी निश्चय करके कालकीबड़ीसूक्ष्मगतिहै जो उसकुन्तीने राज्यकोत्यागकर बनबासको अंगीकार किया ९ युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन कीमाता होकर कैसे अनाथके समान अग्निमें भस्महुई मैंइसको शोचताहुआ अचेतहुआ जाताहूं १० खांडव बनमें अर्जुनसेअग्नि देवता निरर्थक तृप्त कियागया वहउस उपकारको नजानता कृतघ्नीहै यहमेरामतहै ११ जिस स्थानपर उसभगवान अग्निदेवताने अर्जुनकी माताको भस्मकिया जो कि कपटरूप ब्राह्मणहोकर भिक्षाका अभिलाषी होकर सन्मुख आया १२ अग्निको धिक्कार है और अर्जुनकी प्रसिद्ध सत्य संकल्पताको धिक्कारहै हे भगवन् यहदूसरा बड़ादुःख मुझको दिखाईपड़ताहै १३ जोकि उसतपस्वी राजऋषि कौरव राजा धृतराष्ट्र का संयोग वृथा अग्निसे हुआ है १४ इस पृथ्वीपर राज्यकरके महावनमें मन्त्रोंसे पवित्रउसकी अग्नियोंके वर्त्तमान होनेपर इसप्रकारकी मृत्यु कैसेहुई १५ वृथा अग्निसे युक्त होकर मेरे पिताने मृत्यु को पाया मैं मानताहूं कि हड्डियोंकी माला महा दुर्बल कुन्ती १६ बड़े भयके समय अवश्य यह पुकारी होगी कि हाय बेटाधर्मराज और भयसे इस प्रकार पुकारती भस्महुई कि हाय बेटा भीमसेन रक्षाकरो १७ मेरीमाता चारोंओरसेदावानलनाम अग्निसे घिरीहुई सहदेवउसको सबपुत्रों सेअधिकतर प्यारा था १८ उस बीर सहदेवने भी उसको नहीं

निकासा इस बचनको सुनकर पांचो भाई परस्पर मिलकर ऐसे रोदनकरनेलगे १९ जैसे कि प्रलयकेसमय जीवधारी रुदन करते हैं उनरोनेवाले पुरुषोत्तमोंके शब्दमहलकी रानी आदिक स्त्रियों केरुदनसेवृद्धियुक्तहोकरपृथ्वी और आकाशमेंव्याप्तहोगये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिअष्टत्रिन्शोऽध्याय: ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे भरतवंशी यह राजा धृतराष्ट्र वृथा अग्निसे नहींभस्महुआ वहां मैंने जैसासुनाहै उसको मैं तुमसे कहताहूं १ इष्टी यज्ञकरके बनमें प्रवेशकरते उस बायुभक्षी बुद्धिमानने अग्नियोंका त्याग किया यह हमने सुनाहै २ हे भरतर्षभ फिर उसके याजक लोग बनमें अग्नियोंको छोड़कर इच्छानुसार चलेगये ३ निश्चयकरके वही अग्नि बनमें वृद्धियुक्त होगये और उस बनको उसने प्रज्वलितकिया ऐसा वहांके तपस्वियों ने कहा ४ हेभरत श्रेष्ठ वह राजाधृतराष्ट्र गंगाके सूखेबनमें आपही उस अग्निसेसंयुक्त हुआहै जैसेकि मैंने तुमसे कहाहै ५ हेनिष्पाप राजायुधिष्ठिर इस प्रकारसे उन मुनियोंने मुझसे कहाथा जिनको कि मैंने गंगा तट पर देखाथा ६ हेराजा इस प्रकारसे वह राजा अपनीही अग्निसे संयुक्त होगयाहै तुम उस राजाको मत शोचो उसने परम गतिको पायाहै ७ हेराजातेरी माताने गुरुकीसेवासे निस्सन्देह बड़ीसिद्धी को प्राप्तकिया ८ हेराजेन्द्र तुमसब भाइयों समेत उनकी जलदान क्रिया करनेको योग्यहो आपउसको अवश्य कीजिये ९ वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर पांडवोंका धुरन्धर नरोत्तम राजा युधिष्ठिर अपने सगेभाई और स्त्रियोंको साथलेकरचला १० एक वस्त्रसे युक्त शरीरवाले राजा भक्तपुरबासी और देशबासी गंगा जीके सन्मुख चले ११ फिर उन सब नरोत्तमों ने युयुत्सुको आगे करके जलमें स्नानकर उस महात्माकेनिमित्त जलदानकिया १२ वहां वह नरोत्तम विधि पूर्वक नाम और गोत्रसे गान्धारी और

कुन्तीके शौचकर्मको करतेहुये नगरसे बाहर निवासीहुये १३ उस नरोत्तमने बिधिज्ञ सत्यकर्मी ब्राह्मणोंको हरद्वारकोभेजा जहांपर कि वह राजा भस्म हुआथा १४ तब राजा युधिष्ठिरने उन मनुष्यों को जिनकोकि देनेकेयोग्य सामानदेदियाथा आज्ञादीकि हरद्वार में उन्होंका क्रियाकर्म करना चाहिये बारहवेंदिन उसशौच प्राप्त करनेवाले राजा युधिष्ठिरने बिधिपूर्वक उन धृतराष्ट्र आदिकोंके निमित्त ऐसेश्राद्धकिये जोकि दक्षिणासे संयुक्तथे१५।१६उस राजा नेधृतराष्ट्रके नामसे सुवर्ण चांदी गौ और बहुमूल्यवाली वस्तुओं कादानकिया १७ तेजस्वी राजाने गान्धारी और कुन्तीका नाम लेकर पृथक् २ बहुतसे उत्तम दानदिये १८ जो मनुष्य जो २ वस्तु जितनी चाहताथा उतनीही वह पाताथा शय्या भोजनमणि रत्न धन १९ सवारी बस्त्र भोग और अच्छी अलंकृत दासियां यहसब राजाने दोनों माताओंका नामलेकर दानकिया २० फिर वह राजायुधिष्ठिर बहुतसे दान देकर हस्तिनापुर नगरमें आया २१ वहमनुष्य भी जो राजाकी आज्ञासे हरद्वारकोगयेथे वह उन्होंके हाड़ों को इकट्ठा करके फिर गंगाजीपर आये २२ वहां आकर उन्होंने नानाप्रकारकीमाला और सुगन्धित वस्तुओंसे उनकेहाड़ोंका पूजनकर गंगामें पधराके राजासे आकर निवेदनकिया हे राजा देवऋषिनारदजीभी उसधर्मात्मा राजायुधिष्ठिरको विश्वास देकर अपने इष्ट स्थान को गये २३। २४ इसप्रकारबुद्धिमान् धृतराष्ट्रके पंद्रहवर्ष नगरमें और तीन बर्ष बनवासमें ब्यतीतहुये २५ जिसकेपुत्र युद्धमेंमारेगये और जो सदैव अपने बिरादरी और सब नातेदारादिकोंके दानोंकोदेताथा २६ और जिसके ज्ञातिकेलोगों समेत बांधवमारेगये और जो अत्यन्तप्रसन्न चित्तनथा उसराजा युधिष्ठिरने राज्यका सब कार्यकिया २७ सावधान मनुष्यआश्रम वासपर्वके अन्तमेंभी ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन करावे २८॥

महाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआ०बा०पर्वणिएकोनचत्वारिंशोध्यायः ३९॥

इति आश्रमबासपर्व्व समाप्तम्॥
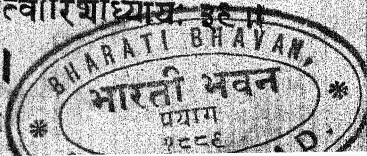
अथ महाभारत भाषा मूसलपर्व्व का सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

—※—

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक

इति मूसलपर्व भाषाका सूचीपत्र समाप्तम

—※—

महाभारतभाषा मूसल पर्व्व ॥

—⁕—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमूसलपर्व्वभाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ मूसलपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण संयुक्त नरोत्तमों में भी उत्तमनर और सरस्वती देवीको नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहास को वर्णनकरताहूं १ आदिके पर्व्वोंमें जो धर्म अर्थ काममोक्ष वर्णनकिये उनमें से सभापर्व्व और बनपर्व्वमें यज्ञसत्यता धैर्य्य गुरुसेवन तीर्थसेवन आदिक सिद्धकिये विराट आदिक आठ पर्व्व में सेवा और नीतियोंका वर्णनकिया और हिंसा मिथ्या और कुलकेविनाश से जो प्रयोजन सिद्ध होताहै उसका हेतु शोक का होनाभी सिद्ध किया बारहवें तेरहवें और चौदहवें पर्व्वमें मोक्षके हेतु रूपदान

विद्या और बनवासादिक वर्णन करके पन्द्रहवें पर्व्वमें बनवासका फलवर्णन किया अब सोलहवें पर्व्वमें केवल संसारी सुखऐश्वर्य्यों में प्रवृत्त मनुष्य मद्यादिकपानसे उन्मत्त होकर परस्पर युद्धकरके नाशहुये सत्रहवें पर्व में अनिच्छा धर्म केफलऔर गृहके त्याग को वर्णनकरेंगे अठारहवेंपर्व्व में परिणामफल स्वर्गको वर्णन करेंगे—

वैशंपायनबोले कि इसके पीछेछत्तीसवांवर्ष वर्त्तमान होनेपर कौरवनन्दन युधिष्ठिरने विपरीत शकुनों को देखा १ अर्थात् परस्पर युद्धकरनेवाली कंकड़ बरसानेवाली वायु चली उनपक्षियोंने जिनका वामऔर को आना शुभ होताहै दाहिने मंडलकिये २ महानदियां उल्टीचलने लगींदिशाकुहरसे आच्छादित हुईं और अंगारों की वर्षाकरनेवाली उल्काआकाशसे पृथ्वीपरगिरीं ३ हे राजा धूल आंधी से सूर्य्य गुप्तमंडलवाला होगया और सदैव राहु केउदय और केतुग्रहोंसे आकाश शोभासे रहितहुआ ४सूर्य्य और चन्द्रमाके वहमंडलभयकारी दिखाईदेते थे जोकिकाले रूखेभस्म रंग और लालवर्णके थे ५ हे राजेन्द्र भयकारी चित्तके सन्देहोंके उत्पन्नकरनेवालेऐसे २ अनेक उत्पात दिखाई देतेथे ६ कुछकाल केपीछे कौरवराज युधिष्ठिरने मूसलसे प्रकटहोनेवाला वृष्णियों कामरणकानोंसेसुना ७ पांडवधर्मराजने बासुदेवजी और बलदेवजीकोउसविनाश से छुटाहुआ सुनकर भाइयोंको बुलाकर कहा कि क्या करनाचाहिये ८ वह सब पांडवपरस्पर मिलकर ब्राह्मणों केशापसे नाश होनेवाले वृष्णियोंको सुनकर पीड़ामान हुये उन वीरोंनेउस शार्ङ्ग धनुषधारी बासुदेवजी का मरना जो कि समुद्रके सूखजानेके समान असंभव था विश्वासनहीं किया ९।१०वहपांडव मूसलसे होनेवाले नाश को चित्तमें नियत करके शोक दुःख से युक्त महाव्याकुलता पूर्वक हतसंकल्प होकर बैठगये ११ जनमेजयने पूछा हे भगवन् बासुदेवजी के प्रत्यक्षवर्त्ती वह अन्धक और भोजवंशी महारथी वृष्णियों समेत कैसे नाशको प्राप्त हुये १२ वैशम्पायन बोले कि छत्तीसवें वर्ष में वृष्णियों की बड़ी

अनीति हुई कालसे प्रेरित उनलोगोंने मुसलों से परस्परमें एकने एकको मारा १३ जनमेजयने पूछा कि किसके घोर शाप से उन वृष्णीअन्धक और भोजवंशी बीरोंने विनाशको पायाहैश्रेष्ठ ब्राह्मण इसको व्योरे समेत मुझसे कहो १४ वैशंपायन बोले कि सारण आदिक बीरोंने द्वारकामें आनेवाले तपोधन बिश्वामित्र, कण्व और नारदजी को देखा १५ दैवदण्ड से पीडामान उन कुमारोंने साम्बको स्त्रीके समान अलंकृत कर सबके अग्रभाग में करके ऋषियों के पास जाकर कहा १६ कि हे ऋषियो सन्तान की इच्छा रखनेवाली बड़े तेजस्वी बभ्रु की यह स्त्रीहै इसको आपलोग अच्छी रीतिसे जानों कि यह क्या उत्पन्न करेगी १७ हे राजा इसप्रकार के बचनों को सुनकर छलसे निरादर किये हुये उन मुनियोंने क्रोध करके जो उत्तरदिया उसको सुनों १८ अर्थात उन्होंने कहा कि यह बासुदेवजी का पुत्र साम्ब वृष्णी और अन्धकोंके नाशके निमित्त बड़े भयकारी लोहेके मूसलको उत्पन्न करेगा १९ जिस मूसलसे अत्यन्त दुराचारी निर्दयी और अहंकारी तुमलोग श्रीकृष्ण और बलदेवजी के सिवाय संपूर्ण कुलभरे को नाशकरोगे २० श्रीमान बलदेवजी शरीर को त्याग करके समुद्र को जायँगे और जरानाम बहेलिया पृथ्वीपर बैठे हुये महात्मा श्रीकृष्णको घायल करेगा २१ अर्थात हे राजा उन दुराचारी दुर्बुद्धियोंसे अपमान युक्त क्रोधसे रक्तनेत्र मुनियोंने परस्पर बिचारकर यहशापदिया फिर उनमुनियोंने ऐसाकहकर चित्तसे केशवजीको स्मरण किया अर्थात चित्तसे यह प्रार्थना करी कि हमने शापदिया है इसको आपक्षमा करें २२ कुलके नाश के ज्ञाता बुद्धिमान मधुसूदन श्रीकृष्णजी ने सुनतेही उन वृष्णियों से यह कहा कि यह ऐसेही होनाथा २३ तब जगत के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर अपने नगरमें गये और उस भावी मरण को बिपरीत नहीं करनाचाहा २४ फिर प्रातःकाल के समय साम्बने उस मूसल को उत्पन्न किया जिससे

कि वृष्णी और अन्धक कुलोंके सब मनुष्योंका नाश हुआ २५ अर्थात् वृष्णी और अन्धकों के नाशकेअर्थ किंकरनाम यमदूत की सूरत शापसे प्रकट भयका उत्पन्न करनेवाला बड़ा मूसल उत्पन्न किया लोगोंने उस मूसल को लेजाकर राजा उग्रसेन के सन्मुख लाकर धरा २६ हे राजा तब व्याकुलरूप राजा उग्रसेनने उस मूसलको बहुत सूक्ष्म खंड२ करके महीनकरवाया और उस बुरादेको समुद्रमें डलवादिया २७ और सबलोगोंने राजा उग्रसेन श्रीकृष्ण बलदेवजी और महात्मा बभ्रु के बचनसे नगरमें मनादी करवादी २८ कि आजसे लेकर सब वृष्णी अन्धकोंके लोगोंको और सम्पूर्ण नगरनिवासियों को मद्यपान करनानहींचाहिये २९ जो कोई मनुष्य हमारी आज्ञा के विना ऐसा करेगा वह अपने बान्धवों समेत जीवता शूली पर चढ़ाया जायगा ३० तब सब मनुष्योंने सुगमकर्मी बलदेवजी की आज्ञाको जानकर राज्यके भयसे नियम किया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्त्र्यांसंहितायांमौसलपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसप्रकार अंधकोंसमेत नानाप्रकारके उपायकरनेवाले सबवृष्णियोंके घरोंमें वह कालपुरुष सदैव भ्रमता करनेलगा १ जो कि कराल, विकट, मुंड, कृष्ण और पिंगलवर्णथा वृष्णियोंके घरोंमें प्रवेशकरके कहीं दिखाईदिया कहीं नहीं २ लाखों धनुषधारियोंने उसकालपुरुष को बाणोंसे घायलकिया परंतुवहसबजीवोंकानाशकरनेवाला कालपुरुषकिसीप्रकारसे भी घायलनहींहुआ ३ प्रतिदिन वृष्णीऔर अन्धकोंके अर्थ महाभय कारी रोमांचको खड़ी करनेवाली बहुत कठिन वायु प्रकटहुई ४ मार्गोंमें चूहें कीबड़ी वृद्धिहुई और बहीमार्गफूटेहुये मृन्मयपात्रों से युक्त हुये रात्रिके समय सोनेवाले पुरुषोंके शिरकेबाल और नख चूहोंसेकाटेजाते थे ५ वृष्णियोंके स्थानोंमें चारकनाम पक्षी चीची

कूची नामशब्दोंको करतेथेबकरोंने शृगालोंके समान शब्दकिये ६।७ तबबृष्णीऔरअन्धकोंके स्थानादिकोंमें कालसे प्रेरितपाण्डु आरक्तपाद और कपोत पक्षी भ्रमण करनेलगे ८ गौओंकेपेटोंसे गधे उत्पन्न हुये और खच्चरियोंमें ऊंट उत्पन्न हुये ९ तब भी बृष्णीलोग पापोंको करते लज्जित नहीं हुये ब्राह्मण पितर और देवताओं से बिरुद्धहुये १० गुरुओंका भी अपमान किया परन्तु श्रीकृष्ण और बलदेवजीने नहीं किया स्त्रियोंने पतियोंको और पतियोंने स्त्रियोंको बिपरीतकर्म दिखलाये ११ ज्वलितरूपअग्नि नीलेरक्त और मंजीठ वर्णकिरणोंको पृथक्२ प्रकट करता हुआ बामभागमें वर्त्तमान होताथा १२ उसपुरीमें सदैव उदय औरअस्त के संमयशिरसे रहित मनुष्योंसे घिराहुआ सूर्य्य बारंबार मनुष्यों कोदिखाईपड़ा १३ हे भरतवंशी बड़े शुद्ध आसनोंपर सन्नद्धभोजन की वस्तुओंके लानेपर हजारोंकीट असंख्य दिखाईपड़े १४ महात्माओंके जपकरनेमें और पुण्याहवाचन में उनके सन्मुख पुरुष दौड़ते हुये सुनेजातेथे परन्तुकोई दिखाई नहीं दिया १५ उनसब यादवोंने बारंबार ग्रहोंसे परस्पर आघातित नक्षत्रोंको देखा परन्तु किसीदशामेंभी अपने नक्षत्रको नहीं देखा अर्थात् अपने नक्षत्रका न दीखना अपनी मृत्युको द्योतन करताहै बृष्णी और अन्धकों के स्थानोंमें पांचजन्य शंखके बजनेके समय उनगधों के शब्द होनेलगे जिनके कि शब्द महाभयकारीथे १६।१७ इसप्रकार समय की विपरीतता को देखतेहुये श्रीकृष्णजी उस तेरसके दिन जो कि मावसके स्थानापन्नथी उनयादवोंको देखकर बोले १८ कि शुक्लपक्षमें भी एक तिथिकमहुई अर्थात् चतुर्दशीकोही पूर्णिमा होगई और उसदशामें ग्रहणभीहुआ महाभारतके युद्धवर्त्तमानहोने पर ऐसा हुआथा अब वह हमारे नाशके अर्थसमक्षमें आयाहै १९ उस समयको बिचारते केशीदैत्यके संहारी श्रीकृष्णजीने अच्छे प्रकार ध्यानकरके छत्तीसवेंबर्षको बर्त्तमानहुआमाना २० जिसके बांधव मारेगये उसपुत्र शोकसेदुखी और पीड़ामानगांधारीने जो

शापदियाथा वहीशाप अबवर्त्तमानहोकर सन्मुखआया पूर्वसमय में सेनाओंके व्यूहित होनेपर भयकारी उत्पातोंको देखकर जिस को कहा था यहवही समय वर्त्तमान हुआ २१।२२ तब शत्रुओंके विजय करनेवाले उसके सत्य करने के अभिलाषी वासुदेवजी ने इसप्रकार कहकर तीर्थयात्रा करनेके अर्थ आज्ञाकरी २३ और सब लोगोंने केशवजीकी आज्ञासे मनादीकी कि हे पुरुषोत्तमो तुमको समुद्रकेपास तीर्थयात्रा करनी चाहिये २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि रात्रिके समय स्वप्नमें स्त्रियोंके सौभाग्य मंगल सूत्रादिकों को चुराती और पांडुर वर्ण दांतों से हंसती हुई कालीदेवी द्वारकाके चारोंओरदौड़तीथी अग्निहोत्र शाला और रहने के स्थानादिकों में भयानक रूप गिद्धोंने स्वप्नदशामें वृष्णी और अन्धकोंको घायलकिया १।२ भूषण छत्रध्वजा और कवच यहसब भयानकरूपराक्षसोंसे लूटेहुये दिखाईपड़े ३ तब वृष्णियों केदेखते हुये श्रीकृष्णजीका चक्र जो कि अग्नि का दिया हुआ वज्रनाभि और लोहमयीथा वह आकाशकोचला ४ दारुकसारथी केदेखते वहचित्तके समान शीघ्रगामी चारोंउत्तमघोड़े उस दिव्य सूर्य्यवर्ण तैयार रथकोलेचले और सागर के ऊपर होकर चले गये ५ श्रीकृष्ण और बलदेवजीसे अच्छीपूजित और तालवगरुड़ जीसे चित्रित जो वह बड़ी२ ध्वजाथीं उनको अप्सराओं ने ऊपर की ओरसे हरलिया और दिनरात यहीवचन कहा कितीर्थयात्रा कोजाओ ६ इसके अनन्तर चलनेके अभिलाषी उनवृष्णी और अंधक वंशी नरोत्तमोंने सब बालबचोंसमेत तीर्थयात्राकोचाहा ७ तब अंधक और वृष्णियोंने नानाप्रकारके भोजन और भक्ष्याकी वस्तु मांस और पीनेकोमद्यआदिक वस्तुतैयारकीं ८ फिरशोभा-यमान बड़ेतेजस्वी सेनाओंके समूहघोड़ेहाथी और रथोंकीसवारी

से नगरके बाहर निकले ९ तब बहुतसी खानेपीनेकी वस्तुरखने वाले यादवलोग स्त्रियें समेत राजाकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्र में अपने निवासस्थानपर ठहरे १० मोक्षमें पंडित बड़ेयोगी वह उद्धव जी समुद्रकेपास उनयादवोंको शीघ्रही नाशमान देखकर उनबीरों को बिदाकरके चलेगये ११ फिर वृष्णियोंके नाश जाननेवाले श्रीकृष्णजीने हाथजोड़कर जानेवाले उसमहात्माको रोकना नहीं चाहा १२ फिरमृत्युके पंजेमें फँसेहुये उनवृष्णि और अंधकमहारथि-योंने तेजसे पृथ्वी और आकाशको पूर्णकरके जानेवाले उसउद्धव को देखा १३ उन महात्माओंका वहभोजन जो ब्राह्मणोंके निमित्त तैयार हुआथा और मद्यकी गन्धिसे युक्तथा उसको बन्दरों को दिया १४ फिर प्रभासक्षेत्र नाम बड़े तीर्थमें उन बड़ेतेजस्वी यादवोंका मद्यपान करना प्रारंभहुआ जोकि सैकड़ों बाजोंसे नटोंसे और नर्त्त-कोंसे घिरेहुयेथे १५ श्रीकृष्णजीके सन्मुख बलदेवजी सात्यकी गद और बभ्रु ने कृतबर्मकेसाथ मद्यपानकिया १६ फिर मदसे चूर्ण सात्यकीने सभासदोंके मध्यमें कृतबर्माको हँसकर और अपमान करके कहा १७ कि हे कृतबर्मा कौन घायलहुआ क्षत्री मृतकके समान सोनेवालोंकोमारे जो कर्म तुमने कियाहै उस कर्मको यादव लोग नहीं सहनकरतेहैं १८ सात्यकीके इसप्रकार कहनेपर रथि-योंमें श्रेष्ठ प्रद्युम्नने कृतबर्माका अपमान करके उस बचनकी प्रशंसाकरी १९ इसके पीछे निन्दायुक्त दाहिने हाथसे दिखाते अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतबर्माने उससे कहा कि २० युद्धमें टूटी भुजा शरीरके त्यागनेके अर्थ बैठाहुआ भूरिश्रवा तुझ निर्दयी बीरसे कैसे गिरायागया २१ उसके बचनको सुनकर बीरोंके मारनेवाले श्रीकृष्णजीने तिरछी दृष्टिसे देखा २२ जो वह स्यमन्तकमणि और सत्राजित था उसकीकथा सात्यकीने मधुसूदनजीको सुनाई २३ तब उसको सुनकर क्रोधयुक्त रोदन करतीहुई सत्यभामा श्रीकृष्णजीको क्रोधयुक्त करती उनके पास आई २४ फिर क्रोध-युक्त सात्यकीने उठकर यह बचन कहा कि हे सुन्दरी मैं पांचों

द्रौपदीके पुत्र धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके मार्गपर अर्थात् उन की पदवीपर चलताहूं और सत्यतासे शपथ खाताहूं कि जिस दुर्बुद्धी अश्वत्थामासाकेसाथी पापीकृतबर्माने २५। २६रात्रिकेसमय सोतेहुये बीर मारे अब इसकी अवस्या और शुभकीर्त्ति समाप्तहुई २७ उस क्रोधयुक्त सात्यकीने इस प्रकारसे कहकर केशवजीके समीपसे उसके सन्मुख जाकर खड्गसे कृतबर्माके शिरकोकाटा २८ तब श्रीकृष्णा जी चारोंओर के अन्य मनुष्योंको भी मारनेवाले सात्यकीके रोकनेको दौडे २९ हेमहाराज फिर समयकी बिप-रीतितासे चलायमान सब भोज और अंधकबंशी इकट्ठे होगये और सात्यकीको घेरलिया ३० समयकी बिपरीतिपनेको जानते महातेजस्वी श्रीकृष्णजी उन क्रोधयुक्त शीघ्रतासे दौडनेवालेयाद-वोंको देखकर क्रोधित नहींहुये३१ तब मद्यके मदसे चूर्णमृत्युके बशीभूत उनलोगोंने उच्छिष्ट पात्रोंसे सात्यकीको घायलकिया ३२ सात्यकीके घायल होनेपर क्रोधयुक्त और सात्यकीके छुडानेके अभिलाषी प्रद्युम्न अभिमन्यु उनके मध्यमेंआये ३३ वह सात्यकी भोज और अन्धकोंसे घिरगया भुज पराक्रम से शोभायमान वह दोनोंबीर ३४ श्रीकृष्णजी के देखतेहुये शत्रुओंकी अधिकताके कारणसे मारेगये तब यदुनन्दन केशवजीने सात्यकी समेत अपने पुत्र को मृतक देखकर ३५ क्रोधसे एकसाथही पटेलोंको हाथमें लिया वह सब मिलकर भयानक बज्रकी समान लोहे का मूसल हुआ फिर उसीसे श्रीकृष्णजीने उन सब सन्मुख होनेवालोंकोमारा तदनन्तर कालसे प्रेरित अन्धक,भोज,शिनी,और वृष्णी बंशियोंने ३६।३७युद्धमेंपरस्पर मूसलोंसेमाराहेराजाउन्होंमेंसे जिसकिसीकोध युक्तने पटेलेको लिया वह बज्ररूप दिखाई पडा हे समर्थ राजा जनमेजयवहांतणभी मूसलरूपदीखा३८।३९अर्थातवहसब ब्रह्मशाप से होगयाथा इसको आपजानो जिसतणको फेंकतेथे वह अवध्यों कोभीमारताथा४०हे भरतबंशी तबवह मूसलवज्र रूपदेखनेमेंआया पुत्रने पिताको और पिताने पुत्रकोमारा ४१ मदिरापानके मदसे

अचेत परस्पर युद्धकरनेवाले वह कुकुर, और अन्धकवंशी चारों ओरको दौड़े और ऐसेगिरे जैसेकि पतंगनाम पक्षी अग्निमेंगिरते हैं वहांकिसी घायलने भी भागनेकी बुद्धि नहींकी ४२ उस स्थान पर समयके बिपर्य्ययके जाननेवाले मधुसूदनजीने जिस मूसलको देखा उसको पकड़कर नियतहुये ४३ फिरमाधवजी सांबु, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न और अनिरुद्धको मराहुआ देखकर क्रोधयुक्तहुये ४४ तब पृथ्वीपर गिरेहुये गदको देखकर उस अत्यन्त क्रोधयुक्त शार्ङ्ग धनुषधारीने शेषबचेहुओं काभी नाशकरदिया ४५ शत्रुओंकेपुरोंके विजय करने वाले महातेजस्वी बभ्रु और दारुकने उनमारनेवाले श्री कृष्णजीसे जो कहा उसको सुनो ४६ बभ्रु ने कहाकि हे भगवन् तुमने बहुतसे मनुष्य मारे अब बलदेवजी को खोजकरें औरजहां वहहैं तहांचलें ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि इसकेपीछे शीघ्रगामी दारुक केशव और बभ्रुतीनों बलदेवजीके खोजने कोगये और अतुल पराक्रमीबलदेवजीको एक वृक्षके नीचे एकान्तमें बैठे ध्यानकरतेहुये देखा १ तब श्रीकृष्ण जीने महानुभाव बलदेव जीको पाकर दारुकको आज्ञाकरी कि तुम कौरवोंके पासजाकर यादवों के इसबड़ेबिनाशको अर्जुनके सन्मुख जाकर वर्णनकरो २ फिर अर्जुन ब्रह्म शापसे यादवोंको मराहुआ सुनकर शीघ्रतासे यहां आवेगा तब इसप्रकारसे आज्ञप्त वह बुद्धिमान दारुक रथकी सवारीसे कुरुदेशोंको गया ३ तब दारुकके चलेजानेपर केशवजीने बभ्रु कोअपने सन्मुख देखकर यह बचनकहा कि तुमशीघ्रतासे स्त्रियोंकी रक्षा कोजाओ चोरमनुष्य धनके लोभसे कहींउनको नहींमारें ४ केशव जीसे आज्ञा दियाहुआ मद्यसे उन्मत्त बिरादरीके मरनेसे पीड़ामान बभ्रुवहांसे चला और लुब्धकके लोहेके मुद्गरसे संयुक्त ब्रह्म

शापसे उत्पन्न मूसलने अकस्मात् केशवजीके सन्मुख विश्राम लेनेवाले ब्राह्मणसे शापपाये हुये दुःपरिणाम अकेले बभ्रुको मारा ५ तदनन्तर बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णने बभ्रुको मराहुआ देखकर बड़ेभाईसे कहा कि हे बलदेवजी मैं जबतक स्त्रियोंको अपने बिरादरी वालोंके सुपुर्द न कर आऊं तबतक तुमयहांहीं बैठेहुये मेरीबाट देखना ६ फिर जनार्द्दनजीने द्वारकामें प्रवेशकरके अपने पितासे यहवचन कहा कि आप अर्जुनके आनेतक हमारी सब स्त्रियोंकी रक्षाकरो ७ बलदेवजी मेरीबाट देखतेहुये बनमें नियत हैं अबमैं उनसे मिलूंगा मैंनेप्रथम राजा और कौरवोंका औरअब यह यादवोंका नाशदेखाहै ८ अबमैं यादवोंके बिनाइस यादवपुरीके देखनेकोभी समर्थ नहींहूं मैं बलदेवजीकेसाथ बनमें जाकर तपकरूंगा इसको आपजानें ९ श्रीकृष्णजी ऐसा कहकर अपने पिताके चरणोंको शिरसे स्पर्श करके शीघ्रही चले इसके पीछे स्त्री और बालकों समेत उसनगरके बड़ेशब्द प्रकटहुये १० फिर केशवजीने शोकयुक्त रोदन करनेवाली स्त्रियोंके शब्दोंको सुनकर वहांसे फिर लौटकर यहवचन कहा कि अर्जुन इसपुरीमें आवेगा वह नरोत्तम तुमको दुःखोंसे छुटावेगा ११ यह कहकरकेशवजीने बनके मध्यमें जाकर एकान्तमें अकेले बैठेहुये बलदेवजी को देखा फिर उसयोगसे संयुक्त बलदेवजीके मुखसे निकलने वाले बड़ेभारी श्वेत सर्पकोदेखा १२ तबवह अपने शरीरको छोड़कर रक्तमुख हजार शिरधारी पर्वत स्वरूप महानुभाव शेष नागजी देखतेहुये उधरको ओरकोचले जिधर समुद्रथा१३ उनको देखकर समुद्रने उनकी अभ्युत्थान पूर्व्वक अग्रगामिताकी और दिव्यनाग, पवित्रनदियां, कर्कोटक, बासुकी, तक्षक, पृथुश्रव, बरुण, कुंजर१४ मिश्री, शंख, कुमुद, पुंडरीक, महात्मा धृतराष्ट्र, नागह्राद, क्राथ, बड़ा तेजस्वी शितिकंठ, चक्रमद, अतिखण्ड १५ नागोंमें श्रेष्ठ दुर्मुखअंबरीष और आप राजाबरुणनेभी उनकी अग्रगामिताकरके उनकी कुशलक्षेमपूछकर उनको प्रसन्नकिया उनसबोंने अर्घ्य पाद्यादिक

क्रियाओंसे पूजनक्रिया १६ फिर भाईके जानेपर सब गतियोंको जानते दिव्यदृष्टि महा तेजस्वी निर्जन बनमें घूमते और चिन्ता करतेहुये बासुदेवजी पृथ्वीपर बैठगये १७ उन श्रीकृष्णजीने प्रथम तबही बिचार लियाथा जबकि गांधारीने कहाथा और उच्छिष्ट खीरको शरीरमें मर्द्दनकरने पर जो बचन दुर्वासाऋषिने कहाथा उसकोभी स्मरण किया १८ फिर अंधक वृष्णि और कौरवोंके नाशको शोचते हुये उस महानुभावने अपना परम धाम में जाने का समय माना और इन्द्रियोंका निरोधक्रिया १९ सबअर्थ तत्त्व के जाननेवाले उस देवताने भी त्रिलोकीके पालनार्थ दुर्वासाऋषि के बचनकी रक्षाके अर्थ अपने शरीर त्यागनेकी शुद्धताको चाहा २० इस निमित्त बाणी और मनके रोकनेवाले वह श्रीकृष्णजी महायोगको प्राप्तकरके सोगये तब भयकारी रूप शिकारके करनेका इच्छावान् जरानाम लुब्धक उस स्थानपर आया २१ मृग की शंका करनेवाले जरानाम लुब्धकने उस योगसे संयुक्त शयन करने वाले केशवजीके पैरके तलुयेको बाणसे घायल क्रियाऔर उनको पकड़नेका अभिलाषी होकर बड़ीशीघ्रतासे वहांगया २२ फिर उस लुब्धकने योगसे संयुक्त पीतांबर धारी अनेकभुजा रखने वाले पुरुषको देखा तब भयभीत जरानाम व्याधने अपनेको अपराधी मानकर उनके दोनों चरणोंको पकड़ लिया २३ तब उन महात्मा जीने उसको बिश्वास कराया कि तुम अपने स्वभावसे पृथ्वी और आकाश को पूर्णकरके ऊपरके लोकों को जाओ तुमनेस्वर्गको प्राप्तकिया इन्द्र अश्विनी कुमार ग्यारहरुद्र द्वादश सूर्य्य अष्टबसु बिश्वेदेवा २४ और उत्तम अप्सराओं समेत सिद्ध मुनि गन्धर्व उनको आगेसे लेनेको आये हे राजा फिर षडैश्वर्य्य केस्वामी बड़े तेजस्वी सर्ब शरीर बासी उत्पत्ति और प्रलयके आश्रयस्थान २५ योगाचारी अचिन्त्य प्रभाववाले श्रीकृष्णजीने अपने प्रकाशसे पृथ्वी और आकाशको व्याप्तकरके अपनेलोक को पाया हे राजा फिर श्रीकृष्ण जी देवता ऋषि और चारणों

संयुक्त २६ झुकेहुये गन्धर्वराज श्रेष्ठअप्सरा और साध्योंसे पूजित हुये देवताओंने भी उस ईश्वरकी स्तुतिकरी और श्रेष्ठमुनियोंने ऋग्वेदकी ऋचाओंसे स्तूयमान किया और प्रशंसा करनेवाले गन्धर्वभी उनके सन्मुख नियतहुये और इन्द्रने प्रीतिसे उनको प्रसन्नकिया २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि दारुकनेभी कौरवोंसे मिलकर महारथी पाण्डवोंको देखकर मूसलके द्वारा वृष्णियोंके नाश होजानेका वृत्तान्त वर्णन किया १ भोज अन्धक और कुकुरों समेत मरने वाले वृष्णियोंको सुनकर शोकसे दुखी पाण्डव भयभीतचित्त हुये फिर केशवजीका प्यारामित्र अर्जुन उनसे पूछकर मामाकेदेखने को चला और कहा कि यह इसप्रकारसे नहींहै २।३ हेप्रभु जनमेजय उसवीर अर्जुनने दारुककेसाथ द्वारकामें जाकर अपने मामा को विधवा स्त्रीके समान देखा ४ पूर्व्व समयमें जो वह स्त्रियां लोकनाथ से सनाथथीं वह अनाथ स्त्रियां अर्जुनको देखकर पुकारीं ५ अर्थात् वासुदेवजीकी जोसोलहहजार स्त्रियांथीं उन्हों ने अर्जुनको आयाहुआ देखकर बड़ीपुकारकरी ६ अश्रुपातों से पूर्णनेत्र वह अर्जुन उन स्त्रियोंको जो कि श्रीकृष्ण और पुत्रोंसे रहितथीं देखतेही उनके देखनेको समर्थ नहीं हुआ ७ तब उस बुद्धिमान् अर्जुनने वैतरणी नदीकेसमान उस भयानक द्वारकारूपी नदीकोदेखा जिसमें वृष्णी और अन्धकरूपी जलथा घोड़ेरूपी मत्स्य रथरूपी घिर्नई महलरूपी तीर्थ और बड़े हृदवालीथी ८ रत्नरूप सैवाल वज्रसे बनेहुये परकोटा रूपी माला मार्ग रूप भिरना और भँवरये चौराहेरूपी तालाब श्रीकृष्ण और बलदेवजी बड़े ग्राह और कवन्धरूपी मगरथे वह नदी बाजे रथों के शब्दोंसे शब्दायमानथी ९।१० इसप्रकारसे उस उत्तम द्वारका

पुरीको अर्जुनने वृष्णियोंसेरहित ऐसेशोभासे रहित और आनन्दहीनदेखा जैसे कि शिशिरऋतुमें कमलनी अशोभित दीखतीहै ११ उन स्त्रियोंके करुणा शब्दोंको और द्वारकाकी दशाको देखकरअर्जुन बड़ेशब्दसे बिलापकरके अश्रुपातों समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ इसके अनन्तर सत्राजितकी पुत्री सत्यभामा और रुक्मिणीजी उसकेसमीप आनकररुदनकरनेलगीं १३ । १४ फिर वहपांडव अर्जुन गोविन्दजीकी स्तुति और कीर्त्तनकर स्त्रियों को आश्वासन करके मामाजीके देखनेको चला १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि अर्जुनने उस महात्मा बसुदेवजीको पुत्र शोकसे दुःखित शयनकरतेहुयेदेखा १ हेभरतबंशी अश्रुसे पूर्णनेत्र बड़ी छाती और भुजाओंके रखनेवाले बड़े पीड़ामान अर्जुनने उन पीड़ित बसुदेवजीके चरणोंको पकड़ा २ उन शत्रुनाशक महाबाहु बसुदेवजीने उसअपने भगिनी पुत्रके मस्तकको सूंघना चाहापरन्तु सूंघनेको समर्थनहीं हुये ३ रोतेहुये सब पुत्र भाई पोते भानजे और मित्रों को स्मरण करते महाबाहु वृद्ध बसुदेवजीने भुजाओंसे अर्जुनको स्नेहकरके बिलापकिया ४ बसुदेवजी बोलेकि हे अर्जुन जिन्होंने राजा लोगोंको और सैकड़ोंदैत्योंको विजय किया उनको देखकर अबयहां फिर नहीं देखता हूं और कठिनता से मरनेवाला मैं जीवता हूं ५ हे अर्जुन जो प्रद्युम्न और सात्यकी तेरेशिष्य बड़ेप्यारे और सदैव अंगीकृत थे उनदोनोंके अन्यायसे सबवृष्णी मारे गये ६ जो वहप्रद्युम्न और सात्यकी दोनों वृष्णी बीरोंके अतिरथी मानेगये और तुमभी वार्त्तालाप करतेहुये जिनदोनों की प्रशंसाकरतेथे ७ हेश्रेष्ठकौरव अर्जुन वहदोनों सदैव श्रीकृष्णके प्रियकारी और बड़े प्रधानथे ८ हेअर्जुन मैं सात्यकी कृतबर्मा अक्रूर और प्रद्युम्नकी निन्दानहीं

करताहूं इस में केवल ब्रह्मशापही मुख्य कारणथा ९ हे राजा जिस जगतके प्रभुने पराक्रमके बलसे अहंकारी शिशुपाल, केशी और कंसको मारा १० निषादों के राजा एकलव्य कलिंग देशोंके राजा मगध गांधार काशी और मरु भूमिके जो २ राजा राजाथे उनकोमारा ११ उसीप्रकार पूर्बीय दक्षिणीय और पहाड़ी राजाओंको भीमारा उसमधुसूदनने वंशके लड़कोंके अपराधोंसे उत्पन्न इस बंश भरेके नाशका बिचार नहीं किया १२ अर्थात उस प्रभु बिष्णुने अपने बिरादरी वालों के नाशको जाना परन्तु उसमेरेपुत्रने सदैवउसकोनहींबिचारांकिया १३। १४ हेपरन्तप गांधारीका और ऋषियों का जो वह बचनथा उसको उसजगत पतिने मिथ्या करना नहींचाहा १५ हे परन्तप आपकेभी समक्षमें है कि अश्वत्थामाके अस्त्रसे मृतक तेरापौत्रभी उसीके तेजसेजीताहै १६ उसतेरे मित्रने इनअपने सजातियोंकी रक्षा करना नहीं चाहा फिर इनपुत्रपौत्र भाई और मित्रोंको १७ मृतक पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखकर मुझसे यह बचन कहा कि अबइस कुलकानाश बर्त्तमान हुआ १८ सो अर्जुन इस द्वारकापुरीमें आवेगा उससे वृष्णियोंके इसबड़े नाशका बृत्तान्त तुमको कहना चाहिये १९ हे प्रभु वह महातेजस्वी अर्जुन यादवोंका नाश सुनकर निस्संदेहशीघ्रही आवेगा इसमें कुछ मुझको बिचारनानहींहै २०जोमैंहूं उसीको अर्जुन जानो और अर्जुन है वह मैंहूं वह जो आपसे कहै उसको उसी प्रकार करना आपको योग्यहै हे भरतर्षभ अर्जुन ऐसे श्रीकृष्णके बचनको जानो २१ वह पांडव अर्जुन समयपर बर्त्तमान होकर स्त्री बालकों समेत आपके क्रियाकर्मको करेगा २२ और यहांसे अर्जुनके चलेजाने पर परकोटा और अट्टालिकों समेत इसनगरको शीघ्रही समुद्र डुबादेगा २३ मैं किसी पवित्रदेश में बुद्धिमान बलदेवजी समेत नियममें प्रवृत्त होकर इस शरीरको त्याग करूंगा यह मैं सत्य २ कहताहूं २४ बुद्धिसेपरे पराक्रम करनेवाले प्रभुकेशवजी मुझसे ऐसा कहकर और बालकों समेत

मुझको छोड़कर किसी दिशाको चलेगये २५ सो मैं उन दोनों महात्मा तेरे भाइयोंको और भयकारी बिरादरीके नाशको शोचताहुआ शोकग्रस्त होकर भोजन नहीं करताहूं २६ हेपांडव अर्जुन मैं नभोजन करूंगा नजीवता रहूंगा तुम प्रारब्धसे आयेहो अब तुम जो २ श्रीकृष्णने कहाहै उसको सम्पूर्णतासे करो २७ हे अर्जुनरूप श्रीकृष्ण यह राज्य स्त्री और रत्नादिक सब तेरेहैं मैं अब इन अपने प्यारे प्राणोंको त्याग करूंगा २८॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिषष्ठोऽध्याय: ६॥

सातवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि हेपरन्तप मामासे ऐसे बचन सुनकर उस महा दुखीचित्त अर्जुनने उस दुखीचित्त वसुदेवजीसे यह बचन कहा कि १ हे मामाजी मैं यहां किसी दशामेंभी श्रीकृष्ण और बान्धवोंसे रहित पृथ्वीकेदेखनेको भी समर्थ नहींहोताहूं २ राजा युधिष्ठिर, पांडवभीमसेन, सहदेव, नकुल, मैं और द्रौपदी हम छओं एकमनहैं ३ हे कालविदांवर निश्चयकरके राजायुधिष्ठिरके भी राज्य त्यागनेका समय बर्त्तमानहै उस समयको भी अब बर्त्तमान होजानो ४ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले मैं सब प्रकारसे वृष्णि-योंकी स्त्री बालक और बृद्धाओं को साथमें लेकर इन्द्रप्रस्थ में पहुंचाऊंगा ५ अर्जुन ने ऐसा कहकर दारुक से यह बचन कहा कि मैं बृष्णी वीरोंके मन्त्रियोंको देखना चाहताहूं बिलम्ब मत करो ६ वह शूर अर्जुन उन महारथियों को शोचता हुआ इस प्रकारके बचनको कहकर यादवोंकी सुधर्मानाम सभामें पहुंचा तब वहां सब मन्त्री और ब्राह्मण आसनोंपर बैठे हुये अर्जुन को मध्यवर्तीकरके सन्मुख नियतहुये ७।८ अत्यन्त दुःखी अर्जुनने उन दुखीचित्त सब सावधान लोगों से यह बचन कहा ९ मैं आप बृष्णी और अंधकोंकेबालबच्चोंको इंद्रप्रस्थ को लेजाऊंगा और इस सबनगरको समुद्र डुबादेगा १० अब तुम नानाप्रकारके रत्नों

समेत सवारियों को तैयार करो यह वज्रनाभ इन्द्रप्रस्थ में आप लोगोंका राजा होगा ११ हम सब सातवेंदिन सूर्य्यके उदयहोने पर नगरसेबाहर निवासकरेंगे अब शीघ्र तैयारी करो बिलम्ब न करो १२ उसशुभकर्मी अर्जुनके इस वचनको सुनकर उन सबने शीघ्रही तैयारी करी क्योंकि वह सब भी अपनी सिद्धीके अर्थ इच्छावान् थे १३ तब अकस्मात बड़े शोक और मोहसे पूर्णाअर्जुन उसरात्रिको केशवजीके स्थानपर निवासीहुआ १४ फिर प्रातः-काल शूरके पुत्र प्रतापवान् महातेजस्वी वसुदेवजी ने आत्माको परमात्मामें प्रवेश करके उत्तम गतिको पाया १५ फिर कठिन रोदन का बड़ा शब्द वसुदेवजी के महलमें प्रकट हुआ १६ शिर के बाल खुले भूषण मालाआदिक त्याग करनेवाली हाथोंसे छाती पीटनेवाली सब स्त्रियोंने करुणा पूर्वक महा बिलापकिया १७ तब स्त्रियोंमें श्रेष्ठ देवकी भद्रा रोहिणी और मदिरा उस वसुदेव अपने पतिकी चिताकेपास आकर नियतहुई १८ हे भरतवंशी तब अर्जुनने वसुदेवजीको बड़े बहुमूल्य विमानमें बहुतसे मनुष्य और बाजेके साथ निकाला १९ और दुःखशोकसे महापीड़ित अनेक यूथयूथ होकर देशवासी द्वारकावासी पुरवासी यहसब लोग उनकेसाथचले २० फिर उस सवारीसे आगे अश्वमेधसंबंधी उनका छत्रदेदीप्य अग्नियां और याचक ब्राह्मणचले अच्छीअ-लंकृत वह देवियां हजारों विधवाओंसमेत उसबीरके पीछेचलीं २१। २२ जीवतीहुई उस महात्मा का जो प्रिय स्थानथा वहां जाकर उस स्थानका निर्णयकरके उसका पितृयज्ञ किया २३ पतिके लोकको चाहनेवालीं वहचारों स्त्रियां उसअग्निकीचित्ता में वर्त्तमान् उस वीरवसुदेव के साथ सतीहुई पांडव नन्दन अर्जुनने चारों स्त्रियों समेत उन वसुदेवजीको चन्दनआदिअनेकसुगन्धित वस्तुओंका दाह किया २४। २५ इसकेपीछे बढ़ीहुईअग्निसामग ब्राह्मण और रुदन करनेवाली स्त्रियोंके शब्द प्रकटहुये २६ फिर वृष्णी और अन्धकोंके सब कुमारोंने जिनमें वज्रप्रधानथा

और स्त्री वर्गोंने उन महात्माका जलदानक्रिया २७ हेभरतर्षभ तबवह अर्जुन जिसका कि धर्म लोपनहीं हुआ उसकर्मकोकरा-कर वहांगया जहां पर कि वृष्णी लोग मारेगयेथे २८ वहांवह अर्जुन युद्धमें उनको गिराहुआ देखकर अत्यन्त दुखीहुआ समयके और प्रधानताके अनुसार विधि पूर्वक उनकेभी क्रिया कर्म किये जो कि ब्रह्म शापके कारण पटेलोंसे उत्पन्न मूसलों से मारे गये थे २९। ३० फिर उस अर्जुनने वासुदेव और बलदेवजीके शरीरोंको तलाश करके सत्य औरठीक कर्म के करनेवाले आप्त पुरुषोंके द्वारा उनका दाहकराया ३१ वह पांडव अर्जुन विधि पूर्वक उनकी क्रिया और कर्मोंको करके सातवें दिन बड़ीशीघ्रतासे रथकी सवारीमें सवार होकर चला ३२।३३ फिर रोदन और शोकोंसेयुक्त वह वृष्णीवीरोंकी स्त्रियां उनघोड़े बैल औरखचरोंसे युक्तरथोंकी सवारियोंमें उसमहात्मा पांडव अर्जुन के पीछे चलीं अन्धक और वृष्णियोंके जो सेवक और टहलुये सवार और रथीथे वह सबपुरबासीऔर देशबासी वीरोंसे रहित वृद्ध बालक और स्त्रियोंको चारोंओरसे मध्यवर्त्ती करके अर्जुनकी आज्ञानुसार चले ३४।३५ जो हाथीके सवारथे वह पर्वताकार हाथियोंकी सवारीसे हाथीके चरणरक्षक और शस्त्रधारी मनुष्यों समेतचले अर्जुन केसाथी अन्धक और वृष्णि-योंके सबपुत्र ब्राह्मण क्षत्री बड़े धनवान वैश्य शूद्र३६।३७ औरबु-द्धिमान वासुदेवजीकी सोलह हजार रानी अपने पोते बज्रनाभ को आगे करके चले ३८ भोज अन्धक और वृष्णियोंकी अ-नाथ स्त्रियां जो कि संख्यामें बहुत अर्बुद प्रयुत और सहस्रावधि थीं यह सब मिलकर द्वारकासे बाहर निकले ३९ रथियोंमें श्रेष्ठ शत्रुओंके पुरोंका बिजय करनेवाला अर्जुन उससमुद्रके समान बड़े धनोंसे युक्त स्त्रियोंके समूहोंका लेचला ४० तबउन मनुष्योंके निकलजानेपर मकरादिक जीवोंके निवास स्थान समुद्रनेसबरत्नों से पूर्ण उस द्वारकाको डुबोदिया ४१ उस पुरुषोत्तम अर्जुनने

पृथ्वीके जिसजिस भागको त्यागकिया उस २ स्थानको समुद्रने अपने जलोंसे आच्छादितकिया ४२ द्वारकावासीलोग उसअपूर्व चमत्कारको देखकर होनहार को अद्भुतमानकर शीघ्रतासेचल-दिये ४३ वह अर्जुन क्रीड़ाके योग्य वनपर्वत और नदियों पर निवास करताहुआ वृष्णियोंकी स्त्रियोंको लिवालाया ४४ उस बुद्धिमान् धन समूहों के रखनेवाले प्रभुअर्जुनने पंचनदको पाकर गौ पशु और धान्यों से पूर्ण देश में अपना निवास किया ४५ हे भरतवंशी इसके अनन्तर अकेले अर्जुनसे उन स्त्रियोंकोलाया हुआदेखकर जिनके कि स्वामी मारेगयेथे चारोंको बड़ालालच हुआ ४६ फिर उनपापी लोभसे घायलबुद्धि अशुभदर्शन भीलोंने अपने मन्त्री लोगोंसे सलाहकी ४७ कि यह धनुषधारी अकेला अर्जुन हमको उल्लंघनकर अनाथ वृद्ध और बालकों को लिये-जाताहै और यह सबवीर पराक्रमोंसे रहितहैं ४८ फिर हाथमें यष्टीरूप शस्त्रधारण करनेवाले वह हजारों चोरवृष्णियोंकी उन स्त्री आदिकों की ओर दौड़े ४९ और प्रत्येक मनुष्यको बड़ेसिं-हनादोंसे भयभीत करते समयका विपरीततासे प्रेरित वहचोर मारनेके निमित्त सन्मुख आये ५० तबवह अर्जुन अपने साथियों समेत अकस्मात लौटा और हंसतेहुये महाबाहुने उनसे यहवचन कहा ५१ कि हे धर्म के न जाननेवालो जो अपना जीवन चाहते हो तो चलेजाओ नहींतो मेरे बाणोंसे घायल और टूटेअंगहोकर शोचकरोगे ५२ उसवीरसे इसप्रकार कहेहुये और बारंबाररोके हुयेभी वह अज्ञानी उसके वचनका तिरस्कार करके मनुष्योंकेसन्मु-खदौड़े ५३ फिर अर्जुनने विपरीति दशासेरहित दिव्य धनुषको चढ़ाना प्रारंभकिया और अनेक उपायोंसे किसीप्रकारसे तैयार भी किया और कठिन भयकेवर्त्तमान होनेपरशस्त्रोंका भी स्मरण किया परन्तु उनकोभी स्मरणनहीं करसका ५४।५५ भयसे उत्पन्न उस बड़ी व्याकुलताको और युद्धमें उस प्रकारके अपने भुजबल को देखकर दिव्य महा अस्त्रोंके भूलजानेसे अर्जुनलज्जा युक्त हुआ

५६ हाथी घोड़े और रथकी सवारीसे लड़नेवाले वृष्णियोंकेवह शूरबीर उन नाश होनेवाली स्त्रियोंके रक्षाकरनेकोसमर्थ नहीं हुये ५७स्त्रियोंकी अधिकता और उनके जहां तहां दौड़नेपर अर्जुनने उनकी रक्षामें बड़े २ उपाय किये ५८ फिर सबशूरबीरोंके देख तेहुये वह उत्तम स्त्रियां चारों ओर को खेंचीगईं और बहुत सी इच्छावान् होकर अपने आप चलीगईं ५९ इसके पीछे व्याकुल ता पूर्वक पांडव अर्जुनने वृष्णियोंके नौकरों की सहायतासे गां-डीव धनुषके छोड़ेहुये बाणोंसे चारों को मारा ६० हे राजा तब उसके वह बाण एक क्षणभरमेंही समाप्त होगये पूर्व समयमें रु-धिरके पान करनेवाले वह बाण अविनाशीहोकर अब नाश-मान होगये ६१ उस इन्द्रके पुत्रने अपने बाणोंको नाशमान देख कर शोकदुःखसे व्यथितहोके धनुषकी कोटियोंसे चोरोंकोमारा ६२ हेजनमेजय फिर वहम्लेच्छअर्जुनके देखतेहुये चारोंओर को दृष्टिकरते वृष्णीऔर अन्धकोंकी स्त्रियोंको लेकर चलेगये ६३ फिर प्रभु अर्जुनने चित्तसे उस होनहारको शोचा और महाशो-कसे युक्त होकर बारंबार श्वास लेनेवाला हुआ ६४ हेराजा वह अर्जुन अस्त्रोंकी विस्मरणता भुजबलकी न्यूनता धनुषकी अना कर्षणता और बाणोंकी समाप्तीसे ६५ यह शोचा कि यह होन हार भावी है ऐसा जानकर उदास होकर लौटा और कहने लगा कि सब नाशमानहै ६६ फिर वह बड़ा बुद्धिमान् अर्जुनशेष बचीहुई उन स्त्रियोंको जिनके कि बहुतसे रत्न नाश होगयेथेअ-पने साथमें लेकर कुरुक्षेत्रमें उतरा ६७ इस प्रकार अर्जुनने उन वृष्णियोंकी स्त्रियोंको जो कि लुटनेसे बचरहींथी लाकर जहां तहां स्थानोंमें ठहराया फिर अर्जुनने कृतवर्माके लड़केको मा-र्त्तिकावत नगरका राजाकिया और शेषबचीहुई भोज राजकी स्त्रियोंको उसके सुपुर्दकिया६ ८।६९फिर उस अर्जुनने बीरोंसेरहित उन सब स्त्रियों और बालक वृद्धोंको लाकर इन्द्रप्रस्थमें ठहरा-या ७० धर्मात्माने सात्यकीके उस प्यारेपुत्रको जिसके अग्रभाग

में वृद्ध और बालकथे सरस्वतीके तटपर ठहराया ७१ रुक्मिणी, गान्धारी, शैव्या, हेमवती, देवी जाम्बवती, यह सब अग्नि में प्रवेश करगईं ७२ इसके पीछे उस शत्रुहन्ताने वज्रको इन्द्र-प्रस्थका राजा किया वज्रसे रुकीहुई अक्रूरकी स्त्रियांवनवासी हुईं ७३ हे राजा इसी प्रकार श्री कृष्णकी अंगीकृतकीहुई सत्य भामाआदिक प्यारी स्त्रियां और अन्य २ स्त्रियां जिन्होंने तप-स्याके लिये निश्चयकरलियाथा बनमेंचलीगईं ७४ वहां जाकर वह स्त्रियां फल मूलादिक बस्तुओंकी भोजन करनेवालीहरिके ध्यानमें सलग्न हिमालयको परिक्रमा करके कलाप ग्राममें प-हुंचीं ७५ जो द्वारका बासी मनुष्य अर्जुनके समक्षमें गये उनको अर्जुनने योग्यताके समान भागोंको देकर बज्रके सुपुर्द किया ७६ अश्रुसे पूर्णनेत्र उस अर्जुनने समयके अनुसार वह सब कामकरके कृष्णद्वैपायन व्यासजीको आश्रम में बैठाहुआ देखा ७७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांमौसलपर्व्वसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले हे राजा सत्यवक्ता ऋषिके आश्रममें प्रवेश करतेहुये अर्जुनने व्यास मुनिको एकान्तमें बैठाहुआ देखा १ तब वह अर्जुन उस धर्मज्ञ महाव्रतको पाकर उनके सन्मुख जाके यहबचनबोला कि मैं अर्जुनहूं यह कहकर दण्डवतकी २ व्या-समुनिने कहा तेरा आना शुभमंगलकारी होय और बड़े प्रसन्न मन से कहा कि बैठो ३ फिर व्यासजीने उस अर्जुनको उ-दासमन बारंबार श्वासलेनेवाला व्याकुलचित्त देखकर यह बचन कहा ४ कि हे अर्जुन बाल नख औरवस्त्रसे निचोड़ेहुये जलअथवा सुखकेगर्च्छिद्रजलसे छिड़कागयाहै अथवा रजस्वलास्त्रीसेसंभोग कियाहैअथवा तुमनेब्राह्मणमाराहै अथवा युद्धमें पराजितहुआहै जिससेकि तुम तेजहीन विदितहोतेहो परन्तु मैं तुझको पराजित नहीं जानताहूं हे भरतर्षभ यह क्या बातहै हे अर्जुन जोमेरे सुनाने

के योग्य बात होयतो मुझसे शीघ्रकहनेको योग्य हो ५।६ अर्जुनने कहा कि जो वह मेघवर्ण शोभायमान दिव्य कमललोचन श्रीकृष्णजीथे वह बलदेवजी समेत अपने शरीर को त्यागकर स्वर्ग को गये ७ फिर प्रभास क्षेत्रमें उस मूसलकी उत्पत्तिके द्वारा वृष्णी वीरोंका नाशहुआ जो कि ब्रह्मशापसे उत्पन्न नाश कारी और रोमांचका खड़ा करनेवालाथा ८ हे ब्राह्मणवर्य्य जो वह भोज वृष्णी अन्धक शूरवीर महात्मा बड़ेपराक्रमी और सिंहके समान अहंकारी थे उन्होंने युद्धमें परस्पर एकने एकको मारा ९ परिघकी समान भुजा रखनेवाले गदापरिघ और शक्तियोंके सहनेवाले वह सब लोग परेलोंसे मारेगयेइस समयकी विपरीतिताको देखो वह पांचलाख शूरवीर परस्परसन्मुखहोकरकालबस हुये १०।११ मैं अब बारंबार चिन्ताकरताहुआ बड़ेपराक्रमी यादवों के और यशस्वी श्री कृष्णजी के नाशका नहीं सहसक्ताहूं १२ जिसप्रकार समुद्रकी शुष्कता पर्व्वतकाचलना आकाशका गिरना और अग्निका शीतल होना असंभवहै उसी प्रकार १३ मैं शार्ङ्ग धनुष धारी श्री कृष्णके नाशको भी श्रद्धाके अयोग्य मानताहूं इस लोकमें मैं श्रीकृष्णसे जुदा नियत रहना नहीं चाहताहूं १४ इससे अधिकत्तमजो दूसरा दुःखहै हे तपोधन उसको सुनो कि जिसके कारण मुझ बारंबार चिन्ता करनेवाले का हृदय फटा जाताहै १५ हे ब्राह्मणवर्य्य पंचनद देशमें रहनेवाले हजारों आभीरोंने मेरे देखते हुये समीप आकर वृष्णियोंको हरण करलिया १६ मैं वहां धनुषके चढ़ानेमें भी असमर्थ होगया जैसा कि पूर्व्व समयमें मेरी भुजाओंका भुजबलथा वह उस समय पर नहीं हुआ हे महामुनि मेरे नाना प्रकार के अस्त्र भी स्मरण में नहीं आये और मेरे बाण क्षणमात्र में भी चारों ओर से नाशमान हुये १७।१८ पुरी रूप शरीरों में नियत अप्रमेयात्मा शंख चक्र गदाधारी चतुर्भुज श्याम दलके समान नेत्र रखनेवाला पिताम्बरधारी १९ जो महातेजस्वी पुरुष मेरे रथके आगे शत्रुओंकी

सेनाको भस्मकरताहुआ वर्त्तमान होताथा मैं उस अविनाशीको नहीं देखता हूं २० जिसने प्रथमही अपने तेजसे शत्रुओंकी सेनाओंको भस्मकिया फिर मैंने उनको अपने गांडीवके छोड़हुये बाणासे नाशकिया २१ हे बड़ेसाधू उसको न देखता मैं व्याकुल चित्त होकर घूमताहुआ शान्तीकोनहीं पाताहूं २२ मैं बिनावीर श्रीकृष्ण के अपना भी जीवननहीं चाहताहूं परम धाममें जानेवाले विष्णुको सुनकर मेरी दिशा भी मोहित होगई २३ हे बड़े साधू आप मुझे कल्याणकारी उपदेश करनेको योग्य हो क्योंकि मैं बलपराक्रम से अपने सजातीय भाई बन्धुआदिकसे रहित औरअस्त्रादिकों से खाली होकर व्याकुल हूं २४ व्यासजीबोले हे कौरव्य ब्रह्म शापसे भस्मीभूत वृष्णि और अन्धक महारथी लोगोंका नाशहुआ उनको शोच करना तुमको योग्यनहींहै २५ वह उसीप्रकार होतव्यताथी क्योंकि उनमहात्माओंका वह प्रारब्धभी हीन होगया कि शापदूरकरने में सामर्थ्यवान श्रीकृष्णजीनेभी ध्याननहीं किया २६ गोविन्दजी तीनों लोकोंकेभी संपूर्ण जड़चैतन्योंको विपरीत दशामें करसक्तेथे फिर उनमहात्माको शापका दूरकरना कितनी बड़ीबातथा जोवह चक्रगदाधारी पुराणपुरुष चतुर्भुज वासुदेवजी प्रीतिसे तेरे रथके आगे चलते थे२७।२८उस बड़ेनेत्रधारी श्रीकृष्णजीने पृथ्वीकाभारउतार शरीरकोत्यागकर अपने परमधामको पाया२९हे पुरुषोत्तम महाबाहु अर्जुन तुमनेभी भीमसेन नकुल औरसहदेव समेतहोकर देवताओंका बड़ा कार्य्य किया ३० हे कौरवों में श्रेष्ठमैं तुमको कृतकृत्य और अच्छा सिद्ध मानताहूं हे प्रभु तुम्हारा इससंसारका त्यागना समयके अनुसार कल्याण कारीहै ३१ हे भरतवंशी इसऐश्वर्य्य के समयों में मनुष्योंकी बुद्धि तीक्ष्ण औरआगामी उत्पन्न होती है और नाशके समयपर नाशहोतीहै यह सब कालकोही मूलरूप रखनेवालाहै फिर कालही अपने आप इससंसारके बीजरूप पंचतत्वोंको अपने में लयकरताहै३२।३३ वही काल पराक्रमीहो

कर फिर निर्बल होताहै वही इसलोकमें ईश्वर होकर दूसरोंकाभी आज्ञावर्त्ती होताहै अर्थात् विजय भी कालहीसे होतीहै ३४ अब वह अस्त्र कृतकर्मी होकर जहां से आयेथे वहीं को चलेगये जब समय होगा तब फिर तेरे हाथ में आवेंगे ३५ हे भरतवंशी आप लोगोंको भी मुख्य गतिमिलने का यही समयहै हे अर्जुन मैं इसी को आप सबलोगों का परम कल्याण मानताहूं ३६ वैशंपायन बोले कि बड़े तेजस्वी व्यासजीके इस बचन को जानकर उनसे आज्ञालेकर अर्जुन हस्तिनापुर नगरको चला ३७ वीर अर्जुन ने पुरीमें प्रवेश करके युधिष्ठिरके पास जाकर अन्धक वृष्णियोंका जैसा वृत्तान्तथा सब यथावस्थित वर्णन किया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्त्र्यांसंहितायांमौसलपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

इति मूसलपर्व्व समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

जनवरी सन् १८८६ ई० ॥

अथ महाभारतभाषा प्रास्थानिक व स्वर्गारोहणपर्व्वकासूचीपत्र प्रारम्भः॥

इतिप्रास्थानिकपर्बकासूची पत्र समाप्तहुआ

स्वर्गारोहण

इतिमहाभारत भाषा प्रास्थानिक व स्वर्गारोहणका सूचीपत्र समाप्त॥

महाभारतभाषा प्रास्थानिक पर्व्व॥

—*—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारायमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंबन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ तथैवप्रास्थानिकरम्यपर्व्वभाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ प्रास्थानिकपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायणजी और नरोत्तम नरको और सरस्वती देवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करता हूं कर्मोंसे कृतकृत्य महा असह्य दुःखोंमें फंसे हुये पुरुषोंको महा प्रस्थानादिक उपायोंसे शरीर का त्यागना योग्यहै इसको प्रकट करते हुये पर्वका प्रारंभ करते हैं इसमें स्वर्गके प्राप्तहोने के हेतुओंके गुण और स्वर्गकी रुकावट के दोषोंको वर्णनकरेंगे– जनमेजयने प्रश्न किया कि इस प्रकारसे अन्धक और वृष्णियोंके घराने में मूसल से संबन्ध रखनेवाले युद्धको सुनकर और

उस प्रकार श्रीकृष्णके स्वर्ग जानेपर पांडवोंने क्याकिया १ वैशंपायन बोले कि कौरवराज युधिष्ठिर ने इसप्रकार वृष्णियोंका अत्यन्त नाश सुनकर और स्वर्गजाने के मनोरथके द्वारा घरसे निकलनेमें बिचार करके अर्जुनसे यहवचन कहा कि हे बड़ेबुद्धिमान् अर्जुन कालही सबजीवोंको अपने में लयकरताहै मैं काल फांसीको स्वीकार करताहूं तुमभी इसमें बिचार करने के योग्य हो २। ३ इसप्रकार आज्ञप्त और काल२ कहते हुये उस अर्जुनने बुद्धिमान् बड़ेभाईके उस बचन को अंगीकार किया इसीप्रकार भीमसेन नकुल और सहदेवने अर्जुनके बिचारको मनसे जानकर उसी बचनको स्वीकार किया जोकि अर्जुनने कहाथा ४। ५ इस के पीछे धर्मकी इच्छासे राज्यको त्याग करते युधिष्ठिरने युयुत्सु को बुलाकर सब राज्य उसके सुपुर्दकिया ६ फिर दुखसेपीड़ामान राजा युधिष्ठिरने अपने राज्यपर परीक्षितको अभिषेक कराके सुभद्रासे यह बचन कहा कि यह तेरा पौत्र कौरवराज होगा और नाशहोनेसे बचा हुआ बज्रनाभ यादवोंका राजा कियागया ७। ८ हस्तिनापुरमें राजा परीक्षित और इन्द्रप्रस्थ में यादवोंका राजा बज्रनाभ तुझसे रक्षाकरनेके योग्यहै अधर्म में कभी चित्तनकरना इसप्रकार के बचनोंको कह कर निरालस्य उस धर्मात्मा युधिष्ठिरने भाइयों समेत उन बुद्धिमान् बासुदेवजी बलदेवजी वृद्धमामा और सब यादवोंका जलदान करके बिधिके अनुसार उनके श्राद्ध किये ९। १०। ११ उस उपाय करनेवाले युधिष्ठिरने हरिके नामसे व्यास नारद तपोधन मार्कण्डेय भारद्वाज और याज्ञवल्क्य को उत्तमस्वादु युक्त भोजनकराके और शार्ङ्ग धनुषधारीका कीर्तन करके रत्न बस्त्रग्राम घोड़े और रथ ब्राह्मणोंको दान किये १२। १३ उस समय हजारों दासी दासभी ब्राह्मणों को दान किये हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जनमेजय फिर गुरू कृपाचार्य्य जी जोकि पुरवासियोंके अग्रवर्त्तीथे उनकी पूजा करके १४ उनके शिष्य परीक्षितको उनके सुपुर्द किया फिर राजर्षि युधिष्ठिरने

सब राज्यके अधिकारी सेवक और प्रजाके लोगोंको बुला-कर १५ अपनी इच्छाके सबकामोंको वर्णन किया उसके उस वचनको सुनकर अत्यन्त व्याकुल चित्त पुरवासी और देश-वासियोंने उस वचनको स्वीकार नहीं किया तब उन्होंने उस राजासे कहा कि इस रीतिसे आप को न करना चाहिये तब धर्मके और समय के ज्ञाता राजा युधिष्ठिर ने उस प्रकार से नहींकिया और पुरबासी और देशबासी मनुष्यों को सलाह का देनेवाला करके १६। १७। १८ चलने का विचार किया उससमय इसके उन सब भाइयोंने भी उसके साथ चलना अंगीकार किया फिर कौरव धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिरने १६ भूषण और पोशाकको अपने अंगोंसे उतारकर बल्कल वस्त्रोंको धारण किया हे भरत-वंशियों में श्रेष्ठ वहनरोत्तम राज्यके त्यागने के समय विधि पू-र्वक इष्टीयज्ञको करके२०।२१और सब अग्नियोंको जलमें छोड़-कर चलदिये फिर सब स्त्रियां उन प्रस्थान करनेवाले नरोत्तमों को जिनकी छठवीं द्रौपदी थी देखकर ऐसे बिह्वल होकर रोने लगीं २२ जैसे कि पूर्व्व समयमें द्यूतकर्म में हारेहुओं को देखकर रुदन करनेवाली हुईथीं और चलने में सब भाइयोंकी प्रसन्नता प्रकट हुई २३ वृष्णियों का नाशदेखकर और युधिष्ठिरकासम्मत जानकर—पांचों भाई छठवीं द्रौपदी और सातवां बड़ा साधू एक कुत्ताथा २४ अपने शरीरसे सातवां राजायुधिष्ठिर हस्तिना-पुरसे निकला सब पुरवासी और स्त्रियां दूरतक उनके पीछे २ गईं २५ उससमय कोई मनुष्य भी राजा युधिष्ठिर से ऐसा कहने को नहीं समर्थ हुआ कि आप लौटो इसके पीछे नगर निवासी सब लोग लौट गये २६ कृपाचार्य्यादिकने युयुत्सुके पास अपनी वर्त्तमानताकी और हे कौरव सर्पकी पुत्री उलूपी गंगामें प्रवेश करगई चित्राङ्गदाभी मणिपुर नगरको गई शेषबची हुई अन्य माताओंने परीक्षितकेपास निवासकिया २७। २८ हेकौरव फिर उपवास करनेवाले महात्मा पाण्डव और यशस्विनी द्रौपदी पूर्व

की ओरको चले २९ योग से संयुक्त और धर्म संन्यास प्राप्त करने के इच्छावान् वह महात्मा बहुत से देशोंको देखते हुये नदी औरसागरों पर गये ३० युधिष्ठिर आगे चला और उसके पीछे भीमसेन उसके पीछे अर्जुन उसके पीछे नकुल और सहदेव ३१ और सबसे पीछे कमलदलके समाननेत्र रखनेवाली स्त्रियों में उत्तम श्यामा सुन्दरी द्रौपदी चलीं ३२ हे भरतवंशियों में बड़े साधू जनमेजय एक कुत्ता उनवनजानेवाले पांडवों के पीछे चला वह वीर इसक्रमसे लोहती सागरको गये ३३ हे महाराज अर्जुनने रत्नोंके लोभसे दिव्य धनुष गांडीव और अक्षय तूणीरोंको त्याग नहीं किया वहां उन्होंने साक्षात पुरुष रूपसे पर्व्वत की समान आगे नियत मार्गको रोकेखड़ेहुये अग्निकोदेखा३४।३५ उसअग्नि देवताने पांडवों से यह कहाकि हे वीर पाण्डव लोगो में अग्निहूं ३६ हे महाबाहु युधिष्ठिर हे परमतप भीमसेन हे वीर अर्जुन और नकुल सहदेव तुममेरे इसबचनको जानो ३७ हे उत्तम कौरव में अग्निहूं मैंने अर्जुन और नारायण के प्रभावसे खांडव बनको भस्म किया ३८ यह तुम्हारा भाई अर्जुन श्रेष्ठ अपने आयुध गांडीवको छोड़कर बनको जाय इससे अब कोई प्रयोजन नहींहै ३९ जो रत्नों का चक्र महात्मा श्रीकृष्णजी के पास था वहभी स्वर्गको गया फिर काल पाकर दूसरे अवतारमें उनके हाथ आवेगा ४० मैं पूर्व्वसमय में यह उत्तम गांडीव धनुष अर्जुन के निमित्त बरुणसे लायाहूं वह आप मुझको बरुणके देनेके लिये दीजिये ४१ फिर उन सब भाइयोंने अर्जुनको प्रेरणा करी उसने उस धनुषको और दोनों अक्षय तूणीरोंको जलमें डाल-दिया ४२ हेभरतर्षभ इसके पीछे अग्नि देवता वहांही अन्तर्द्धान होगये और वह वीर पाण्डव दक्षिण कीओर चलदिये ४३ इसके अनन्तर वह पाण्डव समुद्रके उत्तरीय तटसे दक्षिण और पश्चिम के कोणमें नैर्ऋतिदिशाको चले ४४ फिर पश्चिम दिशाको लौटनेवाले उन पाण्डवोंने सागरसे डूबीहुई द्वारका को

भी देखा ४५ पृथ्वीकी परिक्रमा करने के अभिलाषी योग धर्म धारी भरतवंशियों में बड़े साधू वह पाण्डव उत्तर दिशाको लौट कर चलदिये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेप्रास्थानिकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः१ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर उत्तरदिशा में नियत सावधानचित्त योगसेसंयुक्त उन पाण्डवों ने हिमालय पर्व्वतको देखा १ उसको भी उल्लंघन करके पाण्डवोंने बालूके समुद्रको देखा और पर्व्वतों में श्रेष्ठ मेरुनाम बड़े पर्व्वतको भी देखा २ उन सब शीघ्रगामी योगधर्म रखनेवालों के मध्य में ध्यानसे चित्त हटानेवाली द्रौपदी पृथ्वीपर गिरपड़ी ३ महाबली भीमसेनने उस गिरीहुई द्रौपदीको देखकर और विचार करके धर्मराजसे यह कहा कि हेपरंतप इस पत्नीसे कभी कोई अधर्म नहीं हुआ फिर किस कारणसे द्रौपदी पृथ्वीपर गिरपड़ी ४।५ युधिष्ठिरबोले हेपुरुषों में बड़े साधु भीमसेन सुनो इसको प्रीति अधिकतासे अर्जुनमेंथी अब यह उसीके फलको भोगतीहै ६ वैशंपायन बोले कि भरतवंशियोंमें बड़े साधू बुद्धिमान् धर्मात्मा पुरुषोत्तम युधिष्ठिर इसप्रकार कहके और उसको न देखकर चित्तको समाधि में नियत करके चलदिया ७ फिर बुद्धिमान सहदेव पृथ्वीपर गिरा भीमसेन ने उस सहदेवकोभी गिराहुआ देखकर राजासे कहा ८ कि जोयह सहदेव हम सबकी सेवाकरनेवाला अहंकारसे रहितहै यह सहदेव किसकारण से पृथ्वीपर गिरा ९ युधिष्ठिर बोले कि इसने अपने समान किसीकोभी बुद्धिमान् नहीं माना इसीहेतु सेयह राजकुमार उस अपने दोषसे पृथ्वीपर गिरा १० वैशंपायन बोले कि यह कहकर वह कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर उस सहदेव कोभी छोड़कर भाइयों और कुत्तेसमेत चलदिया ११ द्रौपदी और पांडव सहदेवको गिराहुआ देखकर पीड़ामान बांधवोंका प्यारा

शूर नकुलभी गिरपड़ा १२ तब उस सुन्दर दर्शनवाले बीर नकु-
लके गिरने पर फिर भीमसेनने राजासे यह बचन कहा १३ जो
यह धर्म में पूर्ण गुरुका आज्ञाकारी स्वरूप से संसारभरे में अनु-
पम नकुलहै वह पृथ्वीपर गिरा १४ भीमसेन से इसप्रकारकहने
वाले सब बुद्धिमानों में श्रेष्ठ धर्मात्मा युधिष्ठिर ने नकुलके विषय
में उत्तर दिया १५ कि इसको यह निश्चयथा कि स्वरूप में मेरे
समान कोई नहींहै मैं अकेलाही रूपमें सबसे अधिकहूं यहइसके
चित्त में नियतथा १६ इसीहेतुसेनकुल गिरपड़ा हे भीमसेन तुमआवो
हे बीर जिसका जो कर्महै वह उसको अवश्य भोगताहै १७ फिर
उन तीनोंको गिराहुआ देखकर शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला
पांडव अर्जुन गिरपड़ा उस अजेय इन्द्रके समान तेजस्वी अर्जुनके
गिरने और मरनेपर भीमसेनने राजासेकहा १८।१९ कि मैंस्वत-
न्त्रताको दशामें भी इसमहात्मा अर्जुनका कोई मिथ्याकर्म नहीं
स्मरणकरताहूं फिर यह कौनसे कर्मकेफलसे पृथ्वीपरगिरा२०
युधिष्ठिरनेकहा कि इसने कहाथा कि मैं एकहीदिनमें शत्रुओंका
नाशकरूंगा सो इसने उसकोनहींकिया इसहेतुसे अपनेकोशूरबीर
माननेवाला यह अर्जुन पृथ्वीपरगिरा २१ जैसा कि इस अर्जुनने
सब धनुषधारियोंका अपमान किया वैसा ऐश्वर्य चाहनेवाले
मनुष्यको करना योग्यनहींहै २२ वैशंपायनबोले कि राजा यह
कहकर चलदिया फिर भीमसेन गिरा तब उस गिरेहुये भीमसेनने
धर्मराजसे यहकहा २३ हे राजा देखो मैं आपकाप्याराहोकरभी
गिरपड़ा मेरेगिरनेका जो कारण आपजानतेहो तो मुझसेकहो२४
युधिष्ठिरबोले हेभीमसेन तुमने नियत परिमाणसे अधिक भोजन
किया और दूसरेको ध्यान में न लाकर तू अपने बलकी प्रशंसा
करताथा इसहेतुसे पृथ्वीपर गिराहै २५ महाबाहु युधिष्ठिर उससे
ऐसाकहकर उसकोभी नदेखताहुआ चलदिया और वह कुत्ताभी
उसके पीछेगया जिसको कि बारंबार मैंने तुमसेकहा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमहाप्रास्थानिकेपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि इसकेपीछे इन्द्र देवता अपने रथके शब्द से पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करते सन्मुखआये और उसयुधिष्ठिरसे कहा कि सवारहो १ भाइयों को गिरा देखकर शोकसे दुःखी युधिष्ठिरने इन्द्रसे यह वचनकहा २ कि हे देवेश्वर यहांपर मेरे सबभाई गिरेहैं वहभी मेरे साथजायँ मैं अपने भाइयों के बिना स्वर्ग जाना नहीं चाहता ३ हे इन्द्र वह सुखके योग्यकोमल शरीरराजपुत्री द्रौपदीभी हमारे साथमें जाय आपइसहमारी प्रार्थनाको अंगीकार कीजिये ४ इन्द्रने कहा कि तुम स्वर्ग में अपने सबभाइयोंको देखोगे वह तुमसेभी पहले द्रौपदीसमेत स्वर्ग को गयेहैं हे भरतर्षभ तुम शोच मतकरो ५ हे श्रेष्ठ वह तेरे सबभाई मनुष्यशरीरको त्यागकरके स्वर्गको गये और तुम इसीशरीरसे निस्संदेह स्वर्गको जावोगे ६ युधिष्ठिर बोले कि हे भूत भविष्यके ईश्वर यह कुत्ता सदैवसे मेरा भक्तहै यहभी मेरे साथजाय इससमय मेरी बुद्धिदयासे पूर्णहै ७ इंद्रबोले हे राजा अबतुमने मेरीसमानता, अमरपदवी, बड़ीलक्ष्मी, बड़ीसिद्धी, और स्वर्गके सुखोंको प्राप्त किया तुमकुत्तेको त्यागकरो इसमें निर्दयता नहींहै ८ युधिष्ठिर बोले हे श्रेष्ठ देवता इंद्र श्रेष्ठपुरुषसे नीचकर्म करना असंभव है चाहौउस लक्ष्मीकी प्राप्ती मुझको न होय जिसके कारण भक्त जनको त्यागकरूं ९ इंद्रबोले कि स्वर्गमें कुत्ते पालनेवालों का स्थाननहींहै क्योंकि क्रोधवशानाम देवता उस अपवित्र मनुष्य के इष्टापूर्त्त यज्ञ बावड़ी और कूपादिकोंको नष्टकरदेतेहैं हेधर्मराज इसीहेतुसे विचार पूर्व्वक कर्म करो कुत्तेको त्यागो इसमें निर्दयता नहींहै १० युधिष्ठिर बोले हे महाइन्द्र भक्तका त्यागना बड़ा अधर्म्म कहाहै वह लोकमें ब्रह्महत्या के समान है इसीहेतुसे अब अपने सुखका चाहनेवाला मैं किसीदशा में भी इस कुत्तेको त्याग नहीं करूंगा ११ मैं अपनेप्राणोंके नाश होजानेपर भी

नीचे लिखे हुये लोगोंको त्याग नहीं करूंगा यह मेरा प्राचीनव्रत है भयभीत, भक्त, दूसरा मेरा रक्षास्थान नहींहै इसप्रकार कहने वाला शरणागत—पीड़ामान, घायल, प्राणकी रक्षा चाहने वाला १२ इन्द्रबोले कि क्रोधवशानाम देवता कुत्तेकी देखी हुई इनवस्तुको हरलेते हैं किया हुआ दान विस्तृत यज्ञ और होम इनसबको हरलेतेहैं इसहेतुसे इस कुत्तेको त्यागकरो तुम कुत्तेके त्यागने से देवलोकको पावोगे १३ हे बीर तुमने भाइयों को और द्रौपदी को भी त्यागकरके अपने कर्मसे लोकको पाया इसकुत्तेको क्योंनहीं त्यागतेहो तुमने जब कि सर्वस्व त्याग किया है तब कैसे मोहको प्राप्त होतेहो १४ युधिष्ठिर बोले कि लोकोंमें मर्य्यादहै कि मृतक मनुष्योंसे सन्धि और बिग्रहनहींहै वह मुझसे सजीव करनेमेंअसंभवहैं इसीहेतुसे उनको त्यागकियाहै जीवतेलो-गोंको नहीं त्यागाहै १५ शरणागतको भयभीत करना स्त्री का मारना ब्राह्मणोंका धनहरलेना मित्रसे शत्रुता करना यह चारों और एकभक्तका त्यागना समानहै यह मेरा मतहै १६ बैशंपायन बोले कि प्रीतियुक्त धर्मस्वरूप भगवानने धर्मराजके उसबचनको सुनकर प्रशंसायुक्त मधुरबचनों के द्वारा महाराज युधिष्ठिरसेक-हा १७कि हे भरतबंशी राजेन्द्र तुम बापदादोंकी रीतिबुद्धि और सबजीवोंमें नियत इसदयासे कुलीनहो १८ हे पुत्रइससे प्रथम द्वैत बनमें मैंने परीक्षा करीथी जहांपर जलके खोज करनेवाले तेरे भाइयों को मैंने मृतकरूप कियाथा जिस स्थानपर तुमने अपनी दोनोंमाताओंकी समानता चाहते हुये अपनेदोनों भाईभीमसेनऔर अर्जुनको त्यागकरके नकुलका जीवता रहना चाहाथा १९ । २० यह कुत्ताभक्तहै यहजानकर तुमने देवरथको त्याग किया हेराजा इसीहेतुसे स्वर्गमेंतेरेसमान कोईनहींहै २१हे भरतबंशी इसहेतुसेही तुमनेअपने इसीशरीरसे अबिनाशीलोक प्राप्तकिये हे श्रेष्ठ तुमने दिव्य और उत्तमगतिको पाया२२ बैशंपायनबोलेकि इसके पीछे धर्मइन्द्र मरुद्गण अश्विनीकुमारदेवता और देवर्षियोंलोग युधि-

ष्ठिरको रथमेंसवारकर २३ अपने बिमानोंकी सवारीसेचलदिये जो कि वह सिद्ध स्वेच्छाचारी बिहारकरनेवाले रजोगुण रहित पवित्र और पवित्रभाषीहोकर उत्तमकर्म और बुद्धिके रखनेवाले थे २४ वह कौरव वंश भरका उद्धार करनेवाला राजायुधिष्ठिर उस रथमें सवारहोकरऔरअपनेतेजसेपृथ्वी औरआकाशकोपूर्ण करके ऊपरकीओरकोचला २५ इसकेपीछे सबसृष्टिकेज्ञाता महा तपस्वी ब्रह्मवादी और देवलोक में बिराजते हुये नारदजीने बड़े उच्चस्वरसे यह बचन कहा २६ कि जो राजऋषिहैं उनसबको भी मैं जानताहूं परन्तु यह युधिष्ठिर उन सब लोगोंकीभी कीर्त्तिको ढककर सर्वोत्तम पदपरनियतहै२७युधिष्ठिरकेसिवाय ऐसे किसी दूसरे राजाको अपनेनिज शरीरसेही स्वर्गमें आनेवालानहीं सुनाहै जोकि अपने तेजशुभकीर्त्ति और गुरु सेवादिक रीतिसे लोकोंको व्याप्त करकेआयाहोय २८ धर्मात्मा राजायुधिष्ठिरने नारदजीका वह बचनसुनकर देवताओंको और अपने पक्षवाले राजाओं को समक्षमेंकरके यह बचनकहा कि २९ मेरे भाइयों का स्थानचाहै शुभअथवा पापरूपहै परन्तु मैं उसीको प्राप्तकरना चाहताहूं दूसरे कोनहीं चाहताहूं ३० देवराज इन्द्रने राजाका बचन सुनकर उस दयावान् युधिष्ठिरको यह उत्तरदिया३१कि हे राजेंद्र शुभकर्मों से बिजय होनेवाले इस स्थानपर निवास करो क्या तुम अब भी मनुष्यभाव की प्रीति को काममें लातेहो ३२ हे कुरुनन्दन तुमने ऐसी परमसिद्धी को पायाहै जैसी कि किसी दूसरे मनुष्यने कभी कहीं नहीं पाईहै तेरे भाइयों ने उस स्थानको नहीं पाया ३३ हे राजा अब भी तुमको मानुषी प्रीति स्पर्शकरतीहै यह स्वर्गहैयहां देवऋषिलोग और स्वर्गवासी सिद्धोंको देखो ३४ बुद्धिमान युधि-ष्ठिरने इसप्रकार कहनेवाले देवेश्वर इन्द्रसे फिर यह सार्थकबचन कहा ३५ हे दैत्य संहारी मैं उन अपने भाइयों के बिना यहां निवास करनेको उत्साह नहीं करता मैं वहांहीं जाना चाहताहूं जहां कि मेरेभाई गये ३६ और जहांपर वह दृहतीपुष्पके समान

धर्मात्मा बुद्धि और सतोगुणसे संयुक्त स्त्रियों में श्रेष्ठ द्रौपदी गईहै मैं वहां जाऊंगा ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांमहाप्रास्थानिकेपर्व्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

इति प्रास्थानिक पर्व्व समाप्तः ॥

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी
जनवरी सन् १८८६ ई० ॥

—※—

महाभारतभाषा स्वर्गारोहणपर्व्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

इलोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रविम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमव्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ तथैवस्वारोहणरम्य पर्व्व भाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ स्वर्गारोहण पर्व्व प्रारम्भः ॥

श्री नारायणको और नरोत्तमनरको और सरस्वतीदेवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करताहूं—पहले पर्व में युधिष्ठिरके दृष्टांतसे धर्मके फलरूप त्याग दया आदिक गुण वर्णन किये अब उनका उत्तमफल प्रकट करनेको स्वर्गारोहण पर्व्व का प्रारम्भ करते हैं— जनमेजयने प्रश्नकिया कि मेरे पूर्व पितामह पांडव और धृतराष्ट्रके पुत्रोंने उसस्वर्गको जिस में फलको उत्तमतासे मानो तीनों भवन प्राप्त होते हैं पाकर कितने स्थानोंको निवासस्थानकिया १ मैं इस सबवृत्तांतको सुना

चाहताहूं क्योंकि आप अपूर्व्वकर्मी व्यास महर्षीसे आज्ञा दिये हुये होकर सर्वज्ञहो यह मेरा मतहै २ वैशंपायनबोले कि तेरे पूर्व पितामह युधिष्ठिरादिकने स्वर्गभवनको पाकर जो कहाउसको सुनो ३ धर्मराज युधिष्ठिरने स्वर्गभवनको पाकर दुर्योधनको स्वर्ग लक्ष्मीसे सेवित और आसनपर बैठाहुआ देखा ४ जोकि सूर्य्य के समान प्रकाशमान बीरोंकी शोभासे संयुक्त प्रकाशमान देवता और पवित्रकर्मी साध्यलोगोंके साथ नियततथा ५ तब दुर्योधनको देखकर और उसके पास लक्ष्मीकोभी देखकर अशान्तचित्त युधिष्ठिर अकस्मात लौटा आशय यहहै कि स्वर्गमें भी क्रोध का त्यागना कठिनहै यह संस्कारोंकी अत्यन्त प्रबलता वर्णनकरी ६ अर्थात वह युधिष्ठिर उच्च स्वरसे इन वचनोंको कहता हुआ लौटा कि मैं इस लोभी दूरदर्शतासे रहित दुर्योधनके साथ लोकोंको नहीं चाहताहूं ७ जिसके कारणसे प्रथम महाबन में बड़े दुःखपानेवाले हमलोगोंने हठको करके सब पृथ्वीके मनुष्य मित्र नातेदार आदिकों को युद्धभूमिमें मारा ८ यह धर्मचारिणी निर्दोष अंग पांचाली द्रौपदी हमारी पत्नी गुरुजनोंके सन्मुख सभाके मध्यमें चरोंओरसे खैंचीगई ९ हे देवतालोगो दुर्योधनके देखने कोभी मैं नहीं चाहता मैं वहांही जानाचाहताहूं जहांपर वह मेरेभाईहैं १० तबहँसतेहुये नारदजीने युधिष्ठिरसेकहा ऐसानहीं कहना चाहिये हेराजेन्द्र इस स्वर्गभवन में शत्रुता आदिकभी दूर होजातीहैं ११ हेमहाबाहु युधिष्ठिर तुम राजादुर्योधन के विषय में किसी दशामेंभी ऐसा मतकहो अब तुम मेरे इस वचनको सुनो यह राजा दुर्योधन इन देवता और राज ऋषियोंसे सन्मान पूर्व्वक प्रतिष्ठा कियाजाता है जोकि यह स्वर्गवासी हैं १२।१३ युद्धमें इसने अपनेशरीरको होमकर वीरलोकको प्राप्त कियाहै यद्यपि देवताओंकेसमान तुम सबलोग सदैवइस दुर्योधनसे दुःख दियेगयेथे १४ तथापि इसने सच्चे धर्मसे इस स्थानको पाया जोराजा बड़े भय में भी भयभीत नहीं हुआ १५ हे पुत्र जो

तुमको द्यूतसे दुःखप्राप्तहुआ उसको चित्तमेंनधारणाकरनाचाहिये और द्रौपदी के भी दुःखोंको स्मरणन करना चाहिये १६ और जो अपने बिरादरी वालोंसे उत्पन्न दूसरेभी दुःख युद्धों में अथवा अन्य स्थानों में प्राप्त हुये हैं उनको भी स्मरण करना तुमको योग्य नहींहै १७ हेराजा तुम न्याय के अनुसार राजा दुर्योधन से मिलो यह स्वर्गहै यहां शत्रुता नहीं होतीहै १८ नारदजीसे इसप्रकार आज्ञा पायेहुये बुद्धिमान् कुरुराज युधिष्ठिरने भाइयों को पूछा और यह बचन कहा १९ जो सब संसार और मित्रोंके शत्रु पापी अधर्मी दुर्योधनके यह सनातन बीरलोकहैं २० जिसके कारणसे यह सब पृथ्वीके लोग घोड़े मनुष्य और हाथियों समेत नाश होगये और शत्रुताका बदलालेनेके अभिलाषी हमलोग क्रोध से भस्महुये २१ जो मेरे वह भाई बीर महात्मा बड़े व्रतधारी लोक में बिख्यात शूर और सत्यवक्ताथे अब उन्होंके कौनसे लोकहैं मैं उन लोकों को देखना चाहताहूं सत्यसंकल्प महात्मा भाई कर्ण २२।२३ धृष्टद्युम्न सात्यकी धृष्टद्युम्नके पुत्र और जिन राजाओंने क्षत्रीधर्मके द्वारा शस्त्रोंसे मरणको पाया २४ हे नारदजी वह सब राजा कहां हैं हे ब्रह्मन् मैं उनको नहीं देखताहूं बिराट द्रुपद धृष्टकेतु आदिक २५ पांचालदेशी शिखंडी सब द्रौपदीके पुत्र अजेय अभिमन्यु उन सबको देखना चाहताहूं २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे देवता लोगो मैं यहां पर बड़े तेजस्वी कर्ण और दोनों भाई युधामन्यु और उत्तमौजसको नहीं देखताहूं जिन महारथियोंने शरीरोंको रणरूपी अग्निमें हवन करदिया और जो राजा और राजकुमार युद्धमें मेरे निमित्त मारेगये १।२ शार्दूलके समान पराक्रमी वह सब महारथी कहांहैं क्या उन बड़े साधुपुरुषोंसेभी यहलोक बिजयकियागयाहै ३ जो उन सब महा-

र्षियोंने इनलोकोंको प्राप्तकियाहै तो हेदेवताओ मुझकोभी उन महात्माओं केही साथ नियत जानो ४ जो उन राजाओंने यह अविनाशी शुभलोक नहीं प्राप्तकियाहै तो मैंभी उन राजा भाई और सजातीलोगोंके बिना यहां नहीं रहूंगा ५ जलदानके विषय में माताका वचन हुआथा कि तुम कर्णका जलदानकरो उसको सुनकर उस समय मैंने दुःख पाया ६ हे देवताओ मैं बारंबार यह पश्चात्ताप करताहूं कि जो मैं उस बुद्धिमानोंमें बड़े कर्णके दोनों चरणोंको माताके चरणोंकी समान देखकर ७ उस शत्रुओंकी सेनाओंके दुःखदायीके पास नहींगया जो वह हमारा साथीहोता तो इन्द्रभी कर्णसमेत हमलोगोंके बिजयकरनेको समर्थ नहींहोता ८ मैं जहां तहां नियत होकर उस सूर्यके पुत्रको देखना चाहता हूं जिसको कि पहले मैंने नहींजानाथा वह अर्जुनकेहाथसे मारा गया ९ प्राणोंसेभी अधिकप्यारे भयकारी पराक्रमवाले भीमसेन को इन्द्रकी समान अर्जुनको और अश्विनीकुमारके समान दोनों नकुल सहदेवको १० और धर्मचारिणी द्रौपदीको देखना चाहताहूं यहांपर मैं निवास करनेकी इच्छा नहीं करताहूं यह सबमैं आपसे सत्य सत्यही कहताहूं ११ हे श्रेष्ठ देवताओ मुझ भाइयोंसे वियोगवान् को स्वर्गसे कौन प्रयोजनहै जहांपर वह सब हैं वही स्थान मेरा स्वर्गहै मैं इस स्वर्गको स्वर्ग नहीं मानताहूं १२ देवता बोले हेपुत्र जोउस स्थान में तेरी श्रद्धाहै चलेजाओ बिलम्ब मत करो हम देवराजकी आज्ञासे तेरे प्रिय हित में कर्म करनेवाले हैं १३ वैशंपायन बोले हेपरन्तप फिर देवताओंने इसप्रकार कहकर देवदूतको आज्ञाकरी कि तुम युधिष्ठिरको इसकेभाईआदिक लोगोंको दिखाओ १४ हेश्रेष्ठ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर और देवदूत दोनों साथहोकर वहां चले जहां कि वह पुरुषोत्तमथे १५ आगे देवदूत और पीछे राजा होकर उस मार्गमें चले जोमहा अशुभ दुर्गन्ध पापोंका उत्पत्ति स्थान १६ अन्धकार से पूर्ण भयकारी बालके समान रूप शिवार घास का रखनेवाला पापोंकी

गन्धियोंसे युक्तमांस रुधिरकी कीच रखने वाला १७ डांस उत्पा-
तक भल्लूक मक्खी और मच्छरोंसे व्याप्त होरहाथा इधर उधर
चारोंओर मृतकोंसे घिरा हुआ १८ अस्थि केशोंसे युक्त कृमि
कीटोंसे पूर्ण अत्यन्त प्रकाशमान अग्निसे चारोंओर को घिरा
हुआ १९ लोहेके समान तीक्ष्ण नोकवाले काक गिद्ध आदिका
का भ्रमण स्थान विन्ध्याचल पर्व्वतके समान सूची मुख प्रेतोंसे
संयुक्त २० रुधिर मज्जासे युक्त टूटे भुज हाथ उदर चरणवाले
जहां तहां पड़ेहुये प्रेतोंसे संयुक्तथा २१ मार्गमें बहुत बिचारोंको
करता वह धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर उस मार्ग में होकर चला जो
कि मृतकोंकी दुर्गन्धिसे संयुक्त अकल्याण रूप रोमांच का खड़ा
करनेवाला था २२ उष्णजलसे पूर्ण अत्यन्त दुर्गम्य नदीको भी
देखा तीक्ष्णधार क्षुराओंसे संयुक्त असिपत्रवाले वृक्षोंके जंगलको
भी देखा २३ श्वेत और सूक्ष्म गरम बालूको और लोहेकी शि-
लाओंको पृथक् २ देखा चारोंओर गरमतेलसे पूर्ण लोहेके क-
ढ़ावोंको देखा २४ फिर युधिष्ठिरने पापोंके दण्ड स्थान उस कूट
शाल्मलिक वृक्षको भी देखा जोकि दुःखसे स्पर्शहोनेवाला और
तीक्ष्ण कंटक रखनेवालाथा २५ उसने उस दुर्गन्धी को देखकर
देवदूतसे कहा कि हमको ऐसे मार्गमें होकर कितना चलना पड़े-
गा २६ वहमेरेभाई कहांहैं उनको मुझे बताओ और यहदेवताओं
का कौनसा देशहै इसको जाननाचाहताहूं २७ वह देवदूत धर्म-
राजके वचन को सुनकर लौटा और कहने लगा कि तेरा जाना
केवल इसी स्थान तकहै २८ अब मुझको लौटनाउचितहै मुझको
देवताओंने इतनीही आज्ञादीहै हेराजेन्द्र जोआप श्रमित होगये
हो तो लौटआना योग्यहै २९ हेभरतवंशी उस दुर्गन्धीसे अचेतव्या-
कुल और लौटने को प्रवृत्तचित्त होकर राजायुधिष्ठिर लौटा ३०
अर्थात् दुःखशोकसे घायलहोकर वह धर्मात्मा लौटा और लौटते
समय उस स्थान में कहनेवालोंके इन दुःखोंके वचनोंको इसने
सुना ३१ कि हेपवित्र कुलवाले धर्मपुत्र राजर्षि पाण्डव तबतक

हमारे ऊपर अनुग्रह करनेके लिये एकमुहूर्त्तभर ठहरो ३२हेतात तुझ अजेयके आनेपर आपकी सुगन्धिसे संयुक्त होकर जोपवित्र वायु चलती है उससे हमको सुखहोता है ३३ हेराजाओं में बड़े साधू पुरुषोत्तम युधिष्ठिर सो हमतुमको देखकर बहुत कालतक सुखको पावेंगे ३४ हेमहाबाहु भरतवंशी कौरव एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त यहां निवास करो तेरे नियत होनेपर दुःख दूरहोजानेसे यहां की वेदना हमको पीड़ानहींदेतीहै३५हेराजातब उसने उसस्थानपर चारोंओरसे कहनेवाले दुखिया लोगोंके इसप्रकारके अनेककष्ट युक्त बचनोंको सुना ३६ वह दयावान् युधिष्ठिर उन दुखियाओं के दुःखित बचनोंको सुनकर खड़ा होगया और कहा कि बड़ा खेदहै ३७ उसपांडवने प्रथमही बारम्बार सुनेहुये निर्बलदुखियाओंके बचनोंको नहींजाना ३८ उनबचनोंको न जानते हुये धर्मपुत्र युधिष्ठिरने कहाकि आप कौनहैं और यहां किस निमित्त नियतहो ३९ हेप्रभु राजाके इसबचनको सुनकर उनसबने चारों ओरसे उसको उत्तरदिया किमैं कर्णहूं मैं भीमसेनहूंमैंअर्जुनहूं ४० मैं नकुलहूं मैं सहदेवहूं मैंधृष्टद्युम्नहूं मैंद्रौपदीहूं और हमद्रौपदी के पुत्रहैं वहसब इसरीतिसे पुकारे ४१ हेराजा तब उसराजायुधिष्ठिरने उसदेशके समान उन बचनोंको सुनकरबिचार किया कि यह क्या दैवकर्महै ४२ सुन्दरी द्रौपदी वा द्रौपदी के पुत्र और कर्णादिक महात्माओंसे वह कौनसा पापकर्म होगयाहै ४३ जो यह इस पापकी दुर्गन्ध रखनेवाले बड़े भयकारी देशमें नियतहैं मैं इनसब पवित्रकर्मी पुरुषोंके पाप कर्मको नहीं जानताहूं ४४ धृतराष्ट्रका पुत्र राजा दुर्योधन महापापात्मा अपने साथियोंसमेत कौनसा कर्मकरके उसप्रकार लक्ष्मीवानहै ४५ जोकि महाइन्द्रके समान लक्ष्मीवान और बड़ापूजितहै अब यहांकिसकर्मका फलहै जो यह नरकमें वर्त्तमानहुये ४६ यहसब धर्मज्ञ शूरसच्चे शास्त्रोंके अनुसार कर्मकर्त्ता सन्तयज्ञोंके करनेवाले और बड़ी दक्षिणादेने वालेथे ४७ क्यामैं सोताहूं जागताहूं और अचेतहूं बड़ा आश्चर्य्य-

कारी यह चित्तका विभ्रमहै अथवामेरे चित्तकीही भ्रान्तीहै ४८ दुःख और शोकसे पूर्ण सन्देहसे व्याकुलचित्त राजा युधिष्ठिरने इसरीतिसे अनेकप्रकारका विचार किया ४९ और बड़ेक्रोधयुक्त होकर उसने देवताओं समेत धर्मकी निन्दा करी ५० बड़ी कठिन दुर्गन्धिसे दुःखीउस राजाने देवदूतसे कहा कि तुम जिनके आज्ञा-वर्तीहो उनकेपासजाओ ५१ मैंवहांनहीं जाऊंगा यहांहीं नियतहूं हेदेवदूत तुमजाकर उनसे कहोकि यहमेरे भाई मेरी समीपता से सुखीहैं ५२ तब बुद्धिमान युधिष्ठिरकी आज्ञासे वहदेवदूतवहां गया जहांपर कि देवराज इन्द्रथे ५३ उसने वहां जाकर जैसा२धर्मराज ने कहाथा और जो २ उसके चित्तकी इच्छाथीं वह सब इन्द्रसे कहीं ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि हे कौरव वहांएक मुहूर्त्ततक धर्मराजयुधिष्ठिरके नियतहोनेपर इन्द्रको आगेरखनेवाले सबदेवता उसस्थान पर आपहुंचे १ वहस्वरूपवान धर्मदेवताभी राजाके देखनेको वहां आयेजहांपर कि यहकौरवराज युधिष्ठिरथा २ हेराजाउनपवित्र कुल औरकर्मवाले प्रकाशरूपशरीर वालेदेवताओंकेआनेपर वह अन्धकार दूर होगया३ औरपापियोंके दंडका स्थान वैतरणीनदी भी कूटशाल्मली वृक्षसमेतदिखाई नहींदी और जो चारोंओरको भयानकरूप उष्णतेलसे भरे लोहेके कढ़ावऔर भयकारीशिलाथीं वहभीदृष्टिसे गुप्त होगई ४।५ हे भरतवंशी तब देवताओं के सन्मुख नियत अत्यन्त शीतस्पर्शसे सुखदायी पवित्र सुगन्धियोंसेभरी सुखदायक वायु चली इन्द्रसमेत मरुद्गणअष्टवसु अश्विनीकुमार ६।७ साध्यगण ग्यारह रुद्र द्वादशसूर्य्य और जो २ अन्य देवता सिद्ध और महर्षिहैं वह सब वहां आये जहांपर बड़ा तेजस्वी धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर नियतथा इसके पीछे बड़ी शोभासे युक्त

देवराजइन्द्रने ८।९ विश्वासयुक्त युधिष्ठिरसे यह बचन कहा कि हे महाबाहु युधिष्ठिर तेरे लोक अविनाशीहैं १० हेपुरुषोत्तम आओ आओ इतनेहीसे कृतकृत्यता प्राप्तकी हेप्रभु तुमने सिद्धी प्राप्त की हेमहाबाहु इसीसे तेरेलोकभी अविनाशीहैं ११ तुमको क्रोध न करना चाहिये मेरे इसबचनको सुनो हे तात सबराजा लोगोंको अवश्य नरकदेखनेके योग्यहै १२ हे पुरुषोत्तम शुभ और अशुभ कर्मोंके दोढेरहैं जोप्रथम उत्तमफलोंको भोगताहै वहपीछेनरकको भोगता है १३ और जो प्रथमही नरकभोगनेवालाहै वहपीछे स्वर्गकोपाता है जो बहुत पापकर्मी होताहै वह पहले स्वर्गको भोगताहै १४ हे राजाइसी हेतुसे मुझ शुभचिंतकने तुमको नरकमें प्रवेश किया तुमने अश्वत्थामाके विषयमें द्रोणाचार्यसे छलसंयुक्तबार्त्ताकी १५ हेराजा इसीहेतुसे अर्थाततेरे इतनेछलकरने सेहीतुझकोनरकदिखलाया जैसाकितुमने मिथ्यानरकदेखा उसीप्रकार भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव १६ और कृष्णा द्रौपदी भी नरक में वर्त्तमानहुये हे नरोत्तम आओ वहभी पापोंसे छूटे १७ जोतेरीओरके राजायुद्धमें मारेगये वहसब स्वर्गमेंगये हे पुरुषोत्तम अब उनकोभी देखो १८ जो कर्ण बड़ाधनुषधारी सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठथा उसने बड़ी सिद्धीकोपायाहै उसीकेलिये तूबड़ादुःखीहोताथा १९ हे महाबाहु प्रभुनरोत्तम उस पुरुषोत्तम सूर्यके पुत्रको अपने स्थानपर नियत देखो और शोकको दूरकरो भाइयोंको औरअपनेपक्षवाले अन्य राजाओंकोभी अपने २ स्थानपर वर्त्तमान देखोतेरेचित्त कासन्ताप दूरहोय २०।२१ हे कौरव प्रथम दुःखको पाकर अबसेलेकर विशोक और नीरोगहोकरमेरेसाथ बिहारकरो २२ हे महाबाहुतात राजा युधिष्ठिर अपनेतपसे पवित्र कर्मफलोंसे युक्त दानादिकोंके उत्तम फलोंको प्राप्तकरो २३ अबस्वर्ग में देवता गन्धर्व और दिव्यअप्सरा तुझ कल्याणरूप दिव्यपोशाक और भूषणधारी के आज्ञावर्त्ती होयँ २४ हे महाबाहु तुम आपही उन लोकोंको जो कि खड्ग बलकेद्वारा वृद्धियुक्त और राजसूय यज्ञसे

विजय किये हुयेहैं उनको और अपने तपके बड़ेफलको प्राप्त करो हे राजा युधिष्ठिर हरिश्चन्द्र के लोकों के समान तेरेलोक और अन्य राजाओंके भी लोक पृथक् २ हैं जिन में तुम विहार करोगे२५।२६ जिनमें राजऋषि मान्धाता राजाभगीरथ और दश-रथका पुत्र भरतहै तुम उसमें विहार करोगे २७ हेराजेन्द्र युधि-ष्ठिर यह देवताओंकी पवित्र नदी तीनोंलोकों की पवित्र करने-वाली आकाश गंगाहै तुम उसमें स्नान करके जाओगे २८ इसमें तुम्हें स्नान करने वालेका मनुष्यत्व दूरहोगा शोक व्याकुलता और शत्रुतासे रहित होगा २९ कौरवेन्द्र युधिष्ठिरसे देवराजके इसप्रकार कहनेपर साक्षात स्वरूपधारी धर्मने अपनेपुत्रसेकहा ३० हे बड़ेज्ञानीपुत्र राजायुधिष्ठिर तेरीभक्ति सत्यवक्तृत्वता सन्तोष और जितेन्द्रीपने से मैं प्रसन्नहूं ३१ हेराजा मैंने यह तेरी तीसरी परीक्षालीहै हेक्षत्री तुमराजाहोनेके कारणसे अपने स्वभावसेहटाने को असंभवहो ३२ मैंनेप्रथम द्वैतवनमें युग्म अरणी काष्ठके विष-यमें याचना करनेके द्वारा तेरी परीक्षाली तुमने उसकोभी पूरा किया ३३ हेभरतवंशीपुत्र फिर वहां तेरे भाइयों और द्रौपदीके मृतक होजानेपर मुझ श्वानरूप प्राप्त करनेवालेसे तुमपरीक्षा लियेगये ३४ अबयह तीसरी परीक्षाहै जो तुम भाइयोंके लिये यहां नियत होना चाहतेहो हे महाभाग तुम अत्यन्त पवित्र नि-ष्पाप औरसुखीहो ३५ हेराजा तेरेभाई नरककेयोग्य नहींहैं देव-राज इन्द्रने यह माया प्रकटकीहै ३६ हेतात सबराजाओंसे नरक अवश्य देखनेके योग्यहै इसी हेतुसे तुमने दो मुहूर्त्ततक यहबड़ा दुःख पाया ३७ हेराजा पुरुषोत्तम नकुल सहदेव भीमसेन और सत्यवक्ता शूरकर्ण बहुत कालपर्य्यन्त नरक के योग्य नहींहै ३८ हे युधिष्ठिर राजपुत्री द्रौपदी भी नरककेयोग्य नहींहै हेभरतर्षभ आओ आओ तीनोंलोकमें वर्त्तमान इसआकाश गंगाकोदेखो ३९ हेजनमेजय इसप्रकारसे कहाहुआ वह तेरा पूर्व्वपितामह राजर्षि धर्मराज सब देवताओंके साथ होकर चला फिर राजाने ऋषि-

योंसे स्तूयमान पवित्र करनेवाली देवताओंकी पवित्र नदी गंगा-जीमें गोतालगाकर मनुष्य शरीरको त्यागकिया फिर उसजलमें गोताल गानेवाला धर्मराज युधिष्ठिर प्रकाश रूप शरीर होकर शत्रुता और शोकसे निवृत्त हुआ ४० । ४१ । ४२ फिर देवताओंसे घिराहुआ महर्षियोंसे स्तुति युक्त बहबुद्धिमान कौरवराज युधि-ष्ठिर धर्मके साथ वहांपर चला ४३ जहां परवह क्रोधसे रहित पुरुषोत्तम शूर पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्र अपने २ स्थानपर नियत थे ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणियुधिष्ठिरतनुत्यागेतृतीयोऽध्यायः३॥

चौथा अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके पीछे देवता ऋषि और मरुद्गणों से स्तूयमान राजा युधिष्ठिर वहांगयाजहांपर कि वह श्रेष्ठकौर-वथे १ वहांपरजाकरउन गोविन्दजीको भी देखा जो कि ब्रह्मा-जीसे उपासना आदिके योग्य शरीरको धारण कियेहुयेथे और पूर्व्व देखेहुये उस शरीरसे दिखाई देतेथे २ अपने शरीरसेप्रका-शमान और दिव्य अस्त्र और भयानक पुरुष रूपधारी चक्रादि दिव्य आयुधों से सेवित ३ बड़े तेजस्वी वीर अर्जुनसे वर्त्तमान युक्तथे युधिष्ठिरने उसप्रकार के स्वरूपधारी मधुसूदनजी को देखा ४ देवताओंसे पूजित उन दोनें पुरुषोत्तमोंने युधिष्ठिर को देखकर विधिपूर्व्वक पूजन करके संमेलनकिया ५ फिर कौरव-नन्दनने दूसरे स्थानपर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठद्वादश सूर्य्यके समान कर्णको देखा ६ फिर अन्य स्थान पर मरुद्गणोंसे युक्त समर्थ भीमसेनकोभी उस शरीरसे युक्त देखा ७ जो कि मूर्त्तिमान वायु देवताकी गोदीमें दिव्य मूर्त्तिधारी बड़ी शोभासेयुक्त परमसिद्धीको प्राप्तथा ८ फिर कौरवनन्दनने अश्विनीकुमारोंके स्थानपर अपने तेजों से प्रकाशमान नकुल और सहदेवको देखा ९ इसी प्रकार द्रौपदीकोभी ऐसे रूपसे देखा जोकि कमल उत्पल की माला

रखनेवाली सूर्यके समान तेजस्विनी अपने तेजसे स्वर्गको व्याप्त करके नियतथी १० राजा युधिष्ठिरने अकस्मात सब वृत्तांतको पूछना चाहा फिर देवताओंके राजा भगवान् इन्द्रने उसके समक्ष में सब वृत्तांत वर्णन किया ११ हेयुधिष्ठिर यह बिना योनिके उत्पन्न होनेवाली लोककी प्यारी पवित्र गन्धवती द्रौपदी स्वर्गकी लक्ष्मीहै जिसने तेरे निमित्त मनुष्यशरीर धारण कियाथा १२ शिवजीने आपके सुसंगके अर्थ इस द्रौपदीको उत्पन्न किया वह राजा द्रुपद के घराने में उत्पन्न होकर आपके भोग में प्राप्तहुई १३ हेराजा यह आपके और द्रौपदी के पुत्र बड़े तेजस्वी अग्निके समान प्रकाशमान पांचोमहाभागगन्धर्वहैं १४ अबउन गन्धर्वोंके राजा बुद्धिमान् धृतराष्ट्रको देखो और तुम इस को अपने पिताका बड़ा भाई जानो १५ यह सौर्य्य कुन्तीका पुत्र अग्निके समान तेजस्वी राधेय नामसे प्रसिद्ध बड़ा श्रेष्ठ तेरा बड़ा भाईहै १६ यह सूर्यके समान कर्ण बिमानकी सवारी में चलताहै इस पुरुषोत्तमको देखो हेराजेन्द्र साध्यगण बिश्वेदेवा और मरुद्गनाम देवताओं के समूहों में बड़े पराक्रमी सात्यकी आदि बीर महारथीभोज अंधक औरवृष्णियोंको देखो १७।१८ सुभद्राकेपुत्र अजेय बड़े धनुषधारी चन्द्रमाकेसमान तेजस्वी अभिमन्युको चन्द्रमाके साथमें देखो १९ कुन्ती और माद्रीसे मिलने वाला यह तेरा पिता पांडु सदैव बिमानकी सवारीमें चढ़कर मेरे पासआताहै २० शान्तनुके पुत्र राजा भीष्मपितामहको बसुओंके साथमें देखो इस गुरु द्रोणाचार्य्यको बृहस्पतिकी संनिकटतामें देखो २१ हेपांडव यह अन्य२राजा और तेरेशूरबीर यक्षपवित्र पुरुष और गन्धर्वोंके साथ बिमानकी सवारियोंमें जातेहैं २२ कितनेही राजाओंने गुह्यकोंकी गतियोंको पाया उन्होंने शरीरों को त्याग करके पवित्र बाणी कर्म और बुद्धि के द्वारा स्वर्गको बिजयकिया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

पिछलेअध्यायमें वर्णनहुआ कि जिसजिसने जिसजिस देवता के अंशसे अवतारलिया उस उसने शरीर त्यागनेकेपीछे उसी२ देवताकी समीपता प्राप्तकी वहांयह संदेह होताहै कि जिसप्रकार टहनीसेउत्पन्न वृक्ष अपने मूलसे पृथक्ही अपनी नियतता प्राप्त करते हैं उसीप्रकार उनअंशोंने भी पृथक् होकर अपनी नियतता नियतकी अथवा वह अपने२ मूलमें लयहोंगे प्रथम सन्देहयुक्त यहबातहै कि जो शरीर कर्म से उत्पन्नहै उसका नाश ब्रह्मज्ञानके बिनाहोना असंभवहै उसदशा में उनकीनियतता हम लोगोंके समानहोगी दूसरेसन्देहमें सिद्धहुआहै कि उन्होंनेनरअवतारमेंजोकर्मकिये उनकानाशहोना संभवहै इससंशयसेजनमेजयने प्रश्नकिया कि महात्माभीष्म द्रोणाचार्य राजाधृतराष्ट्रविराटद्रुपद शंख उत्तर १ धृष्टकेतु जयत्सेन राजासत्याजित दुर्योधनकेपुत्रसौबल का पुत्रशकुनी२ कर्णके पराक्रमीपुत्र राजाजयद्रथ औरजोअन्य२ घटोत्कच आदिक वर्णननहीं किये ३ और जो दूसरे प्रकाशमान मूर्त्तिवाले वीरराजा वर्णनकिये वह स्वर्गमें गये वह कितने समय तकस्वर्गवासीरहे उसकोभी मुझसेकहो४हेब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ आश्चर्य हैकि वहांइन महात्माओंका प्राचीन स्थानहै इन नरोत्तमोंने कर्म फलकेसमाप्त होजानेपर किसगतिकोपाया अर्थात् कर्मफलके समाप्त होनेपर अपनेयोगसे एकत्वता को सायुज्यता को सनातन ब्रह्मको अथवा पृथ्वीपर जन्मको प्राप्तकिया ५ हे श्रेष्ठ द्विजवर्य्यमें इसको सुनना चाहताहूं क्योंकितुम अत्यन्त प्रकाशित अपनेतपके द्वारासब वृत्तान्तकोजानतेहो ६ सूतके पुत्रका वर्णन हेराजाराजा से इसप्रकारसे कहेहुये और महात्मा व्यासजीसे आज्ञालेकर उस ब्रह्मऋषिने वर्णन करना प्रारंभकिया ७ वैशंपायन बोलेकि हे राजा कर्मफलके समाप्तहोनेपर अपने मूलमेंसबका प्रवेशहोजाना संभवनहींहै अर्थात् कोईअपनेमूलकोपातेहैं कोईनहीं जोसबउसमें

होजायँतो ऐसीदशामें संसारकी नियतता किसीप्रकारसेभी नहीं होसक्ती और शास्त्रव्यर्थ होजायँ इसहेतुसे कोई२पुरुषही मूलमें लयहोताहै सब नहींहोसक्ते—परन्तु तुमनेयह अच्छा प्रश्नकिया ८ हेभरतर्षभ राजाजनमेजय देवताओंके इसगुप्त रहस्यको सुनोमहा-तेजस्वी दिव्यचक्षु रखनेवाले प्रतापवान् व्यासजीने इसकोवर्णन किया९हेकौरव जो प्राचीन मुनि पराशरजीके पुत्र बड़ेव्रतधारी अत्यन्त बुद्धिमान सर्वज्ञ और सब कर्मफलों के भोगों से विदित हैं १० महातेजस्वी बड़ेपराक्रमी भीष्मजी वसुओंमें लयहोगये हे भरतवंशी आठही वसु देखाई देतेहैं अर्थात् नवांकोई नहींहै ११ द्रोणाचार्यजी उसअंगिरा वंशियोंमें श्रेष्ठ वृहस्पतिजीमें लयहोगये हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मा मरुद्गणोंमें प्रवेश करगया १२ प्रद्युम्न सनत्कुमारजीमें ऐसेप्रवेश करगये जैसेकि प्रकटहुयेथे धृतराष्ट्र ने उन कुवेरके लोगोंको पाया जोकि बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहैं १३ और यशावन्ती गान्धारीभी धृतराष्ट्रके साथ वहांगई राजा पांडुअपनी दोनोंस्त्रियों समेत महेन्द्रलोककोगया १४भूरि-श्रवा, शल,राजाभूरि, कंस,उग्रसेन, वसुदेव १५।१६अपने शंखभाई समेतउत्तर, यहसब नरोत्तम विश्वेदेवाओं में प्रवेश करगये १७ चन्द्रमाका पुत्रबड़ा तेजस्वी और प्रतापवान् वर्च्चानामथा वह अभिमन्यु नामसे नरोत्तम अर्जुनका पुत्रहुआ १८ वह महारथी धर्मात्मा क्षत्रीधर्म से युद्धको करके असादृश्य और अनन्य कर्म करके कर्मके अन्त पर चन्द्रमा में लयहोगया १९ हे पुरुषोत्तम कर्णभी अपने कर्मके अन्तपर सूर्य्यमें लय होगया शकुनने द्वापर को और धृष्टद्युम्न ने अग्नि को प्राप्तकिया २० धृतराष्ट्र के सब पुत्र बलमें प्रमत्त रूप सब राक्षस थे उन शस्त्रोंसे पवित्र लक्ष्मी-वान् महात्माओं ने स्वर्ग को प्राप्त किया २१ विदुर और राजा युधिष्ठिर धर्ममें लय होगये भगवान् अनन्तदेवता बलदेवजी रसातलमें प्रवेश करगये२२ जिसने ब्रह्माजीकी आज्ञासे योगसा-मर्थ्यके द्वारापृथ्वीको धारण किया और जो वह देवताओंका

भी देवतासनातन नारायण नामहै उसके अंशरूप वासुदेवजी कर्म के अन्तहोजानेपर उसीमेंप्रवेश करगये हे जनमेजय वासुदेवजीकी पत्नी सोलह हजार स्त्रियांथीं२३।२४वहकालकी प्रेरणासे सरस्वती नदीमें डूबगईं वहां अपने २ शरीरोंको त्याग करके फिर स्वर्गमें वर्त्तमान हुईं और अप्सरारूप होकर वासुदेवजीके पासगईं उस बड़ेयुद्धमें जो वीरमहारथी२५।२६घटोत्कचआदिक मारेगयेउन्हों-ने देवता और यक्षोंको सेवन किया हेराजा दुर्योधनके सबसाथी राक्षसथे २७ उनसबनेभी क्रमपूर्व्वक आगेलिखेहुये उत्तम२ लो-कोंको पाया अर्थात् वह पुरुषोत्तम महाइन्द्रके लोक बुद्धिमान् कुबेरके भवन २८ और वरुणके लोकोंमें चलेगये हे महातेजस्वी यह सब ब्यौरेवार वृत्तान्त मैंने तुझसेकहा यह सब कौरव और पांडवोंका चरित्रहै आशय यहहै कि यह सब क्रमपूर्व्वक उत्तम गतियोंको प्राप्तकरके अन्तमें ब्रह्माजीके साथ मुक्तहोतेहैं इसी हेतुसे देवभाव मिलनेके निमित्त यज्ञ दान तप आदिक अवश्यकरने चाहिये इनऊपर लिखेहुये शूरवीर लोगोंके विशेषजो अन्यशूर वीरहैं वह स्वर्गमें जाकरभी फिर इसी पृथ्वीपर गिरकर आते हैं २९ सूतके पुत्रका वर्णन हेश्रेष्ठ ब्राह्मण लोगोवह राजाजनमे-जय यज्ञकर्मोंके मध्यवर्त्ती समयोंमें इस इतिहासको सुनकर अत्य-न्त आश्चर्य युक्तहुआ ३० फिरयाजक लोगोंने उसके उस कर्म को समाप्त किया आस्तीकभी सर्पोंको छुड़ाकर बहुत प्रसन्न हु-आ ३१ फिरउनसब ब्राह्मणोंको दक्षिणाओंसे प्रसन्न कियातब राजासे पूजितहोकर वह ब्राह्मणभी प्रसन्नहोकर अपने२ घरोंको चलेगये वहराजा जनमेजयभी उन ब्राह्मणोंको बिदाकरकेतक्षक शिलास्थानसे हस्तिनापुरको आया३२।३३ राजाजनमेजयके सर्प यज्ञमें व्यासजीकी आज्ञासे वैशंपायनका वर्णन किया हुआ और अपनाभी जानाहुआ यह सब इतिहास मैंने तुमसे बर्णन किया ३४ यह इतिहास नाम ग्रन्थबड़ापवित्र उद्धार करने वाला और महा श्रेष्ठ है जोकि सत्यवक्ता सर्वज्ञ धर्मज्ञान संबन्धी सब रीतियों से

विदित सत्पुरुष इन्द्रियोंके जालोंसे निकलकर योग सामर्थ्य से सर्वदर्शन में सिद्ध तपसे शुद्धचित्त व्यासमुनिका बनाया हुआ है ३५ । ३६ ऐश्वर्यमान सांख्ययोगके कर्त्ता सब तन्त्रोंसे शुद्धलोकमें महात्मापांडव और बड़ेतेजस्वी दूसरे क्षत्रियोंकी कीर्त्ति को फैलानेवाले व्यासजीने दिव्यनेत्रसे देखकर इस इतिहासको बनाया ३७ । ३८ जो बुद्धिमान् सदैव हरएक पर्वमें इसको सुनावेगा वह पापोंसे रहितस्वर्गको विजयकरनेवाला मनुष्य ब्रह्मभावके योग्य होगा ३९ जो सावधानमनुष्य इस सबवेदको आदिसे अन्ततक मूल समेतश्रवणकरताहै उसकेब्रह्महत्यादिक किरोड़ोंपाप नाशहोजाते हैं जोमनुष्यश्राद्धमेंसमीप बैठकर श्राद्धके ब्राह्मणोंको इसइतिहास का चतुर्थांशसुनावे उसकी श्राद्धसंबंधी खानेपीनेकी वस्तु अक्षय और अविनाशी होकर पितरोंके पास नियत होतीहैं ४० । ४१ जो पुरुषदिनमें इन्द्रियोंसे अथवा मनसेपाप करताहैवह सायंकालकी संध्यामें इस महाभारतके पढ़नेसे उस पापसे निवृत्त होताहै ४२ स्त्रियोंके समूहोंसमेत ब्राह्मणरात्रिके समय जो पाप करताहै वह प्रातःकालकी संध्यामें इस महाभारतको पढ़कर पापसे शुद्धहोता है ४३ अर्थ और आशयकी गुरुता और वृद्धिताके कारणसेयह भारतकहा जाताहै जो इसमहाभारत अथवा साठलाख महाभारत केमूलको जानताहै वहसब पापोंसे छूटजाताहै ४४ हेभरतवंशी श्रेष्ठधर्मअर्थकाम और मोक्षका विषयजो इसमेंहै वह दूसरे अष्टादशपुराणों में भीहै और जो इसमें नहींहै वह कहीं भी नहीं है अर्थात् इसीकी छायासे सब पुराण बने हैं ४५ यह जय नाम इतिहास मोक्षके चाहनेवाले ब्राह्मण क्षत्री और गर्भवती स्त्री से सुननेके योग्यहै ४६ स्वर्गका अभिलाषी स्वर्गको विजयाभिलाषी विजयको और गर्भवतीस्त्री पुत्रकोअथवा सौभाग्यवती कन्याको पातीहै ४७ इसभारतकी नित्य सिद्धीकेवलमोक्षरूप प्रभुव्यासजीनेधर्मके जारीकरनेकी इच्छासेबड़ीचातुर्यतासेरचनाकीहै ४८ उन व्यासजीने चारोंवेदकोविशेष उसकेअर्थसे संयुक्त साठलाखसंहिता

को बनायाउसमेंसे तीसलाख तो देवलोकमें वर्त्तमानहै ४९ पन्द्रह लाखपितृ लोकमें और चौदहलाखयक्षलोकमें जानना योग्यहै और इसनरलोकमें एकलाखवर्णन करीहै ५० नारदजीनेदेवताओं को सुनाई असित देवल ऋषिने पितरोंको शुकदेवजीने राक्षस और यक्षोंको सुनाई वैशंपायनने मनुष्योंको सुनाया अर्थात इन चारों पुरुषोत्तमोंने व्यासजीसे पढ़कर उन स्थानोंपर प्रकटकरी ब्राह्मणोंको आगेकरके जो मनुष्य इस पवित्र और वेदके समान बड़ेअर्थ रखनेवाले इतिहासको सुनताहै वह पुरुष इसलोक में सब अभीष्टसिद्धी और पदार्थोंको प्राप्तकरके शुभकीर्त्तिमान होकर परम सिद्धीको पाताहै इसमें मुझको किसीप्रकार का भी सन्देह नहींहै इसपवित्र महाभारत के पढ़नेसे किन्तु चौथाई पुस्तक अथवा चौथाई श्लोकके पढ़नेवालेको वहफल प्राप्त होता है अथवा व्यासजीमें बड़ी श्रद्धाभक्ति करके जो मनुष्य इसको सुनाताहै उसकोभी वहीफल प्राप्तहोता है जिस व्यासजीने यह पवित्रसंहिता अपनेपुत्र शुकदेवजीको पढ़ाई५१।५२।५३।५४संध्या में भारतके पाठकी विधि वर्णनकरी अब भारतके साररूप चार श्लोकोंको कहतेहैं हजारों मातापिता सैकड़ों पुत्र स्त्री बहुत से जन्मोंमें प्राप्त किये जोकि होगये होतेहैं और आगे प्राप्तहोंगे५५ उसीके हजारों स्थल और भयके सैकड़ों स्थान प्रतिदिन अज्ञानियों में हुआ करतेहैं पण्डितों में नहीं होते ऊपरको भुजाउठाकर मैं पुकारताहूं और कोई मेरी बातको नहीं सुनताहै किअर्थ और धर्म यहदोनों कामसे उत्पन्न होतेहैं वह धर्मके निमित्त अभ्यास नहीं किया जाता ५६ । ५७ मनुष्यको उचितहै कि इच्छा भय और लोभसे कभी धर्मको न छोड़े और जीवनके निमित्तभी धर्मको नहीं छोड़े धर्म अविनाशीहै और सुख दुःखादिक नाशमानहैं जीवात्मा अविनाशीहै और उसका हेतु अर्थात् अविद्या नाशवानहै ५८ जोपुरुष प्रातःकाल उठकर इसचारश्लोकोंकी भारत सावित्रीको पाठकरे वहभारतके फलको पाकर परब्रह्मको

जाताहै ५९ जैसे कि भगवान् समुद्र और हिमालय पर्व्वत दोनों रत्नाकर प्रसिद्ध हैं वैसाही यह महाभारतभी बिख्यातहै ६० जो श्रद्धा सावधान इसभारत इतिहासको पाठकरै वह निस्सन्देहपरम सिद्धीको पावै ६१ व्यासजीके दोनों ओष्ठोंसे निकली हुई पवित्र उद्धार करने वाली पापघ्नी कल्याण रूप अप्रमेयकहीहुई भारतकथाको जोसमझताहै उसको पुष्करादिक तीर्थोंके जलमें मन्त्र पूर्व्वक स्नान करनेसे क्या प्रयोजनहै ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

जनमेजयने पूछा हे भगवन् ज्ञानियोंको किस बिधिसे भारत का सुनना योग्यहै इसका फल क्याहै और उसकी पारणा में कौनसा देवता पूजनेके योग्यहै १ हे भगवन् प्रत्येक पर्व्वके समाप्त होनेपर क्या देना योग्य है इसमें कथाके बक्तासे कौनसा प्रश्न करना योग्यहै उसकोभी मुझसे कहो २ बैशंपायन बोले हेभरतबंशी महाराज जनमेजय इस विधिको सुनो और महाभारत सुननेसे जोफल होताहै उसकोभी तुम श्रवणकरो ३ हेराजा स्वर्ग में जोदेवताहैं वह क्रीड़ाकरनेको पृथ्वीपर गये और इस कार्य्यको करके फिर स्वर्गमें आये ४ सूर्य्यके पुत्र दोनों अश्विनीकुमार, देवता, लोकपाल, महर्षि, गुह्यक, गन्धर्व, नाग बिद्याधर ५ सिद्ध धर्म, मुनियों समेत शरीर प्राप्तकरनेवाले ब्रह्माजी, पर्व्वत, सागर नदी, अप्सराओंके समूह ६ ग्रह, संवत्सर, अयन, ऋतु, स्थावर जंगम, सब जगत्, देवता, असुर ७ यहसब भारत में नियत दिखाई देतेहैं हेभरतर्षभ उनसबके अवतारको सुनकर नाम और कर्मके कहने से ८ मनुष्य घोर पापको भी करके उसके द्वारा शीघ्र पापसे निवृत्त होताहै इस इतिहासको बिधिपूर्व्वक क्रमसे सुनकर ९ नियमवान् शरीर से पवित्र होकर भारतका पारायण करके भारतसुननेके पीछे उनका श्राद्धकरना उचित है १० हे भरतबंशी

सामर्थ्य और भक्तिके अनुसार नानाप्रकारकेरत्न और महादान ब्राह्मणोंको देने योग्यहैं ११ गौकांस्य दोहनपात्र अच्छी अलंकृत सब अभीष्ट गुणयुक्त कन्या नानाप्रकारकी खाने पीनेकीवस्तु १२ विचित्र स्थान पृथ्वीवस्त्र सुवर्णघोड़े मदोन्मत्त हाथी और अनेक प्रकारकी सवारियां देनीचाहिये१३पलंग पालकी अच्छे अलंकृत रथ और घरमेंजो कुछ उत्तम वस्तुहैंऔर जो पृथ्वीसे उत्पन्न रत्ना-दिकहैं १४ यहसबवस्तु अपनाशरीर स्त्री और पुत्रादिक पर्यन्त ब्राह्मणोंको देनेचाहिये जोकि क्रमपूर्व्वक बड़ीश्रद्धासे दियाजाय उसके विषयकी सबविधिको सुनो अर्थात वह भारतका पारगामी १५ शुद्धचित्त प्रसन्नमुख सामर्थ्यके अनुसार सेवा करनेवाला सन्देहसे रहित सत्य और सत्यवक्तापनेमें प्रवृत्त जितेन्द्रीबाह्याभ्य-न्तरीय पवित्रतासे युक्त १६ श्रद्धामान और क्रोधका जीतनेवाला होकर जिसप्रकारसे सिद्धहोताहै उसको श्रवणकरो पवित्रसुन्दर मधुरभाषी आचारवान् श्वेतवस्त्र इन्द्रियोंका दमनकरनेवाला १७ संस्कारी सर्वशास्त्रज्ञ श्रद्धावान् पराये गुणमें दोष न लगानेवाला स्वरूपवान् ऐश्वर्य्ययुक्त शिक्षित सत्यवक्ता जितेन्द्री१८ कथाका कहनेवाला ब्राह्मण कथाके काममें दान और प्रतिष्ठासे कृपालु होताहैस्थिरचित्त और अच्छेप्रकारसे आसनपरबैठा अच्छा साव-धानऐसा वक्ता ब्राह्मण कथाकहै जोकि विलम्बसे रहित मनशी-घ्रता रहित धीरमूर्त्ति १९ और जिसके उच्चारणमें अक्षर और पद स्पष्ट विदितहोयँ स्वरभाव और तिरेसठवर्णोंसेयुक्त आठोंस्था-नोंसे समीरित अर्थात कथितहो २० श्रीनारायण और नरोंमें उत्तम नर और सरस्वती देवीको नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करे २१ हेभरतवंशी राजाजनमेजय ऐसे वक्तासे भारतकी कथाको सुनकर नियममें नियत कानोंको पवित्रकरताहु-आ फलको पाताहै२२जो मनुष्यप्रथम पारणाको प्राप्तकरके ब्राह्म-णोंको उनकी अभीष्टवस्तुओंसे तृप्तकरे वह अग्निष्टोमयज्ञके फ-लको पाकर २३ अप्सराओंके समूहोंसे युक्तबड़े उत्तम दिव्य

विमानकोपाताहै और बड़ेआनन्दपूर्व्वक देवताओंकेसाथविहार करताहै २४ और दूसरी पारणाको करके अतिरात्र यज्ञके फल को पाकर सब रत्नोंसे जटित दिव्यविमान पर सवार होताहै २५ दिव्यमाला और पोशाक रखनेवाला दिव्यसुगन्धियोंसे अलंकृत दिव्य बाज़ूबन्द धारण करनेवाला वह पुरुष सदैव देवलोकमें पूजितहोताहैं २६ तीसरी पारणाको प्राप्त करके द्वादशाह यज्ञ के फलको पाताहै वह देवताके समान प्रकाशमान होकर अयुतों बर्षतक स्वर्गमें निवास करताहै २७ चौथीपारणामें बाजपेय यज्ञ के फलको और पांचवीं पारणामें द्विगुणित यज्ञके फलकोपाता है और उदयहुये सूर्यके समान देदीप्यअग्निके सदृश विमानमें देवताओं के साथसवार होकर स्वर्गमें जाताहै वहांस्वर्गमें इन्द्र भवनोंमें अयुतों बर्षतक आनन्दकरताहै २८।२९ छठवीं पारणामें द्विगुणित फलहै सातवींमें त्रिगुणित फलहै कैलास शिखर के समान बैडूर्य मणिकी वेदीरखनेवाले ३० बहुतप्रकारसे चलायमान मणि मूंगोंसे अलंकृत स्वेच्छाचारी अप्सराओंके समूहोंसे संयुक्त विमानमें सवार होकर ३१ दूसरे सूर्यकी समान सब लोकों में घूमताहै आठवीं पारणामें राजसूय यज्ञके फल को पाताहै ३२ अर्थात् उदयमान चन्द्रमाके समान ऐसे प्रकाशमान सुन्दर वि-मानपर सवार होताहै जोकि चित्त के समान शीघ्रगामी और चन्द्रमाकी किरणोंके समान प्रकाशित घोड़ोंसे युक्त ३३ चन्द्र-मुखी उत्तम स्त्रियोंसेभी सेवित होताहै और वह पुरुष श्रेष्ठस्त्रियों की कोड़में सुखसे सोयाहुआ स्त्रियोंकी मेखला और नूपुरों के शब्दोंसे जागताहै और हेभरतबंशी नवीं पारणामें यज्ञोंके राजा अश्वमेधके फलको पाताहै ३४।३५ सुवर्णस्तंभों से संयुक्त बैडूर्यम-णिसे बनीहुई वेदीवाले सबओरको दिव्यस्वर्णमय जाली झरो-खोंसे युक्त अप्सराओंके और स्वर्गचारी गन्धर्वोंके समूहोंसे से-वित विमानपर सवार होकर बड़ीशोभासे प्रकाशमान ३६ दिव्यमाला और पोशाक धारण करनेवाला दिव्य च-

अलंकृत दूसरे देवताके समान स्वर्गमें आनन्द करताहै ३८ दशवीं पारणाको प्राप्तकर ब्राह्मणों को नमस्कार करके क्षुद्रघंटिकाओंके जालसे शब्दायमान ध्वजा पताकादि से शोभित ३९ रत्नों की वेदीरखनेवाले वैडूर्य मणियोंकी बन्दनवारोंसे संयुक्त स्वर्णमयी जालों से चारोंओरको व्याप्त मूंगे और उत्तम पन्नों से बने हुये वल्ल अर्थात् छज्जों से शोभित द्वारवाला ४० गान विद्या में कुशल गन्धर्व और अप्सराओं से शोभायमान शुभकर्म्मियों के विमानोंको सुखसे प्राप्त करताहै ४१ अग्नि वर्ण जांबूनद नाम सुवर्णसे अलंकृत जो मुकुटहै उससे अलंकृत दिव्यचन्दनसेलिप्तांग दिव्य मालाओंसे शोभित ४२ देवताओंकी क्रियाओं के कारण बड़ी शोभा और दिव्यभोगोंसेयुक्त वह पुरुष दिव्यलोकोंमें घूमताहै फिर यह पुरुष इसीप्रकार गन्धर्व्वोंकेसाथ इक्कीसहजारवर्ष तकस्वर्गलोकमेंपूजितहोताहै ४३।४४ और क्रीडाकेयोग्य इन्द्रपुरी में इन्द्रहीके साथविहार करताहै दिव्य विमानोंकी सवारीरखने वाले नानाप्रकार के देशोंकी दिव्य स्त्रियों से व्याप्त देवताओं के समान निवासकरताहै हेराजा फिर सूर्यलोक चन्द्रलोक ४५।४६ और शिवलोकमेंनिवासकरके विष्णुजीकी सायुज्यताको पाता है हे महाराज यहइसी प्रकारहै इसमें किसी प्रकारका विचार नकरना चाहिये मेरे गुरुका कथन है कि श्रद्धावान मनुष्य को ऐश्वर्य्यमान होनासंभवहै और कथा कहनेवालेको वहवहपदार्थ देने चाहिये जिसजिसको वह मनसे चाहताहै४७।४८ हाथीघोड़ा रथ मुख्यकर दूसरी अनेक सवारी कुंडल कंकड़ यज्ञोपवीत ४९ विचित्र पोशाक अधिकतर चन्दन आदिक सुगन्धित वस्तु देना योग्यहै उसको इसरीतिसे जो देवताके समान पूजन करताहै वह विष्णु लोकको प्राप्त करताहै ५० हेराजा अबमें इसके पीछेउत्तर वस्तुओंको कहताहूं जोजो वस्तु वेदपाठी ब्राह्मणोंको कथाकी भेंट में देनेके योग्यहैं ५१ हे राजा स्वर्गवासी क्षत्रियों की जाति सत्यता दृढ़ता धर्म चलनको जानकर उनके नामसे ब्राह्मणोंको

देना उचितहै फिर कथाके जारी होनेपर प्रथम ब्राह्मणोंसे स्व-स्तिबाचन कराके फिर पर्व्वसमाप्तहोनेपर अपनी सामर्थ्यकेअनु-सार ब्राह्मणोंका पूजनकरे ५२ । ५३ हेराजा प्रथम पोशाक आदिक सुगन्धित बस्तुओंसे अलंकृत कथा कहनेवाले को बिधि पूर्व्वक श्रेष्ठ तस्मै और मिष्टान्न भोजन करावे ५४ फिर मूलफल युक्त तस्मै घृत शर्करायुक्त करके आस्तिक्य ब्राह्मणको खिलावे और गुडोदन नाम भोजनकी बस्तुओंका दान करे ५५ इसकेपीछे सभा पर्व्वमें अपूप, पूप और मोदकसे युक्त हबिष्य नाम भोजनकी बस्तु ब्राह्मणों को खिलावे ५६ बनपर्व्वके समाप्त होनेपर मूल फलोंसे ब्राह्मणोंका दान करे और आरण्य पर्व्वको समाप्त करके जलकुंभोंका दान करे ५७ उत्तम२ भोजनकी बस्तु बनके मूलफल और सब अभीष्ट गुणोंसेयुक्त भोजनकी बस्तु वेदपाठी ब्राह्मणोंको दे ५८ इसीप्रकार बिराटपर्व्व समाप्तहोनेपर नानाप्रकारकेबस्त्रोंका दानकरे हेभरतर्षभ उद्योगपर्व्वके समाप्त होनेपर सब अभीष्टगुणों सेयुक्त ५९ भोजन उन वेदपाठी ब्राह्मणोंको खिलावे जोकि चन्दन और पुष्प मालाओंसे अलंकृत हैं और हेराजेन्द्र भीष्म पर्व्वके अन्तमें अनुपम सवारीका दान करके ६० फिर सब गुणोंसे युक्त श्रेष्ठ रीतिसे बनाई हुई भोजनकी बस्तुओंको देनाचाहिये हेराजा द्रोणपर्व्व समाप्तहोनेपर वेदपाठी ब्राह्मणों के लिये अच्छापूजित भोजन ६१ पलंग धनुष और उत्तम खड्ग देने योग्यहैं अच्छा साव-धान चित्त मनुष्य कर्णपर्व्वके समाप्तहोनेपर सब उपकारी अभीष्ट बस्तुओंसे युक्त ६२ अच्छी रीतिसे बना हुआ भोजन वेदपाठी ब्रा-ह्मणोंकोदे हे राजेन्द्र शल्यपर्व्व समाप्त होनेपर लड्डूगुडोदन ६३ अपूप और सब खाने पीनेकी बस्तुओं को देवे इसीप्रकार गदा पर्व्व समाप्तहोनेपर मूंगयुक्त अन्नका दान करे ६४ स्त्री पर्व्व समाप्त होनेपर ब्राह्मणों को रत्नों से दान करे ६५ फिर ऐषिक पर्व्व के आरम्भ में घृतोदन का दान करे सर्व गुण युक्त श्रेष्ठ रीति बनाई हुई भोजनकी बस्तुयें देवे इसी प्रकार शान्तिप

पर ब्राह्मणों को हविष्य अर्थात् घृत युक्त वस्तुओंका भोजन कराबे ६६ अश्वमेधपर्वको समाप्त करके सब अभीष्टवस्तुओंसेयुक्त भोजनदेवे इसीप्रकार आश्रमनिवासपर्व समाप्तहोनेपरभी ब्राह्मणों को हविष्यभोजनकरावे ६७ मूसलपर्व समाप्तहोनेपर सर्वगुणयुक्त गन्धमाला और चन्दनादिसे प्रसन्नकरेइसीप्रकारमहाप्रस्थानिक पर्वमें सब अभीष्टगुणयुक्तभोजनकोदेवे ६८ स्वर्गपर्व समाप्तहोनेपर ब्राह्मणोंको हविष्यान्नभोजनकरावे हरिवंश समाप्तहोनेपर हजार ब्राह्मणोंकोभोजनकरावे ६९ औरनिठकसमेत एकगौभी ब्राह्मण कोदे हेराजा यह कहाहुआ दान दरिद्रीकोभी आधापर्वा करना योग्यहै ७० सावधान श्रोताप्रत्येक पर्वके समाप्तहोनेपर सुवर्णसे युक्त पुस्तकको कथाकहनेवालेके अर्थ भेंटकरे ७१ हेभरतवंशियों मेंश्रेष्ठराजा जनमेजय वहां हरिवंशपर्वके प्रत्येक पारणमें विधि पूर्वकतस्मैके भोजनकरावे शास्त्रमें सावधान रेशमी अथवा सनकी पोशाकसे अलंकृत श्वेत पोशाक धारणकरनेवाला मालाधारी अच्छा अलंकृत सावधान पुरुषशुभदेशमें बैठकर सबपर्वोंकोसमा- प्तकरके फिरवहनियमवान् अच्छा सावधान न्यायके अनुसार ग- न्धमालाओंसे पृथक्२संहिताकी पुस्तकोंकापूजनकरे ७२ भक्षण की वस्तुमांसादिक और पीनेकीवस्तुआदि अनेकप्रकारके शुभ मनोरथोंसे तृप्तकरके हिरण्यनाम सुवर्णकी दक्षिणादेवे ७३ वह मनुष्य अतिरात्रयज्ञके फलकोपाताहै जो कि सब देवता और नर नारायणको कीर्तिनकरे फिर गन्ध और मालाओं से उत्तमब्रा- ह्मणोंको अच्छे प्रकारसे अलंकृत करके नानाप्रकारकी अभीष्ट वस्तुओंसेयुक्त बहुत प्रकारकेदानोंसे तृप्तकरे ७४ । ७५ हेभरतर्षभ इसप्रकारशुद्ध और स्पष्टअक्षरपदउच्चारणकरनेवाला वक्ताब्राह्म- णभी हरएक पर्वमें उसीप्रकारके फलको पावेगा ७६ हे राजावह ज्ञानीब्राह्मण भविष्यसमयसे संबंध रखनेवाली इसभारतकथाको सुनावे सब श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके भोजन करनेपर विधिपूर्वकदानदे ७७ फिर वक्ताको अच्छीरीतिसे अलंकृतकर भोजनकोकराके उसके

प्रसन्न होनेपर शुभ और उत्तम प्रीति उत्पन्न होती है ब्राह्मणों
के प्रसन्नहोनेपर सब देवता प्रसन्न होजातेहैं ७८ हेभरतर्षभ इसी
हेतुसे साधुओंकी ओरसे न्याय और पृथक् २ विधिके अनुसार
सब अभीष्टवस्तुओंसे ब्राह्मणोंका तृप्तकरना योग्यहै ७९ हेद्विपा
दोंमें श्रेष्ठ यहविधि मैंने तुमसेकही श्रद्धामानहोसे कर्मकर्त्ताहोना
संभवहै ८० हे राजाओं में श्रेष्ठ जनमेजय परमकल्याणचाहनेवाले
सदैवउपाय करनेवाले मनुष्यको इस भारतके श्रवण करनेवाला
और पारणमें उपायकरनेवाला होनाचाहिये ८१ सदैव भारतको
सुने भारतहीको पाठकरे जिसकेस्थानमें महाभारतहै उसके हाथमें
विजय वर्त्तमानहै ८२ भारतबहुत उत्तम और पवित्रहै भारतमें नाना
प्रकारकी कथाहैं यह भारत देवताओंसेसेवनकिया जाताहै भारत
परमपदहै ८३ हेश्रेष्ठ भरतवंशी यह महाभारत सबशास्त्रोंमेंउत्तमहै
भारतहीसे मोक्षसिद्धीप्राप्तहोतीहै यहसिद्धांत मैं तुझसेकहताहूं ८४
महाभारतकी कथा पृथ्वी गौ सरस्वती ब्राह्मण और केशवजी
का कीर्त्तन करना यह सब कभी पीड़ा नहीं देतेहैं ८५ हेश्रेष्ठ वेद
रामायण और पवित्र महाभारतके प्रारंभ मध्य और अन्तमें सर्वत्र
हरिही गायेजातेहैं इसलोकमें परमपद चाहनेवाले मनुष्यको वह
भारत श्रवण करना योग्यहै जिसमें विष्णुकी दिव्य कथा और
सनातन सरस्वतीहैं ८६। ८७ यह परमपवित्रहै यही धर्मशास्त्रहै यही
सर्वगुण सम्पन्नहै यह भारतपुराण ऐश्वर्य्य चाहनेवाले को श्रवण
करनेके योग्यहै ८८ शरीर मन वाणी आदिकसे जो पाप इकट्ठा
कियाहुआहै वह ऐसे नाश होजाताहै जैसे कि सूर्य्योदय होनेसे
अन्धकारका नाश होजाताहै ८९ अठारह पुराणके श्रवण करने
से जो फल होताहै वह महाभारतके श्रवण करनेसे वैष्णव अवश्य
पाताहै ९० स्त्री और पुरुष वैष्णवपदको प्राप्तकरें संतानचाहनेवाली
स्त्रियोंको हरिवंश सुननायोग्यहै ९१ पूर्व्वोक्त फलोंके इच्छाव
पुरुष को यहां सामर्थ्य के अनुसार पांच निष्क सुवर्ण इस

शृङ्गी वस्त्रोंसे अलंकृत सवत्सा गौ कथा कहनेवाले वक्ताके अर्थ विधिपूर्वक देनीयोग्यहै ९३ हेभरतर्षभ हाथ और कर्णकेभूषण और मुख्यकरके भोजनकी भी वस्तुदेवे हेराजा उसदेशका ब्राह्मण केअर्थ भूमिदान देना योग्यहै भूमिदानके समान दान न हुआ न होगा९४।९५जोमनुष्य सदैव सुनताहै वा सुनाताहै वह सब पापोंसे छूटकर बैष्णव पदको पाताहै ९६ हे भरतर्षभ वह पुरुष अपने ग्यारहपुरुषोंसमेत स्त्री पुत्रकेसाथ अपनेको भी उद्धारकरताहै ९७ हेराजा इस पारणामें दशांश हवन करना भी योग्यहै हे नरोत्तम मैंने यह सब तेरे आगे बर्णन किया ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांस्वर्गारोहणपर्वणिसर्वपर्वानुकीर्तननामषष्ठोऽध्यायः६ ॥

इति स्वर्गारोहणपर्व्व समाप्तः ॥

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी
जनवरी सन् १८८६ ई० ॥

—※—